

# द 3 मिस्टेक्स ऑफ माइ लाइफ

**BEST SELLER** THE 3 MISTAKES OF MY LIFE का हिन्दी अनुवाद



**चेतन भगत**

भारत में सर्वाधिक बिक्री वाला लेखक

-न्यूयॉर्क टाइम्स

द 3 मिस्टेक आफ माइ लाइफ

कहानी, व्यापार, क्रिकेट व धर्म की

चेतन भगत

 **amazon** publishing

Text copyright © 2016 by Chetan Bhagat

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without express written permission of the publisher.

Published by Amazon Publishing, Seattle

[www.apub.com](http://www.apub.com)

Amazon, the Amazon logo, and Amazon Publishing are trademarks of [Amazon.com](http://Amazon.com), Inc., or its affiliates.

eISBN: 9781503945999

मेरे प्यारे देश को जिसने मुझे वापस बुला लिया

# विषय सूची

[परिचय](#)

[शुभ कामनाएं अध्याय](#)

[1 अध्याय](#)

[2 अध्याय](#)

[3 अध्याय](#)

[4 अध्याय](#)

[5 अध्याय](#)

[6 अध्याय](#)

[7 अध्याय](#)

[8 अध्याय](#)

[9 अध्याय](#)

[10 अध्याय](#)

[11 अध्याय](#)

[12 अध्याय](#)

[13 अध्याय](#)

[14 अध्याय](#)

[15 अध्याय](#)

[16 अध्याय](#)

[17 अध्याय](#)

[18 अध्याय](#)

[19 अध्याय](#)

[20 अध्याय](#)

[21 अध्याय](#)

[उपसंहार 1](#)

[उपसंहार 2](#)

## परिचय

यह हर दिन नहीं होता कि तुम सुबह उठते ही कम्प्यूटर के सामने बैठ जाओ और एक शनिवार को तुम्हें एक ई-मेल मिलता है-

द्वारा - [ahd\\_businessman@gmail.com](mailto:ahd_businessman@gmail.com)

भेजी गई - 12.08.2005. 11.40 P.M.

को - [info@chetanbhagat.com](mailto:info@chetanbhagat.com)

विषय - एक अंतिम नोट

प्रिय चेतन,

यह ई-मेल एक आत्म-हत्या नोट व अपराध स्वीकृति पत्र दोनों है। मैंने लोगों के साथ बहुत बुरा किया है इसलिए मेरे पास जीवित रहने का कोई कारण नहीं है। तुम मुझे नहीं जानते। मैं अहमदाबाद का एक साधारण सा लड़का हूँ, जो तुम्हारी लिखी किताबें पढ़ता है। मुझे ऐसा लगा कि मैं अपनी बात तुम्हें बताऊँ। मैं किसी को नहीं बता सकता मैं अपने साथ क्या कर रहा हूँ। मैं हर वाक्य के बाद नींद की गोली ले रहा हूँ-मैंने सोचा कि मैं यह बात तुम्हें बताऊँगा।

मैंने अपना कॉफी का कप रख दिया और गिनने लगा। पांच वाक्य समाप्त हो चुके थे।

-मैंने अपने जीवन में तीन गलतियाँ की थीं-उनके विषय में मैं विस्तार से नहीं लिखूँगा।

खुदकुशी का मेरा यह फैसला भावुकता से नहीं लिया गया। मेरे परिचित जानते हैं कि मैं एक अच्छा बिज़नेसमैन हूँ और मैं थोड़ा भावुक भी हूँ। यह एक-दम से लिया गया फैसला नहीं है। इसके लिए मैंने पूरे तीन वर्ष इन्तजार किया है। हर दिन मैं ईश का मूक चेहरा देखता। पर कल जब उसने मेरी पेशकश को ठुकरा दिया तो मेरे पास और कोई रास्ता नहीं बचा।

मुझे इस बात का कोई अफसोस भी नहीं। संभव है तब मैं विद्या से एक बार और बात करना चाहता-पर इस वक्त वह विचार भी मुझे ठीक नहीं लगा।

मुझे अफसोस है कि मैं आपको परेशान कर रहा हूँ। पर मुझे महसूस हुआ मैं किसी को यह सब बताऊँ। तुम लेखक हो, सुधरने के लिए तुम्हारे पास काफी रास्ते हैं। निःसंदेह तुम बहुत अच्छी पुस्तकें लिखते हो। अच्छा शुभ-सप्ताहांत!

## शुभकामनाएं

17,18,19- अहमदाबाद में कहीं एक साधारण सा जवान बिजनैसमैन जिसने मुझे ई-मेल करते हुए 19 नींद की गोलियां निगल लीं और वह मुझसे आशा करता है कि मैं अपना सप्ताहांत खुशी से बिताऊं। कॉफी मेरे गले से नीचे नहीं उतर रही थी। मैं पसीने से तर-ब-तर हो रहा था।

‘एक, तुम देर से उठे। दूसरे उठते ही तुम सबसे पहले कम्प्यूटर पर बैठ गए। क्या तुम भूल गए कि तुम्हारा एक परिवार भी है?’ अनुषा ने कहा। इस सूरत में उसका साधिकार यह कहना काफी नहीं था कि अनुषा मेरी पत्नी है? मैंने उससे वादा किया था कि मैं उसके साथ फर्नीचर खरीदने चलूंगा। खरीददारी का यह वादा दस हफ्ते पहले किया गया था?

उसने मेरा कॉफी का कप उठाया और मेरी कुर्सी को हिलाया। ‘हमें कुछ डाइनिंग चेयर्स की जरूरत है?’ ‘क्या बात है तुम कुछ परेशान लग रहे हो?’ उसने कहा। मैंने मॉनीटर की ओर इशारा किया।

मेल पढ़ते ही उसने कहा-‘बिजनैसमैन’? वह भी थोड़ा कांप गई।

‘और यह अहमदाबाद से है’, मैंने कहा ‘वह सब हमें पता है।’

‘क्या तुम्हें लगता है यह सत्य है?’ वह बोली, उसकी आवाज में कंपन था। ‘यह स्पैम नहीं’ मैंने कहा ‘यह मुझे संबोधित की गई है।’

मेरी पत्नी ने बैठने के लिए स्टूल खींच लिया? मुझे लगा हमें वाकई कुछ कुर्सियों की जरूरत है।

‘सोचो हमें किसी और को यह बात बतानी चाहिए, अच्छा हो अगर उसके माता-पिता को बता पाएं’ उसने कहा।

‘कैसे? मुझे पता नहीं यह सन्देश मेरे पास कहां से आया’ मैंने कहा ‘और हम

अहमदाबाद में किसे जानते हैं?’

‘हम अहमदाबाद में ही मिले थे याद है?’-अनुषा ने कहा। एक निराधार बात मैंने सोची। आई आई एम-ए हाँ, हम वर्षों पहले आईआईएम-ए में क्लास में थे ‘तो’ मैंने कहा।

‘संस्थान को फोन करो, प्रो. बसंत या किसी और को’ उसने कहा और कमरे से बाहर निकल गई यह कहते हुए कि दाल जल रही है?

अपने से अधिक समझदार पत्नी का होना कई बातों में फायदेमंद हैं। मैं कभी भी जासूस नहीं बन सकता।

मैंने इंटरनेट पर इंस्टीट्यूट का नंबर ढूँढा और फोन मिलाया। एक ऑपरेटर ने मुझे प्रो. बसंत के घर का नंबर मिला दिया। मैंने समय देखा, सिंगापुर में इस वक्त दस बजे थे और भारत में सुबह के साढ़े सात। मुझे यह अच्छा नहीं लगा कि सुबह सुबह किसी प्रो. को डिस्टर्ब किया जाए।

‘हैलो’ एक नींद से भरी आवाज थी। प्रोफेसर ही होंगे।

‘प्रो. बसंत, हाय। मैं चेतन भगत बोल रहा हूँ? आपका पुराना विद्यार्थी, याद है आपको?’

‘कौन?’ उनकी आवाज में अपरिचय का पुट था। मैंने सोचा बुरी शुरूआत।

फिर मैंने उन्हें याद दिलाया जो विजय वो हमें पढ़ाते थे और कैसे हमने उन्हें वोट दिए थे कैम्पस के सबसे फ्रेंडली प्रोफेसर होने का। प्रशंसा ने अपना रंग दिखाया। ‘ओह वह चेतन भगत’, उन्होंने कहा, जैसे वो हजारों को जानते हों, ‘तुम अब लेखक हो न?’

‘हां सर, वही।’-मैंने कहा।

‘अच्छा तो तुम पुस्तकें क्यों लिख रहे हो?’



‘बड़ा कठिन प्रश्न है सर।’

‘अच्छा, ठीक है, तो एक आसान सवाल है, तुम मुझे शनिवार को इतनी सुबह सुबह क्यों फोन कर रहे हो?’

मैंने उन्हें सारी बात बताई और ई-मेल उन्हें भेज दिया।

‘कोई नाम नहीं’ वे बोले, जैसे ही उन्होंने ई-मेल पढ़ा।

‘वह अहमदाबाद के किसी हस्पताल में हो सकता है? हो सकता है उसका चैक-अप हो रहा हो, हो सकता है वह मर गया हो। हो सकता है वह घर पर ही हो-कुछ भी हो सकता है।’ मैंने कहा।

मैं दुविधा में था, परेशान था। मैं अपने और उस लड़के के लिए मदद चाहता था। प्रोफेसर ने मुझसे एक अच्छा सवाल किया था मैं लिखता ही क्यों हूँ-ऐसी बातों में पड़ने के लिए?

‘हम हस्पतालों में पता कर सकते हैं?’ प्रोफेसर ने कहा, ‘मैं अपने स्टूडेंट्स को कहता हूँ, पर अगर उसका नाम पता चल जाता तो काम आसान हो जाता, ओह ठहरो, उस लड़के का जी-मेल में एकाउंट होगा, हो सकता है वो ऑरकुट पर हो।’

‘और क्या?’ कई बार अपने से अधिक चुस्त लोगों से बात करने पर भी समस्या हो जाती है।

तुम दुनिया से अलग रहते हो चेतन। ऑरकुट एक नेटवर्क साइट है। जी-मेल का इस्तेमाल करने वाले वहां पर अपने साइन करते हैं। अगर वह लड़का वहां का मੈबर होगा तो वहां उसने साइन जरूर किए होंगे। और किस्मत अच्छी हुई तो हमें वहां से उसके नाम का पता चल जाएगा।

मैंने उसकी नाँव घुमाने की आवाज सुनी। मैं अपने पी. सी के सामने बैठ गया। मैं अभी ऑरकुट की साइट देख ही रहा था कि एकदम प्रोफेसर बसंत की आवाज सुनाई दी, ‘अहा, अहमदाबाद बिजनैसमैन। उसका थोड़ा सा परिचय है। नाम है जी.पटेल, दिलचस्पी-क्रिकेट में, बिजनैस में, मैथेमाटिक्स और-दोस्तों में? क्या तुम्हें नहीं लगता कि वह ऑरकुट का काफी इस्तेमाल करता होगा।’

‘प्रो. बसंत! आप क्या बात कर रहे हैं? मैं उसके सुसाईड नोट से परेशान हूँ जो उसने खास तौर पर मुझे भेजा है और आप मुझे उसकी हॉबीज के बारे में बता रहे हैं? आप मेरी कोई मदद कर सकते हैं या.....?’

कुछ समय की चुप्पी के बाद, ‘मैं अपने कुछ स्टूडेंट्स के साथ किसी जवान पेशेंट की तलाश करता हूँ जिसने नींद की गोलियां जरूरत से ज्यादा खाली हों और जिसका नाम जी-पटेल है। अगर हमें कुछ पता चला तो तुम्हें सूचना दे दूँगे, ओ.के.।’

‘ठीक है सर,’ मैंने निश्चितता से सांस लेते हुए कहा?

‘अच्छा अनुषा कैसी है? तुम दोनों अपनी डेट पर जाने के लिए मेरी क्लास से बंक मार जाते थे और अब मुझे भूल गए हो।’

‘सर! वो बिल्कुल ठीक है।’

‘अच्छा है, मैं हमेशा महसूस करता था कि वह तुमसे ज्यादा स्मार्ट है।’ खैर तुम्हारे उस लड़के की तलाश करते हैं। प्रो. ने कहा और बंद कर दिया।

फर्नीचर की खरीददारी के साथ, मैंने अपने आफिस का एक काम भी करना था, मेरा और माइकिल का बॉस न्यूयार्क से आने वाला था। माइकिल ने कहा था कि बॉस को प्रभावित करने के लिए हम 50 चार्ट्स के साथ अपने ग्रुप की प्रेजेंटेशन करें। मैं पिछले हफ्ते से रात एक बजे तक काम करता रहा फिर भी आधा ही हो पाया। ‘मेरा एक सुझाव है अगर तुम अन्यथा न लो। पर नहाने का विचार बनाओ।’ मेरी पत्नी ने कहा।

मैंने उसे देखा।

‘एक विकल्प है।’ उसने कहा।

मैंने सोचा वह कभी-कभी ज्यादा ही सोचने लगती है। मैंने कोई जवाब नहीं दिया। ‘हां! हां! मैं नहा लूंगा’, मैंने कहा और फिर कम्प्यूटर की तरफ देखने लगी। विचार मेरे दिमाग में घूमते रहे। क्या मैं भी अपनी तरफ से कुछ



हस्पतालों में पता करूँ? क्या होगा, अगर प्रो. बसंत कुछ कर न पाए? क्या वे स्टूडेंट्स को इकट्ठा न कर पाए? क्या होगा अगर जी. पटेल मर गया हो? और मैं क्यों इन बातों में उलझता जा रहा हूँ।

मैं शावर के नीचे खड़ा हो गया। फिर आ कर मैंने आफिस काम करने की कोशिश की पर व्यर्थ। मैं एक भी शब्द टाइप नहीं कर पाया।

मैंने नाश्ते के लिए भी मना कर दिया बाद में मुझे इसका पश्चाताप हुआ क्योंकि भूख और उत्सुकता साथ-साथ नहीं चल पाती।

1.33 पर मेरे फोन की घंटी बजी।

‘हैलो’ निःसंदेह प्रो. बसंत की आवाज थी, ‘सिविल हास्पिटल में है? उसका नाम गोविन्द पटेल है, 25 वर्ष का है मुझे पता चला कि वो मेरा ही सैकिंड ईयर का स्टूडेंट्स’ है।

‘और’

‘और वह जिन्दा है। पर बात नहीं करता, अपने परिवार से भी नहीं। शायद सदमे में है।’

‘डाक्टर क्या कहते हैं?’ मैंने पूछा।

‘कुछ नहीं, यह सरकारी हस्पताल है? तुम क्या उम्मीद करते हो? खैर वो उसका पेट साफ कर देंगे और उसे घर भेज देंगे। मैं अब ज्यादा फिक्र नहीं करूँगा। अपने एक स्टूडेंट्स से कहूँगा कि वो शाम को जाकर एक बार फिर देख आए।’

‘पर उसकी कहानी क्या है? हुआ क्या?’

‘वो सब मुझे नहीं पता। सुनो तुम भी अपना दिमाग ज्यादा खराब न करो। इंडिया एक बड़ा देश है। ये सब यहां चलता है। तुम जितना भी इसमें उलझोगे पुलिस तुम्हें उतना ही परेशान करेगी।’

इसके बाद मैंने हस्पताल में फोन किया। पर ऑपरेटर इस केस के बारे में कुछ नहीं जानता था और संबंधित वार्ड में फोन-लाईन मिलाने की सुविधा नहीं थी।

अनुषा ने भी चैन की सास ली कि लड़का सेफ है। फिर उसने दिन का प्रोग्राम बताया- डाईनिंग चेयर्स खरीदने का- जो एलैग्जेंडरा रोड पर मिलेंगी। हम वहां तीन बजे पहुंचे! हमने कम जगह घेरने वाली टेबल-चेयर्स देखी? एक टेबल देखी जो चार बार फोल्ड होकर कॉफी टेबल बन जाती थी। बड़ी सुन्दर थी।

‘मैं जानना चाहता हूँ कि 25 साल के बिजनेसमैन को आखिर हुआ क्या था?’ मैं बुदबुदाया।

‘तुम्हें पता चल जाएगा, उसे जरा ठीक हो जाने दो। जवानी के कुछ कारण होंगे, प्रेम में धोखा, कम नम्बर या ड्रग्स वगैरह।’ मैं चुप रहा।

‘अब छोड़, भी, उसने तुम्हें ई-मेल किया। तुम्हारे ऑफिस का काम तुम्हारे आगे है। तुम्हें इस बात में और उलझने की जरूरत नहीं है। बताओ कुर्सियां छः लेनी हैं या आठ?’ वह शीशम के बने एक सैट की तरफ बढ़ी।

मैंने कहा हमारे घर इतने कौन से मेहमान आते हैं? छः ही काफी होंगी।

‘दो फालतू कुर्सियों की जरूरत मुश्किल से 10 प्रतिशत है।’ मैंने कहा।

‘तुम आदमी भी बिकूल मददगार नहीं होते?’ वह मुड़ी और छः कुर्सियां चुन लीं।

मेरा दिमाग फिर बिजनेसमैन की तरफ घूम गया।

हां, सभी ठीक ही कहते हैं मुझे इस में इतना नहीं उलझना चाहिए? पर फिर भी दुनिया के सारे लोगों को छोड़ कर उसने मुझे ही अपना आखिरी नोट क्यों भेजा। मैं कोई मदद नहीं कर सका पर उलझ जरूर गया हूँ।

हमने आईकिया के आगे फूड कोर्ट में अपना लंच लिया।

‘मुझे जाना पड़ेगा मैंने अपनी पत्नी को लेमन राइस खाते हुए बताया।

‘कहां? ऑफिस। ओ.के. मेरा काम हो गया है तुम अब फ्री हो’ मेरी पत्नी ने कहा। ‘नहीं। मैं अहमदाबाद जाना चाहता हूँ। मैं गोविन्द पटेल से मिलना चाहता हूँ?’ मैंने उससे नजरें चुराते हुए कहा।

‘क्या तुम पागल हो?’

मेरा ख्याल है कि यह केवल मेरी जैनरेशन में ही कि भारतीय औरतें अपने पतियों को मात देती हैं?

‘मेरा दिमाग बार-बार वहीं जा रहा है।’ मैंने कहा।

‘तुम्हारी प्रेजेंटेशन का क्या होगा? माइकल तुम्हें छोड़ेगा नहीं।’

‘मैं जानता हूँ। उसे प्रोमेशन नहीं मिलेगी अगर वह अपने बॉस को प्रभावित नहीं कर सका।’

मेरी पत्नी ने मेरी ओर देखा? मेरा चेहरा खुद एक वाद बना हुआ था। वह जानती थी कि मैं जब तक उस लड़के को मिल नहीं लूंगा। मैं सहज नहीं हो पाऊंगा।

‘अच्छा, वहां के लिए एक ही सीधी फ्लाइट है शाम छः बजे। तुम टिकट के बारे में पता कर लो।’ उसने सिंगापुर लाइन का नम्बर मिलाया और फोन मुझे थमा दिया।

नर्सों द्वारा बताए गए कमरे में मैं गया। वहां इतनी चुप्पी और अंधेरा था कि मेरे कदमों की आहट सुनाई दे रही थी। दस डॉक्टरी-उपकरण लगे हुए थे जिनकी तारें उस आदमी पर जा कर खत्म हो जाती थीं। कुछ अंतराल पर लाईटें जलती-बुझती थीं। हजारों मील का सफर तय कर, इस गोविन्द पटेल को मैं देखने आया था।

सबसे पहले मैंने उसके घुंघराले बालों को देखा। उसका रंग गेहूँ का था और भरी भौहें। दवाइयों ने उसके होठों को खुश्क कर दिया था।

‘हाय, चेतन भगत.. लेखक जिसे तुमने लिखा था’ मैंने कहा, विश्वास नहीं था कि वह मुझे पहचाने।

‘ओह, तुम ने मुझे.... कैसे ढूंढ लिया?’ उसने कहा, बोलने में उसे दिक्कत महसूस हो रही थी।

‘मैंने अंदाजा लगाया.... और पहुंच गया।’ मैंने कहा।

मैंने हाथ मिलाया और उसके पास बैठ गया। उसकी मां कमरे में आई। वो भी नींद में लग रही थी। शायद वो भी स्लीपिंग पिल्स का इस्तेमाल करती होगी। मैंने उसका अभिनन्दन किया, फिर वह बाहर चली गई चाय लाने के लिए।

मैंने फिर लड़के की तरफ देखा। मेरी दो प्रबल इच्छाएं जागृत हुई - पहली यह कि उसे पूछूं कि क्या हुआ था, दूसरी कि उसे थप्पड़ मारूं।

उसने अपने बिस्तर से जरा उठते हुए कहा, ‘ऐसे मत देखो तुम मुझ से काफी नाराज हो, सॉरी। मुझे तुम्हें वह मेल नहीं भेजनी चाहिए थी।’

‘मेल को भूल जाओ जो तुमने किया, वो तुम्हें नहीं करना चाहिए था।’

उसने गहरी सांस ली। उसने मुझे पूरा और फिर सब तरफ देखा।

‘मुझे कोई अफसोस नहीं’ उसने कहा।

‘शटअप। इसमें कोई बहादुरी नहीं। डरपोक गोलियां खाते हैं।’

‘तुम भी ऐसा ही करते, अगर तुम मेरी जगह पर होते?’

‘क्यों? तुम्हें क्या हुआ था?’

‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।’

हम खामोश हो गए क्योंकि उसकी मां चाय लेकर आ गई थी। इतने में एक नर्स आई और उसने उसकी मां को घर जाने को कहा पर उसने साफ इंकार कर दिया। आखिर डाक्टर को बीच में पड़ना पड़ा।

वह रात के 11.30 बजे चली गई। मैं कमरे में रुक गया, डॉक्टर से इजाजत लेकर मैं जल्दी ही चला जाऊंगा।

‘चलो, अब तुम मुझे अपनी कहानी सुनाओ’ मैंने कहा जब हम अकेले हो गए। ‘क्यों? तुम मेरे लिए क्या करोगे? जो हो चुका है? उसे तुम बदल नहीं सकते।’ उसने बड़े थके हुए लहजे में कहा। ‘तुम कहानी केवल इसलिए नहीं सुनते कि बीत चुके को बदला जा सके। कई बार यह महत्वपूर्ण होता है कि जाना जाए कि क्या हुआ था।’

‘मैं एक बिजनैसमैन हूँ। मेरे साथ जो भी लोग संबंध रखते हैं केवल अपने फायदे के लिए। तुम्हारा क्या फायदा है इसमें? और फिर मैं अपना समय क्यों बर्बाद करूँ तुम्हें बताने में?’

मैंने उस कोमल से चेहरे को गौर से देखा और देखी उसमें छिपी कठोरता को।

‘क्योंकि मैं इसे दूसरों तक पहुंचाना चाहता हूँ।’ मैंने कहा ‘यही मेरी दिलचस्पी है।’

‘क्यों कोई भी इसकी परवाह करे।’ मेरी कहानी कोई डंडी या टैंड्री या सैक्सी नहीं आई आई टी या कॉल-सेंटर्स की तरह।

वो हिला और उसने अपनी रजाई उतार दी जो उसके सीने को ढके हुए थी। हमारे वार्तालाप और हीटर ने कमरे को गर्म रखा।

‘मैं सोचता हूँ, वो परवाह करेंगे।’ मैंने कहा, ‘एक जवान लड़का आत्म-हत्या करने की कोशिश करता है, यह बात जंचती नहीं।’

‘कोई भी मेरी तरफ ध्यान नहीं देता।’

मैंने कोशिश की, पर अपने पर संयम रखना मुश्किल हो रहा था। मैंने उसके थप्पड़ मारने की दुबारा सोची।

‘सुनो,’ मैंने कहा, ऊँची आवाज में जितनी कि हस्पताल में जायज थी। ‘तुमने आखिरी मेल भेजने के लिए मुझे चुना। इसका मतलब है कि काफी हद तक तुम्हें मेरे ऊपर विश्वास था? मैंने तुम्हें ढूँढा और मेल मिलने के कुछ ही घंटों में मैं उड़कर तुम्हारे पास आया हूँ? फिर भी तुम पूछ रहे हो कि मैं तुम्हारी परवाह करता हूँ? और अब तुम्हारा यह - नजरिया, यह गुस्सा क्या तुम्हारे बिजनैस का हिस्सा है? क्या तुम मेरे साथ एक दोस्त की तरह बात नहीं कर सकते? क्या तुम जानते भी हो कि एक दोस्त क्या होता है?’

मेरी ऊँची आवाज सुन कर एक नर्स कमरे में आई। हम चुप हो गए। घड़ी आधी रात की सूचना दे रही थी।

वह भौचक्का सा बैठा था। आज के दिन सभी ने उसके साथ अच्छा व्यवहार किया था। मैं खड़ा हो गया और उससे थोड़ा दूर चला गया।

‘मैं जानता हूँ कि एक दोस्त क्या होता है!’ आखिर में उसने कहा।

मैं फिर उसके पास बैठ गया।

‘मैं जानता हूँ कि दोस्त क्या होता है! क्योंकि मेरे दो दोस्त थे दुनिया में सबसे अच्छे।

.....

## एक

भारत बनाम दक्षिणी अफ्रीका  
चौथा, ओ.डी.आई, वडोदरा  
17 मार्च, 2000

45 ओवर

‘तुम वहां से हिले क्यों?’ ईशान की चीख स्टेडियम में गूंजी, टी.वी. पर। मैं फर्श से उठ कर सोफे पर बैठ गया।  
‘हां?’ मैंने कहा।

हम ईशान के घर पर थे - ‘ईशान, ओमी और मैं। ईशान की मां हमारे लिए चाय और खाकरा लेकर आई। सोफे पर बैठकर स्नेक्स खाने में ज्यादा मजा आता है। तभी मैं सोफे पर बैठ गया था।

‘तेंदुलकर गया। ओह ऐसे समय। ओमी तुम हिलना मत। कोई भी अगले पांच ओवर्स में हिलेगा नहीं।’

मैंने टी.वी. की तरफ देखा। हमें जीतने के लिए 283 रन चाहिए। एक बॉल से पहले इंडिया के 256-2 रन थे 45 ओवर के बाद। पांच ओवरों में 27 रन बनाने थे और हमारे पास 8 विकेट थे और तेंदुलकर खेल रहा था। सब कुछ ठीक चल रहा था, भारत के पक्ष में, पर तभी तेंदुलकर आऊट हो गया। उससे ईशान की त्यौरियां चढ़ गईं।

‘खाकरे बड़े क्रिस्पी हैं, ओमी ने कहा। ईशान ने उसे घूर कर देखा, उसकी घिघली बात पर जब कि देश का मान-सम्मान दांव पर लगा हुआ था। ओमी और मैंने अपने कप एक तरफ रख दिए और दुखी सा मुंह बनाकर बैठ गए।

भीड़ ने तालियां बजाई जब तेंदुलकर क्रीज से बाहर हुआ। जड़ेजा क्रीज पर आया और उसने छः रन बनाए। 46 ओवरों के बाद भारत की स्थिति 263-3 की थी। अब चार ओवरों में 21 रन और बनाने थे, सात विकेट बचे थे।

ओवर 46

‘उसने 122 बना लिए। उसने अपना काम कर दिया। कुछ ही आखिरी शॉट्स रहते हैं। पर तुम इतने उतावले क्यों हो रहे हो।’ मैंने टी.वी. पर अन्तराल के दौरान कहा। मैं अपना चाय का कप उठाने लगा पर ईशान ने न उठाने का इशारा किया। हम किसी भी तकरार में नहीं पड़ना चाहते थे जब तक मैच का कोई फैसला नहीं हो जाता। ईशान ने किसी भी तरह हम को हिलने नहीं दिया। मैच वडोदरा में हो रहा था, अहमदाबाद से दो घंटे का रास्ता है। पर हम वहां नहीं जा सके। एक तो हमारे पास पैसे नहीं थे,

दूसरे दो दिन में मेरे पत्र-व्यवहार के पेपर थे। मैंने सारा दिन मैच देखने में लगा दिया इसलिए दूसरा कारण कोई अर्थ नहीं रखता।

5.25 रन एक ओवर में चाहिए। ‘मैंने कहा मैं कैटकुलेट किए बिना नहीं रह पाया। यही कारण है कि मुझे क्रिकेट पसंद है क्योंकि इसमें मैथ्स ज्यादा है।

‘तुम इस टीम को नहीं जानते। तेंदुलकर आऊट हो गया है। बाकी टीम उखड़ गई है। बात प्रतिशतता की नहीं। यह तो ऐसे है जैसे रानी मक्खी मर जाती है और छत्ता बिखर जाता है।’ ईशान ने कहा।

ओमी ने सिर हिलाया जैसे कि वे हमेशा करता है जब भी ईशान क्रिकेट के बारे में कोई बात करता है।

‘चलो छोड़ो, मेरा ख्याल है कि तुम जानते हो कि इम यहां मैच देखने के लिए इकट्ठे नहीं हुए। हम यहां यह फैसला करने के लिए इकट्ठे हुए हैं कि मि. ईशान अपने भविष्य में क्या करना चाहते हैं?’ मैंने कहा।

ईशान हमेशा ही इस विषय पर बात करने से कतराता है, जब से वह एन.डी.ए से भागा है एक वर्ष पहले। उसके डैड हमेशा उस पर व्यंग्य कसते हैं कि ‘हर साल केक काट कर मनाया करो कि एक साल तुम्हारा व्यर्थ हो गया।’

आज मैं उसके लिए एक प्लान बना कर लाया था। मैं जानता था कि हम सब इकट्ठे बैठें और अपने जीवन के, भविष्य के विषय में बातचीत करें। वेशक क्रिकेट के आगे जिन्दगी दूसरे नंबर पर आती है।

‘बाद में,’ ईशान ने एक क्रीम की ऐड देखते हुए कहा।

‘बाद में कब ईशान?’ मेरे पास एक आइडिया है जो हम सबके लिए ठीक रहेगा। हमारे पास ज्यादा रास्ते नहीं हैं चुनने के लिए, क्या है?’

‘हम सब के लिए?’ मैं भी ‘ओमी’ ने हैरानी से कहा। उस जैसे नासमझ किसी का, कहीं भी हिस्सा बनना पसंद करता है। इस बार हमें ओमी की जरूरत है।

‘हां, ओमी तुम एक अच्छे आलोचक हो पर ईश के बाद। जब?’

‘ओह, बस करो। देखो, मैच शुरू हो रहा है। ओ.के. डिनर पर बात करेंगे। चलो, आज गोपी के चलेंगे। ईश ने कहा।

‘गोपी? पेमेंट कौन करेगा?’ मैंने अपना ध्यान मैच की ओर किया, मैच शुरू हो चुका था।

पीं...पीं...पीं... कार के हार्न ने हमारी वार्ता में बाधा डाली। बाहर कार खड़ी पी.पी... कर रही थी।

‘ओह क्या मुसीबत है, मैं इस बदमाश को अभी सबक सिखाता हूं’ ईश ने खिड़की से बाहर झांकते हुए कहा।

‘क्या बात है?’

‘क्या अमीर बाप की बिगड़ी औलाद, हर रोज हमारे घर के चक्कर काटता है।’ ‘क्यों?’ मैंने पूछा।

‘विद्या के लिए। वह उसके साथ कोचिंग क्लासिस में था। विद्या ने शिकायत की थी वहां पर।’ ईश ने कहा।

पीं...पीं...पीं... कार दोबारा घर के नजदीक आ गई थी।

‘ओह मुसीबत। मैं मैच मिस नहीं करना चाहता।’ ईश ने कहा जैसे ही उसने इंडिया को चौका लगाते देखा।

ईश ने अपना बैट उठाया। हम घर से बाहर भागे। सिल्वर ऐस्टीम ने पोल को चक्कर काटा और दोबारा चक्कर लगाने लगी। ईश कार के सामने खड़ा हो गया और लड़के को रुकने के लिए कहा।

ऐस्टीम एकदम ईश के सामने आकर रुक गई। ईश ड्राइवर के पास गया, जो एक स्मार्ट जवान लड़का था।

‘एक्सक्यूज मी, तुम्हारी हैडलाईट बाहर लटक रही है।’

‘सच में लड़के ने कहा और लाईट बन्द कर दी। वह कार से बाहर निकला और सामने आया।

ईश ने उस लड़के को पीछे गर्दन से पकड़ा और जोर से उसका मुंह बोनेट पर मारा। फिर ईश ने बैट से उसकी हैड लाईट का शीशा तोड़ दिया। बल्ब बाहर लटकने लगा।

‘आप को क्या तकलीफ है,’ लड़के ने कहा, उसकी नाक से खून बह रहा था। ‘तुम मुझे बताओ, तुम्हें क्या है, तुम यहां आकर हार्न बजाते रहते हो।’ ईश ने कहा।

ईश ने उसका कालर पकड़ लिया और छः-सात थप्पड़ उसे जड़ दिए। ओमी ने बैट पकड़ा और कार की खिड़कियां तोड़ दी। शीशा चकनाचूर हो गया। लोग इकट्ठे हो गए। ऐसा लग रहा था जैसे गली की लड़ाई देखना सबसे अधिक मनोरंजन की बात है।

लड़का पीड़ा और डर से कांप रहा था। वह अपने डैडी को क्या बतायेगा कि उसकी कार का शीशा कैसे टूटा और उसके चेहरे को क्या हुआ।

ईश के पिता ने शोर सुना और बाहर आ गए। ईश ने लड़के को बुरी तरह से अपनी बांहों में जकड़ा हुआ था। लड़का सांस लेने के लिए छटपटा रहा था।

‘उसे छोड़ दो।’ ईश के पिता ने कहा।

ईश ने उसे और जोर से जकड़ लिया।

‘मैंने तुम्हें कहा उसे छोड़ दो,’ ईश के पिता चिल्लाए, ‘यह सब क्या हो रहा है?’ ‘यह पिछले हफ्ते से विद्या को तंग कर रहा है,’ ईश ने कहा। उसने लड़के को जोर से टांग मारी और छोड़ दिया। लड़का घुटनों के बल बैठ गया और जोर जोर से सांस लेने लगा। ईश के टांग मारने से उसके नाक से और खून बहने लगा और चेहरा खून से भर गया।

‘और जो तुम कर रहे हो क्या वो ठीक है?’ ईश के पिता ने कहा।

‘मैं उसे सबक सिखा रहा हूँ। ईश ने कहा और विंड-स्क्रीन में फंसा अपना बैट निकाला।

‘अच्छा, वैरी गुड, और तुम अपने सबक कम सीखोगे?’ ईश के पिता ने ईश को कहा।

ईश वहां से चला गया।

‘अब तुम जाओ’ ईश के पिता ने लड़के को कहा जो हाथ जोड़े खड़ा था। जब उसने देखा कि उसकी क्षमा की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा तो वह अपनी कार की तरफ मुड़ा।

ईश के पिता अपने पड़ोसियों की ओर मुड़े। ‘पूरे एक वर्ष से घर पर बैठा हुआ है। अपने ही देश की सेना से भाग आया है और अब दूसरों को सबक सिखाना चाहता है। वह और उसके लोफर दोस्त सारा दिन घर पर धमा-चौकड़ी मचाए रखते हैं। ईश ने अपने पिता को गहरी दृष्टि से देखा और घर के अंदर चला गया।

‘अब तुम क्या करने जा रहे हो?’ ईश के पिता चिल्लाए।

‘मैच देखने, क्या कोई कसर रह गई है मुझे लताड़ने की।’ ईश ने कहा।

‘जब तुमने अपनी सारी जिन्दगी ही बर्बाद कर दी है तो एक दिन से क्या फर्क पड़ता है।’ ईश के पिता ने कहा। पड़ोसियों ने भी उनकी हां में हां मिलाने के लिए सिर हिलाया।

पिछले पांच ओवर हमने मिस कर दिए। इंडिया जीत गई और ईश ज्यादा अप-सैट नहीं हुआ।

‘हां, हां, हां ईशान खुशी से उछला।’ आज गोपी के यहां मेरी तरफ से खाना रहा’ ईश ने कहा। मैं मूर्खों को पसंद करता हूँ।

असल में ईशान मूर्ख नहीं है। कम से कम ओमी जितना नहीं। दोनों पढ़ाई में लगे रहते हैं खास कर मैथ्स में और मैं मैथ्स में बहुत अच्छा हूँ। यह लेबल मेरे ऊपर चिपका हुआ है। केवल यही लेबल। मैं तीनों में सबसे गरीब हूँ। बेशक मैं एक दिन सबसे धनी बन जाऊंगा। फिर भी ईशान और ओमी भी ज्यादा अमीर नहीं हैं। ईशान के पिता टेलीफोन एक्सचेंज में हैं और बेशक उसके घर काफी फोन हैं पर उनकी तनख्वाह ठीक ठीक ही है। ओमी के पिता स्वामी भक्ति मंदिर में पुजारी हैं, जो असल में ओमी की ननिहाल वालों का है। और वो इसके लिए ज्यादा तनख्वाह भी नहीं देते। पर फिर भी वह मेरे और मेरी मां के मुकाबले काफी अच्छे हैं, आर्थिक रूप से।

मेरी मां गुजराती स्लैक्स बनाने का काम करती है और मैं कुछ ट्यूशन पढ़ाता हूँ। इसी से हमारी गुजर होती है।

‘हम जीत गए, हम जीत गए 3 - 1 सीरीज से’ ओमी ने दोहराया जो उसने टी.वी. स्क्रीन पर देखा। उसके लिए ऐसी मौलिक बात करना बहुत बड़ी बात थी। कुछ लोग कहते हैं कि ओमी पैदाइशी मूर्ख है, और कुछ कहते हैं कि छठी कक्षा में उसके सिर में कार्क-बाल लगने से उसके दिमाग पर असर पड़ा, तब से वह मूर्खतापूर्ण बातें करने लगा। मुझे कारण नहीं पता पर मैं इतना जानता हूँ कि उसके लिए पुजारी बन जाना ही सबसे अच्छा है। उसके आगे कोई अच्छा कैरियर नहीं है। मुश्किल से उसने प्लस-टू किया, वो भी दो बार मैथ्स में कम्पार्टमेंट आने के बाद। मेरा आइडिया अच्छा था पर वो पुजारी बनना नहीं चाहता।

मैंने खाकरा खाया। मेरी मां ईशान की मां से अच्छा बनाती है। हम इस काम में प्रोफेशनल हैं।

‘मैं घर जाकर कपड़े बदल कर आता हूँ और फिर हम गोपी के चलेंगे, ओ.के.?’ मैंने कहा जबकि ईशान और ओमी अभी भी खुशी से नाच रहे थे। भारतीय जीत के बाद नाचना हमने परंपरा बना ली थी, जब हम ग्यारह वर्ष के थे जो तेरह तक चलती रही और अब हम 21 वर्ष के हैं और बच्चों की तरह नाच रहे हैं। ओ.के. हम जीत गए, किसी ने तो जीतना ही था। मैथेमैटिकल टर्म में इसकी संभावना थी।

मैं घर आ गया।

पुराने शहर की तंग गलियां शाम की भीड़ से भरी हुई मेरे और ईशान के घर का फासला आधा कि.मी. था। मेरी दुनिया में सभी चीजों का फासला इतना ही है। मैं नाना पार्क से गुजरा। भारत के जीत जाने की खुशी में बच्चे वहां क्रिकेट खेल रहे थे। मैं भी अपने स्कूल-टार्म में मैं यहां रोज खेलता था। अब हम कभी-कभी यहां आते हैं पर अधिकतर भी घर के साथ बने हुए ग्राउंड में ही बैठते हैं।

एक टेनिस-बॉल मेरे पैरों से टकराई। लगभग 12 वर्ष का एक सुंदर सा लड़का मेरे पास आया भागता-भागता। मैंने गेंद उठाकर उसे दे दी। नाना पार्क में ही मैं ईशान और ओमी से पहली बार मिला था, पंद्रह वर्ष पहले। जब हमारी मित्रता हुई तब ऐसी कोई विशेष घटना नहीं घटी थी। शायद हम छः-छः वर्ष के हमउम्र थे, जो ग्राउंड में मिले और इकट्ठे खेलना आरंभ कर दिया।’

जैसे कि सभी पड़ोसी-बच्चे होते हैं, हम बलरामपुर म्यूनिसिपल स्कूल में जाने लगे, जो नाना पार्क से लगभग 100 मीटर दूर था। केवल मैं ही पड़ता था, ईशान और ओमी जब भी मौका मिलता पार्क में चले जाते। तंग गली में हम तीनों की साईकिलें एक दूसरे के आगे चलने की कोशिश में रहती। मुझे काजी रेस्तरां के कुछ अंदर को होना पड़ता क्योंकि उन दोनों को रास्ता देने के लिए। रेस्तरां का छोटा सा कमरा खाने की खुशबू से भरा होता। खानसामा रात का खाना तैयार कर रहा था, आम दिनों से बड़ी पार्टी भारत की जीत की खुशी में। ईशान और मैं कभी-कभी यहां आते थे (ओमी को बताए बिना) सस्ते खाने सौर विशेषकर मटन के लिए।

मालिक हमें पूरा भरोसा देता था कि मीट बकरी का है गाय का नहीं। मैं उसका विश्वास करता था, क्योंकि वह पड़ोस में नहीं रह सकता था अगर वो गो-मांस देता। गोपी की बजाय मैं यहां खाना चाहता था। पर हमने गोपी के यहां का प्रोग्राम बनाया था वैसे वहां भी काफी अच्छा खाना मिलता है। यहां खाना एक फैशन है, नशा है, विशेषतौर पर क्योंकि गुजरात एक ड्राई-स्टेट है। इसीलिए लोग यहाँ खाने का नशा करते हैं।

हां, अहमदाबाद मेरा शहर है। यह हैरानी की बात है, परन्तु जहां पर तुमने अपने जीवन का खुशी भरा, अच्छा समय गुजारा हो वहीं शहर तुम्हें दुनिया का सबसे अच्छा शहर लगेगा। मैं भी अहमदाबाद के विषय में ऐसा ही महसूस करता हूं। मैं जानता हूं कि अहमदाबाद, दिल्ली, बम्बई या बंगलौर की तरह बड़ा शहर नहीं। मैं जानता हूं कि इन महानगरों में रहने वाले लोग अहमदाबाद को एक छोटा टाउन मानते हैं, फिर भी यह ऐसी बात नहीं। अहमदाबाद भारत का छठा बड़ा शहर है, जिसकी आबादी 5 करोड़ के लगभग है। हां यदि तुम किसी विशेष वस्तु के महत्व को देखते हो तो शायद यह पहले नम्बर पर नहीं आता। मैं आपको बताऊंगा कि अहमदाबाद देहली से अधिक बहुपक्षीय है और इसकी सड़कें बम्बई की सड़कों से ज्यादा अच्छी हैं। बंगलौर से अधिक अच्छे रेस्तरां हैं - पर आप मेरा विश्वास नहीं करोगे। और आप करोगे भी, तो भी इस तरफ इतना ध्यान नहीं दोगे। मुझे पता है कि यहां का बेलरामपुर बांद्रा नहीं है पर मैं ऐसी तुलना क्यों कर रहा हूं, छोटे शहर में रहना क्या कोई बुरी बात है। हैरानी की बात यह है कि छोटे शहरों रहने वाले लोग कहते हैं कि वास्तविक भारत यहीं है। मेरा अनुमान है ऐसे लोगों का यह मानना है कि बड़े शहरों का भारत किसी विशेष स्तर पर अमानवीय लगता है। हां, मैं पुराने शहर अंदाबाद का रहने वाला हूं और मुझे इस बात पर गर्व है। हमारे यहां कोई फैशन-शो नहीं होते और हम पसंद करते हैं कि हमारे यहां की औरतें उचित कपड़े पहनती रहें। मैं इसमें कुछ गलत नहीं समझता। मैं काजी रेस्तरां से बाहर निकला और घर की राह पकड़ी, पोल के पास से ओमी के मंदिर की तरफ मुड़ा। बेशक, हम इसे ओमी का मंदिर ही कहते हैं, क्योंकि वह वहीं पर रहता है, पर उसका वास्तविक नाम है स्वामी भक्ति मंदिर ज्यों ही मैं अपनी गली का मोड़ मुड़ा, दो व्यक्ति कूड़ा पोल के पास फेंकने के चक्कर में परस्पर लड़ रहे थे।

अपने छोटे से उस कस्बे में पड़ोसियों के व्यवहार के लिए मैं कुछ बदलाव लाना चाहता हूं। कुछ बातों में यह बाकी के अहमदाबाद से बहुत पीछे है। पर यह पुराना शहर और अधिक साफ रह- सकता है। साबरमती के पार नया शहर बसा हुआ है, जहां शीशे और स्टील के चमकते भवन हैं, शहर साफ है जबकि पुराने शहर का कूड़ा-कंकट भी समय पर साफ करवाना कठिन है।

मैं एक और चीज बदलना चाहता हूं। लोग जो एक दूसरे के बारे में बातें बनाते हैं गलत विचार धाराएं बनाते और फैलाते हैं। जैसे कि ओमी के मूर्ख बनने की बात कि क्रिकेट बॉल सिर पर लगने से दिमाग पर असर हो गया। इसका कोई आधार नहीं पर बेलरामपुर का हर व्यक्ति यही बात कहता है और ईश के बारे में कि वह एनडीए से निकाला गया था भागा नहीं था। मैं जानता हूं कि यह बात सच नहीं है। ईशान उन लाजवाब अधिकारियों के प्रति जवाबदेह न हो सका। वैसे वो आर्मी में जाने का इच्छुक था (क्योंकि उसके पास और कोई रास्ता नहीं था) पर वह कुछ मेजर-अधिकारियों के हुक्मों का पालन अगले बीस वर्षों तक करने में स्वयं को असमर्थ पा रहा था। इसीलिए उसने हर्जाना भरा और कुछ व्यक्तित्व समस्याएं - जैसे कि माता-पिता की बीमारी तथा ऐसी ही कुछ और - बता कर वहां से बेलरामपुर वापिस आ गया था।

बेशक एक और चीज़ मैं समाप्त करना चाहता था जो, सबसे जरूरी थी, विधि का विधान - मैं उस दिन भावुकताहीन हो गया था जब मेरे पिता मुझे और मां को दस वर्ष पहले छोड़ कर चले गए थे। और हमें पता चला



कि उसी शहर में उनकी एक और पत्नी भी है। जहां तक मुझे याद है मैं भावुकता को पसंद नहीं करता। मुझे मैथ्स अच्छा लगता है, तर्क अच्छा लगता है और इनमें भावुकता का कहीं कोई स्थान नहीं है। मेरा विचार है कि लोग भावुकता में बहुत समय बर्बाद करते हैं। भावुकता का सबसे बड़ा उदाहरण है, मेरी मां। पिता के चले जाने के बाद महीनों रोने-धोने का सिलसिला चलता रहा, जो भी औरतें उनके पास हमदर्दी जताने आतीं। मां ने एक और वर्ष ऐसे ही बिता दिया ज्योतिषियों से ग्रहों के बारे में पूछने में। कौन सा ग्रह उसके पति का उससे दूर ले गया और यह स्थिति कब बदलेगी। फिर मासी-मामियों का तांता लगा रहा कि मेरी मां अकेली नहीं रह सकती। यह सिलसिला तब तक चलता रहा जब तक मैं पंद्रह वर्ष का नहीं हो गया। फिर मैंने मां को स्लैक्स का बिजनैस करने के लिए तैयार कर लिया, जीवन-निर्वाह के लिए। अब तक उसके काफी आभूषण बिक चुके थे।

उसके स्लैक्स अच्छे थे पर वह अच्छा बिजनैस नहीं कर सकती थी। भावुक लोग अच्छे बिजनैसमैन नहीं बन सकते। वो उधार बेचती थी और नकद सामान खरीदती थी। पहली गलती जो एक छोटा बिजनैसमैन करता है। दूसरी बात वह हिसाब नहीं रखती थी। घर का खर्चा अक्सर बिजनैस के खर्चों में मिल जाता था। और अक्सर महीनों हम यह फैसला करते रहे कि पहले घर के लिए चावल खरीदे जायें या पापड़ों के लिए काली मिर्च।

इसी दौरान, मैं जितना पढ़ सकता था, पढ़ा। हमारा स्कूल ऑक्सफोर्ड नहीं था जहां अध्ययन पर अधिक जोर दिया जाता, पढ़ने पर कम ध्यान था अध्यापकों का और विद्यार्थियों से ज्यादा क्लासों को अध्यापक छोड़ते थे। इस पर भी मैं हर वर्ष मैथ्स में पहले नंबर पर होता। लोगों ने सोचा कि ये मुझे वरदान मिला है जब मैंने दसवीं क्लास में 100 नंबर लिए। पर मेरे लिए यह कोई बहुत बड़ा काम नहीं था। चर्चाओं का पहली बार मुझे लाभ हुआ। मेरे नंबरों के विषय में होने वाली लोगों की चर्चा ने हमारी आय का साधन बढ़ा दिया - ट्युशन। बेलरामपुर में मात्र मैं ही मैथ्स का ट्युशन पढ़ाने वाला था। स्लैक्स के साथ-साथ ट्रिगनोमैट्री और अल्जब्रा भी पटेल हाऊस होल्ड में आय का साधन बन गया। बेशक यही गरीब तबका था, वे अधिक फीस नहीं दे पाते थे। फिर भी धीरे-धीरे हमारा जीवन स्तर बढ़ने लगा। पंखे की जगह कूलर आ गया और कुर्सियों की जगह पुराने खरीदे गए सोफे ने ले ली। जिन्दगी अच्छी हो गई थी।

मैं ओमी के मंदिर पहुंचा। मंदिर से आने वाली घंटियों की आवाज ने मेरा ध्यान भंग किया। मैंने समय देखा छः बजे थे। प्रतिदिन की आरती का समय था। मैंने ओमी के पिता को देखा, उनकी आंखें बंद थी और वो मंत्र बोल रहे थे। बेशक मैं इन बातों में अधिक विश्वास नहीं करता फिर भी मैंने देखा कि उनके चेहरे पर एक नूर था, रौशनी थी, ईश्वर को याद करते समय, उसके प्रति प्रार्थना करते समय ऐसा होना स्वभाविक था। उसके पिता वहां के लोगों में काफी लोकप्रिय थे। ओमी की मां भी उनके साथ हाथ जोड़े खड़ी थी। उन्होंने मैरून रंग की साड़ी पहनी हुई थी और सिर ढका हुआ था। उनके साथ ही बिन्दु मामा- ओमी के मामा खड़े थे। जुड़े हुए हाथों के कारण उनकी बांहें और भी मांसल दिखाई दे रही थी। उनकी आंखें भी भगवान कृष्ण और राधा की स्तुति में लीन थीं।

ओमी आरती में अभी तक नहीं पहुंचा था। इसके लिए उसे घर वालों की नाराजगी सहनी पड़ेगी। पर ऐसा पहली बार नहीं हुआ। इस वक्त 6 बजे नाना पार्क में होने वाले मैच कठिन दौर से गुजर रहे हैं।

‘मैच कैसा रहा?’ मां ने कहा ज्यों ही मैं घर पहुंचा। वह घर के बाहर ही खड़ी थी।

उसने अभी-अभी सारा सामान ऑटो में रखवाया था - एक शादी समारोह के लिए ताजा ढोकला। मेरी मां अब काफी माहिर हो गई थी हर तरह से अपने काम में। उसने ऑटो में से एक ढोकला निकाल कर मुझे दिया। गलत बात - किसी भी ग्राहक के सामान में से कुछ निकाल लेना गलत बात है बिजनैस में।

‘बहुत अच्छा रहा, प्वाइंट पर पहुंच गए थे, पर जीत गए। मैंने अंदर आते हुए कहा। मैंने कमरे में पहुंच कर ट्यूब लाइट जलाई। हमारे क्षेत्र में दिन में भी घरों में लाइट जलानी पड़ती है।

‘अगर दीवाली पर मेरा काम अच्छा हुआ तो मैं तुम्हें क्लर टी.वी. ले दूंगी।’ मां ने कहा।

‘कोई जरूरत नहीं’ मैंने नहाने जाने से पहले जूते उतारते हुए कहा।’ तुम्हें अपने काम के लिए बड़ा ग्राइंडर लेना चाहिए, छोटे से अब काम नहीं चलता।’

‘मैं टी.वी. तभी खरीदूंगी अगर मुझे ज्यादा आय हुई हो तो।’ मां ने कहा।

‘नहीं अगर ज्यादा आय हुई तो उसे बिजनैस में ही लगा देना? फिजूल की चीजें न खरीदो। मैं मैच ईशान के घर क्लर टी.वी पर देख लेता हूं।’

माँ कमरे से बाहर चली गई। वह जानती थी कि मेरे साथ बहस करना व्यर्थ है। पिता के न होने से घर में मेरी कितनी सुनवाई है हैरानी की बात है। और केवल मैं यह आशा करता हूँ कि ईश और ओमी भी मेरे सुझाव सुनेंगे।

बिजनैस में मेरी दिलचस्पी तब उत्पन्न हुई जब मैंने ट्यूशन पढ़ानी शुरू की। कितनी खुशी होती थी पैसा कमाने में। धन से न केवल वस्तुएं आती थीं - जैसे कूलर, सोफा आदि बल्कि एक और भी अत्याधिक वस्तु प्राप्त होती थी और वह थी - इज्जत-सम्मान। दुकानदार अब हमसे बचते नहीं थे, रिश्तेदारों ने हमें फिर से शादियों में बुलाना शुरू कर दिया था, अब हमारा मकान-मालिक भी कोई ऊँची-नीची बात नहीं करता था। और भी रोमांच यह था कि किसी बाँस के नीचे या कुछ खर्च करके कमाई नहीं कर रहा था। मैं अपनी किस्मत का फैसला स्वयं करता था, कितने विद्यार्थियों को पढ़ाना है, कितने घंटों के लिए क्लास के हिसाब से - ये मेरे स्वयं के फैसले होते थे।

गुजरातियों की विशेषता है - बिजनैस को प्यार करना और अम्बावादी इसे सबसे ज्यादा प्यार करते हैं। भारत में गुजरात ही एक ऐसा राज्य है जहाँ लोग उन लोगों की अधिक इज्जत करते हैं, जो बिजनैस करते हैं अपितु उन लोगों के जो नौकरी-पेशे में हैं। देश के शेष राज्यों के लोग अच्छी आरामदायक नौकरी चाहते हैं जिसमें अच्छी आय हो और जीवन भर के लिए निश्चितता हो। अहमदाबाद में नौकरी कमजोर लोग करते हैं। इसलिए मेरा सबसे बड़ा सपना था कि एक दिन मैं बहुत बड़ा बिजनैसमैन बनूँ। कमी थी तो केवल पूंजी की। मैंने निश्चय कर लिया कि मैं धीरे-धीरे धन कमाऊंगा और फिर अपना सपना पूरा करूंगा। ईश अपना सपना भारतीय क्रिकेट टीम में होने का कभी पूरा नहीं कर पाएगा, पर उसका यह सपना आरंभ करने के लिए मूर्खतापूर्ण सपना है। अरबों लोगों वाले देश के पहले ग्यारह में होना असंभव है और बेशक ईश बेलरामपुर में ट्रॉप पर है। वह तेंदुलकर नहीं था। मेरा सपना वास्तविकता के समीप है। मैं थोड़े से चलूंगा और धीरे-धीरे अपना बिजनैस बढ़ाऊंगा। सैकड़ों से हजारों, हजारों से लाखों फिर करोड़ों फिर और भी आगे।

मैं शावर के नीचे से आ गया और कपड़े पहने। 'कुछ खाना खाना चाहते हो?' मेरी माँ की आवाज थी, किचन में से हमेशा की तरह।

'नहीं, मैं ईश और ओमी के साथ गोपी के यहां जा रहा हूँ।' गोपी? क्यों मैं भी वहीं चीजें बनाती हूँ। गोपी के यहां ऐसा तुम्हें क्या मिलता है, जो मैं तुम्हें घर पर नहीं दे सकती। शांति और अकेलापन - मैं कहना चाहता था।

'यह ईश की तरफ से ट्रीट है। और मैं अपने नए बिजनैस के बारे में उनसे बात करना चाहता हूँ।

'तो तुम इंजीनियरिंग में दोबारा दाखिला नहीं ले रहे।' मेरी माँ रसोईपर से बाहर आई। उसने आटे से सने हाथ ऊपर उठाए, तुम एक वर्ष अपनी तैयारी कर सकते हो। कुछ समय के लिए ट्यूशन बंद कर दो। अब हमारे पास पैसे हैं।

मेरी माँ बहुत सी बातों के लिए शर्मिंदा महसूस करती। इनमें से एक मैं हूँ कि मुझे अच्छे इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ा नहीं पाई। ट्यूशन पढ़ाना और माँ का बिजनैस में मदद करना - उनको लगता था कि इन कारणों से मैं प्रदेश परीक्षा की पूरी तैयारी के लिए समय नहीं निकाल पाता। मैं ये सब कुछ आई.आई.टी. या किसी टॉप संस्थान में जाने के लिए नहीं कर रहा था। मैं दूर कच्छ में, कालेज जाना चाहता था, पर ट्यूशन्स का छोड़ना, दोस्तों को, नाना पार्क में होने वाले क्रिकेट को छोड़ना और सबसे ऊपर माँ को छोड़ना - इन सबके सामने कच्छ जाना कुछ अर्थ नहीं रखता था। यह बात नहीं थी कि इन सब के प्रति भावुक था। परन्तु ये सब मुझे ठीक बिजनैस नहीं लगता था। मैं यह अंदावाद विश्वविद्यालय से, अपनी ट्यूशन्स जारी रखकर और बिजनैस के बारे में विचार बनाते हुए - मैथ्स ऑनर कर सकूंगा।' और फिर कच्छ कॉलेज जॉब का भरोसा नहीं देता।

'माँ, मैं इंजीनियर नहीं बनना चाहता। मेरा दिल बिजनैस करने को करता है। और फिर मैं दो वर्ष कॉलेज में लगा चुका हूँ। एक वर्ष और, फिर मैं ग्रेजुएट हो जाऊँगा। 'पर मैथ्स के ग्रेजुएट को नौकरी कौन देगा?'

यह सच था। मैथ्स ऑनर होना आर्थिक दृष्टि से मूर्खतापूर्ण था।

'ठीक है, ओ.के. मुझे एक डिग्री की जरूरत है और मैं इसे प्राप्त कर लूंगा अधिक पढ़े बिना भी।' मैंने कहा, 'माँ मैं एक बिजनैसमैन हूँ। मैं बदल नहीं सकता। मेरी माँ ने मेरे चेहरे को थपथपाया, उसके हाथों में सना आटा मेरे चेहरे पर लग गया।

'जो भी बनो, पर पहले तो तुम मेरे बेटे ही हो।' उसने मुझे अपने सीने से लगाया। मुझे इस बात से बड़ी नफरत है। मैं भावुकता से भी ज्यादा भावुकता के इजहार को नफरत करता हूँ।

‘मुझे जाना चाहिए।’

‘यह तुम्हारी दसवीं चपाती है।’ ईश ने ओमी को बताया।

‘नौवीं, पर कौन परवाह करता है? किस्मत की मार है। क्या तुम मुझे घी पकड़ा सकते हो?’

‘यह सभी खाना, यह तुम्हारे लिए बुरा है। ईश ने कहा।

‘दो, सौ चक्कर काम के लिए, ओमी ने कहा, ‘दस चक्कर नाना पार्क के, एक छोटा बिट्टू मामा के घर के जिम में, अगर तुम्हें हर रोज मेरी तरह ये सब करना पड़े तो तुम भी मेरी तरह पेटू बन जाओगे।’

ओमी ओमी जैसे ग्राहकों से कोई कमाई नहीं होती। गोपी उससे किसी भी तरीके से धन नहीं कमा सकता।

‘आमरस और रस मलाई बस,, ओमी ने वेटर से कहा। ईश और मैंने भी उसकी हां में सिर हिलाया।

‘अब बताओ, क्या बात है? मैं सुन रहा हूं।’ ईश ने कहा आमरस समाप्त करते हुए।

‘पहले अपना खाना समाप्त कर लो। हम चाय पर बात करेंगे।’ मैंने कहा। भरे पेट लोग तर्क कम करते हैं।

‘मैं चाय की पेमेंट नहीं करूंगा। मेरी ट्रीट थाली तक थी।’ ईशान ने विरोध किया। ‘चाय मेरी तरफ से’ मैंने कहा।

‘शांत रहो, दोस्त। मैं केवल मजाक कर रहा था। मि. एकाउंटेंट मजाक भी नहीं समझता, क्यों ओमी?’

ओमी हंसा।

‘जो भी हो दोस्तों, आज तुम्हें मेरी बात सुननी ही होगी। और हां, मुझे मि. एकाउंटेंट कहना बंद करो।’

मैंने चाय का आर्डर दिया। वेटर खाने का समान उठा कर ले गया था।

‘मैं गंभीर हूं, ईश। भविष्य के लिए तुम्हारी क्या योजना है? अब हम बच्चे नहीं रहे।’ मैंने कहा।

‘बदकिस्मती से, ईश ने एक लम्बी सांस लेते हुए। ‘ओ.के. फिर। मैं किसी जॉब के लिए कोशिश करता हूं। या फिर पहले NIIT कम्प्यूटर कोर्स कर लेता हूं। या फिर मैं बीमा करने का काम कर लेता हूं? तुम क्या कहते हो?’

मैंने ईश का चेहरा देखा, वह हंसने की कोशिश कर रहा था, पर मैं उसके चेहरे पर साफ झलकता दुःख देख रहा था। बेलरामपुर का चैम्पियन बल्लेबाज बीमा-एजेंट बनेगा। बेलरामपुर के बच्चों को नाना पार्क में बाउंड्रीज की वाह-वाही करते बड़े हुए। परन्तु अब जब उसका कोई भविष्य नहीं, वह दूसरे लोगों के जीवन का बीमा करना चाहता था।

ओमी ने मेरी तरफ देखा, यह उम्मीद करते हुए कि मैं अपनी कोई संत-वाणी करूंगा मैं उनको बड़ों की जगह पर सलाह देते ऐसे थक गया था।

‘मैं कोई बिजनैस शुरू करना चाहता हूं। मैंने स्वयं बात शुरू की।

‘दोबारा नहीं’ ईश ने कहा, ‘मैं यह नहीं कर सकता दोस्त। पिछली बार क्या हुआ? ओह। सारा दिन तरबूज नहीं तौल सकता!! और एक यह सनकी ओमी।’

‘कार के स्पेयर पार्ट्स। उसमें काफी पैसा है।’ ओमी ने कहा।

‘क्या? चारा दिन सीट-क्लर चढ़ाते रहो और न जाने क्या-क्या। नहीं धन्यवाद। ये कौन सा बिजनैस है?’ ईश ने कंधा हिलाया।

‘फिर तुम क्या करना चाहते हो? लोगों की मिन्नतें करना बीमा करवाने के लिए। या फिर गलियों के मोड़ पर क्रेडिट कार्ड बेचना चाहते हो? तुम ईश, एक मिलेट्री स्कूल से निकले हुए हो,’ मैंने कहा और सांस रोक ली।’ और XII में तुम्हारी कंपार्टमेंट आई है दो बार। ओमी तुम तो एक पुजारी बन सकते हो। पर हमारा क्या होगा?’

‘मैं पुजारी नहीं बनना चाहता’ ओमी ने बिना रुके कहा।

‘फिर तुमने मेरा विरोध क्यों किया अभी तो मैंने शुरू भी नहीं किया? इस बार मेरे पास एक योजना है जो तुम्हें भी पसंद आएगी।’

‘कौन सी?’ ईश ने कहा।

‘क्रिकेट।’ मैंने कहा।

‘क्या?’ दोनों एक साथ बोले। ‘देखा, तुम्हारा ध्यान एक दम मेरी तरफ हो गया। अब मैं बात कर सकता हूँ।’  
‘जरूर’ ईश ने हाथ हिलाया।

मैं जानबूझ कर वॉशरूम में चला गया।

‘पर कैसे?’ ओमी ने प्रश्न किया जैसे ही मैं वापिस आया।

‘क्रिकेट शॉप क्या होती है?’

‘खेलों की दुकान बेशक। पर क्योंकि क्रिकेट बेलरामपुर में सबसे अधिक लोकप्रिय गेम है इसलिए हम अपना अधिक ध्यान इसी पर देंगे?’

ईश की चुप्पी इस बात पर संकेत थी कि यह मेरी बात ध्यान से सुन रहा है। ‘यह एक छोटी सी रीटेल शाप होगी। दुकान के लिए पूंजी लगाने की समस्या है तो इसके लिए मुझे ओमी की मदद की जरूरत है।’

‘मेरी?’ ओमी ने कहा।

‘हां, हम यह दुकान स्वामी मंदिर के अंदर खोलेंगे, जहां फूलों और पूजा के समान की दुकानें हैं उनके साथ। मैंने वहां एक खाली दुकान देखी है जो मंदिर की जमीन का ही हिस्सा है।’

‘मंदिर के क्षेत्र में क्रिकेट की दुकान?’ ईश ने प्रश्न किया।

‘रुको! ओमी क्या तुम इसका प्रबन्ध कर सकते हो?’

इसके बिना तो हमारा काम शुरू ही नहीं हो सकता।’

‘तुम्हारा मतलब कुबेर मिठाई वाले की दुकान से है, जो अभी-अभी बंद हुई है? मंदिर की कमेटी इसे जल्दी ही किराये पर चढा देगी। और वो किसी ऐसे व्यक्ति को ही देंगे जो मंदिर से संबंधित समान रखेगा।’ ओमी ने कहा।

‘मैं जानता हूँ। पर तुम्हें अपने पिता को तैयार करना होगा और फिर वे ही तो मंदिर का सारा प्रबंध करते हैं।’

‘हां, वे करते हैं पर दुकानें तो मां देखती है। क्या हम उन्हें किराया देंगे?’

‘हां’ मैंने गहरी सांस ली। ‘पर एक दम नहीं। हमें दो महीने का समय चाहिए? और यह भी कि हम कोई पगड़ी भी नहीं दे सकते।’

‘मैं मां से बात करूंगा। ओमी ने कहा। मैंने सोचा अच्छी बात है। उसका दिमाग काम कर रहा है।

‘सॉरी। पर मुझे कहना पड़ रहा है कि मंदिर के अंदर एक क्रिकेट-शॉप, कौन समान खरीदेगा। कीर्तन करने आने वाली सत्तर साल की बूढ़ी आटियां क्या बैट-बाल खरीदेंगी?’ ईश ने मजाक किया।

वेटर ने चाय के कप उठा लिए और बिल दे गया। गोपी के नियमानुसार अब हमें दो मिनट के अंदर रेस्तरां छोड़ना था।

‘अच्छा प्रश्न है। मंदिर के साथ एक क्रिकेट-शॉप हैरानी की बात है। पर सोचो - क्या बेलरामपुर में कहीं भी ऐसी दुकान है?’

‘सच में ही। यहां तो लैडर बाल भी नहीं मिलती, उसके लिए भी एलिस ब्रिज जाना पड़ता है।’ ईश ने कहा।

‘देखा, यह तो हुई एक बात। नम्बर, दो बच्चों के लिए मंदिर सबसे बोरिंग स्थान है। वो यहां आकर क्या करें?’

‘यह तो सच है’, ओमी ने कहा, ‘तभी तो बहुत से गुब्बारे वाले मंदिर के बाहर घूमते रहते हैं।’

‘और फिर यहां ईश का काम शुरू होता है। लोग जानते हैं कि वह एक अच्छा प्लेयर था। तुम बच्चों को खेलने के टिप्स सिखा सकते हो, जो हमारे पास समान खरीदने आयेंगे। धीरे-धीरे हमारी प्रसिद्धि हो जायेगी।’

‘पर क्रिश्चियन और मुसलमान बच्चों का क्या होगा। वो तो नहीं आयेंगे?’ ईश ने कहा।

‘पहले तो नहीं, पर दुकान मंदिर के बाहर है। जैसे ही उन्हें पता चलेगा वो आयेंगे। उनके पास और कोई चारा भी तो नहीं।’

‘जो हम बेचेंगे उसे लायेंगे कहां से?’ ईश ने कहा।

‘बस्त्रपुर में एक सप्लायर है जो खेलों का सामान बेचता है, जो हमें एक महीने के लिए उधार पर दे देगा। अगर हमारे पास जगह है तो हम बिना कैश के भी जा सकते हैं।’

‘अगर काम न चला तो?’ ईश ने संदेह प्रकट किया।

‘अगर ऐसा हो भी गया तो हम सारा सामान कम कीमत पर बेच देंगे और जो रह जायेगा उसे मैं ट्यूशन करके पूरा कर दूंगा।’ पर, मेरा दोस्त ऐसा नहीं होगा, काम

जरूर चलेगा अगर हम दिल लगा कर करेंगे तो?’

दोनों चुप रहे।

‘दोस्तों, मुझे तुम्हारी जरूरत है। इसके लिए मैं बिज़नेस करना चाहता हूं। भागीदारों के बिना यह काम नहीं हो सकता। यह भी क्रिकेट है।’ मैंने ईश को विनती की। ‘मैं तैयार हूं।’ ओमी हंसा, ‘मैं पुजारी नहीं बनना चाहता और मैं घर से ही काम करना चाहता है। इसलिए मुझे मंजूर है।’

‘मैं हिसाब का काम नहीं करूंगा। मैं केवल क्रिकेट पर ध्यान लगाऊंगा।’ ईश ने कहा।

मैं हंसा। यह लाईन पर आ रहा है।

‘बेशक। क्या तुम सोचते हो कि मैं तुम्हें कैश का काम करने को कहूंगा? तो क्या हम पार्टनर बन गए?’ मैंने बाहें फैला दीं। हम सभी चल पड़े।

‘हम इसे क्या कहेंगे?’ ओमी ने ऑटो में बैठते हुए कहा।

‘ईश से पूछो’ मैंने कहा, ‘अगर ईश इसका नाम रखेगा तो वह इससे ज्यादा लगाव महसूस करेगा।’

‘टीम इंडिया क्रिकेट शॉप, कैसा रहेगा’, ईश ने सुझाया।

‘अच्छा नाम है’, मैंने ईश के चेहरे पर मुस्कराहट देखी पहली बार उस शाम को।

‘2 रू. 50 पैसे हरेक के’ ऑटो जैसे ही मेरे पोल के पास रुका।

‘मि. एकाउंटेंट ठीक है’ और उसने अपना किराया दे दिया।

दो

‘टीम इंडिया क्रिकेट शॉप’ 29 अप्रैल 2000, को खुल गई।

उद्घाटन के लिए नारियल तोड़ा गया। हमारे तीनों के परिवार इसमें सम्मिलित हुए। ओमी का परिवार और मेरी मां खुश नजर आ रहे थे जबकि ईश का परिवार चुप रहा। वे अब भी ईश को आर्मी अफसर के रूप में देख रहे थे न कि बेलरामपुर में एक दुकानदार के तौर पर।

‘ईश्वर करे देवी की तुम पर कृपा रहे, मेहनती बच्चों’ ओमी की मां ने आशीर्वाद दिया और फिर वे चले गए।

‘जल्दी ही, हम और हमारी दुकान रह गई।

काउंटर को अंदर कर दो, वरना शटर बंद नहीं होगा’ ईश ने ओमी से कहा। ओमी पसीने से नहा गया भारी काउंटर अंदर करने में, अभी भी एक इंच की कमी रह गई थी।

मैं दुकान से बाहर सड़क की तरफ गया। यह दसवीं बार थी कि वहां दुकान का बोर्ड देखने गया। बोर्ड 6 फुट चौड़ा और 2 फुट ऊंचा था। हमने इसे नीले रंग से पेंट किया था - इंडियन टीम का रंग। बीच में लिखा था ‘टीम इंडिया, क्रिकेट शॉप’ भारतीय झंडे वाले रंगों से। शाहपुर के पेंटर ने बोर्ड बनाया था। उसने बोर्ड पर तेंदुलकर और गांगुली के चेहरे मुफ्त में बना दिए थे। इससे बोर्ड और भी आकर्षक लग रहा था। ‘बोर्ड बहुत सुंदर है’ ओमी ने कहा। वह भी मेरे साथ आकर बोर्ड देख रहा था। हमारा पहला ग्राहक दोपहर 12 बजे आया। दस वर्ष से कम उम्र का एक लड़का हमारी दुकान के सामने टहलने लगा, उसकी मां पूजा के लिए फूल ले रही थी। हम सचेत होकर खड़े हो गए।

‘क्या हमें उससे पूछना चाहिए कि वह क्या चाहता है’ ओमी ने धीरे से पूछा। मैंने सिर हिलाया।

लड़का टेनिस की बॉल देख रहा था, बाउंस भी की उसने कुछ बॉलें। जबकि बेलरामपुर में कोई भी टेनिस नहीं खेलता बच्चे इन बालों से क्रिकेट ही खेलते हैं।’ बॉल कितने की हैं, लड़के का ध्यान साधारण गेंदों की ओर हो गया। साफ था कि बच्चा कीमत के बारे में चौकस है। उसने पांच गेंदे धरती पर उछाल कर देखीं। ‘आठ रुपए। तुम्हें एक चाहिए।’ मैंने कहा।

उसने सिर हिलाया।

‘तुम्हारे पास पैसे हैं’

‘मम्मी के पास हैं’ उसने कहा।

‘मम्मी कहां है?’

‘वहां’ उसने मंदिर की दूसरी, दुकानों की ओर इशारा किया। मैंने गेंदे टोकरी में डाल दीं जो उसने चुनी थीं।

उसकी मां जल्दी से हमारी दुकान की तरफ आई।

‘सोनू तुम यहां हो, बेवकूफ लड़के’ उसने उसकी बांह पकड़ी और खींच कर ले गई।

‘मम्मी बॉल’ वह अपनी खरीददारी के विषय में इतना ही कह पाया।

‘चिंता न करो, हम बेचेंगे’ मैंने अपने बिजनैस पार्टनर्स से कहा।

हमने जल्दी ही अपनी पहली सेल की। दो जवानभाई, बड़े अच्छे कपड़े पहने हुए थे, दुकान पर आए।

‘टेनिस बॉल, कितने की है। एक ने पूछा।

‘आठ बक ऐरो के, छः बक साधारण बाल के जो बास्केट में पड़े हैं, ईश ने कहा। लड़के साधारण बास्केट की तरफ गए और जमीन पर गेंद मार-मार कर देखने लगे। मेरे दिल को कुछ-कुछ होने लगा।

‘तो तुम क्रिकेट कहां खेलते हो’ ईश ने उनसे पूछा।

‘सेटेलाईट’ बड़े लड़के ने कहा।

सेटेलाईट साबरमती दरिया के दूसरी तरफ एक मार्किट है।

‘तुम पुराने शहर में क्या करने आए हो?’ ईश ने कहा।

‘हम मंदिर आए हैं। आज हर्ष भईया का जन्म दिन है।’ छोटे लड़के ने कहा। ‘मैंने महसूस किया कि वाकई अच्छी जगह ढूंढी हैं। मंदिर काफी पुराना है और नई आबादी से भी लोग यहां आते हैं और जन्मदिन भी है। जेबें भी भरी होंगी।’

‘तुम बैट लेना चाहोगे?’ मैंने काउंटर के पीछे से कहा।

लड़कों ने सिर हिलाया।

ईश ने मेरी तरफ देखा और चुप रहने का संकेत दिया।

‘हैपी बर्थ डे हर्ष तुम बॉलर हो या बैट्समैन?’ ईश ने कहा।

हर्ष ने ईशान की ओर देखा, एक बड़ा व्यक्ति एक ग्यारह वर्ष के लड़के से पूछ रहा है कि वो बॉलर है या बैट्समैन, बड़े मान की बात है। इसका मतलब है वो अब इतना बड़ा हो गया है कि खास बन सकता है, बेशक उसने यह बात पहले कभी नहीं सोची होगी।

‘मैं ज्यादा बैट्समैन हूं’ हर्ष ने कहा।

‘डिफेंस में या खेलने में?’ ईश ऐसे पूछ रहा था मानो ईएसपीएन पर तेंदुलकर को इंटरव्यू ले रहा हो।

‘हूँ?’ हर्ष ने कहा।

‘तुम शॉट्स पसंद करते हो?’ ईश ने कहा ‘जो अक्सर बच्चे पसंद नहीं करते’ हर्ष ने सिर हिलाया।

‘मुझे खेल कर दिखाओ।’ ईश ने कहा। वह मेरी तरफ मुड़ा। और एक बैट देने को कहा। मैं विलो वैटस वाली साईड से मुड़ा। मैंने इन्हें सीधे ही एक कश्मीरी सप्लायर से लॉ गार्डन से खरीदा था। मैंने लड़के के मुताबिक बैट चुना। 6 नं. का और 200 रु. का। ज्यादा कीमत नहीं थी बेशक, पर यहां जितने का बिक सकता था।

हर्ष ने एक हिट लगाई, दुकान के सामने ही। हर बच्चे की तरह उसने खड़े-खड़े अपना सारा बोझ बैट पर डाल दिया। ईश ने आगे बढ़कर हल्के से उसकी पीठ थपथपाई। उसने हर्ष की कलाई और उसे बताया कि बैट के साथ खड़े होकर कैसे बोझ टांगों पर डालना है।

‘और अब, जब भी तुम हिट करो आगे बढ़ने के लिए अगली टांग को आगे बढ़ाओ और पिछली टांग को न भूलो। वह तुम्हारी सपोर्ट होगी। तेंदुलकर को ध्यान से देखना वह अपनी एक टांग फिक्स रखता है।’

हर्ष ने कुछ स्ट्रोक्स लगाए।

‘मुझे भी कुछ तरीके सिखाओ’ छोटे ने कहा।

‘पहले मुझे, चीनू’ हर्ष ने कहा।

ईश चीनू की तरफ मुड़ा - ‘तुम क्या हो चीनू?’

‘आल राउंडर’ चीनू ने तुरंत जवाब दिया।

‘ग्रेट! मुझे अपनी गेंदबाजी दिखाओ।’

उनके माता-पिता ने आखिर में हमारी दुकान ढूंढ ली।

अब मंदिर जाने का समय हो गया था।

‘मम्मी, मैं बाल लेना चाहता हूं।’ चीनू ने कहा।



‘कितने की है?’ उसकी मां ने कहा।

‘छः रुपये की।’ ईश ने कहा।

उसने मुझे बीस का नोट दिया और दो गेंदें देने को कहा।

‘मैं बैट लेना चाहता हूं, मम्मी’ हर्ष ने कहा।

‘तुम्हारे पास पहले भी बैट है।

‘ये मेरी क्रिकेट पैतरेबाजी के लिए अच्छी बैट है, मम्मी प्लीज, हर्ष ने फिर एक हिट मारी। उसने कुछ सुधार कर लिया था। ईश के बताने के बाद। पर मां ने इस तरफ ध्यान नहीं दिया।

‘यह कितने की है?’ मां ने पूछा।

‘दो सौ रुपए की’ मैंने कहा।

‘बहुत महंगी है। नहीं हर्ष हम बैट नहीं ले रहे।

‘मेरा बर्थ-डे-प्रेजेन्ट, प्लीज मम्मी।’ हर्ष ने विनती की।

‘ठीक है बेटे पर, हम यहां मंदिर की दुकान से क्यों खरीदें, यहां अच्छी क्वालिटी की नहीं मिलेगी। हम नवरंगपुरा मार्केट से ले लेंगे।

‘यह बड़ी अच्छी क्वालिटी की है, आंटी। हमने कश्मीरी सप्लायर से ली है। मेरा विश्वास करो।’ ईश ने कहा।

‘आंटी’ औरत ने अविश्वास से देखा।

‘आंटी, मैं इस एरिया के सभी म्यूनिसिपल स्कूलों की टीम का कप्तान था। मैंने स्वयं विशिष्टतौर पर ये बैट खरीदे हैं।’ ईश ने इतने भरोसे और श्रद्धा से बात की जैसे ओमी के पिता प्रार्थना करते हैं।

‘प्लीज मम्मी,’ हर्ष ने कहा और उसकी साड़ी का पल्लू पकड़ा।

उसकी मम्मी ने अपना पर्स खोला और 200 रु. के नोट निकाले।

हो गया। हमने उस दिन की डील समाप्त कर दी। वह बैट हमें 160 रु. का पड़ा था, सो चालीस रु. का फायदा हुआ। मैं मानसिक तौर से प्रसन्न था।

‘गुड-बाय, चैम्प’ ईश ने हर्ष से हाथ मिलाया।

‘मैं भी अपने जन्म-दिन पर आपकी दुकान पर आऊंगा।’ चीनू ने कहा।

‘हां तुमने तो कमाल कर दिया ईश,’ मैंने मधुरता से कहा।

‘बच्चा, जल्दी सीख जायेगा। अगर वह अच्छी तरह से प्रैक्टिस करे तो बड़ा अच्छा प्लेयर बन जायेगा। बेशक दसवीं तक पहुंचते उसकी, मां उसे पढ़ने पर जोर देगी। उसके पास कोई रास्ता नहीं होगा, सिवाए इसके कि वह डैस्क पर बैठ कर अपनी किताबें पढ़ें।’ ईश ने कहा।

‘निराश मत होओ, मेरे दोस्त’ मैंने कहा, ‘हमने बैट पर चालीस रुपए और दो गेंदों पर चार रुपए कमाए हैं। हमें चालीस रुपए का प्रॉफिट हुआ है।’

अगले दो घंटों में हमने कुछ कैंडीज और दो गेंदें और बेची। उस दिन का हमारा लाभ पचास रु. का था। हमने बैट्स और गेंदों की टोकरियां अंदर रहीं और पूजा के बाद बजे शाम को हमने दुकान बंद कर दी। दुकान खोलने की खुशी मनाने के लिए हम चना-भटूरा खाने के लिए गए। चार रुपए की एक प्लेट। मैंने यह खर्चा बिजनैस-खर्च में डाल सकता था।

‘क्या मैं, कुछ पैसे घर ले जा सकता हूँ। सच, मैं अपनी पहली कमाई मां को देना चाहता हूँ। ओमी ने कहा। जैसे ही उसने गर्म भटूरे के साथ आधी मिर्ची अंदर निगली।

‘ठहरो, इंतजार करो, यह हमारा असली प्राफिट नहीं है। यह इकट्टी पूंजी है, पहले हमें किराया निकालना है,

उसके बाद देखेंगे, मैंने अपनी खाली प्लेट स्टॉल पर रखते हुए कहा, 'बधाई हो दोस्तों, अब हम बिजनैस में हैं।  
तीन महीने बाद

'आठ हजार, तीन, चार, पांच सौ' मैंने कहा जैसे ही कैश बाक्स खाली किया 'यह हमारा तीन महीने का प्राफिट है किराया देने के बाद, कोई बुरा नहीं बिल्कुल भी नहीं।'

मैं खुश था। हमारी दुकान बड़ी मौके पर खुली थी। गर्मियों की छुट्टियां शुरू हो गई थीं और इंडिया ने दक्षिणी अफ्रीका के साथ एक दिवसीय मैचों के क्रम को जीत लिया था। बच्चे खुले समय और देश भक्ति के जज्बे के साथ टीम इंडिया क्रिकेट शॉप पर आने लगे जैसे ही उन्हें जेब खर्च मिलता।

कुछ बच्चे बिना धन के भी आ जाते थे, ईश से क्रिकेट संबंधी टिप्स लेने के लिए। मुझे बुरा नहीं लगता था। क्योंकि हमारा समय भी अच्छा निकल जाता था। वैसे तो दुकान खोलना बोरियत है। हम सुबह 9 बजे से शाम 7 बजे तक दुकान खोलते थे और अगर दिन में 20 ग्राहक भी आए तो इसका मतलब है एक घंटे में दो ग्राहक।

'तो फिर हम अब अपना हिस्सा ले लें।' ओमी ने उत्सुकता से कहा। मैंने पूंजी को चार भागों में बांटा। पहले तीन हिस्सों में 1500-1500 रु. रखे थे हम लोगों के घर ले जाने के लिए। बाकी के 4 हजार रु. बिजनैस के लिए रखे जाने थे।

'रखे जाने से तुम्हारा क्या मतलब है? हमें इसे बिजनैस के लिए रखने की क्या जरूरत है।' ईश ने प्रश्न किया। जबकि ओमी खुशी-खुशी अपने नोट गिन रहा था। 'ईश हमें अपने बिजनैस को अच्छा बनाने के लिए यह जरूरी है। क्या तुम नहीं जानते कि हमारे पास अच्छा शीशे का काउंटर-टॉप? या दुकान पर अच्छी लाइटें लगी हों?' ईश ने हां में सिर हिलाया।

'जरूर, यह जरूरी है। और इस काम को बढ़ाने के लिए मेरे पास योजनाएं भी हैं।' मैंने कहा।

'क्या'?

'नवरंगपुरा, चार रास्ता पर एक नई शॉपिंग-माल' बन रही है, अगर तुम जल्दी बुक करवा लोगे तो तुम्हें कम किराए पर दुकान मिल सकती है।

'किराये पर? पर हमारे पास तो पहले ही एक दुकान है।' ईश ने कहा, : वह नर्वस हो रहा था साथ ही गुस्सा भी। मैं जानता था कि ईश क्यों बुडबुडा रहा है। वह दुकान के लिए एक टी.वी. खरीदना चाहता था। दुकान पर बैठे रेडियो से मैच सुनने में कोई लुत्फ नहीं था।

'नहीं ईश, एक बाकायदा दुकान, जवान लोग मॉल पर बनी दुकान पर आना पसंद करते हैं। वह हमारा भविष्य है। बेशक हमारी दुकान अच्छी चल रही है फिर भी आगे बढ़ने के लिए हमें नए शहर की तरफ जाना पड़ेगा।'

'मुझे यहां ही अच्छा लगता है', ओमी ने कहा, 'यह हमारे पड़ोस में है। जो हम बेचते हैं वह नाना पार्क के बच्चों द्वारा इस्तेमाल होता है।

'मैं इस अदूरदर्शी मानसिकता को पसंद नहीं करता। मैं मॉल पर एक स्टोर खोलना चाहता हूं और अगले वर्ष एक और स्टोर। अगर तुम बिजनैस में आगे नहीं बढ़ोगे तो यहीं के यहीं रह जाओगे।'

'दूसरी दुकान? क्या? क्या हम इकट्ठे काम नहीं करेंगे? ओमी ने कहा। 'यह छोटी सी गोबिन्द की दुकान है। इसे हमने अभी शुरू किया है और यह अभी से अंबानी बन रहा है। क्या हम टी.वी. नहीं खरीद सकते?' ईश ने कहा 'शाह इलेक्ट्रानिक्स वाले किशतों पर दे देंगे अगर हम पहले उन्हें चार हजार की पेमेंट कर दें।'

'कभी भी नहीं। हमने ये चार हजार बिजनैस के लिए रखे हैं।'

'ठीक है, टी.वी., का संबंध बिजनैस से है, क्या नहीं?' ईश ने कहा।

'हां है पर इसमें पूंजी यहीं समाप्त हो जायेगी, इससे कोई आय नहीं होगी। हमने अभी काफी रास्ता तय करना है। महीने में तीन हजार कुछ भी नहीं। और ईश तुम यहां कापियां-पैन्सिलें भी नहीं रखने देते।'

मैंने कहा, यह खेलों का स्टोर है। मैं नहीं चाहता कि बच्चे यहां आकर पढ़ाई के बारे में सोचें।'

ईश और मैंने इस विषय में पहले भी बातचीत की थी। मैंने यह अच्छा मौका देखा। पर ईश हर बार विरोध करता।

‘ठीक है, हम एक समझौता करते हैं।’ ईश ने कहा, ‘केवल नोट-बुक्स, टैक्सट बुक्स नहीं। केवल कापियां। पर हम टी.वी. जरूर खरीदेंगे, मैं मैच देखना चाहता हूं। मैं परवाह नहीं करता, यह मेरे 1500 रु. ले लो।’

उसने अपने 1500 रु. मेरे आगे फेंक दिए।

ओमी ने भी अपने पैसे दे दिए। हमेशा की तरह मुझे उन मूर्खों के आगे झुकना पड़ा।

‘ठीक है हमें अपनी कमाई बढ़ानी- होगी। अगले तीन महीनों का हमारा लक्ष्य 20,000 रु. का होगा।’

उन्होंने मेरी तरफ ध्यान नहीं दिया। वह टी.वी. के ब्रैंड के बारे में बातें करते रहे। मैंने अपना सिर हिलाया और अपने कमाई बढ़ाने के लक्ष्य का नक्शा बनाने लगा। ‘तुम कोचिंग क्लासिस लोगे?’ मैंने ईश से पूछा।

‘क्या?’

‘बच्चे तुम्हारी क्रिकेट टिप्स को पसंद करते हैं। क्यों न तुम कोचिंग क्लासिस शुरू कर लो फीस के साथ।’

‘मैं? मैं उतना अच्छा नहीं हूं। और फिर कहां? यहां मंदिर में?’

‘नहीं, यहां नहीं, एसबीआई कम्पाउंड में, वहां जगह खाली पड़ी है।’

‘क्यों? क्या हम अच्छा नहीं कमा रहे?’ ओमी ने कहा।

‘हम काफी अच्छा नहीं कमा रहे। मैं पचास हजार तक पहुंचना चाहता हूं। ओमी तुम स्टूडेंट्स को फिटनेस ट्रेनिंग दे सकते हो।’

‘तो तुम्हारे लिए ज्यादा काम? तुम्हारा अपने बारे में क्या विचार है?’ ईश ने कहा। ‘मैं मैथ्स की ट्यूशन दोबारा शुरू कर रहा हूं।’

‘यहां।’

‘हां, कुछ यहां, या एसबीआई कम्पाउंड में जब तुम क्रिकेट कोचिंग दोगे।- ओमी और ईश मुझे ऐसे घूर रहे थे जैसे मैं दुनिया की सबसे अधिक भूखी शार्क हूं।

‘फिर न करो दोस्तों, मुझे पूरा यकीन है कि हम एक अच्छा बिजनेस कर रहे हैं।’

‘ये ठीक है, केवल दुकान काफी बोरियत वाला काम है। ईश’ ओमी ने कहा। वह काफी उत्तेजित महसूस कर रहा था कि वो बच्चों को प्रशिक्षण देगा।

‘वाह हुर्रे। आखिर मैं पिच को हिट करूंगा’ ईश ने कहा।

मैंने भी अपने 1500 रु. दे दिए और हमने उसी दिन टी.वी. खरीद लिया। हमने पर पक्के तौर पर स्पोर्ट्स चैनल सैट कर दिया। ओमी चटाइयां और-गद्दियां ले आया और टी.वी. के सामने बिछा दीं। मैच वाले दिन हम सभी वहां टीवी, के सामने बैठे रहेंगे जब तक कि कोई ग्राहक नहीं आ जाता, यह हमने निश्चय किया। मुझे यह मानना पड़ा कि इस तरह दिन जल्दी गुजर जाता।

मैंने दुकान का बोर्ड बदल दिया। ‘टीम इंडिया क्रिकेट शॉप के नीचे लिख दिया गया’ स्टेशनरी, क्रिकेट कोचिंग एंड मैथ्स ट्यूशनज़ अवेलेबल। ‘भौगोलिक रूप से तो मैं परिवर्तन नहीं ला पाया पर प्रोडक्ट के हिसाब से कुछ तबदीली करवा ली।

## तीन

क्रिकेट के अतिरिक्त बैडमिन्टन भी बेलरामपुर में लोकप्रिय खेल था। असल में लड़कियां केवल बैडमिन्टन खेलती थीं। बिज़नैस में यह एक अच्छा मोड़ था। शटल, कॉक्स तो बदलनी ही पड़ती थी, रैकिट्स की भी मरम्मत-होती और बैडमिन्टन रैकिट्स क्रिकेट बैट्स की तरह ज्यादा देर तक नहीं चलते थे।

आने वाले दिनों में स्कूल स्टेशनरी का काम भी बहुत चला। केवल कुछ ही बच्चे खेलते हैं पर हर बच्चे को कापी, पैन, पेंसिल तो सब बच्चों को चाहिए और माता-पिता इसके लिए मना भी नहीं करते। कई बार बच्चे गेंद लेने आते तो साथ पेंसिल या और सामान भी खरीद लेते। हमने पूरा हल सोच लिया जल्दी ही सप्लायर स्वयं हमारे पास आने लगे। वो हमें सामान उधार देने लगे और जो न बिके उसको वापिस लेने की शर्त भी रखी। चार्ट-पेपर, गम ट्यूबज़, भारत के नक्शे, पानी की बोतलें, और टिफिन-बॉक्स वगैरह। यह दुकान खोलने के बाद ही पता चलता है बच्चों को क्या चाहिए, उनकी क्या-क्या आवश्यकताएं हैं।

हमने क्रिकेट-कोचिंग, ट्यूशन - सब का एक ही रेट रखा, 250 रु महीना। मैथ्स ट्यूशनस वाले काफी आसानी से मिल जाते थे।

मैं एसबीआई कम्पाउंड भवन में सुबह की क्लासें लेता। ईश दो बच्चों के लिए, जो उससे क्रिकेट ट्यूशन के लिए आए थे, एसबीआई कम्पाउंड का इस्तेमाल करता। वे बेलरामपुर के म्यूनिसिपल स्कूल के सबसे अच्छे खिलाड़ी थे। और तीन महीने के लिए कोचिंग लेने के लिए उन्होंने अपने माता-पिता को मना लिया।

बेशक हम अब भी अपना अधिक समय दुकान पर ही बिताते। क्या हम ग्रीटिंग कार्ड्स भी रख लें जैसे ही मैंने एक सप्लायर द्वारा छोड़े गए पैकेट को खोला। खरीद दो रु. और बेच पांच रुपए, काफी मार्जिन था इसमें। वैसे बेलरामपुर में लोग इनका प्रयोग कम हाँ करते थे।

‘यह इन-स्वींगर है और यह ऑफ स्वींगर है। वैसे भी दो हफ्तों में तुम्हारी यह तीसरी बॉल है। क्या बात है तपन?’ ईश ने एक पक्के ग्राहक से कहा। बेलरामपुर के म्यूनिसिपल स्कूल का 13 वर्षीय तपन अच्छे गेंदबाजों में से एक है।

ईश ने क्रिकेट बॉल को मजबूती से पकड़ा और उसे कलाई की गतिशीलता बताई। ‘यह वह अली का बच्चा है। उसके शॉट्स से गेंद गुम हो जाती है। पता नहीं वह हमारे स्कूल में क्यों आ गया है। तपन बुड़बुड़ाया जैसे ही उसने गेंद को अपनी निक्कर पर रगड़ा।

‘अली? नया विद्यार्थी उसे मैंने यहां कभी नहीं देखा। ईश ने कहा। सभी अच्छे खिलाड़ी यहां हमारी दुकान पर आते हैं और ईश उन सबको अच्छी तरह से जानता है।

‘हां, बल्लेबाज है। अभी हमारे स्कूल में आया है। तुम वहां आकर उसे देखो। वो यहां नहीं आयेगा।’ तपन ने कहा।

ईश ने सिर हिलाया। हमारे थोड़े से ग्राहक मुसलमान हैं। अधिकतर मुस्लिम खिलाड़ी हिन्दु लड़कों द्वारा हमारे यहां से समान खरीदवाते हैं।

‘तुम क्रिकेट ट्यूशन लेना पसंद करोगे। ईश तुम्हें सिखाएगा, वह जिला-स्तर पर खेलता रहा है।’ मैं अपनी दूसरी सेवाओं के बारे में बताने से न रह पाया।

‘मम्मी इजाजत नहीं देगी। वह कहती है कि मैं केवल पढ़ाई के लिए ट्यूशन लगा सकता हूं। खेल-कोचिंग नहीं।’ तपन ने कहा।

‘ठीक है, ओ.के. गुड गेम।’ ईश ने कहा लड़के के बालों को सहलाते हुए। ‘तुम देखते हो। इसीलिए भारत हर मैच नहीं जीतता’ तपन के जाने के बाद ईश ने कहा।

‘हां, ईश की यह बेतुकी सोच है कि भारत हर मैच जीते।’ ठीक है, ऐसा नहीं होता, नहीं तो यह गेम नहीं होगी।’ मैंने कहा और कैश-बॉक्स बंद कर दिया।

‘हमारे देश में अरबों लोग हैं। हमें हमेशा जीतना चाहिए।’ ईश ने जोर दिया। ‘गणित के हिसाब से असंभव’

‘क्यों?’ आस्ट्रेलिया में 20 करोड़ लोग हैं। तब भी वे तकरीबन हर मैच बीतते हैं। हम उनसे पचास गुणा ज्यादा लोग हैं तो पचास गुणा ज्यादा योग्यता हमारे पास है। और एक बात भारत में केवल एक क्रिकेट ही है जबकि आस्ट्रेलिया में और गेम्स भी हैं जैसे फुटबाल और न जाने कौन-कौन सी। हमें किसी भी तरह उनसे हारना नहीं चाहिए। सांख्यिकीय तौर पर, मेरे दोस्त, आस्ट्रेलिया एक.....

‘फिर क्यों?’ मैंने कहा।

‘ठीक है, तुमने इस बच्चे को देखा? माता-पिता बच्चों को टिगोमैट्री और कैलकुलस पढ़ाते पर हजारों रुपया खर्च कर देंगे, जिसका वो जिन्दगी में कभी प्रयोग नहीं करेंगे। पर अगर खेल की सिखलाई के लिए कहेंगे तो उन्हें ये सब फिजूल- खर्चा लगेगी।’

‘चिंता न कर, हम घाटा पूरा कर लेंगे। हमारी दुकान अब आफर्स दे रही है।’ यह बिजनैस की बात नहीं गोविन्द। असल में तुम्हारे लिए यह सब पैसे के लिए है।

धन अच्छी चीज़ है।’

‘ये बच्चे! गोविन्द, तेरह वर्ष के बच्चे कैसे अपने हाथों में बैट्स लिए फूले नहीं समा रहे। और वे अच्छा खेल खेलना सीखना चाहते हैं। उनकी आंखों में एक चमक होती है नाना पार्क में होने वाले हरेक, छोटे से छोटे मैच से पहले। जब इंडिया जीत जाता है तो ये नाचते हैं। कहीं वो लोग हैं जिनके लिए मेरे मन में भावुकता है, आवेग है। मैं उनके साथ रहना पसंद करता हूँ।

‘जो भी हो।’ मैंने अपने कंधे हिलाए।

‘बेशक दो वर्षों में वो दसवीं क्लास में हो जायेंगे। इनके हाथ में बैट्स की जगह फिजिक्स की किताबें ले लेंगी और फिर उनकी आंखों की चमक समाप्त हो जाएगी। वे एक निराश युवा के रूप में बड़े होंगे।

‘यह सच नहीं है ईश। हर व्यक्ति उत्साह चाहता है, मेरी तरह का उत्साह, पैशन है।

‘फिर ज्यादा युवक बदमिजाज क्यों होते हैं? उनके चेहरों पर हंसी, उत्तेजना क्यों नहीं आती जो नाना पार्क में खेलने वालों के चेहरे पर आती है?’

‘क्या तुम अब अपना मिजाज ठीक करोगे और मेरे साथ दुकान साफ करने में मदद करोगे?’

‘ठीक है, ओ.के. आज हम ट्रिंक पार्टी करेंगे’ मैं हंसा। ओमी और ईश ने मुझे दोनों तरफ से बांहों में जकड़े रखा जब तक मैं ढीला नहीं पड़ गया।

‘मेरा बेटा ओमी कहां है।’ बिट्टू मामा दुकान के अंदर आए जब दुकान बंद करने का समय था और अपने भान्जे को बांहों में ले लिया। उनके पास लाल मखमल के कपड़े में लिपटा मिठाई का डिब्बा था।

‘मामा आप कहां थे।’ ओमी ने कहा। जब से दुकान खुली है वो हमारी दुकान पर कभी नहीं आए।

‘मैं सारा गुजरात घूम कर आया हूँ पारेख जी के साथ। अच्छी यात्रा रही। लो बेसन के लड्डू खाओ। ताजे हैं बड़ौदा से लाया हूँ।’ बिट्टू मामा ने कहा। मैंने एक फ्रूटी को कहा। ईश ने स्टूल निकाले और हम बाहर बैठ गए। मैंने एक लड्डू लिया।

‘यह क्या ओमी? जूते पहन रखे हैं।’ बिट्टू मामा के माथे पर लाल टीका लगा था।, आंखों में अंजन था।

‘मामा’ ओमी थोड़ा संकुचाया। मैंने अपने पैरों की ओर देखा। मैंने रीबोक के स्लीपर पहन रखे थे। ईश ने अपने पुराने स्निकर्स (वे आवाज जूते) पहने हुए थे।

‘तुम्हारी दुकान मंदिर में है और तुम जूते पहने हुए हो? एक ब्राह्मण का पुजारी बेटा?’

‘छोड़ो भी मामा’, यह मंदिर के बाहर है। दूसरे दुकानदार भी.....’

‘दूसरे दुकानदार बेकार के बनिये हैं क्यों तुम भी उनके जैसे बनोगे? क्या तुम दुकान खोलने से पहले पूजा करते हो?’

‘हां, मामा’, ओमी ने सफेद झूठ बोला।

‘तुम भी’ मामा ने मेरे और ईश की ओर देखा। तुम हिन्दु लड़के हो। तुम्हारी दुकान इतने पवित्र स्थान पर है। कम से कम जूते उतारो और एक जोत जलाओ। ‘हम यहां काम करने के लिए आते हैं न कि रीति-रिवाज पूरे करने।’ मैंने कहा। मैं-अब दुकान का पूरा किराया देता था। किसी को जरूरत नहीं मुझे बताने की कि मैं अपना बिजनैस कैसे करूं।

मामा हैरान हो गए। ‘तुम्हारा नाम क्या है?’

‘गोविन्द।’

‘गोविन्द, क्या?’

‘गोविन्द पटेल।’

‘हिन्दु नहीं।’ एग्नॉस्टिक (संदेहवादी)

‘मैं नास्तिक हूं।’

मैं क्रोधित हो रहा था। मैं दुकान बंद कर घर जाना चाहता था।’

एक-----

‘उसे पूरा विश्वास नहीं कि ईश्वर है या नहीं’ ईश ने बताया।

‘भगवान में विश्वास नहीं करता? ओमी तुम्हारे दोस्त कैसे हैं?’

मामा बुड़बुड़ाए।

‘नहीं, वह नास्तिक है। मैंने स्पष्ट किया।’ एग्नॉस्टिक वे होते हैं जो कहते हैं कि पता नहीं परमात्मा है या नहीं। मैं नहीं जानता।’

‘तुम जवान लड़कों, शर्म की बात है। मैं तो तुम्हें निमंत्रण देने आया था और तुम लोग तो.....’

ओमी ने मेरी तरफ देखा, मैंने अपनी नजरें दूसरी तरफ कर लीं।

‘मामा गोविन्द की चिन्ता न करो वह उलझन में है। मुझे वे लोग कतई पसंद नहीं जो मेरे धार्मिक विश्वास को उलझन या अस्पष्टता का नाम दें। क्यों लोग हैं या- नहीं हैं में विश्वास करते हैं?’

ईश ने बिट्टू मामा को फ्रूटी दी। इससे वे कुछ ढीले पड़े।

‘तुम्हारा क्या विचार है?’ मामा ने ईश से पूछा।

‘हिन्दु मामा, मैं पूजा और सब कुछ करता हूं।’ ईश ने कहा। यह ठीक है जब मैच में केवल छः बॉल रह गए थे।

मामा ने एक बड़ा सा घूंट पिया और ओमी और ईश की तरफ नजरें घुमाई उनके लिए मेरी मौजूदगी कोई मायने नहीं रखती थी।

‘मामा, आप हमें किसलिए बुलाना चाहते थे?’ ओमी ने कहा।

उसने लाल मखमली कपड़ा हटाया और उसमें लपेटा हुआ तीन फुट लंबा कांसे का त्रिशूल निकाला। इसके तेज ब्लेड दुकान की ट्यूबलाइट में चमक रहे थे।

‘यह तो बहुत सुंदर है। आपने इसे कहां से लिया?’ ईश ने टटोला।

‘यह पारेख जी की तरफ से भेंट है’ मामा ने कहा, ‘उन्हें मेरे अंदर पार्टी का भविष्य नजर आता है। मैंने रात दिन काम किया। हम गुजरात के हर जिले में गए और उसने कहा, ‘अगर बिट्टू जैसे और लोग हमारे साथ हों तो लोग दोबारा हिन्दु बनने में गर्व महसूस करेंगे?’ उसने मुझे नई भर्ती करने का कार्य भार संभाला है, अहमदाबाद में। ईश और मैंने ओमी की तरफ देखा फुटनोट्स के लिए।

‘पारेख जी सीनियर हिन्दु पार्टी लीडर हैं। और उनके अधीन बड़ौदा का सबसे बड़ा मंदिर-ट्रस्ट है।’ ओमी ने कहा, ‘क्या, क्या वे सी.एम. या किसी और बड़े लीडर को जानते हैं, मामा।’

‘पारेख जी सी.एम. को न केवल जानते हैं बल्कि दिन में दो बार उनसे बातचीत भी करते हैं।’ बिट्टू मामा ने कहा, ‘और मैंने तुम्हारे बारे में भी उनसे बात की है ओमी। मैंने तुम्हारे में वो योग्यता देखी है कि तुम जवान लोगों में हिन्दु धर्म का प्रचार कर सकते हो? उन्हें प्रशिक्षण दे सकते हो।’

‘पर मामा मैं तो यहां पूरा समय काम करता हूं।’

‘मैं तुम्हें यह नहीं कह रहा कि तुम सब कुछ छोड़ दो। पर जो भारी जिम्मेदारियां हमारे ऊपर हैं उनके साथ भी जुड़े रहो। हम वो पुजारी नहीं जो केवल आयोजनों में मंत्रों का उच्चारण करते हैं। मैं यह विश्वसनीय बनाना है कि भारत की भावी पीढ़ी हिन्दुत्व को भली-प्रकार समझे। मैं तुम्हें पारेख जी के घर होने वाली एक बड़ी पार्टी में बुलाने आया था। ईश तुम भी आना। अगले सोमवार को गांधीनगर में।’

बेशक, तिरस्कृत हुआ, मुझे निमंत्रण नहीं दिया गया।

‘धन्यवाद मामा, यह बहुत बड़ी बात लगती है, पर मैं नहीं जानता कि हम इसे कर पायेंगे।’ ईश ने कहा। मैंने देखा कि कुछ लोग मीठा बोलने से कितने अच्छे लगते हैं।

‘क्यों? चिंता न करो, वहां केवल पुजारी नहीं होंगे। और भी जवान लोग वहां आयेंगे।’

‘मैं राजनीति नहीं पसंद करता।’ ईश ने कहा।

‘ओह? यह राजनीति नहीं है मेरे बेटे। यह जीवन का एक रास्ता है।’

‘मैं आऊंगा’ ओमी ने कहा।

‘पर तुम भी जरूर आना ईश, हमें जवानों की जरूरत है।’

ईश झिझका।

‘ओह, शायद तुम सोच रहे हो कि पारेख जी कोई पारंपरिक व्यक्ति होंगे जो तुम्हें पढ़ने के लिए दबाव डालेंगे।

तुम जानते हो कि पारेख जी किस कॉलेज में पढ़े हैं? केंब्रिज और फिर हार्वर्ड। उनका अमेरिका में एक बड़ा होटल बिज़नेस था, जिसे बेच कर वे यहां वापिस आ गए। वे तुम्हारी भाषा बोलते हैं। ओह, और वे क्रिकेट भी खेलते थे केंब्रिज कालेज टीम की तरफ से।’

‘मैं आऊंगा,

अगर गोविंद आएगा तो ईश ने मूर्खता पूर्ण कहा। मामा ने मेरी तरफ देखा। उनकी नज़रों में हिन्दु धर्म के पतन का कारण मैं हूं। असल में पहले मैं तुम तीनों को ही बुलाने आया था। केवल इसने कहा कि वह भगवान में विश्वास नहीं करता।

‘मैंने ऐसा नहीं कहा।’ मैंने कहा। ओह भूल जाओ, मैंने सोचा।

‘फिर तुम तीनों आ जाना’ मामा ने खड़े होते हुए कहा। ‘मैं ओमी को पता दे दूंगा। गांधी नगर में उनका सबसे शानदार घर है।

लोग मुझे मि. एकाउंटेंट कहते हैं, लालची, कंजूस और न जाने क्या-क्या।

पर मैं जानता हूं कि मैं खूब खर्चीली ड्रिंक पार्टीज भी करता हूं, अपनी दुकान की भागीदारी पार्टनरशिप बनाए रखने के लिए अहमदाबाद में बहुत मुश्किल है। शराब लेना केवल बीयर की बड़ी बोतलों के मेरे एक जानकार ने एक हजार रुपए में कुछ अधिक तेज बीयर की एक क्रेट देने का वायदा किया था।

पार्टी वाले-दिन ठीक शाम को 7 बजे रोमी भाई बीयर की बोतलें, फटे कपड़े में लपेटी हुई, एसबीआई कम्पाउंड के बाहर छोड़ गया। मैं गेट पर आया और रोमी भाई को उस दिन का समाचार-पत्र दिया। मैंने एक हजार के नोट उसमें स्टैपल कर दिए थे। उसने सिर हिलाया और चला गया।

मैंने वो पैकेट उठाया और अंदर जाकर और बीयर की बोतलें तीन बर्फ की बाल्टियों में रख दीं। जो मैंने रसोईघर में रखी हुई थी। फिर मैंने शैल्फ पर से बोतल खोलने वाला उठाया, वहीं पर हम अपना सारा सामान रखते थे। मैगी नूडल्स, क्रैक्स बाक्स जो हम खोलते थे जब इंडिया मैच जीत जाता था।



कोई और व्यक्ति एसबीआई ब्रांच जो उजड़ी सी पड़ी थी, को रहस्यमयी स्थान के तौर पर देख सकता था। यहां पर वृक्ष की पुरानी हवेली थी। हवेली का मालिक बैंक अदायगी नहीं कर पाया। इसलिए बैंक ने संपत्ति अपने पास रख ली। कुछ समय पश्चात् बैंक ने हवेली में अपनी एक शाखा खोल दी। मालिक की मृत्यु के पश्चात् उसके परिवार ने बैंक पर दावे का मुकद्दमा कर दिया। झगड़ा अभी भी चल रहा है। परिवार ने यह भी दावा किया कि बैंक रहने वाली संपत्ति को अपने फायदे के लिए प्रयोग नहीं कर सकता। इसी समय के दौरान एसबीआई ने महसूस किया कि बेलरामपुर की इस तंग गली में ब्रांच खोलना बहुत कठिन है। इसलिए बैंक ने वो स्थान खाली कर दिया और चाबियां कोर्ट को दे दीं। कोर्ट ने एक चाबी बाकायदा ओमी के पिता के पास रख दी, उस क्षेत्र के विश्वसनीय व्यक्ति के पास। यह सब बाकायदा हुआ कोर्ट की ओर से, फिर उसके बाद कोर्ट बंद हो गया। और फिर उसके बाद कोई वहां कभी नहीं आया और ओमी ने वे चाबियां अपने पास रख लीं।

वह संपत्ति छः सौ वर्ग गज प्लॉट की थी, बेलरामपुर के हिसाब से काफी बड़ी। सामने का दरवाजा सीधा बैठने वाले कमरे में खुलता था और अब बैंक द्वारा जोड़ा गया था। वहां ग्राहक-सेवा का कार्य होता था। पहली मंजिल पर तीन सोने के कमरे थे, जहां पर ब्रांच मैनेजर का आफिस, डाटा-रूम और एक लॉकर-रूम था। ब्रांच मैनेजर के आफिस में एक छः फुट लम्बा महाराबदार स्थान था। हमने वहां अपनी क्रिकेट किट रखी हुई थी, खाली और सुरक्षित स्थान पर।

अधिकतर हम हवेली की पिछली तरफ ही बैठते थे। अपने अच्छे दिनों में यहां एक धनी परिवार का बगीचा होता था। बैंक-ब्रांच का हिस्सा होने के कारण तब इसे पार्किंग के लिए प्रयोग किया जाता था और अब हम यहां अपने क्रिकेट के अभ्यास के लिए पिच के तौर पर इस्तेमाल करते हैं।

बाल्टियों में रखी बीयर की बोतलों की मैंने जगह बदली ताकी वे सारी एक जैसी ठंडी हो जाए। ईश बैंक में आया।

‘इतनी देर से, साढ़े आठ बजे गए हैं।’

साँरी, क्रिकेट हाईलाइट्स देख रहा था। ओह स्ट्रांग बीयर।’ ईश ने कुछ जैसे ही

उसने बीयर-बोतल उठाई। हम निचले हिस्से में जहां ग्राहकों का प्रतीक्षालय था वहां सोफे पर बैठ गए। फिर मैं सोफे पर लेट गया और ईश रसोई-घर में चला गया भुजिया लेने।

‘ओमी आ गया है’ ईश ने पैकेट खोलते हुए कहा।

‘नहीं, एक मैं ही मूर्ख यहां हूँ। मैंने डिलीवरी ली, फिर सारी सफाई की और अपने बादशाहों के आने तक इंतजार किया।’

‘पार्टनर, दोस्त, पार्टनर, ईश ने सुधार किया।’ क्या हम एक बोतल खोल लें। ‘नहीं, वेटा।’

ओमी दस मिनट में आ गया। वह आकर माफी मांगने लगा क्योंकि उसके पिता ने मंदिर साफ करने के लिए उसे रोक लिया था। ओमी ने शराब पीने से पहले ईश्वर से माफी मांगी और प्रार्थना की।

‘चीयर्स’ हमने पहला घूंट भरते हुए परस्पर कहा। यह कड़वी थी पर फिनाँयल से टेस्ट कुछ अच्छा था।

‘यह क्या है? क्या यह ठीक माल है?’ ईश ने कहा।

‘हम कुछ देर के लिए रुके। अच्छी क्वालिटी की शराब मिलना अहमदाबाद में मुश्किल है।’

‘ओह, कोई भी नकली बीयर नहीं बनायेगा। यह जरा तेज है।’ मैंने कहा।

अगर तुम इसके साथ भुजिया खाओगे तो यह उतनी कड़वी नहीं लगेगी। असल

में आधी बोतल पीने के बाद ही इसका टेस्ट बनता है। इससे सबका मूड ठीक हो गया। ‘मैं इस अली को देखना चाहता हूँ। तीन ग्राहकों ने उसका हवाला दिया था।’ ईश ने कहा।

‘मुस्लिम लड़का?’ ओमी ने कहा।

‘अपने मामा की तरह बोलना बंद करो।’ ईश ने गुस्से में कहा। ‘क्या फजूल में बोल रहे हो। वो कहते हैं वह बड़ा अच्छा खेलता है।’

‘वह कहां खेलता है?’ मैंने भुजिया मुंह में डालते हुए पूछा।

‘हमारे स्कूल में बच्चे कहते हैं। उसका कॉमन शॉट छः है।’ चलो हम चलते हैं। देखते हैं स्कूल में तुम्हारी जगह किसने ली है।’ मैंने कहा।

ईश चुप रहा। यह विषय उसकी दुखती रग थी और अगर बीयर का प्रभाव न होता तो शायद मैं यह नहीं कहता।

‘ईश उत्तराधिकारी होना मुश्किल है।’ ओमी ने कहा, ‘याद करो यहां म्यूनिसिपल स्कूल के मुकाबले 63 गेंदों में 100 रन बनाए थे। कोई भी इस इनिंग को भूला नहीं।’

ओमी खड़ा हो गया और ईश की पीठ थपथपाई, मानो दस वर्ष पहले खेला गया मैच दस मिनट पहले खत्म हुआ हो।

‘उस सेलेक्शन में उन दो खिलाड़ियों को भी कोई भूला नहीं होगा जो चुने गए थे।’ ईश ने कहा फिर चुप हो गया।

‘पर वो मैच थे जो अब कोई मायने नहीं रखते। ठीक? अब हम इस विषय को बन्द कर दें तो ठीक रहेगा।’

ओमी पीछे हट गया और मैंने खुश हो कर विजय बदला। ‘मैं सोचता हूँ कि हमें अपने सरप्रस्तों का धन्यवाद करना चाहिए - द टीम इंडिया क्रिकेट शॉप। सात महीनों में, हमारा लाभ रहा है 42600 रुपए। जिनमें से हमने 18,000 भागीदारों में बाटें, 22000 रुपये नवरंगपुरा में दुकान के लिए जमा करवाए और बाकी के 2,600 रुपये मनोरंजन के लिए जैसा आज रात का रहा। इसलिए प्यारे दोस्तों और पार्टनरों बहुत बहुत धन्यवाद और अब हम दूसरी बोतल खोलते हैं।’

मैंने सबके लिए एक बोतल और निकाली। ‘जवान लड़के’ ईश बुदबुदाया, खड़े होते हुए, ‘यह बिज़नैस, और इसका यह सारा प्राफिट इस स्टड-बवाय, मि. गोविन्द पटेल की वजह से है। थैंक्यू बड़ी। तुम्हारी वजह से ही यह मिल्ट्री से निकाले गए। इस कैडिट का भविष्य बन गया है। और इस बेवकूफ का भी नहीं तो अब तक यह मंदिर में घंटियां ही बजाता रहता। गिव मी ए हग, स्टड बॉय।’

वह मुझे आलिंगन में लेने के लिए आगे बढ़ा। यह सब नशे का प्रभाव था, उचित था।

‘क्या तुम मेरा एक काम और करोगे दोस्त’ ईश ने कहा, ‘क्या?’

‘कोई है जो मैथ्स की ट्यूशन लेना चाहता है।’ ईश ने कहा, ‘नहीं’, मेरे पास पहले ही सात.....’ मैं कह ही रहा था कि ईश बीच में ही बोल पड़ा।

‘विद्या है’

‘तुम्हारी बहन?’

‘उसने प्लस टू कर ली है और अब वो मैडिकल के लिए प्रवेश-परीक्षा की तैयारी कर रही है।’

‘तुम्हें डाक्टर बनने के लिए मैथ्स की जरूरत नहीं पड़ती।’

‘पर प्रवेश-परीक्षा में इस की जरूरत है। इसके लिए तुम्हारे अलावा मैं किस पर भरोसा कर सकता हूँ?’

‘अगर तुम्हारी सिस्टर है तो मेरा मतलब है.....। मैंने रुक कर सांस ली। ‘वाह विद्या मैडिकल में जा रही है। क्या वह इतनी बड़ी हो गई है।’

‘लगभग 18 वर्ष की’

‘मैं छोटे बच्चों को पढ़ाता हूँ, पांचवीं से आठवीं तक। उसका कोर्स काफी एडवांस होगा और मैं इन-टच नहीं।’

‘तुम तो इस विषय में माहिर हो। कोशिश करो उसे सहायता की जरूरत है। मैं कुछ देर चुप रहा। याद कर रहा था जो थोड़ा बहुत मैं विद्या के बारे में जानता था।

‘तुम क्या सोच रहे हो। ओह, हां, मैं जानता हूँ कि एकाउंटेंट, फिक्न न करो, हम तुम्हें फीस देंगे।’ ईश ने कहा और एक बड़ा सा घूंट निगला।

‘शट-अप, वह तुम्हारी बहन है। ठीक है, मैं पढ़ाऊंगा। कब से शुरू करें।’

‘क्या तुम सोमवार से शुरू कर सकते हो.....पर सोमवार को नहीं, पारेख जी की पार्टी है उस दिन, ओमी का बच्चा, हम वहां जा कर क्या करेंगे।’

‘हम जो कुछ करने जा रहे हैं, तुम्हारे मामा को खुश करने के लिए। मैं नवरंगपुरा जाने की इंतजार नहीं कर सका।’

‘मैं हमेशा तुम्हारी बात मानता हूँ। इस बार मेरे लिए तुम वहां चलो।’

‘ठीक है, फिर मंगलवार ठीक है’ मैंने ईश से कहा,

‘क्या वो, बैंक में आएगी?’

‘डैड उसे घर से बाहर अकेले नहीं आने देंगे। तुम घर पर आ जाना।’

‘क्या?’ मैंने कहा। मैंने सोचा फिर तो मैं फीस मांग ही लेता। ‘ठीक है, मैं कुछ क्लासों का टाइम बदल दूंगा। शाम को सात बजे ठीक रहेगा?’

‘बिल्कुल, अब क्या तुम मैथ्स के एक सवाल का जवाब दे सकते हो मि. एकाउंट’ ईश ने कहा।

‘क्या?’

‘तुमने 10 बोतलों के एक क्रेट का आर्डर दिया। हम तीनों ने तीन-तीन पी, एक कहां गई?’

ईश झूमता हुआ उठा।

मैं भी खड़ा हो गया। ‘सवाल ये नहीं है कि दसवीं बोतल कहां है, पर ये है किसकी’ मैं दसवीं बोतल ढूंढने लगा। ईश भी देखने लगा। सारा ठंडा पानी फर्श पर बिखर गया। दस सैकंड के बाद हमने वो बोतल ढूंढ ली और उसे खोला।

‘दोस्तों, पियो। तुम लोगों के बिना मैं क्या कर सकता हूँ।’

## चार

हम पारेख जी के घर शाम आठ बजे पहुँच गए। दो सशस्त्र आदमी गेट पर खड़े थे। हमारा नाम वगैरह चौक करके उन्होंने हमें अंदर जाने दिया। घर के प्रवेश द्वार पर एक शानदार रंगोली बनी हुई थी, दर्जनों लाइटें और ताजे फूल थे।

‘देखा कितने लोग हैं’ बिट्टू मामा हमें बाहर दरवाजे पर ही मिल गए। भाषण से पहले खाना खा लो। ‘आरती की एक थाली में से उन्होंने हमें लाल टीके लगाए। फिर हमें बताया कि खाने के बाद पारेख जी अपना भाषण देंगे।

हम खाने की तरफ मुड़े। गुजराती पार्टी जिस में हर शाकाहारी पकवान था। डिंक्स नहीं थीं, पर हर प्रकार का जूस था जो आदमी कल्पना कर सकता है। ऐसी पार्टियों में तुम्हें अफसोस होता है कि तुम्हारा एक ही पेट है। मैंने एक जैन पिज़्जा उठाया और शानदार कमरे को देखने लगा। वहाँ पर लगभग पचास मेहमानों ने सफेद या केसरिया-रंग के कपड़े पहने हुए थे। पारेख जी ने केसरिया धोती और सफेद कमीज पहन रखी थी।

ईश कुछ असुविधा महसूस कर रहा था, अपनी काली मैटालिका टी-शर्ट के साथ जिस पर खोपड़ी और क्रॉस-बोनस बनी हुई थीं। हमारे अलावा वहाँ जितने लोग थे उनके या तो सफेद बाल थे या बाल थे ही नहीं। यह एक विवाह-समारोह जैसा लग रहा था जहाँ केवल पूजारियों को बुलाया गया था। अधिकतर लोगों के पास-त्रिशूल, रुद्राक्ष या कोई धार्मिक पुस्तक जैसी कोई न कोई चीज थी।

ईश और मेरी नजरें मिलीं, जैसे कह रही हों - हम यहाँ क्या कर रहे हैं?

ओमी केसरिया कपड़े पहने हुए दो व्यक्तियों को मिलने गया एक सफेद बालों वाले, एक गंजे। उसके पैरों को हाथ लगाया और दोनों ने उसे आशीर्वाद दिया। ओमी ऐसे लोगों से अक्सर मिलता रहता है। इसलिए उसके पास आशीर्वादों की एक बड़ी पूंजी है भारतीय-दर्शन के हिसाब से।

‘खाना बहुत अच्छा है, नहीं?’ ओमी ने कहा। गुजरात में खाना सदा अच्छा होता है। फिर भी लोग ऐसा कहते हैं। ईश ने अपना जैन-डिमसम ओमी को दिया। ‘ये सब लोग कौन हैं?’ मैंने वैसे ही पूछा।

‘सो सिंपल’ ओमी ने कहा, ‘केसरिया रंग के कपड़े पहने पुजारी हैं या अन्य धार्मिक लोग हैं शहर के। सफेद कपड़ों वाले राजनीतिक पार्टी के हैं। तुम डिमसम क्यों नहीं खा रहे?’

‘मैं चाइनीज पसंद नहीं करता’ ईश ने कहा। और ये पारेख जी कौन हैं?’

‘अच्छा, वो एक गाइड हैं’, ओमी ने कहा; ‘और वे अपनी नम्रता दिखाने के लिए ऐसा कहते हैं, असल में वे मंदिर-प्रबन्धन के अध्यक्ष हैं। वे राजनीतिज्ञों को भी अच्छी तरह जानते हैं।’

‘अच्छा तो वे वर्ण-संकर हैं, एक राजनीतिक-पुजारी’ मैंने निष्कर्ष निकाला। ‘क्या तुम उनके प्रति आदरणीय नहीं हो सकते?’ और ईश तुमने ये कैसी टी-शर्ट पहन रखी है?’

ज्यों ही पारेख जी कैमरे में पहुँचे सभी चुप हो गए। उनके पास लाल मखमली कुशन था, जो बड़ा अच्छा लग रहा था। उन्होंने सभी को कालीन पर बैठने का संकेत किया। मछलियों के झुंड की तरह केसरिया रंग के लोग सफेद रंग वालों से अलग, दो बातों में बैठ गए। ‘हम कहां बैठें?’ ईश ने कहा मेरी ओर मुड़ते हुए। मैंने काली टी-शर्ट पहनी हुई थी और मैं अपना कलर-जोन नहीं खोज पा रहा था। बिट्टू मामा ने ओमी को कोहनी से पकड़ते हुए हमें केसरिया-रंग के साथ बैठने को कहा। हम वहाँ बैठ गए। पुरानी अगली डक्सिंग की कहानियों की तरह हम अपने समर्थन में होने वाले मिसमैच के साथ। उनमें हम हीरो लग रहे थे। बिट्टू मामा तीन केसरिया स्कार्फ ले आए और हमें दे दिए।

‘क्या? मैं नहीं....’ मैंने ओमी से विरोध जताया।

‘चुप..... जरा इसे पहन लो।’ ओमी ने कहा और हमें बताया कि कैसे इसे गले पर लपेटना है।

पारेख जी अपने उस शानदार जादुई कुशन पर बैठ गए। वहाँ पूरी स्तब्धता थी। ईश ने अपनी अंगुलियों के पोरों

को दबाया। ओमी ने उसे घूर कर देखा। मेरे अतिरिक्त सब ने आखें, बन्द कर लीं। मैं चारों तरफ देख रहा था जब कि दूसरे सभी लोग संस्कृत-मंत्र का उच्चारण कर रहे थे। एक मिनट बाद जब स्व का उच्चारण समाप्त हुआ तो पारेख जी ने अपना भाषण आरम्भ कर दिया।

‘स्वागत है, भगतों! मेरे घर में आपका स्वागत है। मेरे दायें पक्ष में बैठे दल का जो सिंड़ीपुर मंदिर से आया है विशेष तौर पर स्वागत है। वो अयोध्या में एक महीने से भी अधिक कार-सेवा करके आए हैं। आइए हम उन्हें प्रणाम करें और उनका आशीर्वाद लें।

सभी उन छः त्रिशूल-धारी केसरिया बालों वालों के आगे नतमस्तक हुए।

पारेख जी का- भाषण जारी रहा, ‘हमारे पास आज कुछ युवा भी आए हैं। हमें उनकी बड़ी जरूरत है। बिट्टू मामा का धन्यवाद जो उन्हें लेकर आए हैं।

बिट्टू पार्टी के लिए बहुत काम कर रहे हैं। हम अपने उम्मीदवार हसमुख जी को अगले साल चुनावों में अपना समर्थन देंगे।

सभी हमारी तरफ देखने लगे और सहमति में सिर हिलाया। हमने भी ऐसा ही किया।

भगतों हिंदू धर्म हमें सहनशीलता सिखाता है और हमने बहुत सहन किया भी है। अतः आज का प्रश्न है ‘कितनी सहनशीलता पर्याप्त है? आखिर हिन्दु कब तक सहन करता रहेगा?’

सबने सिर हिलाया। चौकड़ी मारे हुए मेरे घूटने दुखने लग गए थे, मैंने सोचा क्या मुझे भी अब और पीड़ा सहन नहीं करनी चाहिए और पैर लम्बे कर लूं।

‘हमारे ग्रन्थ कहते हैं कि हमें दूसरों को हानि नहीं पहुंचानी चाहिए।’ पारेख जी ने कहा, ‘वे हमें सिखाते हैं कि हम सभी धर्मों को स्वीकारें, चाहे वो हमें न भी स्वीकारें तो भी।’ वो हमें धीरज रखना सिखाते हैं। हजारों वर्ष पहले, हमारे प्रतिभाशाली, बुद्धिमान लोग ऐसे शानदार जीवन मूल्यों के विषय में सोचते थे जो आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। और आज तुम जैसे महान् व्यक्ति इन जीवन-मूल्यों को समाज तक पहुंचाने का काम करते हो। पारेख जी ने कहा, पुजारियों की ओर संकेत करते हुए। पुजारियों ने सहमति में सिर हिलाया।

‘साथ ही हमारे धार्मिक-अन्य यह शिक्षा भी देते हैं कि अन्याय नहीं सहना चाहिए। गीता में अर्जुन से कहा गया कि वह सदाचार का युद्ध करें, सच्चाई के लिए लड़े। इसका अर्थ है कि कुछ बातों में हमें युद्ध का सामना युद्ध से ही करना चाहिए। जब ऐसी बात है तो इस विषय पर कुछ सोचना चाहिए।

लोगों ने उत्साह से सिर हिलाया। यहां तक कि मुझे भी लगा कि ये लोग और जादुई लाल कुरान जमीन से कुछ ऊंचे उठ गए हैं। पारेख जी के तथ्यों में प्रवाह था।

‘और मैं फिर देख रहा हूँ अन्याय को। हिन्दुओं को अब फिर समझौता करने, स्वीकार करने और सहन करने के लिए कहा जा रहा है। हिन्दुओं ने एक मंदिर को पुनः बनाने के लिए कहा। मंदिर भी कोई साधारण मंदिर नहीं, वह मंदिर जहां हमारे परम परमेश्वर भगवान ने जन्म लिया था। पर वो हमें इसे नहीं देंगे। हमने कहा हम मस्जिद को वहीं एक तरफ सम्मानपूर्वक स्थापित कर देंगे। पर नहीं, इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। हमने प्रमाण भी दिए राम-मंदिर के पर सब व्यर्थ। मैं आपसे पूछता हूँ क्या यह अन्याय नहीं है? क्या हम इसे सहन करते रहें? मैं एक बूढ़ा व्यक्ति हूँ, मेरे पास इन सवालों के जवाब नहीं।’

ईश मेरे कान में फुसफुसाया, ‘ये राजनीति है दोस्त, शुद्ध साधारण राजनीति।’

पारेख जी का भाषण जारी था, ‘मैं यह नहीं कहूंगा कि ये देश किसका है। क्योंकि बेचारे हिन्दु चिरकाल से ही किसी न किसी द्वारा शासित रहे हैं - 700 वर्ष तक मुसलमानों द्वारा, 250 वर्ष तक अंग्रेजों द्वारा। अब हम आजाद हैं, पर हिन्दुओं में अब भी आत्म-विश्वास नहीं है, आत्म-सम्मान नहीं है। मुझे जिस बात का दुःख हो रहा है वो यह है कि हमें अब भी समानता नहीं दी जाती। वो अपने को निरपेक्ष कहते हैं पर अभी भी मुसलमानों को अधिमान्यता दी जाती है। हम समानता की बात करते हैं तो हमें साम्प्रदायिक कहा जाता है क्यों? मुसलमान बहुत ही निर्दयी आतंकवादी हैं, पर वो हमें कहते हैं कि हम कठोर हैं।

मुसलमानों से अधिक हिंदू-बच्चे रात को भूखे सोते हैं, पर वे कहते हैं कि मुसलमान पीड़ित हैं-दलित हैं।

पारेख जी पानी पीने के लिए रुके फिर बोले, 'वे मुझसे पूछते हैं, पारेख जी आप इतने राजनीतिज्ञों को कैसे और क्यों जानते हैं? मैंने कहा मैं ईश्वर को सेवक हूँ। मैं राजनीति में शामिल होना नहीं चाहता था पर मैं एक हिन्दु होने के नाते इंसान चाहता हूँ तो मुझे जानना चाहिए कि देश कैसे चलता है। और दूसरा ऐसा कौन सा रास्ता है जिससे मैं राजनीति में शामिल भी न हो: और इसमें जुड़ा भी रहूँ इसीलिए यहाँ। मैंने आधा केसरिया और आधा सफेद धारण किया हुआ है और आप लोगों की सेना में प्रस्तुत हूँ।'

श्रोताओं ने साधुवाद में तालियां बजाई, ओमी ने भी। मैं और ईश किसी भी प्रतिक्रिया के असमर्थ थे।

'पर एक आशा है, आप जानते हैं कि यह आशा की किरण कहां से आई है - गुजरात से। हमारा राज्य बिजनैसमैन का राज्य है। आप बिजनैसमैन के विश्व में चाहे सैकड़ों बातें कह दें पर आप इस बात को नहीं झुठला सकते कि बिजनैसमैन वास्तविकता को देखता है। वह जानता है कहां। क्या करना है, दुनिया कैसे चलती है। हम मिथ्यापार अथवा गलत तरीकों को नहीं अपनाएंगे। इसीलिए हम नकली सैकुलर पार्टियों का चुनाव नहीं करते। हम साम्प्रदायिक नहीं हैं, हम ईमानदार हैं। और अगर हम प्रतिक्रिया करते हैं तो इसका अर्थ है कि बहुत समय से सहन करते आ रहे हैं।

हॉल तालियों से गूँज उठा। इसी मौके पर मैं बाहर निकल कर पारेख जी के घर के बाग में टहलने लगा। अंदर पारेख जी दस मिनट तक और बोलते रहे, जो मुझे सुनाई नहीं दिया। मैंने ऊपर तारों की तरफ देखा और मखमली गद्दी पर बैठे व्यक्ति के विषय में सोचा। यह बहुत अजीब लग रहा था। मैं उस व्यक्ति के प्रति आकर्षित भी हो रहा था और विरोधी भी। उसमें आकर्षण और पागलपन एक ही समय में दिखाई दे रहे थे।

उनके भाषण के पश्चात् कुछ समापन मंत्रों का उच्चारण किया गया, उसके पश्चात् दो भजन, भुज से आए कुछ पुजारियों द्वारा गाए गए। ईश बाहर आया। 'तुम यहां?'

'क्या हम घर चल सकते हैं?' मैंने कहा।

मंगलवार सायं, 7 बजे मैं ईशान के घर पहुंचा। वह अपनी पढ़ने की मेज पर बैठी थी। उसका कमरा लड़की-नुमा लग रहा था- विशेषतया साफ, विशेष आकर्षक और खुशनुमा। खिलौने और पोस्टर - जिन पर बड़े मोहक आकर्षक संदेश लिखे हुए थे जैसे - 'मैं बाँस हूँ' दीवारों को अलंकृत किए हुए थे। मैं कुर्सी पर बैठ गया। उस की भूरी आंखों ने मुझे गौर से देखा। मैं यह देखे बिना न रह सका कि उसका बच्चा जैसा भोला चेहरा एक सुन्दर लड़की बनने जा रहा है।

'अच्छा मैथ्स के कौन से तरीके अच्छी तरह से आते हैं तुम्हें।'

'असल में, कोई भी नहीं।' उसने कहा।

'एलजब्रा?'

'नहीं।'

'ट्रिगोमैट्री?'

'थोड़ी सी।'

'कैलकुलस?'

उसने अपनी भौंहें ऐसे चढ़ा लीं मानो मैंने किसी डरावनी फिल्म का नाम ले लिया हो?'

'सच में?' अपने मनपसंद सब्जेक्ट के लिए उसकी बेरुखी देख कर मुझे बुरा लगा। 'हूँ... मैंने कहा और एक विवेकशील प्रोफेसर बनने की कोशिश की, क्या तुम

इसे पसंद ही नहीं करतीं या तुम्हें इसमें कुछ बातें समझ में नहीं आतीं और शायद इसीलिए तुम्हें यह अभी तक पसंद नहीं? मैथ्स एक फन बन सकता है, तुम जानती हो?'

'फन?' उसने कहा, कुछ निराशाजनक हाव-भाव के साथ।

'हां।'

वह सीधी बैठ गई और उसने अपना सिर हिलाया।

‘मुझे आप को साफ-साफ बताना होगा कि मैं मैथ्स से नफरत करती हूँ। मेरे लिए मैथ्स की ठीक जगह कॉन्कोच और छिपकलियों के साथ है। मैं इससे खिन्न, उदासीन और निराश हो जाती है। बिजली के झटके या मैथ्स टेस्ट में से किसी एक को चुनना पड़े तो मैं पहले को पसंद करूंगी।’

मैंने सुना है कि राजस्थान में लोग पानी लाने के लिए दो मील तक जाते हैं। मैथ्स व्यक्ति द्वारा ईजाद सबसे बुरी चीज है। पर क्या वे यह सब सोचते थे? भाषा बहुत सरल है।

‘ओह, यह कुछ प्रतिक्रिया हुई है।’ मैंने कहा। मेरा मुंह अभी भी खुला था। ‘और फन? अगर मैथ्स फन है तो दांत निकलवाना भी फन है, वायरल इन्फेक्शन भी फन है। रैबीस शॉट्स भी फन है।’

‘मेरा ख्याल है तुम कुछ गलत ढंग से ले रही हो इस बात को।’

‘ओह नहीं, वैसा कुछ भी नहीं। मैं ले नहीं रही। मैं इस के साथ रही हूँ, लड़ी हूँ, समझौता भी किया है। यह हमारी परेशानी का रिश्ता रहा है जो हमने वर्षों तक झेला है। पहली से लेकर बारहवीं तक, पर यह सब्जैक्ट खत्म नहीं हुआ। लोगों को राक्षसों के सपने आते हैं पर मुझे मैथ्स टेस्ट के भयानक सपने आते हैं। मुझे पता है तुम्हारे सैट-परसैंट मार्क्स आते हैं, तभी तुम्हें इससे प्रेम है। पर याद रखो दुनिया के बहुत सारे हिस्सों में मैथ्स स्टूडेंट्स के लिए एक वस्तु है, एक सब्जैक्ट है।’

वह सांस लेने के लिए रुकी। मेरा मन किया कि उठ खड़ा होऊँ और भाग जाऊँ। मैंने सोचा ‘मैं एक जंगली जानवर को कैसे पालतू बना सकता हूँ।’

‘क्या?’

‘दाने! देखो अब भी हैं’ उसने विषय बदला। अपनी कमीज की बांहें ऊपर चढ़ाते हुए। मैंने सोचा उसकी स्किन पर पिंक दाग मैथ्स से ज्यादा उसके मन की भड़ास है। गुलाबी मैंने उसकी पतली बांह को भी देखा। बांह इतनी गुलाबी थी कि आप उसकी तीन नाड़ियों को आराम से देख सकते हो। उसके हाथों की रेखाएं लम्बी और गहरी थीं और लाईफ-लाईन तो विशेष तौर पर लम्बी थी। उसकी अंगुलियां लम्बी और पतली थीं। उसने अपने नाखूनों के किनारों पर सिल्वर नेल-पालिश लगाई हुई थी। मैं सोच रहा था लड़कियों को ऐसे विचार कैसे सूझते हैं?

‘क्या?’ उसने कहा, जब कि मैं उसकी बांह कुछ ज्यादा देर तक ही देखता रहा। मैंने तत्काल एक टेक्सट-बुक खोली।

‘कुछ नहीं, मेरा काम तुम्हें मैथ्स पढ़ाना है न कि इसे तुम्हें पसंद करवाना। मैंने सुना है तुम डॉक्टर बनना चाहती हो।’

‘मैं मुंबई में किसी भी कॉलेज में जाना चाहती हूँ।’

‘माफ करना।’

‘मैं अहमदाबाद से बाहर जाना चाहती हूँ। पर मामा, पापा मुझे ऐसा नहीं करने देंगे - जब तक कि कोई अच्छा कोर्स जैसे डॉक्टरी या इंजीनियरिंग न हो। इंजीनियरिंग में मैथ्स है, मैथ्स मतलब मितली, सो यह बात नहीं बनी। रह गई मैडिकल लाईन, सो मेरा पास हो गया। पर ये मैडिकल एन्ट्रेंस टेस्ट और.....’

मैंने महसूस किया कि विद्या रुकने वाली नहीं। और मेरे पास ट्यूशन के लिए बस एक घंटा है और ट्यूशन लेना ऐवरेस्ट की चोटी पर नंगे पांव चढ़ने के समान है। मैं असली मुद्दे पर आना चाहता था।

‘सो, तुम किस विषय से शुरुआत करना चाहोगी?’

‘इन्वेशन के इलावा कुछ भी।’

‘मैंने तुम्हारा ऐन्ट्रेंस ऐग्जाम का सिलेबस देखा है। उसमें कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिनमें मार्क्स ज्यादा आ सकते हैं और आसान भी हैं।’

मैंने मैडिकल, ऐग्जाम की गाइड खोली और उसके आगे रख दी।



‘देखो, यह प्रोबैबिलिटी (संभावना)’ मैंने कहा, यह और परम्यूटेशनल मैथ्स एग्जाम में 25 प्रतिशत होगी। स्टैटिक्स 10 प्रतिशत। इक्वेशन कोई नहीं। तो क्या हम यहां से शुरू कर सकते हैं?’

‘ठीक है’ उसने कहा और एक बिलकुल नई कॉपी खोली। कापी के साथ ही उसके पास दो पैन थे।

उसने संभावना के पहले अध्याय का पहला पन्ना खोला - जैसे कि वो भारत की सबसे अधिक मेहनती विद्यार्थी हो और शायद जिसे जानना मुश्किल हो।

‘संभावना’ मैंने कहा, ‘बहुत आसान है। मैंने ऐसा इसलिए कहा कि संभावना में तुम अपने विचारों का इस्तेमाल कर सकती हो, अपनी रोज की समस्याओं को हल करने के लिए।

‘जैसे, क्या?’

‘रोजाना की कौन सी समस्याएं तुम हल कर सकते हो’ उसने कहा, अपनी बालों की लट को पीछे करते हुए।

‘अच्छा, ठीक है, तुम कुछ ज्यादा ही आगे चल रही हो, आओ हम देखते हैं। मैंने चारों तरफ कोई आसान सा उदाहरण खोजने के लिए नजर दौड़ाई। मैंने उसके सुचारू ढंग से सजाए गए कमरे को देखा, पिंक चादरें एक दीवार पर टांकी गई थी। दूसरी दीवार पर पाश्चात्य सभ्यता के बैकस्ट्रीट ब्वायज के, ऋतिक रोशन के पोस्टर लगे हुए थे। अगली दीवार ग्रीटिंग कार्ड्स की थी। ‘वो कार्ड्स देखो।’

‘वो मेरे बर्थ-डे कार्ड्स हैं जो मेरी स्कूल फ्रैंड्स द्वारा भेजे गए हैं। दो महीने पहले मेरा बर्थ-डे था।’

मैंने इस सूचना पर ध्यान नहीं दिया। ‘देखो वहां 20 कार्ड्स हैं, ज्यादा सफेद हैं, कुछ रंगदार हैं। कितने हैं?’

‘पांच रंगदार हैं’ उसने कहा कार्ड्स को ध्यान से देखते हुए उसने सवालिया नजरों से मेरी ओर देखा।

‘पांच। अब मैं कहता हूं कि मैंने सारे कार्ड्स ले लिए और उन्हें एक बैग में डाल दिए। फिर मैंने उसमें से एक कार्ड निकाला, क्या संभावना है कि कार्ड रंगदार है?’ ‘तुम उन्हें बैग में क्यों डालोगे?’ उसने कहा।

‘हिपोथेटिकल। क्या संयोग है?’

‘मुझे नहीं मालूम।’

‘ओ.के. हम यही उदाहरण लेते हैं संभावना के मूल सिद्धांत के लिए। प्राबेबिलिटी को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है’ मैंने कहा और लिखा-

प्रोबेबिलिटी - कुछ जो तुम चाहते हो कितनी बार हो। कुछ जो कितनी बार हो सकता है।

‘कैसे होगा, जब कोई संकेत नहीं?’ उसने कहा।

‘देखो, मैंने तुम्हें कहा था संभावना दिलचस्प है। अब हम डीनोमीनेटर को देखते हैं। अगर मैं बैग में से बीस में से एक कार्ड निकालूं तो कितने कार्ड अलग-अलग कार्ड बाहर निकल सकते हैं?’

‘ए... बीस?’

‘हां, बिलकुल ठीक।’

‘धत्!’ उसने कहा।

मैंने खुद को संयम में रखा। मैं उसको समझाने के लिए उदाहरण दे रहा हूँ और वह मुझे ही धता बता रही है। उसका अपना ही नजरिया है।

‘और अब न्यूमीरेटर को देखते हैं। मैं एक रंगदार कार्ड चाहता हूँ। अगर मैं इनमें से एक कार्ड निकालूं तो इसमें से कितने अलग-अलग रंगों के कार्ड निकल सकते हैं?’ ‘पांच?’

‘ठीक है, अब हम अपना फार्मूला शब्दों में लिखते हैं’ मैंने कहा और लिखने लगा। संभावना = कोई भी वो संख्या जो तुम चाहते हो (5) वो संख्या जो हो सकती है (20)।

अतः संभावना =  $5/20 = 0.25$

‘अब देखो संभावना है 0.25 अर्थात 25 प्रतिशत। मैंने कहा और पैन मेज पर रख दिया। उसने वो सब दोबारा पढ़ा जो मैंने लिखा था।

‘ये तो सिम्पल है। पर एग्जाम की समस्या ज्यादा कॉम्पलीकेटेड है।’ उसने अंत में कहा।

‘धीरज रखो हम वहां भी पहुंचेंगे। पर मूल बात यह है कि इसे समझा जाए और तुम इसे उल्टोगी नहीं।’

उसकी दो सैल-कॉल्स से मेरा ध्यान बंट गया था। वह भागी अपना फोन उठाने के लिए। वह बिस्तर पर बैठ गई और मैसेज पढ़ने लगी। ‘मेरी स्कूल फ्रेंड, स्टूपिड।’ वह फोन पर खुश लग रही थी।

मैं चुप रहा और उसके वापिस आने का इंतजार करने लगा। ‘ओ.के. अब हम एक और करते हैं’ मैंने कहा, ‘फर्ज करो हमारे पास एक जार है जिसमें चार लाल रंग के और छः नीले रंग के पत्थर हैं।’

मैंने अगले आधे घंटे में तीन और हल निकाले। ‘देखो यह मुश्किल नहीं है अगर तुम पूरा कन्सस्ट्रेट करो। दिलचस्प हैं।’ मैंने उसकी प्रशंसा की जब उसने एक हल निकाला।

‘आप चाय पिएंगे?’ मेरी प्रशंसा को दर-किनार करते हुए उसने कहा।

‘नहीं, शुक्रिया! मैं ज्यादा चाय पीनी पसंद नहीं करता।’

‘ओह मैं भी। मुझे कॉफी पसंद है। तुम्हें भी ऐसा ही करना चाहिए। क्या हम अगली प्रॉब्लम हल करें?’

उसका सैल फिर बजा। उसने पैन रख दिया और फोन की तरफ झुकी।

‘इसे छोड़ दो, मेरी क्लास में मैसेजिस नहीं।’ मैंने कहा।

‘यही बस....’ उसने कहा। उसने अपना हाथ बीच में ही रोक लिया।

‘मैं चला जाऊंगा, अगर तुमने ध्यान न दिया। मैंने तुम्हारी क्लास के लिए कई स्टूडेंट्स को वापिस किया है।’

वह मेरी कठोरता से झेंप गई। पर मैं कोई मि. नाईस नहीं। मैं उन लोगों से नफरत करता हूं जो काम पर पूरा ध्यान नहीं देते। विशेष रूप से उन्हें जो मैथ्स से नफरत करते हैं।

‘सॉरी’ उसने कहा।

‘हमारे पास केवल एक ही घंटा है। तुम अपने काम बाद में करना।’

‘मैंने कहा न सॉरी।’ उसने अपना पैन उठाया और थोड़े अनमने भाव से उसे खोला।

## पांच

‘तुम। जरूर आना अब।’ बच्चे ने हर शब्द के बाद सांस अंदर खींचते हुए कहा। ‘अली.....है’

‘आराम से पारस’ ईश ने हांफते हुए लड़के से कहा। वह बेलरामपुर म्यूनिसिपल स्कूल से भागा भागा आया था और हमें जोर लगा रहा था कि हम उसके साथ चलें। ‘अब? अभी चार ही बजे हैं, मैं दुकान कैसे बन्द कर सकता हूँ।’

‘वह ज्यादा क्रिकेट नहीं खेलता, वह हमेशा कंचों से खेलता है। ईश भैया, प्लीज आज जरूर आना।’

‘आओ हम चलें, आज दिन वैसे भी कुछ ढीला है।’

ईश ने कहा, चप्पलें पहनते हुए।

ओमी पहले ही बाहर निकल चुका था। मैंने कैश-बॉक्स बंद किया और फूलों वाली दुकान के मालिक को दुकान का ध्यान रखने के लिए कहा। फूलों की दुकान हमारी दुकान से अगली दुकान थी।

हम अपने स्कूल के चिरपरिचित मैदान में पहुँचे। 20 लड़कों ने अली को घेरा डाला हुआ था।

‘मैं अब नहीं खेलना चाहता’ भीड़ के बीच में से एक आवाज आई।

एक दुबला-पतला लड़का - शायद भोजन की कमी के कारण - हाथों से मुंह ढके जमीन पर बैठा था।

‘नहीं, ईश भैया तुम्हें खेलते हुए देखना चाहते हैं।’

पारस ने खुशामदी भीड़ का साथ दिया और अली की कोहनी पकड़ कर हिलाया। ‘मैं क्रिकेट पसंद नहीं करता। यह मुझे सिर-दर्दी लगती है।’ अली ने कहा। उसने अपना मुंह अभी भी हाथों से ढका हुआ था।

‘मैंने तुम्हारे बारे में बहुत सुना है’, ईश ने कहा घुटने के बल बैठते हुए।

अली ने अपने हाथ हटाये ईश को देखने के लिए।

उसकी आखें चमकदार हरे रंग की थीं।

‘हैलो, मैं ईश हूँ और मैं इस स्कूल में तेरह वर्ष तक पढ़ा हूँ। और मैं क्रिकेट भी सिखाता हूँ।’ ईश ने कहा और हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ अली की तरफ बढ़ाया। अली ने ईश के चेहरे को पड़ा। उसने झिझकते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया। अली के लम्बे बाल बड़ी सफाई से दो हिस्सों में बंटे हुए थे। उसका जवान पतला दुबला शरीर लड़कियों जैसा लग रहा था। वह कला और संगीत में प्रतिभा रखने वाला लगता था न कि क्रिकेट में।

‘वह कितने वर्ष का है?’ मैंने एक लड़के की ओर ईशारा किया जिसने ऐनक लगाई हुई थी।

‘वह VII सी में है।’ लड़का जुकाम की वजह से छींक रहा था।

‘मैंने हिसाब लगाया वह बारह से अधिक का नहीं हो सकता।’

‘उसने अभी ज्वाइन किया है नहीं? कहां से है?’

मैंने पूछा।

‘वह पहले शाहपुर मदरसे में था। उसके पापा ने उसे यहां दाखिल करवा दिया। तब से सारे गेंदबाज अपना विश्वास खो बैठे हैं।’ वह छींका। मैं मुश्किल से बचा उसके छींटों से।

‘ईश और ओमी चौकड़ी मार कर अली के पास ही बैठ गए जमीन पर।’

‘मैं ज्यादा देर तक नहीं खेल सकता। मेरे सिर में दर्द-होने लगता है।’

‘ठीक है अगर तुम नहीं खेलना चाहते’ ईश ने कहा, ‘आओ ओमी खड़े हो गए और अपनी पैटें झाड़ने लगे।’

‘मैं एक ओवर खेल सकता हूँ, अगर तुम बालिंग करो’ अली ने कहा जैसे ही हम जाने को मुड़े।

‘पक्का’ ईश ने कहा। एक बच्चे ने उसके हाथों में बॉल पकड़ा दी।

भीड़ पीछे हट गई। कुछ बच्चे फील्डिंग के लिए आगे आए। ओमी विकेट-कीपर बना। मैं बॉलर के पीछे खड़ा हो गया, एम्पायर के पास। अली क्रीज पर आ गया। वह गेंदबाज को गौर से देख रहा था। भीड़ ने तालियां बजाई ज्यों ही ईश गेंद फेंकने के लिए थोड़ा भागा। इस नाजुक से, हिरणी-जैसी आंखों वाले लड़के को खेलते देखने में क्या तुक है, मैं समझ नहीं पाया। बैट उसकी दो-तिहाई लम्बाई का था।

ईश का रन-अप फेक था नकली था। वह मेरे पास आ कर रुका। एक बड़ा आदमी एक बारह वर्ष के 'छोटे लड़के को बोलिंग कर रहा है, मूर्खतापूर्ण है। ईश ने लड़के को देखा और एक सिम्पल सी बच्चों वाली गेंद उछाली। धीमी बॉल बीच में टप्पा खा गई और कुछ समय लिया उसने क्रीज तक पहुँचने में। धवाक, अली ने बड़े धीरे से

बैट को गेंद से टकराया। बॉल ऊपर को उठा, मैंने और ईश ने देखा तीन सेकंड तक उसकी उछाल - वो मारा छक्का।

ईश ने अली को देखा और प्रशंसा में सिर हिलाया। अली ने एक पल में ही अपना चेहरा दूसरी तरफ कर लिया एक तो सूरज के कारण और दूसरे असली बॉल न आने के कारण।

अगली बॉल के लिए ईश ने आठ कदम रन-अप के लिए उठाए। लड़कियों जैसे नैन-नकश वाले लड़के ने शानदार हिट मारा। मीडियम स्पीड वाली बॉल ऊपर उठी और हिट हुई - एक और, छक्का।

ईश थोड़ा मुस्कराया। अली के बैट ने नहीं उसके गर्व ने बलि को मारा। भीड़ ने तालियों बजाई।

ईश ने अगली बॉल पर ग्यारह कदम लिए रन-अप के लिए। उसे पूरा यकीन था कि बॉल जब उसके हाथ से छूटेगी तो सीधे अली के कन्धे से टकराएगी। अली एक टांग पर घूमा जैसे नाच रहा हो और बैट घूमाया - लो एक और सिक्सर।

तीन गेंदें और तीन छक्के - ईश कुछ स्तब्ध था। ओमी का मुँह खुला था, पर उसका ध्यान विकेट-कीपिंग पर था। मेरा ख्याल है कि वह ईश के प्रति किसी भी प्रतिक्रिया को रोकना चाहता था।

‘वह सनकी है, अली सनकी है, सनकी अली’ फिल्डिंग करता हुआ एक बच्चा चिल्लाया और अली को दूर हटा दिया।

‘चलो खेलो’ ईश ने अली से कहा और फिल्डर को घूरा।

ईश ने बॉल को अपनी पैंट से तीन बार रगड़ा। उसने बॉल पर अपनी पकड़ की स्थिति बदली और शरीर को घुमाया। उसने अपनी सबसे लम्बी रन-अप ली और पूरी शक्ति से आगे की तरफ भागा। बॉल बहुत तेज थी और पूरे झटके के साथ। इस बॉल को फेंकने में ईश की कूँठा दिखाई दे रही थी। यह सजा देने जैसा है। अली दो कदम आगे बढ़ा और जोर से बैट बॉल पर मारा। बॉल बहुत ऊपर चली गई और ग्राउंड के बाहर पहुँच गई क्लास-रूम की खिड़की को लगती हुई।

मैं हंसा। मुझे पता था कि मुझे हंसना नहीं चाहिए था फिर भी मैं हँसा। मेरे स्कूल बैच के क्रिकेट चैम्पियन को मात्र बारह वर्षीय लड़के देखना बड़ा फनी लग रहा था। कम से कम मुझे। असल में केवल मुझे ही।

‘क्या?’ ईश ने निराशा में कहा।

‘कुछ नहीं।’ मैंने कहा।

‘वह ब्लडी बॉल कहाँ है?’

‘वे उसे ढूँढ रहे हैं क्या तुम मेरी दुकान से एक और खरीदना चाहोगे मि. कोच?’ मैंने मजाक में कहा।

‘शटअप’ ईश झल्लाया..तभी बॉल उछलती हुई उसके पास पहुँच गई।

ईश एक और रनअप लेने जा रहा था जब अली क्रीज पर बैठ गया।

‘क्या हुआ?’ ओमी सबसे पहले उसके पास पहुँचा।

‘मैंने तुम्हें बताया था। मुझे सिर-दर्द हो जाता है। क्या मैं अब वापिस जा सकता हूँ?’ अली ने कहा। उसकी आवाज बिलकुल बच्चों जैसी थी, लग रहा था वो रो पड़ेगा। ओमी ने ईश और मेरी तरफ देखा। मैंने हामी भर दी। मैंने तुम्हें कहा था, नहीं? सनकी!’ पारस भागता हुआ हमारे पास आया।

अली खड़ा ओ गया। ‘क्या मैं जा सकता हूँ?’

हमने इजाजत दे दी। अली ने अपनी जेब से कुछ कंचे निकाले जो उसकी आंखों से मिलते-जुलते थे। अपने हाथों में उन्हें घुमाते हुए, वह ग्राउंड छोड़ कर चला गया। ‘मैं विश्वास नहीं कर सकता।’ ईश ने घोषणा की। वह अपनी सुबह की 50 बैठकें पूरी कर चुका था। फिर वह मेरे पास आकर बैठ गया, बैंक के पिछले यार्ड में। ओमी अपनी सौ पूरी करने में लगा हुआ था।

‘चाय’ मैंने कहा और ईश का कप उसे थमा दिया। मेरे सबसे अच्छे दोस्त को कल एक गहरा सदमा लगा है। मैंने उसका मूड ठीक करने के लिए बैंक की किचन से अदरक की अच्छी सी चाय बना कर उसको दी। इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं कर पाया। ‘यह केवल किस्मत नहीं हो सकती, ठीक? किसी भी तरह नहीं।’ ईश अपने सवालियों के जवाब खुद ही दे रहा था।

मैंने अपना सिर हिलाया और बिस्कुटों की प्लेट उसके आगे की, पर व्यर्थ। मैं हैरान था कि अली वाली घटना कहीं हमेशा के लिए ईश की भूख न खत्म कर दे। ईश अपने आप से बातें करता रहा, मैं बाहर आ गया। ओमी कसरत के बाद हनुमान-चालीसा भी पढ़ता है। सुबह का यह थोड़ा सा समय मुझे बहुत पसंद है, स्टूडेंट्स को पढ़ाने और दुकान खोलने के बीच का समय। यह समय कुछ सोचने के लिए अच्छा होता है। और इस समय में मैं आजकल केवल नई दुकान के विषय में ही सोचता हूँ। ‘25 हजार रुपए अब तक बचा कर रखे गए हैं और दिसम्बर तक 15000 और हो जाएंगे।’ मैं बुड़बुड़ाया, ‘अगर बिल्डर चालीस हजार के डिपॉजिट पर मान गया तो मैं नवरंगपुरा की लीज इस वर्ष के अन्त तक ले लूंगा।

मैंने अपने लिए एक कप चाय का और डाला। ‘लो मामा, अपनी दुकान की चाबियां। हम नवरंगपुरा वाली दुकान पर जा रहे हैं, जो ए.एस. मॉल में हैं।’ मैंने अपना सपनीला डॉयलाग कम से कम सौ बार बोला होगा अपने दिमाग के अन्दर। तीन महीने और मैंने खुद को विश्वास दिलाया।

‘तुम लोगों ने सारे बिस्कुट खा लिए हैं।’ ओमी ने कहा जैसे ही वो अपनी कसरत खत्म करके हमारे पास आया।

‘सॉरी! चाया।’ मैंने उसे दी।

उसने मना किया और दूध का एक पैकेट खोल कर मुंह को लगा लिया। मेरी तरह वो भी चाय ज्यादा नहीं लेता। कैफीन ईश के परिवार में बहुत चलती है। मुझे याद आया विद्या ने भी मुझे चाय के लिए पूछा था। मूर्ख लड़की।

‘अभी भी तुम अली के बारे में ही सोच रहे हो?’

ओमी ने ईश से कहा, दूध की मूछों को साफ करते हुए।

‘वह बड़ा इमैजिंग है। मैंने अच्छी बालिंग नहीं की थी पर इतनी बुरी भी नहीं थी। पर वो...वो....’ ईश को शब्द नहीं मिल रहे थे।

‘चार छक्के, हैरानी की बात है’ ओमी ने कहा,

‘बड़ी बात नहीं जो लोग उसे सनकी कहते हैं।’

‘नहीं जानता कि वह सनकी है, पर वो अच्छा है।’ ईश ने कहा।

‘मुसलमानों के ये बच्चे। तुम नहीं जानते थे कब क्या’ ओमी ने कहा और बाकी का दूध भी पी गया।

‘शट-अप। वह अच्छा खिलाड़ी है। मैंने ऐसा खेलते कभी किसी को नहीं देखा। मैं उसे कोचिंग देना चाहता हूँ।

‘पक्का, जब तक वह तुम्हें पे करता है। वह चार गेंदों से ज्यादा नहीं खेल सकता। तुम उसकी मदद कर सकते हो।’ मैंने ईश को बताया।

‘क्या? क्या उस मुल्ला के बच्चे को सिखाओगे?’

ओमी के चेहरे पर चिन्ता थी।

‘मैं बेलरामपुर के बैस्ट प्लेयर को सिखाऊँगा। उस बच्चे में क्षमता है जिसे बाहर लाना होगा। तुम जानते हो जैसे....’

‘टीम इंडिया?’ मैंने सुझाया।

‘ईश... किस्मत न कहो, पर हां। मैं उसे सिखलाना चाहता हूँ। स्कूल में वे उसे बर्बाद कर देंगे।

स्कूल में वे उसे पढ़ाएंगे और वह खेल भूल जाएगा।

‘हम मुस्लिम बच्चे को नहीं सिखलाएंगे।’ ओमी, ने अपना मत दिया। मामा मुझे काट डालेंगे।’

‘ज्यादा नाटक न करो। उन्हें पता नहीं चलेगा। हम उसे बैंक में सिखाएंगे।’ ईश ने कहा। शेष वार्तालाप के लिए ईश और ओमी ने नजरें मिलाईं। अंत में, सदा की तरह, ओमी झुक गया।

‘तुम्हारी मर्जी। पूरा ध्यान रखना कि वो मंदिर के आस पास न फटके। अगर बिट्टू

मामा को पता चल गया तो वो हमें दुकान से बाहर निकाल देंगे।’

‘ओमी ठीक कह रहा है। हमें दुकान कुछ महीनों के लिए और चाहिए।’ मैंने कहा। ‘हमें डॉक्टर के पास भी जाना पड़ेगा।’ ईश ने कहा।

‘डॉक्टर?’ मैंने पूछा।

‘उसका सिर चार गेंदों के बाद दुखने लगा था। मैं चाहता हूँ प्रेक्टिस शुरू करने से पहले हम उसे डॉक्टर को दिखाएं।’

‘अगर तुम उससे फीस चाहते हो तो तुम्हें पहले उसके पेरेण्ट्स से बात करनी होगी।’ मैंने कहा।

‘मैं उसे फ्री सिखाऊँगा’ ईश ने कहा।

‘पर फिर भी, भारतीय माता-पिता के लिए क्रिकेट समय की बर्बादी है।’

‘फिर हम उसके घर चलेंगे’ ईश ने कहा।

‘मैं किसी मुसलमान के घर नहीं जा रहा। ओमी ने कहा, ‘मैं नहीं जा रहा।’ वह उत्तेजित था।

‘चलो, पहले हम दुकान खोलते हैं। अब बिजनैस का समय है।’ मैंने कहा।

\*\*\*\*\*

‘क्रिकेट नहीं, मैं कंचे खेलना पसंद करता हूँ।’ अली ने पांचवीं बारी पर कहा। ईश ने चार चॉकलेट लीं (दुकान के खर्चे में से) अली के हर छक्के के लिए। अली ने चॉकलेट ले लीं पर क्रिकेट-कोचिंग लेने से मना कर दिया और डॉक्टर के पास जाने को भी राजी नहीं हुआ।

‘हमारी दुकान पर कंचे भी हैं’ मैंने खुशामदी लहजे में कहा। ‘जयपुर के खास, नीले कंचे। एक दर्जन तुम्हें मिलेंगे अगर तुम डॉक्टर के पास चलो। डॉक्टर पास ही गली में है।’

अली ने मेरी तरफ देखा अपने दो हरे कंचों के साथ।

‘दो दर्जन, अगर तुम सुबह की कोचिंग के लिए आओ तो। मैंने कहा।

‘डॉक्टर तो ठीक है पर कोचिंग के लिए अब्बा को कहना पड़ेगा।’

‘अपने अब्बा का नाम पता हमें दे दो।’ मैंने कहा।

‘नसीर आलम, सातवां पोल, ग्राउंड फ्लोर पर तीसरा घर’

‘तुमने क्या नाम बताया?’ ओमी ने कहा।

‘नसीर आलम’ अली ने दोहराया।

‘मैंने यह नाम कहीं सुना है। पर मुझे याद नहीं आ रहा।’ ओमी बुड़बुड़ाया। ईश ने उसे अनसुना कर दिया।

‘डॉ वर्मा का क्लीनिक अगले पोल पर है चलो हम चलते हैं।’ ईश ने कहा।

\*\*\*\*\*

‘वैल्कम, अपने क्लीनिक पर जवान लड़कों को देख कर अच्छा लगा-फॉर-ए-चेंज।’ डॉ. वर्मा ने अपना चश्मा उतारा। और पचास वर्ष की अपनी आंखों को रगड़ा। तीन वर्ष पहले जब मैं उनसे मिला था, तब से अब तक उनके चेहरे की झुर्रियों में काफी इजाफा हुआ है। उनके काले बाल सफेद हो चुके हैं। बुढ़ापा आ गया था।

‘और यह छोटा टाईगर कौन है? अपना मुंह खोलो बाबा’ डॉ वर्मा ने स्वभावानुसार अपनी टार्च जलाई और पूछा, ‘क्या हुआ?’

‘कोई गड़बड़ नहीं है। हम कुछ प्रश्न पूछना चाहते हैं।’ ईश ने कहा।

‘प्रश्न?’ डॉक्टर ने टार्च बंद करते हुए कहा।

‘इस लड़के को भगवान ने गिफ्ट दिया है, क्रिकेट का। मैं जानना चाहता हूं कि यह कैसे करे।’ ईश ने कहा।

‘कैसे करे?’ डॉक्टर वर्मा ने कहा,

‘कुछ लोग वैसे टैलेंटेड होते हैं।’

‘मैंने इसे 4 बॉलें खेलने को दीं और इसने सब पर सिकसर लगाया।’ ईश ने कहा। ‘क्या?’ डॉ वर्मा ने कहा। वह जानता था कि ईश वहां का सबसे अच्छा खिलाड़ी है।

‘अविश्वसनीय है पर सच है।’ मैं बीच में टपक पड़ा, यह भी है कि ये चार बॉलों के बाद बैठ गया। और कहा कि उसका सिर दुःख रहा है।’

‘डॉ वर्मा अली की तरफ मुड़े,’ तुम क्रिकेट पसंद करते हो बाबा?’

‘नहीं।’ अली ने कहा।

‘ये आम वायरल फीवर से ज्यादा कम्प्लीकेटिड है। चार बलों के बाद क्या हो जाता है बाबा?’

‘मैं जो कुछ भी पूरी कन्सन्ट्रेशन से करता हूं। मेरा सिर दुखने लग जाता है।’ उसने अपनी जेब में हाथ डाला। मैंने कंचों की आवाज सुनी।

‘चलो तुम्हारी आंखें चैक करते हैं।’ डॉ वर्मा ने कहा और टैस्टिंग रूम की ओर चल पड़े।

‘आखें बिल्कुल ठीक हैं आई-साईट इज फैंटास्टिक।’ डॉ वर्मा ने बाहर आते हुए कहा, ‘मेरे एक दोस्त हैं, डॉ मुल्तानी सिटी हॉस्पिटल में। वह आई-स्पेशलिस्ट हैं और

यू.एस.ए में वह बेसबॉल के टीम-डाक्टर थे। मैं पिछले एक वर्ष से उसे नहीं मिला। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें उसके पास ले जा सकता हूं, कला।’

हमने सिर हिलाया। मैं अपना पर्स निकालने लगा। डॉ. वर्मा ने ऐसा करने से-मना कर दिया।

‘फेसिनेटिंग’, डॉ मुल्तानी ने केवल एक ही शब्द बोला अली के एम.आर.आई. स्कैन के बाद। उसने अली के साथ दो घंटे लगाए। उसने अली का हर टैस्ट जो हो सकता था, किया, फिटनेस टैस्ट, ब्लड टैस्ट, रैटीनल स्कैन, कम्प्यूटराईज्ड हैंड-आई कार्डिनाइजेशन एग्जाम। मैट्रक्स स्टाइल की एम.आर.आई. में अली को पहले अपना सिर एक चैम्बर के अंदर करना पड़ा, जो बहुत फायदेमंद साबित हुआ।

‘मैं अपने स्पोर्ट-डॉक्टरी के दिनों को बड़ा मिस करता हूं, डॉ. वर्मा। अंबदाबाद के प्यार ने मुझ से काफी कुछ छुड़वा दिया।’ डॉ. मुल्तानी ने कहा। उन्होंने चाय और खाकरा का ऑर्डर हम सब के लिए दिया।

‘क्या हमारा काम हो गया है’। अली ने कहा और उबासी ली।

‘तकरीबन। अगर तुम चाहो तो बाहर बाग में कंचे खेल सकते हो।’ डॉ. मुल्तानी ने कहा। वह चुप रहे जब तक अली चला नहीं गया।

‘यह थोड़ा सा सिर-दर्द का काम है मुल्तानी’ डॉ. वर्मा ने कहा।

‘ये केवल एक सिर दर्द नहीं’ डॉ. मुल्तानी ने कहा और एक खाकरा मुंह में डाला। ‘यह ठीक है कि लड़का स्पेशिअली गिफ्टेड है।’

‘कैसे?’ मैं उत्तेजित हो गया। उन टेस्टों में ऐसा क्या निकला जिससे यह पता चला कि अली किसी भी गेंदबाज को हरा सकता है।

‘लड़के को हाईपर-रिफ्लैक्स है। यह एक मैडिकल टर्म्स में मानने योग्य नहीं। फिर भी क्रिकेट के लिए गिफ्ट लग रही है।’

‘हाईपर, क्या?’ ओमी ने पूछा।

‘हाईपर रिफ्लैक्स?’ डॉ. मुल्तानी ने वहां पड़ा शीशे का एक पेपर उठाया और ऐसे दिखाया जैसे उसे ओमी की ओर जोर से फेंक रहे हों। ओमी ने अपना बचाव किया। ‘मैंने जब इसे तुम्हारी तरफ फेंका तो तुमने क्या किया? तुमने बड़ी फुर्ती से बिना कुछ सोचे इस हमले से बचने की कोशिश की। मैंने पहले तुम्हें वॉर्न नहीं किया था और सब कुछ पलक झपकते हो गया। इसलिए तुम इस बारे में सचेत नहीं थे कि बचने के लिए कुछ सोचो। यह बस हो गया।’

डॉ. मुल्तानी पानी का घूंट पीने के लिए रुके और फिर बोले, ‘ये रोजाना की जिंदगी में इतना काऊंट नहीं करता, जब तक कि तुम किसी बहुत ही ठंडी या बहुत ही गर्म चीज को न छुओ। फिर भी, खेलों में यह बात बहुत महत्व रखती है। ‘डॉ. मुल्तानी कुछ रिपोर्टें देखने के लिए रुके और एक और खाकरा उठाया।

मैंने खिड़की में से अली को देखा। वह गुलेल से एक कंचे को दूसरे कंचे का निशाना बना रहा था। ‘तो अली के पास अच्छे रिफ्लैक्स हैं। यह बात है’ ईश ने कहा। ‘उसकी रिफ्लैक्स हमारे से दस गुना अधिक हैं। पर एक बात और है। रिफ्लैक्स (प्रतिक्रिया) के अलावा, मानव का दिमाग और दो तरीकों से भी अपने फैसले लेता है। एक है लम्बा तरीका - विश्लेषित ढंग - मतलब समस्या का हमारे दिमाग में बड़ी बारीकी से अध्ययन होता है और हम काम करने के तरीके का फैसला करते हैं। और, और एक अन्य ढंग है, दूसरा तरीका जल्दी का है पर कम सही होता है।

साधारणतया तो पहला ढंग ही अपनाया जाता है, दूसरा तरीका जल्दी का है पर कम अपनाया जाता है और इसके प्रति सचेत होते हैं। पर कई बार, विकट परिस्थितियों में, दिमाग छोटा रास्ता चुनता है। इसे हम क्विक-थिंक-मोड (जल्दी- जल्दी सोचने का तरीका) कहते हैं।’

हमने सहमति में सिर हिलाया और डॉ. मुल्तानी ने अपनी बात जारी रखी।

‘रिफ्लैक्स-एक्शन में दिमाग सोचने की शक्ति और क्रिया को खत्म कर देता है। वह केवल बचाव कर सकता है, उसे पकड़ने की कोशिश को भूल कर। इसीलिए प्रति उत्तर का समय बहुत तेज होता है। खेलों में ऐसे क्षण आते हैं जब तुम्हें हर संभव तरीका सोचना पड़ता है - विश्लेषण ‘फुर्तीली-सोच या रिफ्लैक्स।’

‘और अली?’ ईश ने कहा।

डॉ. मुल्तानी ने एम.आर.आई. स्कैन फिर निकाला। अली का दिमाग सम्मोहन शक्ति रखता है। उसका पहला, दूसरा और यहां तक कि तीसरा रिफ्लैक्स - सोच का तरीका भी उसका निर्णय लेने का काम भी उतना ही सही है जितना उसकी विश्लेषण क्रिया का। तुम यह सोच सकते हो कि तुम्हारी उस तेज बॉल को हिट करना एक चांस था, नहीं, पर उसके दिमाग ने अपना रास्ता आराम से देखा और उसके लिए यह एक सॉफ्ट थ्रो था।’

‘पर मैंने बहुत फास्ट बालिंग की थी।’

‘हां, पर उसके दिमाग ने इसे पहचाना और उसकी गति अनुसार काम किया। अगर यह बात समझनी कठिन है तो कल्पना करो कि अली ने बॉल को धीमी गति में देखा। एक आम खिलाड़ी दूसरा और तीसरा सोचने का ढंग



अपनाएगा और तेज बॉल को मारेगा। अली पहला तरीका अपनाता है। एक साधारण खिलाड़ी को वर्षों तक अभ्यास करने की जरूरत पड़ती है इतनी सही खेलने के लिए। अली को इसकी जरूरत नहीं।

यही उसके लिए ईश्वर की देन है।

हमें कुछ समय लगा डॉ. मुल्तानी की बात पचाने में। इसे समझने के लिए हमें पहले रास्ते को ही अपनाना पड़ेगा।

उसके लिए पेस डिलीवरी धीमी गति है। ईश ने फिर समझने की कोशिश की। केवल उसके दिमाग के लिए क्योंकि उसका दिमाग जल्दी विश्लेषण करता है। यह भी ठीक है कि अगर तुम उसे तेज बॉल दोगे तो चोट पहुंचेगी।

‘पर वह इतनी दूर तक कैसे मार देता है?’ ईश ने कहा।

‘वो ज्यादा जोर से हिट नहीं करता। वो पहले से ही आ रही तेज बॉल की दिशा बदल देता है। बॉल में जो दूर जाने की शक्ति है वह ज्यादा तुम्हारी होती है।’ ‘क्या आपने ऐसा गिफ्टेड प्लेयर कोई और देखा है?’ मैं जानना चाहता था। इस कोण से तो नहीं, इस लड़के के दिमाग की नसें आम इंसानों से कुछ अलग हैं। कुछ इसे नुक्स बताएंगे। इसलिए मैं तुम्हें सुझाव देता हूँ कि इस -बात को अधिक तूल न दो।’

‘वह इंडियन टीम के लिए क्या मायने रखता है’, ईश ने कहा, ‘डॉ. मुल्तानी आप जानते हैं।’

डॉ. मुल्तानी ने गहरी सांस ली। ‘जानता हूँ पर इस वक्त नहीं जैसे कि उसके सिर-दर्द की समस्या है। जबकि उसका दिमाग यह काम उतनी ही जल्दी कर लेता है। उसे गेम में कुछ रुकने की जरूरत है। इस गिफ्ट को दोबारा इस्तेमाल करने के लिए उसे अपने दिमाग को फिर से ताजा करना पड़ता है।’

‘क्या ऐसा हो सकता है?’ ईश ने कहा।

‘हां, प्रशिक्षण लेने पर। उसे क्रिकेट के और पहलू भी सीखने पड़ेंगे। मेरे ख्याल में वह विकेट के बीच शायद ही भागता हो, रन लेने के लिए। लड़के में ताकत नहीं है। वह कमजोर है। शायद कुपोषण के कारण। डॉ. ने कहा।

‘मैं उसे कोचिंग देने जा रहा हूँ’ ईश ने कहा, ‘और ओमी इसमें मेरी मदद करेगा इसे खिलाएगा और फिट रखेगा।’

‘नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगा’ ओमी ने सुनते ही इनकार कर दिया, सब उसकी तरफ देखने लगे।

‘डॉ. वर्मा इन्हें बताएं कि क्यों मैं नहीं कर सकता।’

‘क्योंकि यह मुसलमान है।’ मुल्तानी को याद करो नसीर-मुस्लिम विश्वविद्यालय से? अली उसका बेटा है।’

‘ओह! वह नसीर? हां वह यूनिवर्सिटी इलैक्शंस में बढचढ कर भाग लेता था।

कभी वह बड़ा जोशीला था पर फिर मैंने सुना वह काफी ढीला पड़ गया है।’

‘हां, अब वह पूरा समय राजनीति में लगा रहता है। अब वह शुद्ध मुसलमान से सैकुलर पार्टी का बन गया है। ‘डॉ. वर्मा ने कहा।

ईश ने बड़ी हैरानी से डॉ. वर्मा को देखा।

‘कल तुम लोगों के जाने के बाद मुझे पता चला। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं क्लीनिक की जगह गासिप-सैन्टर खोल लूँ’ डॉ. वर्मा ने दबी हंसी में कहा। ‘खैर, यह तब की बात है। एक पुजारी का लड़का मुस्लिम लड़के को सिखा रहा है।’

‘मैं उसे सिखाना नहीं चाहता’ ओमी झट से बोला।

‘शट-अप। ओमी, तुम देखते नहीं हम यहां क्या कर रहे हैं?’ ईश ने कहा। ओमी खड़ा हो गया। उसने ईश को असहमति की नजर से देखा और कमरे से बाहर निकल गया।

‘स्टेट अकेडमी के विषय में क्या विचार है।’ डॉ. वर्मा ने कहा।

‘वो उसे बर्बाद कर देंगे।’ ईश ने कहा।

‘मैं सहमत हूँ।’ डॉ मुल्तानी कुछ पल रुके, ‘वह अभी बहुत छोटा है, मुसलमान है और गरीब है। और शिक्षित भी है। मैं तुम्हें सुझाव दूंगा कि इस लड़के और इसकी प्रतिभा को अभी ढका रहने दो। समय आने पर हम देख लेंगे।’ हम क्लीनिक से बाहर आ गए। मैंने अपनी जेब से चार कंचे निकाले और अली को आवाज लगाई।

‘अली, आओ चलें। इन्हें पकड़ो’

मैंने, उन चार कंचों को बहुत ऊँचे उसकी ओर उछाला। मैंने जानबूझ कर उन्हें काफी ऊपर अलग-अलग उछाला था।

अली ने अपनी गेम से हट कर देखा और हवा में कंचों को देखा। वह अपनी उकड़ूं स्थिति में ही रहा और फिर उसने अपना बायाँ हाथ ऊपर उठाया। एक, दो, तीन, चार, - जादुई छड़ी की तरह उसका बायाँ हाथ हिला। उसने एक-एक कर सारे कंचे पकड़ लिए।

छः

‘वो नहीं मानेगा, मैं पहले भी उससे बात कर चुका हूँ’ अली ने हांफते हुए कहा। हम बेलरामपुर के अंतिम हिस्से में पहुँच गए। उसका घर ढूँढने के लिए। वह बहुत ही गंदे पोल में रहता था। अली ने घंटी बजाई।

मैंने उसके अब्बा की नेम-प्लेट देखी, उस पर बने निशान से पता चलता था कि वो एक सैकुलर राजनीति पार्टी से संबंध रखता है।

‘जैसे ही अली के पिता ने दरवाजा खोला और कहा’ अली आज फिर देर से आए?’ एक काली अचकन पहन रखी थी जो उसकी सफेद शाही का कन्ट्रास्ट लग रही थी और सिर पर टाईट टोपी पहन रखी थी जो क्रोशिए से बुनी हुई थी। वह साठ वर्ष का लग रहा था। उसकी बात से ऐसा लगा कि अली उसकी जिन्दगी में लेट आया है।

‘और तुम लोग कौन हो?’ उसने कहा।

‘मैं ईशान हूँ।’ ईश ने कहा : और ये गोविन्द और ओमी हैं। हम अली के दोस्त हैं।’

‘दोस्त?’ अली के पिता ने हैरानी से कहा, हमारी उम्र और अली की उस के अंतर को देखते हुए।

‘हां अब्बा, ये स्कूल में क्रिकेट खेलने आए थे। उनकी स्पोर्ट-शॉप है। मैंने आप को बतलाया था याद होगा।’

‘अंदर आ जाओ।’ अली के पिता ने कहा।

हम बैठक में बैठ गए। अली की मां रुह-अफजा के गिलास लेकर आई, उसने ब्राउन रंग की सलवार-कमीज पहन रखी थी। उसने दुपट्टे से अपना ज्यादा चेहरा ढका हुआ था। मुझे लगा कि वह अपने पति से कम से कम बीस वर्ष छोटी होगी। वह अली को गुस्सा कर रही थी कि वो कल के टैस्ट के लिए तैयारी नहीं कर रहा। मेरे ख्याल में इंडियन मदर्स के पास अपने बच्चों से बात करने के दो ही विषय होते हैं - और खाओ, और पढ़ो।

‘हम अली को कोचिंग देने के बारे में आप से बात करने आए हैं।’ ईश ने बात शुरू की जब अली अपनी मां के साथ अंदर चला गया था।

‘क्रिकेट कोचिंग?’, नहीं धन्यवाद। हमें इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।’ अली के पिता ने कुछ इस अंदाज से बात की मानो उसकी बात निर्णायक थी, बातचीत शुरू करने से।

‘पर अंकल?’ ईश ने विरोध किया।

‘ऊपर देखो’ अली के पिता ने छत की तरफ इशारा किया, ‘देखो छत में दरारें पड़ गई हैं। यही एक कमरा है और एक छोटा सा कमरा और है, जो हमने किराए पर लिया हुआ है। क्या यह मकान ऐसे व्यक्ति का लगता है जो क्रिकेट कोचिंग की फीस भर सकता हो?’

‘हम फीस नहीं लेंगे।?’ ईश ने कहा।

‘मैंने ईश को घूरा। मुझे बुरा लगता है जब वो दुकान पर डिस्काउंट देता है और बिकुल ही छोड़ देना पागलपन है।

‘वह क्रिकेट कोचिंग से क्या करेगा। मदरसे बाद स्कूल ही उसको मुश्किल लगता है। वह पहली बार मैथ्स पढ़ रहा है। और उसे मैथ्स की ट्यूशनस नहीं लगा सकता।’ ‘गोविन्द मैथ्स पढ़ाता है।’ ईश ने कहा।

‘क्या?’ अली के पिता और मैं इकट्ठे बोले।

‘सच में। वह बेलरामपुर का बैस्ट है। उसने प्लस टू में बोर्ड की परीक्षा में सेंट-पर-सेंट मार्क्स लिए हैं।’

मैंने ईश को दोबारा पूरा। मेरी ट्यूशनस पहले ही पूरी हो चुकी हैं। और जोकर जैसी उसकी बहन को पहले ही फ्री पढ़ा रहा हूँ।’ पर ईश मैं ऐसा नहीं कर सकता।’

‘चलो हम एक समझौता करते हैं। अगर आप उसे हमारे पास क्रिकेट कोचिंग की इजाजत दें तो हम उसे मैथ्स फ्री में पढ़ायेंगे।’ ईश ने मेरी बात अनसुनी करते हुए कहा। मैं फ्री कैसे पढ़ा सकता हूँ। मैंने फीस देने वालों को भी अभी

वेटिंग में रखा हुआ है।'मैंने कहा।'

ईश ने तिरस्कृत नजरों से मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे मैंने उसके मार्स पर जाने के मिशन को फेल कर दिया हो।

'फ्री के लिए?' मैंने चेहरा उसकी तरफ किया।

'जितना हो सकेगा मैं अदा कर दूंगा।' अली के पिता ने दबी आवाज में कहा।

'मुझे खेद है पर यह मेरी रोजी है। मैं नहीं...' मैंने अपने प्रति उनकी धारणा को बदलने के लिए एक निराश कोशिश की।

'तुम मेरी सैलरी में से ले लेना, ओ.के. क्या तुम मुझे बात करने दोगे?' ईश ने बड़ी नम्रता से कहा।

मैं वहां से उठकर चला जाना चाहता था।

'मेरी थोड़ी सी पेन्डान है। तुम कितना लेते हो?'

'चार स...', मैं कहने ही जा रहा था कि ईश ने बीच में रोकते हुए कहा 'क्यों हम शुरू नहीं करते और देखते हैं यह कैसे चलता है?' हर किसी ने हां में सिर हिलाया, यहां तक कि ओमी ने भी। क्योंकि वह हमेशा वही करता है जो दूसरे करते हैं।

'ठीक है गोविन्द?' उसने बाद में मुझसे पूछा।

मैंने उसे हल्की सी सहमति दी, पाँच डिग्री तक झुकी हुई।

'खाने के लिए रुकिए,' प्लीज।' अली के पिता ने विनती की जैसे ही हम जाने के लिए खड़े हुए।

'नहीं, नहीं', ओमी ने कहा, एक मुसलमान के घर खाना खाने की कल्पना से ही वह भयभीत हो उठा था।

'प्लीज, ऐसा न कहिए, हमारे लिए मेजबानी बहुत मायने रखती है। आप हमारे मेहमान हैं।'

मैं मना कर देता। पर मैं फ्री-मैथ्स और फ्री क्रिकेट-कोचिंग के बदले कुछ लेना चाहता था।

हम कमरे में फर्श पर बैठ गए। अली की मां दो कुछ ज्यादा ही बड़ी प्लेटें ले आई। एक हम तीनों के लिए और एक अली के पिता के लिए। प्लेटों में सादा भोजन था - चपाती, दाल और गोभी-आलू की सब्जी।

ओमी बैठ गया पर उसने भोजन को हाथ नहीं लगाया।

'सर,' मैं आपको मीट नहीं परोस सका। आज यही बना है।'

'मैं मीट नहीं खाता। मैं एक पुजारी का बेटा हूँ' ओमी ने कहा।

एक अजीब सा अन्तराल आया। फिर ईष्ठा टपक पड़ा, 'खाना अच्छा लगता है। दोस्तों शुरू करो। एक ही सेट में खाना नजदीकियां बढ़ाता है। मैंने भी वही चपाती तोड़ी। उसकी लम्बी अंगुलियों ने मुझे उसकी बहन की याद दिला दी। ओह.. मुझे उसे कल फिर पढ़ाना है।

'क्या वे मदरसे में मैथ्स नहीं पढ़ाते?' मैंने बातचीत के इरादे से पूछा।

'इसी में नहीं'। अली के पापा ने दाल का चम्मच मुंह में डालते हुए कहा। 'मैथ्स और साइंस की यहाँ मनाही है।'

'बड़ी हैरानी की बात है, आज कल और इस जमाने में' मैंने कहा। मैंने बिजनैस का मौका सोचा। भारी गिनती में मदरसों के बाहर मैथ्स की ट्यूशनस।

'असल में,' अली के पापा ने कहा, 'मदरसों को स्कूल ही नहीं समझा जाता था। उनका काम केवल इस्ताम की शिक्षा देने तक ही सीमित है। आप और चपाती लो।' 'तभी आप ने उसे मदरसे से स्कूल में भर्ती करा दिया?' ईश ने कहा।

'हां। मैं तो उसे पहले ही भेज देता पर मेरे पिता इसे मदरसा भेजने पर ही अड़े रहे थे। छः महीने पहले उनकी डैथ हो गई है।'

'ओह, सॉरी' ईश ने कहा।

‘वे काफी समय से बीमार थे। मैं उन्हें बहुत मिस करता हूँ। पर इसलिए नहीं कि वर्षों की बीमारी के खर्च ने हमें धो डाला। अली के पिता ने कहा और एक गिलास पानी पीया।’ जब मैं यूनिवर्सिटी से रिटायर हुआ तो मुझे वहां का कार्टर खाली करना पड़ा। पार्टी चाहती थी कि मैं यहां आ जाऊँ। बेलरामपुर म्यूनिसिपल स्कूल नजदीक था इसलिए मैंने इसे वहां दाखिल करवा दिया। स्कूल तो अच्छा है न?’

‘हां। हम वहां बारह साल पड़े हैं।’ मैंने कहा।

‘ओमी तुमने कुछ नहीं खाया। कम से कम फल खा लो।’ अली के पिता ने उसे केले पेश करते हुए कहा। ओमी ने एक केला ले लिया, फिर उसका निरीक्षण किया, और फिर तीन ग्रासों में ही निगल गया।

‘तुम अली को क्रिकेट सिखाने के लिए इतने उत्सुक क्यों हो।’ अली के पिता ने कहा।

प्रथम पर्याप्त था ईश के चेहरे पर चमक लाने के लिए। उसने बड़े जोश से कहा, ‘अली में प्रतिभा है। आप देख रहे हैं मेरी कोचिंग से उसमें कितना निखार आया है।’ ‘तुम क्रिकेट खेलते हो?’ अली के पिता ने पूछा।

‘स्कूल में और अब हमारे पास स्पोर्ट्स-स्टोर भी है। मैंने बहुत से खिलाड़ी देखे हैं पर अली जैसा नहीं।’ ईश ने भावुकता से कहा।

‘पर यह तो बस एक गेम है। एक लड़का बैट से बॉल को मारता है, और बाकी के लड़के उसे पकड़ने के लिए दौड़ते हैं ‘यह उससे ज्यादा है, ‘ईश ने परेशानी से कहा।’ अगर आप ने इसे कभी खेला नहीं तो आप इसे कभी भी समझ नहीं सकते।’

अली के पिता ने कहा, ‘आप लोग जानते हैं मैं सैकुलर पार्टी का मੈम्बर हूँ?’ ‘हमने बाहर देख लिया था।’ मैंने कहा। ‘क्या आप आना पसंद करोगे और हमारी पार्टी को आकर देखेंगे कभी?’

ओमी सहसा उठ खड़ा हुआ। ‘आप जानते हैं आप किससे बात कर रहे हैं? मैं पंडित शास्त्री का बेटा हूँ। आप ने बेलरामपुर में स्वामी मंदिर देखा है या नहीं?’ उसकी आवाज थोड़ी तत्स थी।

ईश ने ओमी की कोहनी पकड़ कर बैठने का इशारा किया।

‘उससे क्या फर्क पड़ता है, बेटे?’ अली के पिता ने कहा।

‘आप मुझे अपनी पार्टी देखने के लिए आने को कह रहे हैं। मैं एक हिन्दु हूँ।’

‘वो हमने तुम्हारे विरोध के लिए नहीं बनाई ‘अली के पिता की आवाज में उदासीनता थी, ‘हमारी पार्टी सैकुलर है। इसका किसी धर्म विशेष से सम्बन्ध नहीं।’ ‘यह सैकुलर नहीं। यह सक-उलर पार्टी है। यह पालिटिक्स को सक-अप कर लेती है, ये आप सब जानते हैं। हैरानी की बात नहीं आप जैसे मुसलमान वहां इकट्ठे होते हैं। ईश बताओ हम जा रहे हैं या नहीं।’

‘ओमी, बिहेव सूअर सेल्फ, हम यहां अली के लिए आए हैं।’

‘मैं परवाह नहीं करता। उसे कंचे खेलने दो और मैथ्स में फेल होने दो अगर बिन्दु मामा को पता चला कि मैं यहां हूँ तो’

‘बिन्दु तुम्हारा मामा है?’ अली के पिता ने कहा।

‘वो तुम्हारे विरोधी हैं। और एक सक-अप पार्टी कभी नहीं जीतेगी बेलरामपुर में’ ‘शांत हो जाओ बेटे। बैठ जाओ।’ अली के पिता ने कहा।

ओमी बैठ गया। ईश ने उसके कंधे दबाए। ओमी गुस्से में कम ही आता है, पर अगर वो भड़क जाए जो उसे शांत करने के कई ढंग अपनाने पड़ते हैं।

‘लो, केला खाओ। मुझे पता है तुम्हें भूख लगी है।’ ईश ने उसे शांत करने की कोशिश की। ओमी ने पहले मना किया, फिर केला ले लिया।

‘मैं भी सैकुलर पालिटिक्स में नया हूँ बेटे। पहले मैं एक हार्डलाईन पार्टी में था।’ अली के पिता थोड़ी देर के लिए रुके, फिर बोले, ‘हां, मैंने भी कुछ गलतियां की हैं।’ ‘जो भी है। कभी कोशिश न करना हमारी पार्टी के लोगों को

अपनी पार्टी में करने की।' ओमी ने आवेश में कहा।

'मैं ऐसा नहीं करूंगा। पर तुम हमारे विरुद्ध इतने क्यों हो? पार्टी ने चालीस वर्ष देश पर शासन किया है, हमने कुछ तो ठीक किया होगा।'

'तुम, आप गुजरात पर और शासन नहीं करोगे। क्योंकि हमें तुम्हारी हिपोक्रेसी दिखाई दे रही है।' ओमी ने कहा। ओमी चुप हो जाओ' ईश ने कहा।

'ईश कोई बात नहीं। मुझे कभी ही मौका मिलता है नौजवानों से बात करने का। उसे अपने मन की कह लेने दो।' अली के पिता ने कहा।

'मेरे पास अब कहने को कुछ नहीं। आओ चलें।' ओमी ने कहा।

'साम्प्रदायिक पार्टियां भी परफैक्ट नहीं होतीं।' अली के पिता ने कहा। मैंने अंदाज लगाया कि अली के पिता भी इस बहस में दिलचस्पी ले रहे हैं।

'तुम हमें साम्प्रदायिक कहते हो। तुम्हारी पार्टी मुसलमानों को प्रेफरेंस देती है। फिर भी यह सैकुलर है। क्यों; ओमी ने कहा।'

'हमने उन्हें क्या प्रेफरेंस दी है।' अली के पिता ने कहा। 'तुम हमें अयोध्या में मंदिर क्यों नहीं बनवाने देते?' ओमी ने कहा। 'क्योंकि वहां पर पहले ही मस्जिद है।'

'पर उससे पहले वहां मंदिर था।'

'यह सिद्ध नहीं हो पाया।'

'यह हो चुका है। पर सरकार उन रिपोर्टों को छिपा रही है।'

'गलत।'

'जो भी हो। पर यह एक साधारण स्थान नहीं है। हमारा विश्वास है कि यह हमारे भगवान का जन्म-स्थान है। हमने कहा 'हमें वह स्थान दे दो? और हम मस्जिद को इसके आगे सम्मानपूर्वक बना देंगे।' पर तुम ऐसा नहीं कर सकते और हम जो बहुसंख्या में हैं, अपनी यह छोटी सी विनती पूरी नहीं करवा सकते। पारेख जी ठीक हैं, हम हिन्दुओं को इस देश से क्या आशा हो सकती है?'

'ओह! तो ये पारेख जी हैं जिन्होंने तुम्हें यह सब सिखाया है।' अली के पिता ने एक बड़ी सी मुस्कान दी।

'वे हमें सिखाते नहीं। हमारे सवाल पर साम्प्रदायिकता का लेबल चिपका दिया गया है। इस विषय में बात करना संगत नहीं। हिन्दु बात नहीं करते तो आप लोग समझते हो वे कुछ महसूस नहीं करते। आप को क्या लगता है कि लोग पारेख जी को क्यों सुनते हैं? क्योंकि कहीं न कहीं वे बहुत गहराई में लोगों को जोड़ते हैं। रोज की एक रेखा बढ़ती जाती है, मि. नसीर, चाहे इसके बारे में बात हो या न हो।'

'बहुत से हिन्दु हमें वोट देते हैं, तुम्हें पता होना चाहिए।' अली के पिता ने कहा। 'पर धीरे- धीरे वो सच्चाई जान जाएंगे।

'बेटे, हिन्दोस्तान एक आजाद मुल्क है। यहां विचारों की आजादी है। मैं मानता हूँ कि हिन्दु धर्म एक महान धर्म है, पर अति न करो।'

'ओह! मुझे न बताओ कि अति क्या होती है। हम जानते हैं कि कौन सा धर्म अतिवादी हो चुका है।'

मुझे विश्वास नहीं था कि ओमी जो कुछ कह रहा था उसमें विश्वास करता है या वह पारेख जी द्वारा दिए गए पाठ को दोहरा रहा है। उसने ईश या मेरे, साथ ऐसी कभी कोई बात नहीं की। पर क्या कहीं गहराई में वह बिट्टू मामा की तरह ही महसूस करता है? जैसे ईश की क्रिकेट में और मेरी बिजनैस में रुचि है तो क्या ओमी का झुकाव धर्म की ओर है? या फिर, ज्यादातर लोगों की तरह वह भी अस्पष्ट है अपने विचारों के प्रति और अपनी सही रुचि को पहचानने की कोशिश कर रहा हो। और हमने, जो उसे कभी सीरियसली नहीं लिया, शायद पारेख जी ने उसमें जिम्मेदारी की भावना पैदा की है। उसके विचारों को कोई दिशा दी हो।

‘क्या हम राजनीति के इस वार्तालाप को बन्द कर सकते हैं।’ ईश ने जाने का संकेत दिया।

‘आप अपने लड़के को भेजने के लिए तैयार हैं न?’ मैंने अली के पिता से पूछा कि कहीं ओमी की भड़ास को सुन कर उन्होंने अपना इरादा न बदल लिया हो।

‘ऐसी कोई बात नहीं। हम अपने विचारों का आदान-प्रदान कर रहे हैं।’

हमारे देश में इसी बात की कमी है। इट्स ओके. मैं आप लोगों पर पूरा भरोसा रखता हूँ अली के लिए।’

हम जाने के लिए उठ खड़े हुए। दरवाजे तक पहुँचे। ईश ने प्रैक्टिस का टाईम पक्का किया - 7 बजे सुबह।

‘चलो मैं आप के साथ सड़क तक चलता हूँ। मैं रात के खाने के बाद सैर करता हूँ।’ अली के पिता ने कहा। हम अली के घर से बाहर आ गए।

ओमी ने सिर झुकाया हुआ था, शायद ऊँची आवाज में बोलने के कारण शर्मिंदा महसूस कर रहा था। अली के पिता ने फिर कहा, ‘दरअसल मैं अपनी ही पार्टी को ज्यादा पसंद नहीं करता।’

सच में? मैंने कहा, जब कि बाकी कोई कुछ नहीं बोला।

‘हां, क्योंकि कुछ हद तक वे भी और राजनीतिक पार्टियों की तरह राजनीति ज्यादा खेलते हैं बजाय देश के लिए काम करने के। भेद-भाव पैदा करना, पक्षपात करना बंटवारा करने - आदि बातों में लगे रहते हैं और वे इन सब बातों को अच्छी तरह से जानते हैं।’

हम सब ने गुड-नाईट कहने के लिए सिर हिलाया। पर उनकी बात खत्म नहीं हुई थी। ‘यह तो ऐसे है जैसे दो ग्राहक रेस्तरां में जाते हैं और मैनेजर उनको खाने की एक ही सेट देता है और अगर तुम खाना खाना चाहते हो तो तुम दूसरे व्यक्ति से लड़ोगे। दोनों लड़ने में व्यस्त हो गए, फिर कुछ लोगों ने उन्हें समझाया कि वो दोनों आधी-आधी सेट बांट लें। इस सारे झगड़े में वो मूल-कारण को भूल गए - कि मालिक ने उन्हें खाने की दो अलग-अलग प्लेटें क्यों नहीं दी?’

मैंने अली के पिता का चेहरा ध्यान से देखा।

दाढ़ी और मूछों के भीतर कहीं एक बुद्धिमान व्यक्ति छिपा बैठा था।

‘अच्छा नुक्ता था, लड़ाई पैदा की गई। इसीलिए मैं धर्म या राजनीति को अधिक तूल नहीं देता।’ मैंने कहा।

‘एक बार अगर एक लड़ाई शुरू हो जाए तो, उससे दूसरी और फिर एक के बाद एक सिलसिला शुरू हो जाता है। फिर तुम इसे रोक नहीं सकते।’ ईश ने कहा।

‘मैं पहले कॉलेज में जुलॉजी पढ़ाता था।’ अली के पिता ने कहा, ‘और एक बार मैंने चिंपैंजियों की लड़ाइयों के विषय में पढ़ा था, वो शायद यहां ठीक बैठता है।’

‘चिंपैंजियों की लड़ाइयां?’

‘हां, नरचिंपैंजी एक ही दल के - परस्पर घातक लड़ाइयों लड़ते हैं खाने के लिए या मादा-चिंपैंजी के लिए, जो भी हो। जैसे भी हो लड़ाई के बाद वो एक अजीब प्रथा को निभाते हैं। वो एक-दूसरे को होठों पर किस करते हैं।’

यहां तक कि ओमी को भी हंसना पड़ा।

‘इसलिए हिन्दुओं और मुसलमानों को भी आपस में किस करना चाहिए।’ मैंने कहा।

‘नहीं, खाइंट यह है कि यह प्रथा प्रकृति द्वारा बनाई गई थी।’ यह पक्का करने के लिए कि लड़ाई खत्म और वे फिर इकट्ठे हो गए। असल में, किसी भी लम्बे चलने वाले रिश्ते की यही जरूरत होती है।’

‘किसी भी?’ ईश ने कहा।

‘हां, किसी पति-पत्नी को ले लो। वो झगड़ेंगे और एक दूसरे को मानसिक-चोट भी पहुँचाएंगे। बाद में किसी भी तरह वे समझौता कर लेंगे - एक दूसरे को बाहों में भर कर, भेंट देकर या मीठे शब्दों द्वारा। ये समझौते बहुत जरूरी हैं। भारत में हिन्दुमुस्लिम शत्रुता की समस्या यह नहीं कि एक ठीक है और दूसरा गलत। ये तो....’ ‘यहां वो

समझौता-वाद नहीं है।' ईश ने कहा।

‘हां, इसका मतलब है कि अगर राजनीतिश आग भड़काते हैं तो उसे बुझाने के लिए कोई फायर-ब्रिगेड नहीं हैं ये सुनने में बुरा लगता है, पर ओमी बिल्कुल ठीक है। लोग अंदर से महसूस करते हैं। पर आपस में बातचीत न होने के कारण ये दूरियां दूर नहीं होतीं। विरोध बढ़ता ही जाता है, जब तक बाहर आता है तो बहुत देर हो चुकी होती है।

हम मुख्य सड़क पर आ गए थे और एक पान की दुकान के आगे खड़े हो गए। अब मैं समझा कि अली के पिता हमारे साथ क्यों आए हैं, रात के खाने के बाद अपना पान खाने।

ईश ने कहा जैसे ही हमने जाने के लिए हाथ हिलाए ‘अली को कहिएगा कि समय पर आ जाए।’

चिंपैजियों का किस करने का काल्पनिक चित्र पूरी रात मेरी आंखों के सामने रहा। अली समय पर आ गया। उसने सफेद कुर्ता-पाजामा पहना हुआ था। उसने एक हाथ में मैथ्स की किताब और दूसरे में क्रिकेट-बैट पकड़ा हुआ था। किताबें एक तरफ रख दो। पहले क्रिकेट ‘ईश ने कहा।

लड़का अचंभित सा हो गया अचानक दिए गए निर्देश से, मैं उसे ऊपर ले गया और बाल लॉकर रूम खोल दिया। अली ने एक खाली लॉकर चुना और उसमें अपनी किताबें रख दीं। परेश और नवीन दो और लड़के भी क्रिकेट-प्रेक्टिस के लिए आ चुके थे। वे दोनों अली की उम्र के ही थे पर अधिक स्वस्थ लग रहे थे।

‘लड़कों पिछले यार्ड के बारह चक्कर काट कर आओ।’

ईश ने ड्रिल-सरजेंट वाली आवाज में कहा। यह केवल उसका मनमाना फैसला होता था कि लड़के कितने चक्कर काटेंगे। मैं सोचता हूँ कि वो अपनी ताकत की पहली डोज, जो उसे हर सुबह मिलती है, का पूरा आनन्द उठाता है। मैं ऊपर चला गया बाल में पड़ी अली की किताबें देखने के लिए। कापियां खाली थीं। मैथ्स की किताब सातवीं कक्षा की थी, पर उसे अभी तक खोला नहीं गया था। मैं पहली मंजिल की बालकनी में आकर खड़ा हो गया। विद्यार्थी सुबह की जागिंग कर रहे थे।

‘क्या हुआ?’ ईश ने कहा जब अली पांच चक्करों के बाद रुक गया।

‘मैं... नहीं.... दौड़ सकता, ‘अली को सांस चढ़ा हुआ था।

ओमी भद्दी हंसी हंसा, ‘लड़के, यहां लोग सौ चक्कर लगाते हैं। तुम विकटों के बीच कैसे दौड़ोगे ‘फीलिंग कैसे करोगे?’

‘यही कारण है. मैं क्रिकेट... पसंद नहीं करता।’ अली ने कहा, वह अपनी उखड़ी सांस ठीक करने की कोशिश कर रहा था। ‘क्या हम केवल खेल नहीं सकते?’ अली ने कहा।

अली वॉर्मअप से कुछ ज्यादा ही था। उसका चेहरा तमतमा रहा था।

कसरतों के बाद ईश ने लड़कों को कैचिंग और फीलिंग का अभ्यास करवाया। ईश बैट के साथ बीच में खड़ा हो गया। सभी ने बारी-बारी से गेंद दी ईश को। उसने बॉल को ऊपर उछाला और सभी को मैच करने का अवसर दिया। अली अपनी स्थिति से हिला नहीं। वह गेंद को तभी पकड़ सकता था जब गेंद उसके निकट पहुँचेगी। ठीक है, चलो अब हम खेलते हैं।’

ईश ने ताली बजाई, ‘परेश तुम मेरे साथ रहोगे। पहले हम बालिंग करेंगे। नवीन तुम अली की टीम में चले जाओ और पहले बैटिंग करो।’

नवीन क्रीज पर आ गया और अली रनर बना। नवीन ने परेश की चौथी गेंद को जोर से मारा। ईश गेंद लेने के लिए दौड़ा। दो रन आसानी से बन सकते थे। पर अली की सुस्ती ने केवल एक रन बनने दिया। परेश ने तीन कदम भाग कर गेंद फेंकी। अली ने इसे हिट किया। गेंद जोर से उछली और पहली मंजिल तक पहुँची। मैं पहली मंजिल की बालकनी में खड़ा था। गेंद मेरे ऊपर से निकल गई और जांच-मैनेजर के कमरे की खिड़की में जा लगी।

परेश को जैसे सदमा लगा हो, जैसे ईश को लगा था - जब अली ने पहली बॉल पर ही छक्का लगा दिया था।

‘हे, यह क्या? तुम हीरो हो या कुछ और?’ ईश अली की तरफ भागा।



अली घबरा गया था।

‘यह कोई क्रिकेट-ग्राउंड नहीं है। हम एक बैंक में खेल रहे हैं। अगर बॉल बाहर चली जाती है और किसी को लग जाती है तो इसका जिम्मेवार कौन होगा? अगर कुछ टूट-फूट जाता है तो उसका हर्जाना कौन भरेगा?’ ईश चिल्लाया। अली अब भी हैरत में था।

‘वह एक अच्छा शॉट था परेश ने कहा।

‘शटअप। हाय अली, मैं जानता हूं तुम ऐसा कर सकते हो। खेल के दूसरे पहलू भी सीखो।’ अली रोने को हो रहा था ‘ओके. सुनो, सॉरी, मेरा मतलब तुम्हें...’ ईश ने कहा।

‘यही है जो मैं जानता हूँ। मैं और कुछ नहीं कर सकता।’ अली की आवाज रुक-रुक आ रही थी।

‘हम तुम्हें सिखाएंगे। तुम बाउलिंग क्यों नहीं करते?’

अली ने उस दिन और बैटिंग भी नहीं की।

ईश ने आधा घंटा और साधारण अभ्यास करवाया और कोशिश की कि वह चिल्लाए न। पिछली बात थोड़ी कठिन थी क्योंकि जहां क्रिकेट का सवाल होता वहां वह जानवर बन जाता।

‘अपनी किताबें ऊपर से लेकर आओ। हम पिछले यार्ड में पढ़ेंगे।’ मैंने पसीने से भीगे अली को कहा।

वह ऊपर से अपनी किताबें ले आया और मैथ्स की किताब का पहला अध्याय खोला। यह फ्रैक्शन्स और डैसिमल का अध्याय था।

ओमी दूध के दो पैकिट ले आया। एक उसने ईश को दिया।

‘धन्यवाद’। ईश ने कहा और मुंह से ही लिफाफा खोला।

‘एक और है।’ ओमी ने कहा।

‘किसलिए?’ ईश ने दूध का एक बड़ा सा छ लेते हुए कहा।

‘अपने उस चूजे को दो।’ ओमी ने कहा तुमने उसकी बांहें देखी हैं? वे विकेट से भी पतली हैं। तुम उसे खिलाड़ी बनाना चाहते हो या नहीं?’

‘तुम खुद उसे दे दो।’ ईश मुस्कराया।

ओमी ने अली के पास दूध का पैकिट रखा और चला गया।

‘तुमने कभी पहले फ्रैक्शन्स की हैं?’ मैंने कहा।

उसने हां में सिर हिलाया।

मैंने उसे 24/64 को सरल करने के लिए कहा। उसने दोनों संख्याओं को 2 से बार-बार विभाजित करना शुरू कर दिया।

बेशक मैथ्स में उसकी वह इंटरसूशन काम नहीं करती जो सिक्सर मारने में करती है। फिर भी उसके पिता ने काफी कोशिश की थी।

‘दुकान पर मिलेंगे।’ ईश ने मुझे बताया और फिर अली की तरफ मुड़ते हुए कहा, ‘क्रिकेट के बारे में कोई सवाल, चैंप?’

‘लोग विकेट के बीच क्यों भागते हैं रन लेने के लिए?’ अली ने कहा अपना पैन चबाते हुए।

‘ऐसे ही स्कोर बनता है। यह नियम है।’ ईश ने कहा।

‘नहीं, वह बात नहीं। मेरा मतलब है, एक या दो रन लेने के लिए वो भाग कर रिस्क लेते हैं अगर एक ही हिट में उन्हें छ रन मिल जाते हैं तो?’

ईश ने अपना सिर खुजलाया, ‘अपने सवाल मैथ्स तक ही रखो।’ ईश ने कहा और चला गया।

\*\*\*\*\*

ये तीस वर्ष भारत के लिए बड़ी परेशानी वाले हैं। ईश ने कहा जैसे ही हम दुकान में लेटे। हमने फर्श पर एक चटाई बिछा ली थी। झपकी लेना अच्छा तरीका सुस्त दोपहरें बिताने को आजकल परीक्षाओं के दिन थे। दुकान का काम भी ढीला ही था। ओमी ऊँघने लगा जबकि मैं और ईश हमेशा की तरह दार्शनिकता पर बहस करने लगे। 'वो सारे बुरे नहीं।' मैंने कहा, 'हमने 1983 में वर्ल्डकप जीता था।'

'ठीक है, हम अच्छा क्रिकेट खेलते हैं, इसीलिए। पर दूसरी तरफ हम गरीब रहे, युद्ध लड़ते रहे, उन्हीं लोगों को वोट देते रहे जो संचालित कट्टरवादी हैं और जो देश के लिए कुछ नहीं करते। लोगों की सपनों की नौकरी सरकारी नौकरी है। कोई भी बाहर निकल कर खतरा मोल नहीं लेना चाहता।'

000

'अंदाजा लगाओ, टॉप पर कौन था? कौन सी पार्टी? वही सैकुलर, नॉन सैन्स।' ओमी भी हमारी बातचीत में शामिल हो गया था, अपनी एक आख खोलते हुए। 'हां, तुम्हारे दक्षिण-पंथी टाईप भी इकट्ठे कोई काम नहीं करते।' ईश ने कहा। 'हम करेंगे, दोस्त। हम तैयार हैं। तुम इंतजार करो और देखो, अगले वर्ष के चुनाव में गुजरात हमारा होगा।' ओमी ने कहा।

'कैसे भी हो। ये सब राजनीति के दाव-पेच हैं।'

'मेरा मुद्दा यह है ये साठ और अस्सी के बीच की पीढ़ी है जिसे समझना मुश्किल है - अब बूढ़ी हो चुकी है और ये देश को चला रही है। पर नब्बे की और फिर उसके आगे क्या कहते हैं...'

'जीरो'।

'हां, जो भी हो। जीरो कतई अलग ढंग से सोचते हैं। और इसी बूढ़ी पीढ़ी द्वारा शासित हैं जिन्होंने अपनी जवानी में भी कुछ सार्थक काम नहीं किया। दूरदर्शन की पीढ़ी के पीछे स्टार टी.वी. की पीढ़ी चल रही है।' ईश ने कहा।

मैंने ताली बजाई, 'वाह-भई-वाह, टीम इंडिया शॉट। पर अक्ल मुफ्त में मिलती है।'

'बस करो, क्या हम यहां डिस्कशन नहीं कर सकते। क्या तुम सोचते हो क्या केवल तुम ही यहां बुद्धिजीवी हो। मैं केवल एक क्रिकेट कोच हूं।' ईश बुड़बुड़ाया। 'नहीं तुम ही बुद्धिजीवी हो मैं तो सुस्त-टाईप हूं। अब क्या हम कुछ देर आराम कर सकते हैं जब तक कि अगला बैच नहीं आ जाता।' मैंने आंखें बंद करते हुए कहा। हमारी झपकी में जल्दी ही बाधा पड़ गई।

'आराम फरमा रहे हो, बहुत अच्छे। जब किराया थोड़ा होगा तो दुकानदार सोएगा ही।' बिन्दु मामा की आवाज ने हम सब को बिठा दिया। पता नहीं ये यहां क्या कर रहे हैं?

'दोपहर को काम कुछ ढीला होता है, मामा।' ओमी ने कहा और एक स्टूल उनकी ओर बढ़ा दिया। उसने मुझे चाय लाने का इशारा किया। मैंने कैश बॉक्स खोला और कुछ सिक्के निकाले।

'कुछ खाने के लिए भी ले आना 'मामा ने कहा। मैंने सिर हिलाया। अब मामा के सैक्स के पैसे कौन देगा? किराया इतना भी कम नहीं हैं मैंने सोचा और दुकान से बाहर निकला, एक फीकी सी मुस्कान के साथ। मैं सब के लिए चाय ले आया। मामा ओमी को बता रहे थे, 'अगर दोपहर को काम कम होता हो तो तुम मेरी मदद के लिए आ जाया करो। तुम्हारे दोस्त भी आ सकते हैं। चुनाव-सीट जीतना इतना आसान काम नहीं होता। ये सैकुलर लड़के अच्छे हैं।'

'आप मेरे से क्या करवाना चाहते हैं मामा?' ओमी ने कहा, सब को चाय देते हुए।

'हमने जवानों को संगठित करना है। तुम उन्हें हमारी विचार-धारा समझाओ। ढोंगियों से उन्हें सावधान करो। चुनाव- अभियान के दौरान हमें प्रचार और रैलियों का प्रबन्ध करने के लिए लोगों की जरूरत है। काफी काम है करने को।' 'मैं अगली बार आऊंगा, मामा।'

'दूसरों को भी कहना। मंदिर में आने वाले जवान लड़कों को हमारी पार्टी के बारे में बताना, मेरे बारे में बताना।'

मैं उठ खड़ा हुआ, खीझता हुआ। अब मेरी समझ में आया कि उनका लक्ष्य मंदिर में आने वालों में पार्टी का प्रचार करना है पर क्या जो मंदिर में पूजा के लिए आता है वो पार्टी की विचारधारा के बारे में सुनेगा या राजनीति में शामिल होने की सोचेगा। मैंने अपना ध्यान बंटाने के लिए अपना एकाउंट-रजिस्टर खोला।

‘तुम आओगे?’ मामा ने ईश की ओर मुड़ते हुए उससे पूछा।

‘दुकान पर भी किसी ने बैठना है चाहे काम कम भी हो।’ ईश ने कहा। क्या होशियारी दिखाई है, यही एक्सक्यूज तो मैंने मांगनी थी।

‘और तुम गोविन्द?’ मामा ने कहा।

‘मैं वैसा नहीं हूँ मैं संशयवादी हूँ। याद है?’ मैंने कहा और रजिस्टर देखता रहा। पर यह धर्म से सम्बन्धित नहीं। यह न्याय से संबंधित है। तुम्हारे बारे में सोच कर ही हमने तुम्हें यह दुकान थोड़े से किराए पर दे दी थी। तुम्हारा भी तो हमारे लिए कोई फर्ज बनता है।

‘यह आप की दुकान नहीं है। ओमी की मां ने हमें यह दी है। और लोकेशन को देखते हुए किराया भी वाजिब है।’ मैंने कहा।

‘मैं अकेला ही काफी हूँ मामा। मेरे साथ धीरज भी आ जाएगा, ठीक है?’ मेरे और मामा के बीच बढ़ते तनाव को रोकने के लिए ओमी ने कहा। धीरज मामा का बेटा था, चौदह वर्ष का, और ओमी का ममेरा भाई।

‘इसकी हेकड़ी तो देखो। यह छोटी सी दुकान और इतना अहं।’ मामा ने कहा, ‘अगर ओमी यहां न होता तो मैं तुम्हें धक्के मार कर यहां से निकाल देता।’

‘इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। हम इसे जल्द ही छोड़ने वाले हैं।’ मैंने सोचे-समझे बिना कह दिया। मैं मजबूर था। मैं उन्हें उसी समय बताना चाहता था, जब हम इसे छोड़ कर नवरंगपुरा मॉल पर जाते। पर मैं उनकी दया करने वाले लहजे से दुखी हो गया था।

‘ओह, अच्छा? क्या तुम इन बैट-बलों की रेडी लगाओगे?’ मामा ने कहा।

‘हम नवरंगपुरा मील पर शिफ्ट कर रहे हैं। आप तब अपनी दुकान वापिस ले सकते

‘क्या...?’ मामा हैरान हो गए।

‘हम अगले महीने रकम जमा करवा देंगे। तीन महीने में हमें उसका कब्जा मिल जाएगा। यह छोटी सी दुकान अब टॉप की लोकेशन में स्पोर्ट स्टोर बन जाएगी।

‘वास्तव में?’ मामा ओमी की तरफ मुड़े।

ओमी ने सिर हिलाया।

‘कितनी रकम जमा करवानी पड़ेगी?’ मामा ने कहा।

‘तुम इस दुकान के लिए हजार रुपए महीना दे रहे हो। अगर तुम मार्किट के हिसाब से दो हजार देते तो तुम इतना नहीं बचा पाते।’ मामा ने कहा।

मैं चुप रहा।

‘क्यों? अब तुम चुप क्यों हो?’ मामा खड़े हो गए।

मुझे क्या करना चाहिए था? आगे बढ़ कर उनके पैर पकड़ लेता। मैंने भी उनके भानजे को काम पर लगाया हुआ था और अपने बिजनैस में बराबर का भागीदार भी। ठीक है, ओमी मेरा दोस्त था। उसकी योग्यता को देखते हुए वो इससे अच्छा काम नहीं ढूँढ सकता था। कम किराये की दुकान केवल यही वो कर सकता था।

‘मामा, मुझे बताओ कि मेरी जरूरत कब है?’ ओमी ने कहा।

‘ठीक है, मैं बता दूंगा।’ मामा ने कहा, ‘तुम लोग आराम करो।’

ईश ने अपनी बीच की अंगुली उठाई जब मामा चले गए। हम फिर लेट गए और सो गए।

\*\*\*\*\*

## सात

‘तुमने सवाल कर लिए हैं जो मैंने दिए थे।’

विद्या ने सिर हिलाया। मैं उसका चेहरा नहीं देख सकता था क्योंकि हम साथ-साथ बैठे थे। पर मैं जानता था कि वो अभी रोकर हटी है। उसने अपने हाथ से-अपनी आख पोंछी।

मैंने उसकी नोट-बुक खोली। मैं ट्यूटर था, हमदर्द नहीं।

‘तुमने सब कर लिए हैं?’

उसने अपना सिर हिलाया।

‘तुमने कितने किए हैं?’

उसने मुझे सात अंगुलियां दिखाई। अच्छा है दस में से सात बुरे नहीं थे। पर वो बोल क्यों नहीं रही थी।

‘क्या हुआ?’ मैंने कहा, बात-चीत शुरू करने के इरादे से बजाए उसकी सूजी हुई आंखें देखने के।

‘कुछ नहीं।’ उसने लड़खड़ाती आवाज में कहा।

एक लड़की का ‘कुछ नहीं’ बहुत कुछ होता है। वास्तव में, यह बहुत कुछ भी और मैं पढ़ाना शुरू नहीं कर पा रहा था। मैंने उसके बनावटी ‘कुछ नहीं’ का एक सटीक प्रत्युत्तर सोच लिया था।

‘तुम अपना मुंह धोने के लिए जाना चाहती हो।’

‘मैं ठीक हूं। पढ़ना शुरू करते हैं।’

मैंने उसकी आंखों की तरफ देखा वो भीगी हुई थीं। उसकी आंखें अपने भाई की आंखों जैसी थीं।

उसके दूधिया चेहरे पर ब्राउन आंखें अधिक चमक रही थीं।

‘तुम्हारा दूसरा सवाल भी ठीक है।’ और मैंने उसकी नोट-बुक पर स्याही लगा दी। मैं स्वभावानुसार ‘गुड’ लिख देता हूँ। मैं अक्सर छोटे बच्चों को ही पढ़ाता हूँ और अगर उनकी नोट-बुक पर ‘गुड’, ‘वैल डन’ या ‘स्टार’ बना दो तो उन्हें बड़ा अच्छा लगता है पर विद्या बच्ची नहीं थी।

‘तुम ने बड़ा अच्छा काम किया है।’ उसकी नोट-बुक का निरीक्षण करते हुए मैंने कहा।

‘माफ-करना ‘उसने कहा और बाथरूम की तरफ भाग गई। शायद वो अपने आसुओं को रोक नहीं पाई थी। थोड़ी देर में वह वापिस आ गई। इस बार उसका आई-लाइनर धुल चुका था और चेहरा भीगा हुआ था।

‘सुनो, इस क्लास का कोई फायदा नहीं अगर तुम यूँ ही अशांत रही तो। हमने आज और भी कठिन प्रश्न करने थे पर तुम...

‘पर मैं अशांत नहीं हूँ। यह तो गरिमा और वह। खैर छोड़िए। हम शुरू करते हैं। ‘गरिमा?’

‘हां मेरी कजिन और बैस्ट फ्रेंड। बम्बई में रहती हैं। मैंने पिछली बार आपको बताया था।’

‘मुझे याद नहीं।’ मैंने कहा।

‘उसने मुझे कहा था कि कल रात वो मुझे सुबह सुबह एस.एम.एस. करेगी और अब दोपहर हो गई है पर उसने नहीं किया। वो हमेशा ही ऐसा करती है।

‘तुम उसे क्यों नहीं कर देती?’

‘मैं नहीं करती, उसने कहा था वो ही किया करेगी, तो उसे ही करना चाहिए। ठीक है न?’

‘मैंने उसके भाव-शून्य और प्रतिक्रियाहीन चेहरे को देखा।

‘वह अपनी हाई-फाई पीआर की जॉब पर है और वो इतनी बिजी है कि उसे एक लाइन टाईप करने की फुर्सत नहीं है।’

मेरी इच्छा हो रही थी कि वो लड़की इसे एस.एम.एस. कर दे ताकि हम अपनी क्लास शुरू करें।

‘मैं अगली बार उसे बता दूंगी कि वो मुझे दो दिन तक फोन न करे, मुझे ‘कुछ’ बहुत जरूरी काम है।’ उसने कहा। ‘कुछ’ मैंने दोहराया, कुछ लड़कियां अपनी मित्रता का माप-दंड उन गेम्स को बनाती हैं जो वो परस्पर खेलती हैं और जो उन्हें भावुकतापूर्वक प्रमाणित करती हैं।

‘क्या हम शुरू करें?’

हां! मैं अब अच्छा महसूस कर रही हूं। सुनने के लिए धन्यवाद।’

‘नो प्राबलम। तो आठवें प्रश्न में क्या हुआ था?’ मैंने कहा।

हम अगला आधा घंटा संभावना पर विवाद करते रहे थे। फिर जब उसने अपना दिमाग लगाया तो मैंने अनुभव किया कि वो मैथ्स में इतनी कमजोर नहीं जितनी पहली बार में लगी थी। पर वह मुश्किल वे पांच मिनट ही ऐसा कर पाती थी। एक बार, उसे अपना पैन बदलना था। फिर उसे अपने बालों के क्लिप खोलने और फिर उन्हें खींच कर दोबारा लगाने होते। पन्द्रह मिनट उसे चाहिए पीठ के पीछे कुशन सैट करने के लिए। उसके बाद उसकी मां, ने चाय और बिस्कुट भेज दिए और वह हर तीस सेकंड में एक छ लेती। फिर भी हम गाड़ी खींचते रहे। चालीस मिनट की क्लास के बाद उसने अपनी कुर्सी पीछे खींच ली।

‘मेरा सिर दुःखने लगा है। मैंने इतनी देर लगातार मैथ्स नहीं किया अपनी जिंदगी में। क्या हम एक ब्रेक ले सकते हैं।’ विद्या हमारे पास केवल बीस मिनट और हैं।’ मैंने कहा।

वह उठ खड़ी हुई और अपनी आंखें झपकाई। ‘क्या हम क्लास में पांच मिनट के ब्रेक का समझौता कर सकते हैं? इतनी देर तक मैथ्स नहीं करना चाहिए। यह तुम्हारे लिए भी बुरा है।’

उसने अपना पैन एक तरफ रखा और अपने बाल खोल दिए। बालों की एक लट मेरी बांह पर गिरी। मैंने झट से अपना हाथ खींच लिया।

‘बाकी विषयों की तुम्हारी तैयारी कैसी है? मेरा ख्याल है साइंस से तुम नफरत नहीं करती?’ मैंने कहा, ब्रेक का फायदा उठाते हुए।

‘मुझे साइंस पसंद है। पर जिस ढंग से वो पढ़ाते हैं, वह परेशानी है।’ विद्या ने कहा। ‘जैसे?’

‘जैसे कि मैडिकल ऐंट्रेस गार्डिज। उनमें हजारों चॉयस के लिए हजारों प्रश्न हैं। तुम उन्हें सिलेक्ट कर लो तो तुम्हारे डॉक्टर बनने के लिए काफी हैं। पर मैं साइंस को ऐसे नहीं देखती।’

‘खैर हमारे पास कोई चॉयस नहीं, कोई विकल्प नहीं।’

‘अच्छे कॉलेज थोड़े ही हैं और कम्पीटीशन काफी टफ है।’

‘मैं जानती हूं। पर जो लोग ऐग्जाम-पेपर बनाते हैं, क्या वो कैमिस्ट्री के बारे में कुछ और आगे जानने की जिज्ञासा रखते हैं। क्या वो कभी अचंभित होते हैं इससे?’ क्या वो कभी पत्थर की प्रतिमा को देखते हैं और हैरान होते हैं कि यह सब बिल्कुल स्थिर लगता है, पर प्रतिमा के अंदर प्रोपेन भिनभिना रहे होते हैं और इलैक्ट्रॉन बुरी तरह से हिल-जुल मचा रहे हैं।’

मैंने उसकी चमकदार आंखों में देखा। मैंने इच्छा की कि उसकी आंखों में ऐसी ही चमक हो जब मैं उसे संभावना के विषय में पढ़ाके।

‘यह काफी सम्मोहक है, है न?’ मैंने कहा।

‘या फिर हम बायोलॉजी की बात करते हैं। इस के बारे में सोचो।’ उसने कहा और मेरी बांह पकड़ ली। ‘यह क्या है?’ ‘क्या?’ मैंने कहा, अपनी बांह छुड़ाते हुए।

‘यह तुम्हारी त्वचा है। तुम्हें पता है इसके अंदर कितने बैक्टीरिया रह रहे हैं। वहां अरबों की संख्या में जीव पैदा

होते हैं, खाते हैं, और अन्य जीवों को जन्म देते हैं। और फिर मर जाते हैं। फिर भी, हम नहीं सोचते कि ऐसा क्यों होता है। पर हम केवल इसकी बाहरी तह के बारे में ही सोचते हैं क्योंकि इसके विषय में हर साल एग्जाम में पूछा जाता है।

मैं नहीं जानता था कि इस लड़की को क्या कहूँ। मुझे लगता है कि मुझे सात-साल के बच्चों को पढ़ाने तक ही सीमित रहना चाहिए।’

‘तुम्हारी टैक्सट-बुक्स के अलावा भी साइंस की कुछ अच्छी रेफरेंस बुक्स हैं।’ मैंने उससे कहा।

‘क्या वाकई हैं?’

‘हां, तुम इन्हें ला-गार्डन बुक-मार्किट से ले सकती हो। अगर तुम्हें चाहिए तो मैं ला सकता हूँ। अपने मम्मी-पापा से पूछ लो अगर वो पे कर देंगे तो ‘।

‘मण्डल वो पे कर देंगे। अगर पढ़ाई की बात हो तो जितना चाहो खर्च कर देंगे। पर क्या मैं तुम्हारे साथ चल सकती हूँ।

‘नहीं तुम्हें जाने की जरूरत नहीं। मैं बिल ला दूँगा।

‘क्या..?’

‘अगर तुम सोचती हो कि मैं कितना खर्च कर दूँगा।’

‘ऐसी बात नहीं। यह एक अच्छा ब्रेक रहेगा। हम दोनों इकट्ठे चलेंगे।’

‘ठीक है। चलो अब हम बाकी के सवाल करें। हमने पंद्रह मिनट का ब्रेक ले लिया है।

मैंने अभ्यास की एक सीरीज पूरी कर दी थी और दस सवाल उसे होम-वर्क के लिए दे दिए थे। ज्यों ही मैं जाने के लिए उठा उसका फोन बज उठा। वो उसे उठाने के लिए भागी।

‘गरिमा...’ उसने कहा और मैंने दरवाजा बन्द कर दिया बाहर निकल कर। मैं जब घर से बाहर निकला तो ईश घर आ रहा था।

‘कैसी रही क्लास? वो डफर है, मुश्किल होगी।’ ईश ने कहा। प्रैक्टिस के कारण उसका शरीर पसीने से तर-ब-तर था। बुरी नहीं, वो जल्दी सीखने वाली है ‘मैंने कहा। क्यों कहा यह मैं नहीं जानता। पर उस समय ईश को देखने से मेरे दिल की धड़कनें बढ़ गईं। मैं उसे बताऊँ कि विद्या के साथ लॉगार्डन मार्किट में किताबें खरीदने जाने की हमारी योजना है। पर यह मूर्खता होगी, मैंने सोचा। हर चीज उसे बताना जरूरी नहीं।

‘अली को प्रशिक्षित करने का मैंने एक ढंग सोचा है।’ ईश ने कहा।

‘कैसे?’

‘मैं उसे पहले उसके चार छक्के बनाने देता हूँ। फिर वह हमारे जैसा ही एक होगा।’ मैंने सिर हिलाया।

‘दूसरे लड़के निराश हो जाते हैं। वो सोचते हैं कि अली के लिए मेरे दिल में विशेष स्थान है।’ ईश ने फिर कहा।

‘वो बच्चे हैं। फिक्र न करो।’ मैंने कहा और सोचा कि मैं और कितनी देर उसके साथ रहूँगा और मैं इतना गिल्टी क्यों महसूस कर रहा हूँ?’

‘हां, कुछ विद्यार्थी खास होते हैं, ठीक है न?’ ईश दबी हंसी हंसा।

कुछ पल के लिए मुझे लगा कि वो मुझे लेकर यह बात कर रहा है। नहीं, मेरा कोई विद्यार्थी खास नहीं।

‘मुझे जल्दी घर जाना है। मां को शादी का एक बड़ा आर्डर मिला हुआ है। मुझे उनकी मदद करनी है।

इसके साथ ही मैंने जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाए और उसकी आंखों से ओझल हो गया। मेरे सिर में घंटिया बज रही थी जैसे ओमी के मंदिर में पत्थर की मूर्तियों के सामने बजती हैं।

जिस दिन हमने लॉगार्डन मार्किट जाना था उस दिन उसने चिकन की सफेद कमीज पहन रखी थी। उसने बंधिनी का केसरी और लाल रंग का दुपट्टा लिया हुआ था दुपट्टे के सिरों पर तांबे की छोटी-छोटी घंटियां बज उठतीं। मेक-अप भी कुछ ज्यादा ही किया हुआ था। उसके होंठ चमक रहे थे। और मैं उन्हें देखे बिना नहीं रह सका। 'ये लिपग्लॉस है। क्या ज्यादा चमक रहा है?' वह कुछ सतर्क हुई और उसने अपनी अंगुलियों से होंठों को रगड़ा। उसके ऊपर वाले होंठ पर दायीं तरफ एक हल्का सा तिल था, जो मुश्किल से दिखाई देता था। मैंने अपनी नजर उस पर से हटा ली और गली में ऑटो को देखने लगा। अब उसके चेहरे की तरफ नहीं देखूंगा, मैं गिल्टी फील कर रहा था।

'वो किताबों की दुकान है।' मैंने-कहा, जैसे ही हम स्टोर पर पहुँचे।

नवरंगपुरा की विश्वविद्यालय का यह पुस्तक-भंडार शहर के सभी विद्यार्थियों के लिये एक मंदिर के समान था। वहां जितने भी ग्राहक थे, ऐसा लग रहा था जैसे उनमें से कुछ रात को अच्छी नींद नहीं ले पाए थे या कुछ विद्यार्थी ईर्ष्यालु स्वभाव के लगते थे जो फिजिक्स की नाम-मात्र भी जानकारी रखते हों या उसका आकलन कर पाते हों। वो कड़े भी नहीं दे पाते। पर फिर भी मुझे पूरा विश्वास है कि जो भी इंजीनियरिंग या मैडिकल की प्रवेश-परीक्षा पास कर लेता है वो यहां अवश्य आ चुका होता है। अर्धे ड उम्र के दुकानदार ने अपनी ऐनक में से विद्या को देखा। शायद सबसे सुन्दर कास्टमर वही थी। विद्यार्थी जो मैडिकल की प्रवेश-परीक्षा की तैयारी करते हैं वो होंठों पर रंगदार लिपग्लॉस नहीं लगाते 'एक्सक्यूज मी' मैंने कहा, वो विद्या को ऊपर से नीचे तक गौर से देख रहा था। 'गोविन्द बेटा, बड़ी खुशी हुई तुम्हें देख कर।' उसने कहा। बुजुर्गों के लिए अच्छा ढंग होता है अपने बचाव का किसी को बेटा या बेटी कह कर बुलाने का। वो मेरा नाम पहले से ही जानता था जब मैंने बोर्ड में शतप्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। समाचार-पत्र वालों के साथ

साक्षात्कार के दौरान मैंने इसी दुकान की सिफारिश की थी और दो साल तक वह उस कटिंग को सबको दिखाता रहा था। मैं अब भी 25 प्रतिशत का डिस्काउंट उससे लेता हूँ खरीददारी पर।

'आप के पास एलजीवेड की ऑर्गेनिक केमिस्ट्री है?' मैंने कहा।

मैं और भी छोटी बात कर सकता था, पर मैं विद्या के विषय में बात करने को टालना चाहता था। असल में मैं नहीं चाहता था कि वो विद्या की तरफ देखे।

'ठीक, हां' दुकानदार ने कहा, मेरे लहजे से वो जरा परेशान था।

'कैमिस्ट्री-बुक, सफेद और लाल रंग की बलों वाले कवर वाली' वह अपने पांच सहायकों में से एक को जोर से बोला। 'यह अच्छी पुस्तक है।' मैंने कहा, किताब विद्या को पकड़ाते हुए। 'आर्गेनिक कैमिस्ट्री की दूसरी किताबों में याद करने को बहुत कुछ होता है। यह नियमों का उल्लेख करती है।'

विद्या ने किताब अपने हाथ में ले ली।

उसकी लाल नेल-पार्लिश किताब के कवर से मेल खाती थी।

'इस पर नजर दौड़ा, देखे शायद तुम्हें पसंद आ जाए।' मैंने कहा।

उसने कुछ पन्ने उलटाए। दुकानदार ने एक भौंहे ऊपर चढ़ाई। वह मुझे लड़की के बारे में पूछ रहा था। यही कारण है लोग अहमदाबाद को छोटा शहर कहते हैं, हर चीज की बहुलता होने के बावजूद। यहां की मानसिकता ही ऐसी है 'स्टूडेंट, मैं ट्यूशन लेता हूँ, 'मैं फुसफुसाया उसकी तसल्ली के लिए अन्यथा वो रात भर सो नहीं पाता।

उसने सहमति में अपना सिर हिलाया। पता नहीं ये बूढ़े लोग हमारे मामलों में टांग क्यों अड़ाते हैं। जैसे, क्या हम परवाह करेंगे चाहे वो तीन ग्रैंड-मामा के साथ रहे। अगर तुम कहते हो कि किताब अच्छी है तो ठीक है।' उसने कहा, किताब को अच्छी तरह से देखते हुए।

'गुड, और फिजिक्स में तुमने रसिक और हेलिडे को पड़ा है?'

'ओह, मैंने वो किताब एक बार अपनी फ्रेंड के यहाँ देखी थी। पर उसकी विषय-वस्तु ने ही मुझे निराश कर दिया था मेरे लिए बड़ी हाईफाई है

'ये हाई-फाई क्या होता है?' यह तुम्हारे कोर्स में है। तुम्हें इसे पढ़ना है।' मैंने कहा, मेरी आवाज में कुछ कठोरता



थी।' क्या उनके पास कोई गाइड या ऐसी ही कोई हैल्य-बुक नहीं है?' उसने कहा, मेरी बात को अनसुना करते हुए।

'गाइड शर्ट-कूट होती हैं। उनमें कुछ ही सवालियों के हल होते हैं। तुम्हें इसके मूल सिद्धान्त का अध्ययन करना है।' दुकानदार केसरी और काले रंग के कवर वाली रेसिक और हैलिडे की किताब ले आया। हां, कवर कुछ भूतहा लग रहा था, साथ में डल लग रहा था। यह केवल फिजिक्स की किताबों में ही संभव है।

'मैं इसे नहीं समझ पाऊंगी। पर अगर तुम कहते हो, तो ठीक है, खरीद लेते हैं।' वह मान गई।

'नहीं, तुम इसे समझ पाओगी। और अंकल या आप के पास एमएल. खन्ना की मैथ्स की किताब है?'

मेरे अंकल कहने से उसे बुरा लगा, पर यह जरूरी था उसे याद दिलाना उसकी उम्र के बारे में।

'मैथ्स खन्ना, दुकानदार चिल्लाया। उसका सहायक काली और पीली बुक ले आया। अब अगर रेसिक और हैलिडे भूतहे हैं तो एमएल खन्ना भूत-निवारक है।' मैंने इससे मोटी किताब और कहीं नहीं देखी और इसका हर पन्ना दुनिया में सबसे ज्यादा मुश्किल मैथ्स की समस्याओं से भरा हुआ है।

यह हास्यकर है कि एक व्यक्ति एम.एल. खन्ना जाना पहचाना नाम - ने हमारे देश के विद्यार्थियों के लिए ऐसी किताब लिखी है।

'यह क्या है?' विद्या ने कहा और किताब को अपने बाएं हाथ से उठाने की कोशिश की। पर नहीं उठा पाई। फिर उसने दोनों हाथों से उठाई और मुश्किल से छः इंच ऊपर उठा सकी।

'नहीं, वाकई, यह क्या है? यह कौन सा हथियार है हमले का?'

'इसमें यह विषय है।' मैंने कहा, और किताब की मोटाई को नापने के लिए अपने दाएं हाथ की अंगुलियों का इस्तेमाल किया पर चार अंगुलियां भी कम रह गई।

उसने अपना हाथ मेरे हाथ के साथ लगा दिया मदद के लिए।

'छः यह छः अंगुलियों जितनी मोटी है।' उसने बड़ी मधुरता से कहा।

मैंने अपना हाथ खींच लिया, कहीं अंकल फिर भौंहे न चढ़ा ले या इससे भी बुरा करें, हमारे हाथों के साथ अपना हाथ रख दें किताब की मोटाई जानने के लिए।' चिन्ता न करो, मैडिकल-प्रवेश के लिए तुम्हें कुछ ही टापिक्स पढ़ने पढ़ेंगे।' मैंने उसे विश्वास दिलाया।

हमने किताबों की कीमत चुकाई और दुकान से बाहर आ गए।

हम नवरंगपुरा की मुख्य सड़क पर आ गए थे। मेरी नई दुकान यहां से दो सौ मीटर दूर थी। मुझे उसे देखने की लालसा हुई।

'अब क्या?' उसने कहा।

'कुछ नहीं, घर चलते हैं।' मैंने कहा, और ऑटो देखने लगा।

'तुम काफी बोरिंग हो, नहीं?' उसने कहा।

'एक्सक्यूज मी?' मैंने कहा।

'डेरी डैन नजदीक ही है। मुझे भूख लगी है।' उसने कहा।

'मैं भूख से बेहाल हूँ सीरियसली। मैं बहुत भूखी हूँ। उसने अपना एक हाथ पाट पर रखा। उसने तीन अंगूठियां पहन रखी थीं। अलग-अलग डिजाइन की, उनमें छोटे-छोटे रंगदार नग जड़े थे।

मैंने डेरी डैन में ऐसी सीट ली जहां से हम कम से कम दिखाई दें।' यहां पर वैसे हमारे गप्पी-पोल से कोई कम ही आता था। पर फिर भी ध्यान रखना चाहिए। अगर मेरा कोई भी सप्लायर मुझे यहां डेरी डैन में देख ले तो मैं भी अहमदाबाद के छोकरो में शामिल हो जाऊंगा। फिर मैं क्रिकेटबॉल्स की अच्छी कीमत नहीं ले सकूंगा। मुझे भी भूख लग रही थी। मैं उस हिस्टोरिकल ड्रामा-कीन का मुकाबला नहीं कर सकता था। उसने डेरी-डैन का विशेष-पिजा

मंगवाया, उस पर वो सभी चीजें लगी होती हैं जो डेरी-डैन के रसोईघर में होती थी। सभी डिशिल शाकाहारी थीं, जिन्हें अखावादी अधिक पसंद करते हैं।

‘ये किताबें वाकई ऐडवांसड हैं। उसने किताबों के प्लास्टिक-बैग की तरफ इशारा करते हुए कहा।

‘ये मैडिकल साइंस की किताबें हैं।’ मैंने कहा। उसने ऊपरी भौंहें चढ़ाई। ‘क्या मुझे कोई यह समझाएगा कि मैडिकल-साइंस की ये किताबें सत्रह वर्ष वालों को क्यों पढ़ने को कहा जाता है, इस देश में?’

मैंने कंधे हिलाए। मेरे पास सुस्त विद्यार्थियों के लिए इस बात का कोई जवाब नहीं था।

पिजा आ गया था। हम चुप हो गए और खाना शुरू किया। मैंने उसकी तरफ देखा। उसने अपने बाल बांध लिए ताकि पिला में न गिरें और चीज पर चिपक न जाएं। उसने अपना दुपट्टा मेज दूर कुर्सी की तरफ कर लिया। लड़कियों में बड़ी खूबी यह होती है कि बातचीत के दौरान रुकावट आने पर भी अगर तुम उन्हें देखो तो तुम बोर नहीं होंगे। उसने अपनी साईड की तरफ देखा। वो उन दो लड़कों के प्रति सचेत हो गई जो दूर टेबल पर बैठे उसे घूर रहे थे। यह कोई अचम्भे की बात नहीं थी क्योंकि डेयरी डैन में बैठे काफी लोगों में वो ही सबसे सुन्दर लग रही थी। सुन्दर लड़कियां कम क्यों होती हैं? प्रकृति को यह क्यों पता नहीं चला कि आदमी केवल सुन्दर स्त्रियों को ही पसंद करते हैं और उसने सबको ही सुन्दर क्यों नहीं बनाया?

उसने अपने किसी नए एमएमएस. को चैक करने के लिए फोन देखा। उसे ऐसा करने की जरूरत नहीं थी क्योंकि हर बार एमएमएस. आने पर उसका फोन अलार्म से भी ज्यादा आवाज करता था। उसने अपनी बांह पीछे की और पिजा की एक पीस उठाया रूग्रइस उठाया। उसने बाहर निकल गए चीज के टुकड़ों को अपनी अंगुलियों से उठाया और स्टाइस पर रख दिया। फिर उसने एक बाईट ली स्टाइस की।

ओह क्या है?’ उसने चुप्पी तोड़ी, ‘क्या हम साइंस-विषयों को छोड़कर कोई और बात कर सकते हैं।

‘बेशक।’ मैंने कहा। मैंने उन लड़की की तरफ जो दूसरी टेबल पर बैठे थे। उन्होंने मेरी तरफ ध्यान नहीं दिया।

‘हमारी उम्र के कोई ज्यादा फर्क नहीं है, तुम जानते हो हम दोस्त भी बन सकते हैं?’ उसने कहा।

‘अच्छा ‘मैंने कहा, ‘मुश्किल है, है न?’

‘मुश्किल? क्यों? मुझे एक कारण तो बताओ।’

‘मैं तुम्हें चार बताता हूं - पहला मैं तुम्हारा टीचर हूं। दूसरा तुम मेरे बेस्ट-फंड की बहन हो। तीसरे तुम मेरे से छोटी हो। चौथे तुम लड़की हो।’ मुझे अपने दिए कारण अपनी मूर्खता लग रहे थे। कोई कारण है कि उबाऊ लड़के लड़कियों को प्रभावित नहीं कर पाते। वो नहीं जानते लड़कियों से कैसे बात करनी है।

वो मेरे साथ हंसने की बजाए मेरे ऊपर हंसी।’ गिनती के लिए सॉरी। मैं अपने ही सिस्टम से नम्बर नहीं ले पाया।’ मैंने कहा। वह हंसी - ‘इससे मुझे कुछ पता चला। तुमने इसके बारे में सोचा है। इसका मतलब है, तुमने एक संभाव्य

दोस्ती के बारे में सोचा है।

मैं चुप रहा।

‘मैं मजाक कर रही थी।’ उसने कहा और मेरा हाथ थपथपाया। लोगों को छूकर उन्हें राहत पहुँचाना उसका स्वभाव था। सामान्य व्यक्ति के लिए यह ठीक था। पर मेरे जैसे बीमार लोगों के लिए नारी-स्पर्श राहत देने की बजाए उत्तेजित कर देता है। मैं उसका चेहरा फिर देखने का इक्षक हुआ। पर मैं दृढ़तापूर्वक पिजा की तरफ मुड़ा। गंभीरता से सोचो तुम्हें एक बैक-अप दोस्त की सख्त जरूरत है।’ उसने कहा। ‘बैक-अप क्या?’

‘तुम, ईश और ओमी नजदीकी दोस्त हो।

ऐसा लगता है जैसे तुम एक दूसरे को तब से जानते हो जब तुम स्पर्म (शुक्राणु) थे।’ उसका अंतिम शब्द सुन कर मेरा मुंह खुला का खुला रह गया। विद्या, ईश की छोटी बहन थी, लगता था वो गुड़ियों से खेलती होगी। उसने ऐसी बातें करना कहां से सीखा?

‘सॉरी मेरा मतलब है ईश, तुम और ओमी पक्के दोस्त हो। अगर तुम्हें एक दूसरे के प्रति कोई शिकायत हो तो तुम क्या करोगे?’

‘मैं अपने दोस्तों की निंदा नहीं करूंगा मैंने कहा।

‘कम-ऑन, क्या वे परफैक्ट हैं?’

‘कोई भी परफैक्ट नहीं होता।’

‘जैसे गरिमा और मैं बहुत नजदीक हैं। हम दिन में दो बार बात करते हैं। पर कई बार वो मुझे इग्नोर करती है और मेरे साथ ऐसे बात करती है जैसे मैं कोई भोली- भाली करई लड़की हूँ। मुझे उसकी इस बात से नफरत है, पर फिर भी वह मेरी बैस्ट फ्रेंड है।’

‘और?’ मैंने कहा। लड़कियां घुमा-फिर कर बात करती हैं। आज की समस्या की तरह उन्हें सही नुकते पर लाने के लिए कुछ कदम उठाने पड़ते हैं।

‘और तुम्हारे साथ इस सम्बन्ध में बात करने से मेरे मन का गुबार निकल जाता है और मैं अच्छा महसूस करती हूँ। और मैं उस को माफ कर सकती हूँ। चाहे वो मेरी बहुत नजदीकी दोस्त है पर तुम मेरे बैक-अप फ्रेंड हो।’

अगर वो अपना इतना दिमाग मैथ्स में लगाए तो उसे सर्जन बनने से कोई नहीं रोक सकता।

पर विद्या जो घंटों तक निरन्तर सम्बन्धों का इतनी बारीकी से निरीक्षण करती है कभी भी एमएल. खन्ना को नहीं पड़ेगी अपने भविष्य के लिए।

‘सो, कम-ऑन, तुम अपने दोस्तों की एक शिकायत तो बताओ, जो तुम्हारे दिल में हो।

‘मेरे दोस्त मेरे बिजनैस-पार्टनर भी हैं, इसलिए यह मुश्किल है।’ मैं कुछ रुका, फिर ‘कई बार मैं सोचता हूँ वे बिजनैस को नहीं समझते और हो सकता है वो समझते भी हों पर वो मेरी उस भावुकता को नहीं समझ पाते जो मैं उन्हें समझाना चाहता हूँ।’ उसने हाँ में सिर हिलाया, मुझे अच्छा लगा। एक बार किसी ने मेरी किसी बात पर ऐसे सिर हिलाया, यह मुझे गहराई तक छू गया।

‘कैसे?’ उसने मुझे उकसाया।

पिजा कुछ बाकी रह गया था, उसे खाने के दौरान मैंने उसे सब पता दिया। मैंने उसे अपनी दुकान के बारे में बताया, मैंने ये सब कैसे मैनेज किया। कैसे मैंने अपना बिजनैस बढ़ाने के लिए टसूसंश और कोचिंग शुरू की। मैंने उसे बताया कि ईश का बच्चों को डिस्काउंट देना मुझे उसकी इरीटेटिंग हैबिट लगती है। और ओमी की मंद-बुद्धि के बारे में कि वो कैसे रिमोट की तरह नम्बरों तक ही सीमित रहता है। और आखिर में मैंने उसे अपने सपने के बारे में बताया - पुराने शहर से निकल कर एयर-कंडीशन-मॉल पर एक नई दुकान लेना। ‘नवरंगपुरा में’ उसने कहा, ‘यहां नजदीक ही?’ ‘हां’ मैंने कहा और मेरा आंखों में देख रहा था।

‘अच्छा है तुम ने सीना चार इंच बढ़ गया। उसने मेरी आंखों में चमक देखी जिसका प्रतिबिम्ब मैं उसकी इंजीनियरिंग नहीं की। बेशक मुझे पक्का विश्वास है कि तुम कर जाते।’ उसने कहा।

‘मैं खुद को ऑफिस में नहीं देखना चाहता। और मां को उसके काम के साथ अकेला नहीं छोड़ना चाहता।’

मैं उसके साथ और भी खुल गया; इतना मैं आज तक किसी के आगे दिल खोल कर नहीं बोला था। यह? ठीक नहीं, मैंने अपने आप से कहा। मैंने अपने चारों कारणों को दोहराया और किताबों का बैग उठाया।

‘मुझे ज्यादा, तुम्हें इन किताबों से दोस्ती करनी है।’ फिर मैंने बिल के लिए कहा।

०

‘भीतर आ जाइए’ एक लड़की ने कहा जैसे ही ईशान ने अपने सप्लायर के घर की घंटी बजाई। हम वहां नए बैट खरीदने और पुनाने बैट ठीक करवाने आए थे। पंडित जी - हमारे सप्लायर की अट्टारह वर्षीय बेटी सायरा ने दरवाजा खोला।

‘पापा तैयार हो रहे हैं। तब तक आप गैरेज में उनका इंतजार करें। उसने स्टोर की

चाबी हमें पकड़ते हुए कहा। हम गैरेज में आकर लकड़ी के स्टूलों पर बैठ गए। और ईश ने मरम्मत वाले बैट फर्श पर रख दिए। पंडित स्पोर्ट्स गुड सप्लायरज्, ऐलिसब्रिज क्षेत्र में स्थित था। मालिक गिरि राजपंडित का घर एक कमरे का घर गोदाम साथ ही था। पांच वर्ष पहले कश्मीर में उसकी बैट बनाने की बहुत बड़ी फैक्ट्री थी। यह पहले की बात है जब उसे आतंकवादियों द्वारा उसके अपने शहर से, घर से, खदेड़ दिया गया था। उससे पूछा गया था फैक्ट्री या

जिन्दगी। आज वो खुश है अहमदाबाद में एक छोटा सप्लायर बन कर, अपने परिवार के साथ।

‘कश्मीरी कितने गोरे होते हैं।’ मैंने समय बिताने के लिए बात शुरू की।

‘तुम्हें वो पसंद आई?’ ईश फुसफुसाया।

‘पागल हो?’

‘गोरा रंग, वाह’, ईश हंसा।

‘गोविन्द भाई, मेरा अच्छा ग्राहक,’ पंडित जी ने कहा, ज्यों ही वो वहां गोदाम में आए। नहा धोकर, वे बड़े तरो-ताजा लग रहे थे। उन्होंने हमें हरे बादाम पेश किए। बिजनैस में खरीदार होना बड़ा सम्मानजनक होता है। सभी आप का स्वागत करते हैं। ‘हमें छः बैट चाहिए, और इनकी मरम्मत होनी है।’ मैंने कहा।

‘गोविन्द भाई एक दर्जन ले लो।’ उसने कहा और अपना लकड़ी का संदूक खोला। इंडिया-आस्ट्रेलिया की सीरीज शुरू होने वाली है मांग बढ़ेगी।

‘पुराने इलाके में नहीं।’ मैंने कहा।

उसने लकड़ी का संदूक खोला और प्लास्टिक में से लिपटा एक बैट निकाला। उसने बैट खोला। इसमें से ताजा बेंट की खुशबू आ रही थी। कई बार बैट बनाने वाले नकली खुशबू का इस्तेमाल करते हैं ताकि नए बैटों में अच्छी खुशबू आए। पर पंडित जी ऐसे नहीं थे।

ईश ने बैट को भली-भांति परखा। वो संदूक के पास गया और बाकी बैट्स भी चेक किए कि कहीं क्रैंक या छिला न पड़ा हो।

‘गोविन्द भाई तुम्हारे लिए सबसे अच्छा लॉट है।’ पंडित जी मुस्कराए

‘कितने?’ मैंने कहा।

‘तीन सौ।’

‘मजाक कर रहे हैं?’

‘बिकुल नहीं।’ उन्होंने कसम खाई।

‘दो सौ पचास’, मैंने कहा ‘फाइनल।’

‘गोविन्द भाई, आज कल मुश्किल चल रही है।’ मेरे कजिन का परिवार भी यहां आ गया है। कश्मीर में उसका सब लुट गया। मैंने पांच लोगों को और खिलाना है जब तक उनका कोई काम शुरू नहीं होता और अपना घर नहीं ले लेते।’

‘क्या, वे सभी उसी कमरे में रह रहे हैं?’ ईश हैरान हो रहा था।

‘क्या, किया जा सकता है? कश्मीर में उसके पास अपना बंगला था और पचास साल से हरे बादाम का कारोबार चला रहा था। देखो, कैसा समय आ गया है। अपने ही घरों से निकाल दिए गए हैं।’ पंडित जी ने गहरी सास ली और बैग में से मरम्मत वाले बैट निकाल लिए।

मैं बिजनैस में हमदर्दी पसंद नहीं करता। कुछ और मोल-भाव करने के बाद दो सौ सत्तर पर पक्का हो गया। ‘हो गया’ मैंने कहा और रकम निकाली। मैं अब हजारों की लेन-देन करता था। कल्पना करो लाखों और करोड़ों का

कारोबार कैसा लगेगा। इससे कितना अलग होगा।

पंडित जी ने रकम ली और छोटे से मंदिर के आगे रखी फिर जेब में डाल ली। ईश्वर ने जीवन में उसे कितना दुःख दिया फिर भी वह उसके प्रति श्रद्धा रखता है। मैं ऐसे पूर्ण विश्वास को समझ नहीं पाया जो विश्वास करने वाले रखते हैं।

शायद मैं ऐगोनिस्ट होने के कारण इसे समझ नहीं पाता।

## आठ

अली अभ्यास के लिए बीस मिनट देर से आया। देरी का हर मिनट ईश के लिए असहनीय था।

‘तुमने कुर्ता पाजामा पहन रखा है, तुम्हारी किट कहाँ है।’ ईश चिल्लाया जैसे ही अली सात बीस पर पहुँचा।

‘सॉरी, मैं देर से उठा, था, मुझे टाईम नहीं मिला और..’

‘चलो अपने राउंड लगाओ।’ ईश ने कहा और बैंक के कोर्टयार्ड के मध्य में खड़ा हो गया। जब अली अपने राउंड पूरे कर के आया तो ईश ने नया बैट उसके लिए खोला। ‘तुम्हारे लिए कश्मीर से नया बैट। पसंद आया?’

अली ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई और कहा, ‘क्या मैं आज जल्दी जा सकता हूँ?’

‘क्यों?’ ईश गुराया।

‘मेरे पोल में आज कंचों का कम्पीटीशन है।’

‘और क्रिकेट के बारे में क्या विचार है?’

अली ने कंधे हिलाए।

‘पहले तो तुम लेट आए हो और अब जल्दी जाने को कह रहे हो। कंचों का क्या सवाल है?’ ईश ने कहा और उसे क्रीज की तरफ जाने का इशारा किया। तीन में से एक बाउलर बन गया।

‘हम मैच करने की प्रैक्टिस करेंगे। अली शॉट नहीं मारना, उन्हें कैच दो।’

अली अपने ऊपर काबू रखने में काफी सफल हुआ, कुछ महीनों के अभ्यास से। ईश ने उसे डिफेंसिव साइड खेलना सिखा दिया था और बाहर निकलने से भी बचाव किया। अच्छी खुराक और कसरत से अली की क्षमता काफी बढ़ गई थी। अब बॉल को बोर से मारने की ताकत उसमें आ गई थी बजाए अपनी गतिशीलता पर निर्भर करने के। एक बार अली ने पांच बलों को नियंत्रित ढंग से फेंक दिया इससे उसकी प्रतिभा और चमक उठी।

चाल ये थी कि अपनी योग्यता को वह उसी हद तक इस्तेमाल करता था कि स्कोर बना सके अपने को क्रीज तक ही समित रख कर। एक ओवर में एक बॉल ने अच्छा काम किया। अब ईश चाहता था कि एक ओवर में वह दो बोलें खेले।

तीन ओवरों के बाद ईश ने कहा, ‘पारस को बैट दे दो, अली को फील्डिंग।’

अली ने कोई बड़े शॉट नहीं मारे। वह निराश हो गया और उसने बैट क्रीज पर फेंक दिया।

‘देखो, यह नया बैट है।’ ईश ने कहा।

पारस ने बैटिंग की और बॉल अली की तरफ फेंका कैच के लिए, पर अली के हाथ अपने पाजामे का नाडा कसने में लगे हुए थे। बॉल ज़मीन पर गिरी।

‘तुम सो रहे हो या....’ ईश ने कहा, पर अली ने ध्यान नहीं दिया।

तीन बॉलों के बाद पारस ने फिर अली को कैच दिया।

‘अली, कैच करो’ ईश अपनी अम्पायर की जगह से चिल्लाया।

अली का एक हाथ उसकी जेब में था। उसने देखा कि ईश उसे घूर रहा है उसने अपना हाथ बड़े सामान्य ढंग से ऊपर उठाया। वो कदम और, वह बॉल कैच कर सकता था, पर उसने नहीं किया। बॉल ज़मीन पर गिर गई।

‘ऐ’, ईश ने अली का कंधा हिलाया।

‘क्या तुम सपने में हो?’

‘मैं जल्दी जाना चाहता हूँ।’ अली ने अपना कंधा झाड़ते हुए कहा।

‘पहले प्रैक्टिस खत्म कर लो।’

‘अली, बैट पकड़’ पारस ने कहा, अली के पास आते हुए।

‘नहीं वो फील्डिंग करेगा।’

‘ईश भैया, कोई बात नहीं। मैं जानता हूँ वह बैटिंग करना चाहता है।’ पारस ने कहा और अली को बैट दे दिया।

‘मैं कैचिस की और प्रैक्टिस करना चाहता हूँ। मैं स्कूल-मैच शुरू होने से पहले काफी अच्छा खेलना चाहता हूँ।’

अली ने बैट पकड़ लिया और क्रीज की तरफ बढ़ा, बिना ऊपर देखे। उसके इस गुस्ताखी से भरे व्यवहार से ईश विक्षुब्ध हो गया। उसे स्वयं पर गुस्सा आया कि उसने इस लड़के को कभी किटस और कभी बैट की गिफ्ट्स दे दे कर बिगाड़ दिया है। पारस के जोर देने पर ईश ने अली को बैटिंग की इजाजत दे दी। ‘पारस की तरफ फेंको धीमे से थोड़ा बाएं को।’

बॉल आई -अली ने पूरे जोर से मारा और बॉल बैंक के बाहर जा गिरी। ‘मैं जाना चाहता हूँ।’ अली ने अपनी हरी आंखों से ईश को घूरा।

‘मैं तुम्हारे इस मूर्खतापूर्ण कंचों के कम्पीटीशन की परवाह नहीं करता। कोई भी कंचे खेलने वाला कभी महान नहीं बन सकता।’ ईश चिल्लाया।

‘ठीक है, तुम भी कभी महान नहीं बन सकते।’ अली ने कहा।

ओह, ये बच्चे और इतना कड़वा सच।

ईश सकते में आ गया, उसकी बांह कांपी। जैसे अली का बैट बॉल पर ठीक समय पर लगता है उसी प्रकार ईश का हाथ उठा और अली के चेहरे पर जोर से थप्पड़ लगा। जोर और सदमें ने अली को ज़मीन पर गिरा दिया।

सभी एक दम सीधे हो गए। सबने थप्पड़ की आवाज सुनी।

अली बैठ गया। और आंसू रोकने के लिए उसने अपनी सांस रोक ली।

‘जाओ अपने कंचे ही खेलो।’ ईश ने कहा और दोबारा मारने के लिए हाथ उठाया। मैं भागा उसकी बांह पकड़ने के लिए। अली रो पड़ा। मैं अली को उठाने के लिए झुका। मैंने उसे उठाने की कोशिश की, मैं उसका कम-सख्त मैथ्स-टीचर था। उसने मुझे धकेल दिया।

‘चले जाओ’ अली ने कहा। रोते-रोते अपनी पतली टांगों से मुझे मारने लगा। ‘मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं।’

अली, बच्चे चुप हो जाओ। आओ, हम ऊपर चलते हैं और कुछ मजेदार सवाल करते हैं। मैंने कहा। ओप्प! मैंने यह क्या कह दिया। गलत समय पर, इस बच्चे को, जिसे अभी-अभी जोर के थप्पड़ लगे हैं।

‘मैं सवाल नहीं करना चाहता’ अली ने मुझे घूरा।

‘बेकार का, सुस्त लड़का। न फील्डिंग करना चाहता है और न मैथ्स, बस इसे तो कंचे चाहिए सारा दिन, हूँआ’ ईश फिर भड़क उठा।

मुझे यह ईश की मूर्खता लगी कि वो एक बारह-वर्ष के लड़के के साथ तर्क कर रहा है।

‘सब घर चले जाओ, हम कल प्रैक्टिस करेंगे।’ मैंने कहा।

‘नहीं, हमें करनी है...’ ईश ने कहा।

‘ईश, अंदर बैंक में चले जाओ।’ मैंने कहा।

‘मैं इसे बिल्कुल पसंद नहीं करता’ अली ने कहा, उसकी आंखें अभी भी आंसुओं से भरी थीं।

‘अली, तमीज से बात करो, अपने कोच से बात करने का यह कोई ढंग नहीं। अब घर जाओ’ मैंने कहा।

जब सब चले गए तो मैंने चैन की सांस ली। शायद परमात्मा ने मुझे इनके पेरेंट्स बना कर भेजा था।

‘तुम्हें क्या हुआ है? वह बच्चा है।’ मैंने ईश से कहा जब सब चले गए। मैंने शिकंजी बनाई ईश को शांत करने के लिए। वह मेरे साथ ही खड़ा था।

‘सोचो, उसके पास एक प्रतिभा है।’ ईश ने कहा।

‘हां है।’ मैंने कहा और शिकंजी उसे दी।

‘क्या तुम एक सिलिंडर का इंतजाम कर सकते हो। यह तकरीबन खत्म होने वाला है।’ मैंने कहा हमारे पास स्टोव भी था, पर उस पर बनाना मुश्किल लगता है।

हम कैशियर के वेटिंग रूम में आ गए और सोफे पर बैठ गए।

ईश चुप हो गया। वो कुछ छिपा रहा था। पक्का नहीं था कि ये आंसू थे क्योंकि मैंने कभी भी उसे रोते हुए नहीं देखा।

‘मुझे उसे मारना नहीं चाहिए था।’ ईश ने कहा आधा गिलास पीने के बाद। मैंने सिर हिलाया।

‘पर तुम ने उसका बर्ताव देखा।’ तुम कभी महान नहीं बन सकते, तुम सोच सकते हो अगर मैंने ऐसा अपने कोच से कहा होता’

‘वो केवल बारह वर्ष का है, उसकी बात को गंभीरता से न लो।’

‘वह उस आदमी की परवाह नहीं करता जो उसे नैशनल टीम तक पहुँचाना चाहता है। पर उसे तो कंचों का झगड़ा पड़ा रहता है।’

ईश ने अपना गिलास खाली किया और रख आया। हमने बैंक के मुख्य दरवाजे पर ताला लगाया और अपनी दुकान की तरफ कदम बढ़ाए।

‘यह बहुत गलत है।’ ईश ने कहा, ‘मैंने इतने वर्ष लगा दिए इस गेम के लिए मैंने अपना भविष्य दाँव पर लगा दिया। पर कुछ हासिल नहीं हुआ। और इस लड़के को देखो, बेवकूफी, इसे ईश्वर ने जन्म से यह प्रतिभा दी है पर उसे इसकी कोई परवाह नहीं।’ ‘इससे तुम्हारा क्या मतलब है’ कुछ हासिल नहीं हुआ?’ तुम सालों तक स्कूल के बैस्ट प्लेयर रहे हो।’

‘हां!! केवल बेलरामपुर म्यूनिसिपल स्कूल में। यह तो ऐसा हुआ जैसे हम कहें कि विद्या हमारे पोल की प्रीति जिंटा है। कौन परवाह करता है।’

‘क्या?’ मैंने कहा और अपनी हंसी पर काबू नहीं कर सका।

‘कुछ नहीं। एक बार हमारी आंटी ने उसे ऐसा कहा था और मैं उसे इस बात पर छेड़ता रहता था।’ ईश ने कहा।

उसका मूड कुछ ठीक हुआ। हम अपनी दुकान के पास पहुँच गए थे। मंदिर का गुंबद दिखाई देने लगा था।

‘गोविंद, ईश्वर ऐसा क्यों करता है।’ ईश ने कहा।

‘क्या करता है, मतलब?’

‘वो कुछ लोगों को इतनी प्रतिभा देता है। और मेरे जैसे लोगों को कुछ भी नहीं।’ ‘तुम प्रतिभाशाली हो।’

‘काफी नहीं। उतना नहीं जितना अली है। मैं इस गेम को बहुत प्यार करता हूँ, पर मेरे पास कोई गिफ्ट नहीं ईश्वर की और से। मैंने इतनी मेहनत की, रोज सुबह 4 बजे उठना, घंटों प्रशिक्षण लेना, अभ्यास करना और करते जाना। मैंने अपनी पढ़ाई भी छोड़ दी, अब मैं यह सब सोचता हूँ और मेरा भविष्य? फिर यह कंचों का खिलाड़ी आया। मैं बॉल को ऐसे नहीं देख पाता और न हिट कर पाता है जैसे कि अली। क्यों गोविन्द, ऐसा क्यों है?’

अपने दोस्तों की तरफ बुजुर्गाना व्यवहार करते रहने के कारण मुझे अब उनके हर मूर्खखाना सवालों के जवाब भी देने पड़ते हैं। ‘मैं नहीं जानता। ईश्वर प्रतिभा देता है साधारण व्यक्ति को ताकि वो असाधारण बन जाए। प्रतिभा गरीबों के लिए दौलत के समान है। प्रतिभा के बल पर ही गरीब अमीर बन सकता है। अगर यह न हो तो अमीर



अमीर बने रहेंगे और गरीब सदा गरीब रह जाएंगे। असल में प्रतिभा संसार में बैलेंस बनाती है। ताकि दुनिया सामान्य रहे।' मैंने कहा।

मैंने अपनी बात को स्वयं ही मन में दोहराया।

'फिर यह लड़का क्यों ध्यान नहीं देता। कंचे? क्या तुम विश्वास कर सकते हो कि उसे कंचों से खेलना ज्यादा पसंद है?'

'उसे वह अभी यह नहीं देख सकता कि क्रिकेट से उसे क्या कुछ मिल सकता है। अब देखो न, अपने पोल में वो कंचा-चैंप है और वो अपने इस, रुतबे से खुश है। एक बार यदि वो क्रिकेट में सफलता प्राप्त करने का तजुर्बा कर लेगा, तब उसे इस गेम का महत्व और अपनी प्रतिभा समझ में आएगी। अब तक तो वो चार बलों का शेर है। तुम्हें उसे खिलाड़ी बनाना है, ईश।' मैंने कहा।

हम दुकान पर पहुँच गए। ओमी पहले ही पहुँच चुका था और उसने दुकान की सफाई कर दी थी। वह कोचिंग पर नहीं। आया था। उसने अपने मामा से वादा किया था कि वह हफ्ते में सुबह की दो रैलियों में शामिल होगा। आज उसका एक दिन था।' अच्छा अभ्यास हुआ' ओमी ने पूछा और चाय का आर्डर दे दिया।

ईश भीतर चला गया। मैंने ओमी को चुप रहने का इशारा किया।

एक दस वर्षीय लड़का तीस सिक्के लेकर आया क्रिकेट बॉल खरीदने के लिए।' नैयर की एक बॉल पच्चीस रुपए की है और तुम्हारे पास इक्कीस हैं।' मैंने कहा, उसके सिक्के गिनते हुए।

'मैंने अपना पिगी बैंक तोड़ कर ये पैसे निकाले हैं, मेरे पास और नहीं हैं।' लड़के ने गंभीरता से कहा।

'फिर बाद में आना,' मैंने कहा। ईश ने बीच में रोक दिया।

'ले लो।' ईश ने कहा और लड़के को बॉल दे दी।

लड़के ने गेंद पकड़ी और भाग गया।

'यह तुम क्या करते हो ईश?' मैंने कहा।

'ओप्प तुम बिजनैसमैन।' ईश ने कहा और अली के लिए खीझता रहा, कोने में बैठ कर।

ईश ने अली के लिए एक डिब्बा चॉकलेट, दो दर्जन केले और एक नई स्पोर्ट कैप ली अली को वापिस लाने के लिए। अली भी हमें मिस कर रहा था। उसकी मां ने हमें बताया कि उस दिन वो दो घंटे तक रोता रहा और उसने कंचों के टूर्नामेंट में भी भाग नहीं लिया। वो अगले दो दिन प्रैक्टिस के लिए भी नहीं आया। अली अपराध-बोध से ग्रस्त था। वह माफी के लिए तैयार था शायद उसकी मां उसे इस स्थिति पर लाई थी। उसने ईश के पैरों को हाथ लगाया और गुरु का अपमान करने के लिए माफी मांगी। ईश ने उसे गले से लगा लिया और सारा सामान उसको दे दिया। ईश ने कहा उसे मारने के स्थान पर वह अपने हाथ कुछ देना पसंद करेगा। अगर कोई मुझे पूछे तो मुझे यह सब मैलोट्रामा लग रहा था। बात क्या - अली वापिस आ गया, इस बार अधिक गंभीरता से और ईश भी कुछ नरमाई पर आया। अली की

क्रिकेट में सुधार हुआ और दूसरे विद्यार्थियों ने सुझाव दिया कि वो अली को जिला-स्तर पर खेलने के लिए ले जाएंगे। ईश ने अपना इक-तरफा विचार बताया, 'नहीं चुनाव करने वाले इसे बर्बाद कर देंगे। अगर वो इसे रिजैक्ट कर देंगे तो यह हमेशा के लिए निराश हो जाएगा। और अगर वो इसे सलेक्ट करते हैं तो वो इसे फिजूल के मैचों में लगाए रखेंगे। वर्षों तक वह एक ही बार सलेक्शन के लिए जाएगा नैशनल-टीम में।'।

'सच में? तुम्हें भरोसा है कि वो ऐसा कर पाएगा।' ओमी ने कहा हमें प्रैक्टिस के बाद स्टील के गिलासों में लस्सी पकड़ते हुए। 'वो ऐसा खिलाड़ी बनेगा, जैसा आज तक इंडिया के पास नहीं था। यह कुछ पागलपन सा लग रहा था। पर फिर हमने देखा अली ने कुछ ही बलों में अच्छे गेंदबाजों को खदेड़ दिया। दो वर्ष और ईश का कहना सच होगा।

'अली की प्रतिभा के विषय में किसी से बात न करना।' ईश ने अपनी लस्सी वाली मूछों को साफ किया।

'बहानेबाजी से परीक्षा में पास नहीं हुआ जा सकता विद्या। इसके लिए तुम्हें पढ़ना पड़ेगा पढ़ाई ही तुम्हारी मदद

करेगी।' मैंने कैमिस्ट्री की किताब फिर खोली।' मैंने कोशिश की थी।' उसने कहा और अपने खुले बालों को पीछे किया। वो नहाई नहीं लगती थी। उसने ट्रैक-पैट पहन रखी थी मेरा खयाल है जब वो तेरह वर्ष की रही होगी तभी से पहनती आ रही है और पिंक टी-शर्ट, और वो फेयरी-कीन जैसी लग रही थी। एक युवती ऐसी ड्रेस कैसे पहन सकती है जिससे उसे 'फेयरी कीन' कहना पड़े या कोई भी ऐसा कुछ क्यों पहनेगा जिसे 'फेयरी कीन' कहते हैं।

'मैं हर रोज प्रार्थना करती हूँ कि वो मेरी मदद करे।' उसने कहा।

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उसकी इन बचकानी हरकतों पर हँसू या रोऊँ। अगर वह उन कपड़ों में गुड़िया जैसी न लग रही होती तो मेरा गुस्सा सातवें आसमान पर होता।

'इसे परमात्मा पर न छोड़ो, ऑर्गेनिक कैमिस्ट्री को खुद पढ़ने से अच्छी कोई बात नहीं। मैंने कहा।

उसने सिर हिलाया और अपनी कुर्सी पीछे खिसकाई, एक बोतल नीचे गिर गई थी।

'ओप्प।' उसने कहा और नीचे झुकी।

'क्या हुआ?' मैं उठ खड़ा हुआ। यह नारियल के तेल की बोतल थी। शुक्र था कि बन्द थी।

'कुछ नहीं। मैंने सोचा था कि बालों को तेल लगाऊँगी।' उसने कहा और नीले रंग की बोतल उठा कर ऊपर रख दी।

मैं उसके चेहरे की तरफ टकटकी लगाकर। जरूरत के कुछ पल से अधिक उसे निहारता रहा। लड़कियों को देखने के लिए सीमित समय होता है अन्यथा इसे घूरना समझा जाएगा। मैंने वो सीमा लांघ ली थी। कुर्सी पर बैठते ही उसने जानबूझ कर अपनी टी-शर्ट को खींचा। यह खींचना केवल मेरे कारण था। मैंने इस तरफ बिल्कुल नहीं देखा, पर उसने सोचा मैंने देखा है। मैं शर्मिन्दा सा हुआ।

'नारियल का तेल।' मैंने कहा विषय बदलने के लिए।

'हां, ऑर्गेनिक कैमिस्ट्री, ओप्प मेरे सिर के लिए। शायद यह कुछ मदद करे।' मैंने किताब के पन्ने खोले कि बैन्वीन कैसे ऑक्साइड बनाती है।

'तुम्हारा जन्म-दिन कब है?' उसने कहा।

'14 मार्च,' मैंने उत्तर दिया।

'कौन सा दिन?'

'पी डे।'

'इस दिन आइनस्टेन का जन्म-दिन भी है।' 'शान्त क्या ठीक है?'

'एक दिन पी के लिए? कैसे हो सकता है एक दिन किसी चीज के लिए, बहुत डरावना?'

'क्षमा कीजिए? मैथ्स प्रेमियों के लिए यह एक महत्वपूर्ण दिन हैं यद्यपि हमने इसे कभी पब्लिक नहीं बनाया। तुम कह सकते हो तुम्हें लिटरेचर पसंद है, म्यूजिक पसंद है पर तुम इसी भाव के लिए नहीं कर सकते।'

'क्या तुम बालों में तेल लगाने में मेरी मदद करोगे? मेरा हाथ पीछे तक नहीं जाता।' मेरी जीभ ऐसे तिलकी जैसे उसे तेल की परत वहां जम गई हो, मैंने कहा, 'विद्या हमें अब पढ़ना चाहिए।'

'हां, हां, तकरीबन हो गया है, बस मेरी गर्दन से पीछे, प्लीज।'

उसने अपनी कुर्सी हिलाई और उसकी पीठ मेरी तरफ हो गई। उसने तेल की बोतल का ढक्कन हाथ में पकड़ा हुआ था। क्या मुसीबत है, मैंने सोचा। मैंने अपनी बीच की अंगुली तेल में डुबोई और उसकी गर्दन तक ले आया।

'यहां नहीं' वह दोबारा हंसी। यहां गुदगुदी होती है। थोड़ा ऊपर, हां जड़ों में।' उसने मुझे बताया कि एक नहीं तीन उंगलियों से तेल लगाओ और ज़रा जोर से दबाओ। मैंने उसके निर्देशों का फौरन पालन किया। शहर का बैस्ट मैथ्स टीचर आज चंपी करने वाला बन गया है।

'नई दुकान कैसे मिल रही है?'

‘जल्दी ही। मैंने तीन महीने का एडवांस किराया और डिपोजिट जमा करवा दिया है।’ मैंने कहा, ‘पचास हजार कैश। मॉल पर हमारी लोकेशन सब से अच्छी होगी।’ मैं इंतजार नहीं कर सकती।’ उसने कहा।

‘दो महीने और,’ मैंने कहा। ‘ओके. अब बहुत हो गया।’

तुम अपना काम खुद करो। मैं बोटल पकड़ता हूँ।

वो मेरी तरफ देखने को मुड़ी। उसने तेल में अंगुलियां डुबोई और सिर पर मलने लगी।

‘काश, मैं लड़का होती,’ उसने कहा और जोर-जोर से सिर की मालिश करने लगी।

‘क्यों? सिर की मालिश आसानी से हो जाती है? मैंने कहा, बोटल हाथ में पकड़े हुए, यद्यपि इससे मेरी कलाई दुःखने लगी थी।

‘अपने हिसाब से अपना जीवन जीने के लिए। मुझे ऐसी दुकान खोलने की इजाजत नहीं, मिल सकती।’ उसने कहा। मैं चुप हो गया।

‘चलो हो गया, हो सकता है मेरा दिमाग अब ज्यादा काम करने लगे।’ उसने कहा, बाल बांधते हुए और कैमिस्ट्री की किताब मेज पर रखी।

‘मैं इसे पढ़ना नहीं चाहती।’ उसने कहा।

‘विद्या, तुम्हारा टीचर होने के नाते मेरा फर्ज...’

‘क्या, तुम्हारा फर्ज क्या है टीचर होने के नाते? मुझे मेरे सपनों तक पहुँचने के लिए मेरी मदद करना या भिन्नभिन्नाते रहना?’

मैं चुप रहा। उसने अपना बायां पैर अपनी गोद में रखा।

मैंने ध्यान दिया कि उसके पाजामे पर छोटे-छोटे टैडी-बियर बने हुए थे।

‘मैं तुम्हारा टीचर नहीं, ट्यूटर हूँ मैथ्स ट्यूटर। और जहां तक मैं जानता हूँ कोई ड्रीम-ट्यूटरस नहीं होते।’ ‘क्या तुम मेरे दोस्त नहीं हो?’

‘हां, कुछ-कुछ,’

मैं चुप रहा।

‘कुछ कहो। मैं ये सब पाठ याद करूँ चाहे इनमें मुझे कोई दिलचस्पी न हो, जैसा कि हिन्दुस्तान के सब अच्छे विद्यार्थी करते हैं?’

मैं चुप रहा।

‘क्यों?’ उसने मुझे फिर उकसाया।

‘समस्या यह है कि तुम क्या यह समझती हो कि मैं इन संभावनाओं की समस्याओं के समाधान अपनी खुशी के लिए करता हूँ। ठीक है यह भी हो सकता है, पर मेरे बारे में यही सब कुछ नहीं है। मैं ट्यूटर हूँ और यह मेरा काम है। पर

मेरे ऊपर यह तोहमत कभी न लगाना कि मैं तुम्हारी रुचियों को नष्ट कर रहा हूँ। मुझे लगा कि मैं कुछ ठीक नहीं बोला,

‘साँरी, मेरी भाषा के लिए।’

‘तोहमत लगाना भी एक आवेश है।’

मैं मुस्कराया और चल दिया।

‘तो, तुम जा रहे हो’ उसने कहा, ‘मेरे ट्यूटर-दोस्त, मैं तुम्हारे आगे स्वीकार करती हूँ-मैं बम्बई जाना चाहती हूँ पर लाशों का पोस्टमार्टम करने नहीं। मैं पी. आर. का अध्ययन करना चाहती हूँ।’

मैंने मेज पर मुक्का मारा। 'फिर करो। मेरे सामने ऐसी बेवजूफी की बातें न किया करो-काश मैं लड़का होती, मैं पिंजरे में बंद हूँ। ठीक है, तुम पिंजरे में हो, पर तुम्हारे पास अच्छा बड़ा और तेल लगा दिमाग है। यह पक्षी की तरह छोटा सा नहीं। इस का इस्तेमाल करो और पिंजरे की चाबी ढूँढो।'

'मेडिकल कॉलेज भी एक चाबी है, पर मेरे लिए नहीं' उसने कहा।

'उस स्थिति में पिंजरा तोड़ दो।' मैंने कहा।

'कैसे?'

'पिंजरा कैसे बनता है? तुम्हारे माता-पिता, ठीक? तुम्हें, हर वक्त उन्हें सुनना पड़ता है?'

'नहीं, बिल्कुल नहीं। जब मैं पांच साल की थी तभी से मैं उनसे झूठ बोलती आई हूँ।'

'सच में, वोवा।' मैंने कहा और अपने को समेटा, 'आवेग बनाम माता-पिता-मुश्किल मुकाबला है। पर अगर तुम्हें इनमें से एक को चुनना पड़े तो निश्चित है आवेग की जीत होगी। मानवता कभी विकसित न हो पाती अगर लोग हर वक्त

अपने माता-पिता की सुनते रहते।

ठीक कहा तुमने। हमारे पेरेंट्स इतने भोले भी नहीं। क्या एक पल के पैशन में ही हमें उन्होंने कन्सीव नहीं कर लिया था?' मैं उसके मासूम से लगने वाले चेहरे को देख रहा था, मुझे सदमा लगा। यह लड़की तो काबू से बाहर होती जा रही है। उसे पिंजरे से बाहर निकलने का विचार देना इतना ठीक नहीं है।

## नौ

26 जनवरी भारतीयों के लिए खुशी का दिन होता है।

इस दिन तुम देश-भक्ति की भावना का अनुभव करो या न करो पर वर्ष के पहले महीने में यह छुट्टी निश्चित होती है। मुझे याद है मैंने सोचा था कि मंदिर वाली दुकान में यह हमारी आखिरी छुट्टी होगी क्योंकि वैनटाइन डे पर मॉल वाली अपनी नई दुकान में शिफ्ट करने की हमारी योजना थी। डिपोजिट के पचास हजार के अतिरिक्त हमने इसकी भीतरी सैटिंग के लिए साठ हजार खर्च कर दिए थे। मैंने अपनी मां से दस हजार उधार लिए थे। ईश के पापा ने कुछ भी देने से इनकार कर दिया था। मेरे मना करने पर भी ओमी ने बाकी की रकम अपने बिट्टू मामा से ऋण के रूप में ले ली थी।

गणतन्त्र दिवस से एक रात पहले की बात है, मैं अपने विचारों में खोया अपने बिस्तर पर लेटा था। मैंने दस हजार एक सौ अपने बिजनैस में लगाए थे। मेरा बिजनैस अब लाखों तक पहुँच गया है। क्या हम कालीन बिछवा लें। खेलों की दुकान के लिए यह आरामदायक रहेगा। मैं सारी रात दुकान की चीजों के सपने लेता रहा।

‘माँ मुझे न उठाओ, मैं अभी सोना चाहता हूँ।’ मैं चिल्लाया। क्या दुनिया एक बिजनैसमैन को विशेष छुट्टी वाले दिन भी सोने नहीं देती।

पर मां ने मुझे नहीं हिलाया था। मैं अपने बिस्तर पर हिल रहा था। मैंने अपनी आंखें खोलीं। मेरा बैड उल्टा हो रहा था और ऐसे ही बाकी चीजें। मैंने दीवार-घड़ी की तरफ देखा, वह नीचे फर्श पर गिर गई थी। कमरे का सारा सामान, पंखे, खिड़कियां सब बुरी तरह से हिल रहे थे।

मैंने अपनी आंखें रगड़ी, क्या हुआ?

भयानक सपना?

मैं खड़ा हो गया और खिड़की की तरफ गया। गली में लोग इधर-उधर चारों ओर भाग रहे थे। अफरा-तफरी मची हुई थी।

‘गोविन्द’ मेरी मां की जोरदार आवाज आई। मेज के नीचे बैठ जाओ। भूचाल आ रहा है।’

नीचे बैठ जाओ। भूचाल आ रहा है।’

‘क्या?’ मैंने कहा और खिड़की के पास पड़ी मेज के नीचे बैठ गया बिना कुछ सोचे। वहां से मैं बाहर का विनाश देख सकता था। सामने वाली इमारत के तीन टी.वी. एनटीना गिर गए थे। टेलीफोन का एक पोल टूट गया था और नीचे गिर गया था। यह कम्पन 45 सेकंड तक रहा। मेरी जिन्दगी के सबसे अधिक विनाशकारी लम्बे 45 सेकंड। बेशक उस वक्त मैं यह नहीं जानता था। भूचाल के बाद एक अजीब सी चुप्पी छा गई।

‘मां’ मैं चिल्लाया।

‘गोविन्द हिलो न’ उसने जोर से कहा।

‘यह खत्म हो गया है।’ मैंने कहा, दस मिनट और गुजरने के बाद, ‘तुम ठीक हो, न, मां?’

मैं बाहर वाले कमरे में आ गया था। दीवारों पर लगे सभी कैलेण्डर, पेंटिंग्स, लैम्पशेड नीचे फर्श पर पड़े थे।

‘गोविन्द,’ मेरी मां मेरे पास आई और मुझसे लिपट गई। हाँ मैं ठीक था, मेरी मां भी ठीक थी।

‘आओ हम बाहर चलते हैं।’ उसने कहा।

‘क्यों?’

‘इमारत गिर सकती है।’

‘मुझे ऐसा नहीं लगता।’ मैंने कहा पर मेरी मां मुझे पजामे में ही खींचती हुई बाहर ले गई।

गली लोगों से भरी हुई थी।

‘क्या यह बम्ब था?’ एक व्यक्ति दूसरे से फुसफुसाया।

‘भूचाल। टी.वी. बता रहे हैं। यह भुज से शुरू हुआ है।’ गली में एक व्यक्ति कह रहा था।

‘बहुत बुरा हुआ।’ दूसरे व्यक्ति ने कहा।

‘हमने यहां सैकड़ों मीटर दूर उसके कंपन महसूस किए, सोचो भुज की क्या स्थिति होगी।’ एक और वृद्ध ने कहा।

हम एक घंटा बाहर खड़े रहे। न हमारी इमारत और न ही हमारे पोल की कोई इमारत हिली। इस समय के दौरान अफवाहें और गप्पे तेजी से फैल गईं। कुछ कहने लगे और भूचाल आ सकता है। कुछ कहते कि भारत न्यूकलर बम्ब का कोई परीक्षण कर रहा है। अहमदाबाद में सम्पत्ति का नुकसान हुआ है, ऐसे समाचार आए। चर्चाएं गली में धीरे-धीरे फैलने लगीं।

दो घंटे के बाद में अपने घर के भीतर आया टी.वी. चलाया। हर चैनल पर भूचाल की चर्चा थी। यह पूरी तरह भुज में आया था, बेशक गुजरात के बहुत से हिस्से इससे प्रभावित हुए थे।

‘रिपोर्ट्स कहती हैं कि इस दौरान अहमदाबाद का अधिक भाग सुरक्षित रहा पर निर्माणाधीन इमारतों को काफी क्षति पहुंची है।..... रिपोर्टर ने कहा और मेरी रीढ़ की हड्डी तक कम्पन पहुँच गया।

‘नहीं.....नहीं.....नहीं’ मैं अपने आप से बुड़बुड़ाया।

‘क्या हुआ?’ मेरी मां ने कहा जैसे ही वो मेरे लिए चाय और टोस्ट ले कर आई। ‘मैंने बाहर जाना है।’

‘कहा?’

‘नवरंगपुरा.... अभी।’ मैंने कहा और अपने स्लीपर पहने।

‘क्या तुम पागल हो?’ उसने कहा।

‘मेरी दुकान मां, मेरी दुकान,’ मैंने केवल इतना ही कहा और घर से बाहर भाग गया।

सारा शहर बन्द था। मुझे कोई बस या ऑटो नहीं मिला।

मैंने सात किलोमीटर तक पैदल ही जाने का फैसला किया। मैंने अपने नए स्टोर को देखना था कि क्या वो ठीक है। हां, मैं चाहता था कि वो सुरक्षित हो। मुझे एक घंटा लग गया वहां जाने में। सारे रास्ते मैंने तबाही देखी। नए इलाके में तो भारी नुकसान हुआ था। लगभग सभी इमारतों की खिड़कियां टूट गई थीं। जो इमारतें निर्माणाधीन थीं वो मलबे में परिवर्तित हो चुकी थीं। मैं महंगी और आरामदायक दुकानें सड़क पर बिछी हुई थीं। मैंने स्वयं से तर्क किया मेरी नई, अत्याधुनिक इमारत में भूचाल सहने की कोई तकनीक अवश्य होगी। मैंने तेज-तेज सांस ली सौ मीटर और दौड़ने के लिए। मेरा शरीर पसीने से तर-ब-तर था। क्या मुझे अपनी इमारत मिल नहीं रही? मैंने कहा, जैसे ही मैं अपनी गली में पहुँचा। गली में पड़ा मलबा और टूट-फूट के कारण किसी को भी पहचान करना असंभव था।

मैं वापिस मुड़ा, अपनी सांस ठीक करते हुए।

‘ईमारत कहां गई?’ मैंने अपने आप से कहा, अपनी गली के चक्कर काटते हुए। आखिर में मैंने इसे ढूंढ लिया। कल तक जो छः मंजिलें बनी हुई थी वो मलबे के ढेर में तबदील हो चुकी थीं। मैं ध्यान केन्द्रित नहीं कर पा रहा था। मुझे बहुत प्यास लगी। मैंने पानी के लिए नजर दौड़ाई पर वहां सब ओर पत्थर ही पत्थर थे। मेरे पेट में शूल उठा। मैं पेट पकड़ कर टूटे हुए किसी बैच पर बैठ गया अपना होश कायम रखने के लिए।

पुलिस ने एक मजदूर को बाहर निकाला उसके सारे शरीर पर चोटों के निशान थे। सीमेंट के थैले उस पर गिर गए थे जिससे उसकी टांगें कुचली गई थीं। लहू ही लहू देख कर मुझे मितली आने लगी। भीड़ में किसी ने मेरी, तरफ ध्यान नहीं दिया। एक लाख दस हजार की संख्या बार-बार मेरे दिमाग में घूम रही थी। मेरे पिता जब हमें छोड़ कर गए उस दिन के चेहरे जिनका हमारे साथ कोई रिश्ता नहीं था, मेरी आंखों के सामने घूम गए।

ये चेहरे वर्षों तक कभी भी मेरे ख्यालों में नहीं आए। पिता के चेहरे का वह भाव जब वो बैठक में से बाहर निकले

और निकलते ही दरवाजा बन्द कर दिया। मेरी मां के वो मौन आंसू जो कुछ घंटे तक चलते रहे थे, आगे कुछ वर्षों तक चलते रहे। मैं नहीं जानता कि यह अतीत मेरी आंखों के आगे घूम गया। मेरा विचार है कि दिमाग में एक ऐसा खाना होता है जिसमें स्मृतियां सुरक्षित हो जाती हैं। यह खाना बन्द रहता है। परन्तु जब भी किसी नई याद ने इसमें प्रवेश करना होता है तो यह खुल जाता है और तब इसके अंदर जो बन्द पड़ा है उसे तुम देख सकते हो। मुझे अपने पिता पर गुस्सा आया, बिल्कुल गलत इस समय मुझे भूचाल पर गुस्सा आना चाहिए था। या फिर अपने ऊपर, इतना धन यहां लगाने पर। गुस्सा, अपने जीवन की पहली बड़ी गलती पर। मेरा शरीर गुस्से से कांप गया।

‘चिन्ता न करो, परमात्मा हमें बचाएगा।’ किसी ने मेरा कंधा थपथपाया।

‘ओह! सचमुच, तो फिर किस शैतान ने इसे पहले यहां भेजा?’ मैंने कहा और अजनबी को पीछे हटा दिया। मुझे हमदर्दी नहीं, अपनी दुकान चाहिए थी।

दो वर्ष की मेहनत और बचत, बीस वर्ष के सपने-सब बीस सेकंड में धराशायी हो गए। ‘नवरंगपुरा मॉल’ की छः मंजिला इमारत जो कभी सिर उठाए शान से खड़ी थी, धूल चाट रही थी। हो सकता है परमात्मा इस ढंग से कुछ कहना चाहता हो-शायद यह नहीं चाहता था कि हम यहां आए। हमें अपने छोटे से पुराने शहर में ही रहना है, हमें बड़े शहरों में आने की कोशिश भी नहीं करनी चाहिए। मैं नहीं जानता कि मैंने ईश्वर के बारे में कैसे सोचा, मैं तो नास्तिक था। पर इस भूचाल के लिए तुम और किस को दोषी मानोगे?

बेशक मैं नवरंगपुरा मॉल के निर्माता को इसका दोषी मान सकता हूं। पुराने शहर पोल जो सौ साल पहले की इमारतों के हैं अभी तक खड़े हैं। ओमी का दो सौ साल पुराना मंदिर सुरक्षित है। फिर मेरी ही मॉल क्यों ढह गई? इसका उसने क्या कर दिया? राख?

मुझे कोई चाहिए था जिसे मैं दोषी ठहराता, मैं किसी को, किसी चीज को चोट पहुँचाना चाहता था। मैंने एक ईंट उठाई और जोर से एक खिड़की पर फेंकी जो पहले ही टूटी हुई थी। उसका बचा हुआ शीशा भी चूर-चूर हो गया।

‘तुम यहां क्या कर रहे हो? क्या इतनी तबाही देखनी काफी नहीं।’ मेरे साथ वाले ने कहा।

मुझे चेहरे की पहचान नहीं हुई, न ही किसी और की। मेरे दिल की धड़कन बढ़ गई थी। हां, हमें निर्माता से बात करनी होगी, मेरे दिल ने कहा। पर मेरे दिमाग ने कहा, वो भाग गया होगा। किसी को भी उनका पैसा वापिस नहीं मिलेगा।

‘गोविन्द, गोविन्द’ ईश ने कहा, वो तब तक मेरे कान के पास चिल्लाता रहा जब तक मैंने उसे पहचान नहीं लिया।

‘भई, तुम यहां क्या कर रहे हो? खुले में रहना खतरनाक है, चलो घर चलें।’ ईश ने कहा।

मैं उस मलबे को देखता रहा जिसे मैं पिछले चार घंटों से देख रहा था।

‘गोविन्द हम कुछ नहीं कर सकते। आओ चलें।’

‘सब खत्म हो गया ईश! मैंने कहा। मेरी आंखों के आगे धुंधलका सा था, जो पिछले दस सालों में पहली बार आया था।

‘दोस्त, सब ठीक है, हमें चलना चाहिए।’ ईश ने कहा।

‘हमने सब कुछ खो दिया है। देखो हमारा बिजनैस खुलने से पहले ही खत्म हो गया...।’

मैं फूट-फूट कर रो पड़ा। मेरे पिता जब से हमें छोड़ कर गए थे मैं कभी नहीं रोया था। तब भी नहीं रोया था जब एक बार दीवाली वाले दिन मेरा हाथ जल गया था और डॉ वरमा ने मुझे दवाइयां दी थीं ताकि मैं सो जाऊं। तब भी नहीं रोया था जब भारत मैच हार गया था। तब भी नहीं जब मुझे इंजीनियरिंग कालेज में दाखिला नहीं मिला था। तब भी नहीं जब पहले तीन महीने बिजनैस में कोई पैसा नहीं कमाया था। पर उस दिन जब परमात्मा ने बिना कारण मेरे शहर को गिरा दिया, मैं रोया था, खूब रोया था। ईश ने मुझे पकड़ा हुआ था और उसकी कमीज से मैं अपने आसू पोंछ रहा था।

‘गोवि, आओ घर चलें।’ ईश ने कहा। उसने कभी छोटे नाम से मुझे नहीं बुलाया था। न ही उसने मुझे ऐसे पहले

कभी देखा था।

‘हम बर्बाद हो गए। मैं बच गया, मैं बच गया, बस मैं ही बचा। हमने कर्ज लिए, फिर क्या हुआ, यह सब। ईश मैं उस बिट्टू मामा के चेहरे पर व्यंग नहीं देख सकता। मैं सड़क-किनारे काम कर लूंगा।’ मैंने ईश से कहा जैसे ही उसने मुझे खींच कर ऑटो में बिठाया।

लोगों ने सोचा होगा कि शायद मैंने अपना बच्चा खो दिया है। पर जब कोई बिजनैसमैन अपना बिजनैस खो देता है, यह बिल्कुल वैसा ही है। पर यह एक अलग बात है कि तुम बिजनैस के लिए जोखिम उठाते हो और हानि उठाते हो, पर यह ठीक नहीं। वहां किसी को यह महसूस करना चाहिए कि जो हुआ है ठीक नहीं हुआ। ईश मुझे शांत करने के लिए फूटी लाया। इससे मुझे कुछ राहत मिली। अच्छा ही हुआ क्योंकि मैंने अगले दो दिन कुछ नहीं खाया। मेरा ख्याल है बाकी के अखावादियों ने भी नहीं खाया होगा।

बाद में मुझे पता चला कि इस हादसे में तीस हजार लोगों की जानें चली गई थीं। मैदान लोगों से भरा हुआ था। भुज में नब्बे प्रतिशत लोगों के घर ढह गए थे। स्कूल और हस्पताल मिट्टी बन गए थे। पूरे गुजरात में अरबों इमारतें क्षतिग्रस्त हुई थीं। उन अरबों इमारतों में मेरी दुकान, मेरा भविष्य भी था। इतनी बड़ी बर्बादी के आगे मेरा नुकसान तो कुछ भी नहीं था। परन्तु सीमा और स्वार्थ के हिसाब से मुझे काफी नुकसान हुआ था। नए शहर से पुराना शहर अधिक प्लस प्रमाणित हुआ। कैसे भी हो हमारे बुजुर्गों ने इमारतों पर अच्छा मसाला लगवाया था नए मॉल-मालिकों से।

गुजरात के मुकाबले अहमदाबाद भाग्यशाली था, ऐसा टी.वी. चैनलों ने कहा। नए शहर ने केवल पचास-कई मंजिलों वाली-इमारतों का नुकसान हुआ था। उन्होंने कहा अहमदाबाद में कुछ सैकड़ों लोगों की जानें गई हैं जबकि और स्थानों पर यह संख्या लाखों में थी। क्या हंसी की बात है जहां सैकड़ों में लोग मरे उनके लिए ‘केवल’ शब्द का प्रयोग किया गया, जब कि इन लोगों के भी परिवार होंगे, आशाएं होंगी और होंगे भविष्य के सपने-जो केवल पैतालीस सेकेंड में बिखर गए। पर मैथ्स का यही कायदा है-तीस हजार के मुकाबले ये सैकड़ों जीरो के बराबर है।

मैं एक सप्ताह अपने घर से बाहर नहीं निकला। पहले तीन दिन मुझे तेज बुखार रहा और अगले चार दिन मुझे खूब जाड़ा लगा।

‘तुम्हारा बुखार उतर गया है।’ डॉ वर्मा ने मेरी पल्स चैक करते हुए कहा। मैं बिस्तर पर लेटा था, छत की ओर देख रहा था।

‘तुम दुकान पर, नहीं गए?’

‘मैंने अपना सिर हिलाया और वैसे ही पड़ा रहा।’

‘मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी तुम ने नवलधारियों के बारे में सुना है?’ डॉ वर्मा ने कहा।

मैं चुप रहा।

‘तुम बोल सकते हो, मैंने तुम्हारे मुंह में थर्मामीटर नहीं लगाया हुआ।’

‘नहीं, वो कौन हैं?’

‘गुजरात में एक सक्रिय उद्यमी समुदाय है नवलधारी। वहां हर कोई व्यापार करता है। और वे कहते हैं कि एक सच्चा नवलधारी व्यापारी वो है जो नौ बार व्यापार मिट्टी में मिल जाने के बाद हर बार उत्थान कर सकता है।’

‘मैं कर्ज में हूँ डॉक्टर। मैंने एक ही धक्के में इतना धन गंवा दिया है, जो-मैंने अपने बिजनैस से अभी तक नहीं कमाया।’

‘दुनिया में ऐसा कोई बिजनैस नहीं जिसने कभी धन न गंवाया हो। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसने साइकिल बिना गिरे सीखी हो। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसने चोट खाए बिना प्रेम किया हो। यह सब कुछ जिन्दगी की गेम का हिस्सा है।’ डॉ वर्मा ने कंधे उचकाए। मैं डरा हुआ हूँ। मैंने कहा, और मुंह दीवार की ओर कर लिया।

‘मध्य-वर्गीय पेरेंट्स की तरह बात करना बंद करो। धन की हानि से इतने डर गए हो। पेरेंट्स अपने बच्चों को दूसरों के लिए काम करने पर लगा देते हैं ता-उम्र केवल एक पक्के वेतन के लिए।’



‘मैंने बहुत कुछ खो दिया है।’

‘हां, पर तुम्हारी उम्र तुम्हारे साथ है। तुम जवान हो, तुम ये सब फिर कमा लोगे। तुम्हारे अभी बच्चे नहीं जिन्हें तुम्हें पालना है, घर के लिए भी तुम्हारी अभी कोई जिम्मेवारी नहीं है। और एक बात और है कि तुमने कम पैसा देखा है। तुम इसके बिना रह सकते हो।’

‘मैं कुछ भी नहीं करना चाहता। यह भूचाल, यह क्यों आया? आपको पता है हमारा स्कूल रिफ्यूजी कैम्प बना हुआ है।’

‘हां, और रिफ्यूजी क्या कर रहे हैं? बिस्तरों पर पड़े हैं या ठीक होने की कोशिश कर रहे हैं।’

मैंने डॉक्टर को बाहर भेज दिया। जो भी मेरे पास आता, मुझे शिक्षा देने लगता, निस्संदेह अच्छी शिक्षा। पर मैं सुनने के मूड में नहीं था। मैं कुछ भी करने के मूड में नहीं था। दुकान? यह एक हफ्ता और बन्द रहेगी। भूचाल के बाद कौन खेलों का सामान खरीदेगा?

‘आशा है, कल तुम बिस्तर से उठ जाओगे,’

डॉ. वर्मा ने कहा और चले गए। घड़ी में तीन बज रहे थे और मैं चार बजे तक लगातार इसको देखता रहा था। ‘क्या मैं अंदर आ सकती हूँ सर!’ विद्या की थोड़ी रूखी सी आवाज आई। उसकी आवाज अपने घर में सुनना इतना अजीब लगा कि मैं उछलकर बैड पर बैठ गया। और ‘सर’ कहने का क्या मतलब?

उसके हाथ में एम.एल. खन्ना की मोटी किताब और नोट-बुक थी।

‘तुम यहां क्या कर रही हो?’ मैंने अपना पायजामा और बनियान छिपाने के लिए रजाई ऊपर खींच ली।

वो अपनी मैरून और आरेंज रंग की सलवार-कमीज और शीशे वाले दुपट्टे के साथ परफैक्ट ड्रेस में थी।

‘मुझे कुछ सवाल समझ में नहीं आ रहे थे। सोचा मैं यहां आ कर समझ लूं क्योंकि आप की तबीयत ठीक नहीं’ उसने कहा और बैड के पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गई। मेरी मां कमरे में आई, दो कप चाय लेकर। मैंने उनसे इशारे में कहना चाहा कि मुझे शर्ट पकड़ा दे।

‘आपको शर्ट चाहिए’ मेरी सारी कोशिशों को नकारते हुए उसने कहा।

‘कौन से सवाल?’ मैंने कहा, मां के जाने के बाद।

‘मैंने मां से कहा है कि मैं मैथ्स पढ़ने जा रही हूँ। असल में मैं आपको यह देना चाहती थी।’

और उसने एम. एल. खन्ना की मोटी किताब मेरी तरफ बढ़ा दी।

यह सब किस लिए था? समस्याओं का समाधान निकालना, जबकि मैं बिस्तर पर पड़ा था?

मेरी मां शर्ट देकर चली गई थी। मैंने एक हाथ में शर्ट और एक हाथ में किताब पकड़ी हुई थी।

शालीनता बनाम जिज्ञासा। मैंने कमीज एक तरफ रख दी और किताब खोली। हाथ से बना गुलाबी रंग का एक ग्रीटिंग कार्ड नीचे गिरा।

कार्ड पर हाथ से एक लड़के का कार्टून बनाया हुआ था जो बिस्तर पर लेटा हुआ था। यह उसने गोविन्द का बनाया हुआ था, बेशक यह साफ पता नहीं चल रहा था। अंदर लिखा था ‘जल्दी ठीक हो जाओ’

बिल्कुल बच्चों जैसी हरकत थी। नीचे एक अंग्रेजी की कविता थी-

‘टू माई मैथ्स ट्यूटर/पैशन गार्ड’ सोट-ऑफ-फ्रैंड,

आई कैननॉट कुल्ली अंडरस्टैंड यूअर लॉस, बट आई कैन ट्राई।

सम टाइम्स लाईफ थ्रो कर्व-बॉलस एंड यू कैन्थ्रन वाए।

देयर मे बी नो आनसर्स, बट आई एशोयर टाइम विल हील द वाउंड।

यूअर इज विशिंग यू एक हार्ट-फैल्ट ‘गैट वैल सून।’

यू आर पुअरैस्ट परफौरमिंग स्टूडेंट विद्या 'यह ज्यादा अच्छी नहीं।' वह बुड़बुड़ाई।

'मुझे अच्छी लगी है। मुझे अफसोस है कि मैंने कहा 'सॉर्ट-ऑफ़क्रेंड। मैं वाकई तुम्हारा....' मैंने कहा, 'ओ.के. मुझे यह फिकरा पसंद आया। यह ठीक है कि पढ़ाई सबसे जरूरी है। ठीक?'

मैंने सिर हिलाया।

'तुम कैसे चल रहे हो!'

मैंने दीवार की तरफ अपना मुंह मोड़ने की इच्छा को रोका, 'जिन्दगी चलती जाती है। इसे चलना ही है। हो सकता है एयर-कंडीशन्ड मॉल मेरे लिए न हो।'

बेशक है, पर इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं। मुझे पूरी उम्मीद है तुम एक दिन जरूर वहां खरीदोगे। यह सोचो कि तुम कितने लकी हो, जब यह सब हुआ तो तुम वहां नहीं थे। कल्पना करो अगर मॉल खुला होता तो जिन्दगियों का क्या होता?'

उसका एक चुकता था। मुझे भी ऐसा सोचना चाहिए था। मुझे बिट्टू मामा के दंभी चेहरे को फिर से स्वीकार करना होगा।

मैंने उसकी किताब वापिस कर दी और कार्ड तकिए के नीचे रख लिया।

'ईश कह रहा था कि तुम दुकान पर नहीं जा रहे।'

'दुकान खुली है?' मैंने पूछा। ओमी और ईश मुझे हर शाम मिलने आते हैं पर उन्होंने इस बात का जिक्र नहीं किया था।

'हां, और देखो भइया एकाउंट्स रखने के लिए कितना काम करते हैं घर आ कर। उसके लिए ट्यूशनस भी ले रहे हैं।' उसने कहा, 'मैं अब जा रही हूँ। मेरी क्लास की फिक्र न करना।'

'अगले बुधवार से।' मैंने कहा।

'अच्छी लड़की है' मेरी मां ने बड़े प्यार से कहा

'तुम्हें पसंद है?'

'नहीं, बड़ी खतरनाक स्टूडेंट है।'

ईश और ओमी शाम को घर आए। मैं अपनी उबली हुई सब्जियों का खाना खत्म कर चुका था।

'दुकान कैसी चले रही है?' मेरी तंदुरुस्त आवाज सुन कर वे हैरान रह गए। 'तुम ठीक लग रहे हो।' ईश ने कहा।

'एकाउंट्स का काम कौन कर रहा है? मैंने उठकर बैठते हुए कहा।

ओमी ने ईश की तरफ इशारा किया।

'और?' यह क्या है? ए टू फॉर वन सेल?'

'हमने पूरा हफ्ता कोई डिसकाउंट नहीं दिया 'मेरे बिस्तर पर मेरे पास बैठते हुए ईश ने कहा। आराम से बैठने के लिए ईश ने मेरा तकिया खिसकाया।' ठहरो,' मैंने कहा, अपनी कोहनी से तकिए को दबाते हुए।

'वो क्या है?' ईश ने कहा और मुस्कुराया। उसने तकिए के नीचे गुलाबी कागज का थोड़ा सा हिस्सा देख लिया था।

'कुछ नहीं, तुम्हारे मतलब की बात नहीं।' मैंने कहा। बेशक यह उसके मतलब की बात थी, क्योंकि वह उसकी बहन से सम्बन्ध रखती थी।

'कार्ड?' ओमी ने कहा

'हां, मेरी कजिन ने दिया है।' मैंने कहा

'तुम ठीक कह रहे हो,' ईश ने मुझे गुदगुदाया ताकि तकिए से मैं अपनी कोहनी हटा लूं।

‘छोड़ दो’ मैंने थोड़ा मुस्कराते हुए कहा। मेरा दिल जोर से धड़क रहा था जैसे ही मैंने तक्रिए को दबाया हुआ था।

‘पंडित की लड़की, है न?’ ओमी दबी हंसी हंसा।

‘जो भी हो।’ मैंने कहा, तक्रिए पर मैं निराश सा बैठा था। ‘बिजनैस को मनोरंजन में मिक्स कर रहे हो?’

ईश ने हंसते हुए कहा।

उनको धोखे में रखने के लिए मैं भी हंसा।

‘वापिस आ जाओ।’ ईश ने कहा।

‘कर्म... यह मेरी गलती है,’ मैंने दीवार की तरफ मुंह करते हुए कहा।

‘मामा ने कहा है कि हम दुकान अभी रख सकते हैं।’ ओमी ने कहा।

‘बिना किसी शर्त के?’ हैरानी से मैंने कहा।

‘नहीं ऐसा नहीं।’ ओमी ने कहा।

‘क्या मतलब?’

‘इसके बदले में हमें उनके अभियानों में सहयोग देना होगा।’ ईश ने कहा, ‘फिर न करो, तुम्हें कुछ नहीं करना होगा। ओमी और मैं मदद कर देंगे।’

‘हमें उनका कर्म जल्दी चुकाना होगा, हमें ऐसा करना ही होगा।’ मैंने कहा। ‘हम इससे बाहर निकल आएंगे।’ ईश ने मेरी आंखों में देखा। विश्वसनीय शब्द, पर जीवन में पहली बार।

‘मुझे अफसोस है कि मैंने इतना इन्वैस्ट कर दिया!’ मुझे लगा कि मुझे खेद व्यक्त करना चाहिए, पर ओमी बीच में ही बोल पड़ा।

‘हमने बिजनैस की भागीदारी में ऐसा किया। और तुम हम सबसे स्मार्ट हो।’ मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि उसकी अंतिम लाइन ठीक थी। मैं बिजनैसमैन के रूप में फेल हो गया था।

‘ठीक है, कल मिलते हैं,’ मैंने कहा। इसके बाद वो चले गए। मैंने कार्ड बाहर निकाला और सलवटें ठीक कीं। सोने से पहले मैंने आठ बार कार्ड पढ़ा।

दुकान पर कुछ दिन न जाने से मेरे दोस्तों में छिपे गुण बाहर आए। एकाउंट्स कुछ छोटी-मोटी गलतियों को छोड़कर सब ठीक था। सेल का रजिस्टर भी मुकम्मल था, कोई डिस्काउंट नहीं दिया गया था। दुकान साफ थी और प्रत्येक वस्तु सुविधाजनक स्थानों पर प्राप्य थी। शायद मैं एक दिन अच्छा व्यापार चलाऊं या इससे दूर रहूं। मैं फिर सपने लेने लगा था, मैं चौकन्ना हो गया। भारत सपनों का देश नहीं है। विशेषतया जब तुम एक बार असफल हो चुके हो। अंत में मैंने हिन्दु-दर्शन के विषय में सोचा संतुष्ट रहो जो तुम्हारे पास है उससे, बजाय और के लिए ललचाओ। यह कोई रुचिकर दर्शन नहीं जो प्राचीन संतों-ऋषियों ने बनाया है-परन्तु यह अस्तित्व बनाए रखने का मंत्र है, इस देश में जहां इच्छाएं प्रायः कुचली जाती हैं।

मंदिर की यह दुकान मेरी है नियति है, इसकी थोड़ी सी आय ही मेरे कर्म हैं।

अधिक मेरे लिए नहीं था। मैंने गहरी सांस ली, कुछ बेहतर महसूस किया और तब मैंने कैश-ड्रॉयर खोला।

‘दो हफ्तों के हिसाब से कम ही है। पर पहले भूचाल, और फिर अब आस्ट्रेलिया- भारत सीरीज ‘ईश ने दूसरे कोने से कहा।

‘लोगों के पास, वास्तव में ही और खेलने का कोई कारण नहीं है।’ ओमी ने कहा। ‘नहीं, नहीं। सब ठीक है। सीरीज में क्या चल रहा है?’ मैंने कहा। मैं क्रिकेट शिड्यूल से बेखबर था।

‘इंडिया पहला टेस्ट हार गया है। दो और हैं। अगला कलकत्ता में हो रहा है।’ ईश ने कहा।

‘बेकार, एक-दिवसीय?’

‘उनमें से पांच, अभी शुरू होने हैं।’ ओमी ने कहा। ‘मुझे ज्यादा अशायें नहीं हैं।’

ये ऑस्ट्रेलियाई कुछ और ही मिट्टी के बने हुए हैं।

‘मैं देखना चाहूँगा कि ऑस्ट्रेलियनस कैसे खेलते हैं।’ ईश ने कहा।

...मामा के आने से हमारी बातचीत रुक गई। ‘गर्म-गर्म समोसे, ध्यान से’ उसने कहा, एक ब्राउन लिफाफा काउंटर पर रखते हुए। पहले वाला गोविन्द होता तो इस बात पर त्यौरियां चढ़ा लेता, काउंटर तेल से गंदा हो रहा था। इस बात पर बोलता। पर भूचाल के बाद वाले गोविन्द ने मामा को कभी इतना अतिथ्य-पूर्ण नहीं देखा। हम बाहर धूप में चाय और समोसों का आनन्द लेने लगे। समोसे बड़े स्वाद थे, मेरे ख्याल में समोसे सबसे अच्छे सैंक्स थे जितने मनुष्य जानता है। ‘जो गया उसे भूल जाओ,’ ‘मामा ने गहरी सांस लेते हुआ कहा।’ मैंने ऐसी तबाही अपनी जिन्दगी में पहले कभी नहीं देखी।

‘आपका ट्रिप कैसा रहा?’ ओमी ने पूछा। मामा अभी अभी भुज से लौटे थे। ‘सब तरफ दुःख ही दुःख, तबाही ही तबाही, गुजरात में हमें सब तरफ कैपों की आवश्यकता है। पर पारेख जी कितना और कहां तक कर सकते हैं?’

मामा ने बेलरामपुर स्कूल को रीलीफ कैम्प बनाने में कई रातें लगा दी, लोगों को वहां शिफ्ट किया। पारेख जी ने टूक भर- भर कर अनाज, दालें तथा और खाने-पीने का, जरूरत का सामान भेजा। फिर धीरे-धीरे लोग बाहर आने लगे और जिन्दगी को नए सिरे से जीने के लिए जुट गए।

‘हम तीन हफ्तों में कैम्प बन्द कर देंगे।’ मामा ने ओमी से कहा। ‘और मैं अपने मुख्य उद्देश्य- अयोध्या के लिए वापिस चला जाऊँगा।’

कैम्प के कारण पड़ोस में मामा के काफी प्रशंसक बन गए। व्यवस्था के अनुसार हर कोई कैम्प में शरण ले सकता है। फिर भी मुसलमान-परिवार कम ही वहां मदद के लिए जाते थे। अगर वो ऐसा कर भी लेते, तो कैम्प मैनेजर बाहर से ही उन्हें राशन दे देते और इस बात पर जोर देते कि कैम्प में सारे हिन्दु हैं। इस थोड़े-बहुत पक्षपात के होते हुए भी मैं सोच रहा था कि यह व्यवस्था नेक काम के लिए है।

‘मामा आप का लोन,’ मैं उनकी तरफ मुड़ा। पर उन्होंने मेरी बात की तरफ ध्यान नहीं दिया।

‘मेरा लड़का मेरे साथ अयोध्या चल रहा है। तुम लोग भी चलो हमारे साथ।’ उन्होंने कहा। हमारे अनिच्छुक चेहरे देखे और फिर बोले; मेरा मतलब है अपना बिजनैस फिर खड़ा करने के बाद।’

‘हम यहीं मदद कर सकते हैं,’ ओमी ने कहा, ‘क्या कैम्प के बाद और कोई योजना भी है?’

‘हाँ चम्मचपर कीचड़-अभियान?’ मामा ने कहा।

हम हक्के-बक्के नजर आ रहे थे।

‘हम अयोध्या में किसी कारण से जा रहे हैं।’

हम वहां से बोरों में गीली मिट्टी भर कर लाएंगे। बेलरामपुर के हर हिन्दू घर में हम जाएंगे और उनसे पूछेंगे कि क्या वे रामचन्द्र जी की जन्म-स्थली की चम्मच- भर गीली मिट्टी लेनी पसंद करेंगे और अपने घर में रखेंगे। वो इस मिट्टी को अपने पिछले आंगन में रख सकते हैं इसे अपने पौधों की मिट्टी में मिला सकते हैं या कुछ भी। पारेख जी का महत्वपूर्ण विचार। मैंने देखा पारेख जी का बदलाव पर उनका तथ्य त्रुटिहीन है। कोई भी अयोध्या से आई एक चम्मच मिट्टी लेने को इनकार नहीं करेगा। इस ढंग से वो अनजाने में लोगों को अपने मकसद के लिए खरीद रहे हैं। अयोध्या के लिए लड़ रहे लोगों के लिए उनके दिलों में हमदर्दी पैदा होना स्वाभाविक है। और हमदर्दी अपने आप वोटों में बदल जाएगी। मामा ने स्पष्ट देखा कि मुझे उनकी बातों से स्वार्थ की बू आ रही है। यह छोटा सा अभियान उनकी रणनीति का विज्ञापन था। दूसरी पार्टी ने इसे और भी व्यापक ढंग से किया था।

मैंने दूसरा समोसा उठाया।

‘यह ठीक है मामा, पर राजनीति मुझे दुविधा में डाल देती है।’ मैंने कहा। मैं कोई टिप्पणी नहीं दे सकता। हम आप की मदद करेंगे। आपने हमारी रोजी-रोटी बचा दी। हम आपके सदा ऋणी रहेंगे।’

‘तुम मेरे बच्चे हो। बच्चे पिता के ऋणी कैसे हो सकते हैं?’

‘बिजनैस घाटे में चला गया है, पर हम आपके लोन की किश्त...। पर मामा ने बीच में ही टोक दिया।  
‘बच्चो भूल जाओ। तुमने एक आपदा को झेला है। जब हो सकेगी दे देना। और अब तुम हमारी पार्टी के सदस्य हो’  
‘ठीक?’

मामा हमें गले लगाने के लिए उठे। मैं भी बे-मन से मिला। लोगों के पास इतना पैसा होता है यह बात मुझे दुःखदायी लगती थी। ‘मामा, सॉरी, मैं उस दिन आपसे बुरी तरह बोला, आपको अपमानजनक शब्द कहे। मैं जान गया हूं कि मेरी नियति यही दुकान है। शायद भगवान मुझे इस ढंग से समझाना चाहता था और मैंने यह बात स्वीकार कर ली है।’ मैंने कहा।

‘जब हम जवान होते हैं तो ऐसे ही होते हैं। पर तुमने भगवान में विश्वास करना शुरू कर दिया है।’ मामा ने कहा और मेरी तरफ देखा।

‘मैं अब कम नास्तिक हूं।’

‘बेटे, यह सबसे अच्छी खबर है जो आज मैंने सुनी है!’ मामा ने कहा ‘इस सारे नुकसान में से कुछ अच्छा ही निकला है।’

एक व्यक्ति ने एक भारी भरकम संदूक हमारी दुकान के अंदर रखा! ‘कौन है, ओह पंडित जी?’ मैंने कहा।

पंडित जी हांफ रहे थे, उनका चेहरा लाल हो गया था। उन्होंने संदूक फर्श पर रख दिया। ‘खेलों की एक दुकान बंद हो गई है, वो मुझे कीमत नहीं दे पाया। उसने सामान से भरा यह संदूक मुझे दे दिया है। मुझे कैश चाहिए इसलिए मैं यह सारा सामान यहां ले आया हूं।’

‘मेरे पास भी कैश नहीं है।’ मैंने कहा, समोसा उसे पकड़ाते हुए। पंडित जी बिजनैस अब काफी मुश्किल हो गया है।

‘तुमसे पैसे कौन मांग रहा है? इसे अपनी दुकान पर रखो। मैं एक संदूक और भेजूंगा। जो भी बिकेगा आधा तुम रख लेना, आधा मुझे दे देना। इस एक संदूक में कम से कम दस हजार का सामान है।’

‘मेरे पास छः और पड़े हैं घर पर। क्या कहते हो?’

मैंने संदूक अंदर रखवा लिया, इसमें कोई दिक्कत नहीं थी। हमें किसी करिश्मे की ही जरूरत थी इतने सामान के लिए। बेशक, मुझे नहीं पता था कि आस्ट्रेलिया-इंडिया सीरीज का दूसरा टेस्ट मैच, एक ही होगा।

मामा ने अपना परिचय पंडित जी से करवाया। वो बड़ों जैसी बातें करने लगे, जैसे अपने पैतृक शहर, जाति, उप-जाति, घर परिवार के बारे में।

‘हम लेट हो रहे हैं।’ ईश फुसफुसाया कुछ इस तरह कि मामा और पंडित जी सुन लें।

‘तुमने ही जाना है?’ मामा ने कहा।

‘हां, क्रिकेट मैच में। हमारा एक स्टूडेंट जिसे हम कोचिंग देते हैं, इसमें खेल रहा है।’ ईश ने कहा। अली का नाम उसने जान-बूझ कर नहीं लिया।

ओमी ने दुकान के शटर बंद कर दिए। ओमी ने इशारा किया और हम सब ने मामा के पैरों को हाथ लगाया।

‘खुश रहो मेरे बच्चो मामा ने कहा और हमारे सिर पर हाथ रखा और आशीर्वाद दिया।

‘तुम उस बेवकूफ टीम के उस मूर्ख की चिन्ता न करो। तुम ने उनको क्रीम कर दिया है।’ ईश ने अली से कहा।

हम पड़ोस के मैच से वापिस आ गए। अली वाली टीम जीत गई थी और अली ने सबसे अधिक स्कोर बनाए थे। अली ने आठ ओवर खेले। ईश खुश था कि उसकी ट्रेनिंग ने अच्छे नतीजे दिए हैं। बेशक, हमारा खुश मूड कुछ इसलिए खराब था कि दूसरी टीम के कप्तान ने अली के घुटने पर मारा था जब वो भागने लगा था।

‘क्या वो मुझे फिर चोट पहुंचाएगा?’ अली ने कहा।

‘नहीं, मैं उससे पहले उन्हें चोट पहुंचाऊंगा अगर उन्होंने तुम्हें छूने की भी कोशिश की।’ ईश ने कहा, अली का माथा चूमते हुए। ईश एक अच्छा पिता बनेगा। उसके पिता की तरह नहीं जो कभी भी थोड़े से खुशनुमा शब्द नहीं बोलते। ओमी ने लंगड़ाते अली को उठाया। ‘मैं उसे दुकान पर ले जाता हूं। मां से कहना उसे हल्दी वाला दूध ला दे। तुम लोग कुछ खाना ले आओ, जो उसे पसंद है।’

‘मुझे कबाब चाहिए।’ अली ने एकदम कहा।

‘कबाब? दुकान पर?’ मैंने थोड़ा झिझकते हुए कहा।

‘ठीक हैं, पर किसी को बताना मत।’ ओमी ने कहा।

‘वह तैयार है।’ ईश ने कहा काजी ढाबे पर कबाब भूने से उठे धुएं के पीछे उसका चमकता चेहरा दिखाई दे रहा था।

‘तुमने उसे खेलते देखा है? वह इंतजार कर सकता है, भाग सकता है और दूसरों को स्पोर्ट कर सकता है, वह तब तक खेलता रहता है जब तक बड़ा हिट मारने का समय नहीं आ जाता। फील्डिंग को छोड़ कर बाकी सब में वह परफैक्ट हो गया है। वो अब पूरी तरह से तैयार है।’ चिकन टीक्का की खुशबू मेरे नथुनों में घुस रही थी। ओमी वाकई जिन्दगी की एक अच्छी चीज मिस कर रहा है। ‘किस लिए?’ मैंने कहा।

‘आस्ट्रेलिया भारत का दूर कर रहा है, इस वक्त, ठीक?’

ईश ने कहा। तब तक वेटर ने हमारा खाना-रूमाली रोटी, मीट और चिकन टिक्का-पैक कर दिया था, साथ में प्याज और पुदीने की चटनी भी।

‘तो’ मैंने कहा। ‘वह आस्ट्रेलियाई टीम से मिलने को तैयार है।’

दस

भारत बनाम ऑस्ट्रेलिया टेस्ट मैच

कोलकाता, 11-15 मार्च 2001

पहला दिन

जिन्दगी में बहुत बार हादसे होते हैं। और कई बार करिश्मे भी होते हैं। भारत-ऑस्ट्रेलिया सीरीज का दूसरा टेस्ट मैच हमारे लिए भूचाल के बाद जादुई-उपचार प्रमाणित हुआ। मुझे उस मैच का हर दिन याद है। ईश अपने विचित्र और असंभावित विचारों में निरन्तर डूबा रहा कि कैसे अली को ऑस्ट्रेलियन टीम से मिलाया जाए। 'ऑस्ट्रेलियन से मिलना है?' 'ओमी ने पूछा है?' ओमी ने पूछा काउंटर की झाड़ू पौछ करते हुए। ईश और मैं नीचे फर्श पर टी.वी. के सामने बैठे थे।

'वो भारत में हैं।' ईश ने कहा, 'उसने टी.वी. स्क्रीन पर ऑस्ट्रेलियन टीम, जो बैटिंग कर रही थी, की तरफ इशारा किया। 'हमें ऐसा मौका कब मिलेगा?'

'क्या वो पागल है?' ओमी ने मुझसे पूछा,

'बेशक, वो है। तुम उनसे मिलकर क्या करोगे?

ठीक ठीक बता दें?' मैं भी उसके साथ मिल गया था।

'मैं उनसे अली के बारे में उनकी राय जानना चाहता हूं।'

'कैसे?' ओमी ने कहा और हमारे साथ आकर बैठ गया।

'हम एक मैच देखने जाएंगे। हो सकता है एक-दिवसीय।'

'ट्रिपस के लिए हमारे पास पैसे नहीं हैं।' मैंने कहा

'एक-दिवसीय मैच अगले दो महीने तक चलेंगे। अगर हमारा काम ठीक रहा तो हम चलेंगे' ईश ने कहा।

'वो हमें बेकार, में कह रहे हैं। बिजनैस कभी ठीक नहीं होगा।' मैंने कहा स्कोर देखते हुए। पहले दिन चाय के समय ऑस्ट्रेलिया का स्कोर 193/1 था।

'अगर ये होगा' मैंने कहा 'अगर' ईश मेरे से भी ज्यादा अप-सैट था स्कोर देखने के बाद।

'तो हम चलते हैं एक मैच देखने। फिर क्या हुआ? हम हिडन का दरवाजा खटखटाएंगे और उसे कहेंगे, हेय इस लड़के को चैक करो 'तुम क्या सोच रहे हो उन्हें कैसे मिला जाए?' मैंने मजाक किया।

'मैं नहीं जानता' ईश ने टी. वी. की, तरफ मुंह करते हुए कहा, 'अच्छी बालिंग चल रही है।'

'एक्सक्यूज मी, क्या आप इंडिया- ऑस्ट्रेलिया मैच देख रहे हैं?' एक महिला की आवाज आई। एक बुजुर्ग महिला हाथ में पूजा की थाली लिए काउंटर के पास खड़ी थी। 'जी?'

'क्या मेरा पोता आप के साथ थोड़ी देर मैच देख सकता है?' उसने कहा।

मैं ज़मीन पर से उठ खड़ा हुआ। एक छोटा लड़का महिला के साथ था। मैं ऐसे बेढंगे लोगों को ज्यादा पसंद नहीं करता

जो दुकान पर समय बिताने के लिए आते हैं। उसने मेरी झिझक को समझ लिया था। 'हमने कुछ खरीदना भी है। मैं मंदिर में भजन सुनना चाहती हूं और बबलू, मैच देखना चाहता है।'

'हां, हां, वो अंदर आ सकता है' ईश ने दरवाजा ज्यादा खोल दिया। लड़का भीतर आ गया और टी.वी. के सामने बैठ गया। ईश और मैंने परस्पर नजरें मिलाई।

‘बबलू इतनी नजदीक से न देखो। हैलो, मैं मिसिज गांगुली हूं। मैं अपने स्कूल के लिए क्रिकेट का सामान खरीदना चाहती हूं। उसके लिए मैं आपकी राय लेना चाहती हूं। क्या आप कभी समय निकालकर मुझसे मिल सकते हैं?’

‘स्कूल?’ मैंने कहा।

‘हां, मैं एलिसाब्रिज में केन्द्रीय विद्यालय की प्रिंसिपल हूं। हमें स्पोर्ट्स के लिए कभी अच्छे सप्लायर नहीं मिले। सभी सोचते हैं कि सरकारी स्कूल है इसलिए वो हमें अच्छा सामान नहीं देते। क्या आप स्कूल में सामान सप्लाय कर सकते हैं?’

जवाब था नहीं। हम स्कूलों में माल सप्लाय नहीं करते। ‘जी’ मैंने कहा, ‘असल में हमारा अपना एडवाईजर है मि. ईशान। वो जिला-स्तर का खिलाड़ी रह चुका है।’

‘ग्रेट, मैं फिर आप से मिलूंगी।’ श्रीमती गांगुली ने कहा और हमें छोड़ गई उसके सुझाव पर विचार करने के लिए।

‘तुम्हें कैडी चाहिए बबलू’ ओमी ने कहा। हम सब पूरी कोशिश कर रहे थे उस व्यक्ति को खुश करने के लिए जो श्रीमती गांगुली से सम्बन्धित हो।

‘पर हम सप्लायरस नहीं हैं’ ईश ने बाद में कहा। ‘तो क्या हुआ? तुम्हें मेरे लिए यह करना होगा ईश। यह रेगुलर इनकम का साधन है।’

‘अगर मैं तुम्हें ऐसा करने दूं तो क्या तुम मेरे साथ गोवा चलोगे?’

‘गोवा!’ मैंने अपनी भों ऊपर चढ़ाई।

‘यह अंतिम एक-दिवसीय है। मैं इसे जहां तक हो सके फैलाना चाहता हूं। अगर हमने काफी बचत कर ली तो हम अली को लेकर चलेगे।’

‘मगर’

‘बस, हां कह दो।’

‘हां’, मैंने कहा। मॉल की विफलता के पश्चात मैं ईश को खुश रखना चाहता था। मैं दिन का हिसाब चैक करने के लिए उठा।

‘चिन्ता न करो, आ कर मैच देखो।’ ईश ने कहा, ‘पासा पलट गया है।’

मैंने टी.वी. की ओर देखा। शायद ईश्वर ने अंदर ही अंदर श्रीमती गांगुली की प्रार्थना स्वीकार कर ली थी। एक छोटा सा सरदार लड़का, हरभजन सिंह, चाय के बाद उसने बाउलिंग की। विकेट गिरे और मैच खत्म होने तक ऑस्ट्रेलिया का स्कोर 193/1 से 291/8 हो गया था।

‘भाजी, आप ग्रेट हो’ ईश आगे झुका टी.वी. को चूमने के लिए।

‘टी.वी. इतनी नजदीक से न देखो।’ बबलू बोला।

‘हर टाइम बड़ों की न सुनो। इतनी नजदीक से टी.वी. देखने पर कोई अन्धा नहीं हो जाता। क्या लोग कम्प्यूटर्स पर काम नहीं करते?’ ईश खुशी के मारे छलांगें मार रहा था।

श्रीमती गांगुली दो घंटे के बाद आई बबलू को लेने के लिए। उसने उसके लिए दो टेनिस-बॉलस लीं। मुझे लगा कि मैं दोनों बॉलें उसे फ्री में दे दूं। पर पता नहीं वे क्या सोचें।

‘यह मेरा कार्ड है’ उसने कहा, कार्ड पकड़ाते हुए, ‘हर सोमवार को हमारे स्कूल की बोर्ड-मीटिंग होती है। आप मीटिंग में आ जाओ और हमें बताएं कि आप हमारी कैसे मदद कर सकते हैं।’

हमारे पास अभी चार दिन हैं तैयारी के लिए। और अगर भारत जीत गया तो बोर्ड और भी अच्छे मूड में होगा।

‘ठीक है, हम आप से तभी मिलेंगे।’ मैंने कहा और एक कैडी बबलू को दे दी।

दूसरा दिन



मैच के दूसरे दिन के लिए इतना ही कहना है कि डिपरसिंग था, निराशा भरा।

291/8 से ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 445, ऑल आउट, पर मैच खत्म किया। अब बैटिंग की बारी भारत की थी। खेल का शुरूआती खिलाड़ी रमेश बिना कोई रन बनाए आउट हो गया।

‘यह कमबख्त रमेश कौन है? ब्रेकशन कोटा : ‘ईश ने कहा।

पर रमेश ही नहीं, तेंदुलकर ने भी केवल दस रन बनाए, औरों ने इससे भी कम। द्रविड ने सबसे ज्यादा पच्चीस रन बनाए। दूसरे दिन भारत ने 128/8 पर समाप्त किया। रात के खाने पर ईश ने गुस्से से चपाती को तोड़ा। ‘ये ऑस्ट्रेलियाई जरूर सोच रहे होंगे कि भारत में आकर खेलने की परेशानी क्यों उठाएं।’

‘ड्रा के लिए प्रार्थना करो। ड्रा होने से सेल की आशा बढ़ती है। या फिर हम अपना बिजनैस बदल लें। हमारे देश में स्पोर्ट्स की काम गलत चुनाव है।’

मैंने ओमी को दाल पकड़ाते हुए कहा। उनके यहां बीस अरब लोग हैं। हमारे यहां एक खरब, जो दो प्रतिशत प्रति वर्ष के हिसाब से बढ़ रहे हैं। मतलब हम एक ऑस्ट्रेलिया हर साल बना रहे हैं। फिर भी वे हमें हरा रहे हैं। जरूर कोई गड़बड़ है।’

‘क्या हम एक और फूलों की दुकान खोल लें? मंदिर में इसकी हमेशा मांग रहेगी’ मैंने कहा।

ईश ने मुझे अनसुना कर दिया। वो आने वाले हालात को बदलना, चाहता था, जो काफी मुश्किल था।

तीसरा दिन

अगले दिन पता नहीं क्यों हमने टी.वी. चला लिया। भारत संघर्ष कर रहा था अपनी पहली पारी खींचने के लिए, पर

दोपहर के खाने से पहले ही 171, ऑल आउट पर मैच खत्म हो गया। और ऑस्ट्रेलिया वालों ने भारत को फॉलोऑन करने के लिए कहा ‘कॉमैन्टेटर बता रहा था और मैंने अपने माथे पर हाथ मारा। एक टेस्ट मैच में हार एक बात थी पर पारी में हार का मतलब था हफ्तों तक पार्कों का खाली रहना। बच्चे क्रिकेट खेलने की बजाय पढ़ना पसंद करेंगे और वो भारत के इस अपमान को बार-बार याद करेंगे। मैंने क्यों यह बिजनैस शुरू किया? मैं कितना मूर्ख हूँ? इसके स्थान पर मैंने मिठाई की दुकान क्यों न खोल ली? भारतीय हमेशा मिठाई खाते रहेंगे। स्पोर्ट्स ही क्यों? क्रिकेट ही क्यों?’

‘ये कमबख्त फॉलोऑन, क्या बात है?’ ईश बुड़बुड़ाता रहा, अपने ही मुहावरे बना बना कर उस वक्त के। उसने अपनी मुट्ठियां भींच लीं और नई, खतरनाक ढंग से टी.वी. के बिकुल पास आया। ‘हमने उनके बलों पर 291/8 किए, और अब वे

हमें फॉलो-ऑन के लिए कह रहे हैं।’

‘क्या हम टीवी. बन्द कर दें।’ मैंने कहा। क्या हम हमेशा के लिए दुकान बंद कर दें? मैंने सोचा।

‘ठहरो, मैं इसे देखना चाहता हूँ। मैं देखना चाहता हूँ कि ‘हमारी टीम इतनी बुरी हार के बाद कैसे आख मिलाती है।’ ईश ने कहा।

‘वो आख नहीं मिला रही। तुम उन्हें केवल टी.वी. पर देख रहे हो।’ ओमी ने कहा। ‘अगर यह मैच ड्रा रहा तो मैं तुम सब को डिनर दूंगा। ओके. दो डिनर।’ ईश ने कहा।

दूसरी पारी में भारत ने एक परिवर्तन किया। उन्होंने शुरूआती बल्लेबाज रमेश की जगह एक नए लड़के लक्ष्मण को भेजा।

टीम के सभी लोग परस्पर कॉन्टैक्ट में थे। आज हर कोई अपनी बारी से खेल रहा है। ‘ईश ने कहा, जैसे ही भारतीय- खिलाड़ियों ने दूसरी फॉलोऑन की पारी के लिए क्रीज संभाली।

पर लक्ष्मण ने बैट और बॉल का अच्छा सामंजस्य स्थापित किया और चौके पर चौके लगाए। तीसरे दिन के अन्त तक, भारत एक सम्मानजनक स्थिति पर पहुंच चुका था, 254/4 पर। इससे भी बढ़ कर यह कि पहली पारी के

171 रन में भारत को केवल बीस रन और चाहिए थे आस्ट्रेलिया की 445 वाली हार वाली बात खत्म हो चुकी थी। अब मैच ड्रा हो सकता है।

‘देखो इंडियन टीम क्या करती है। जब तुम सारी उम्मीदें छोड़ चुके थे, उन्होंने फिर उम्मीद जगा दी है।’ ईश ने डिनर पर कहा।

‘तुमने किसी भी तरह हर दिन मैच देखना था। प्लीज अब सोमवार की मीटिंग के बारे में भी कुछ सोचो। मैंने कहा।’ लक्ष्मण का काम अभी खत्म नहीं हुआ। अगर हम ड्रा चाहते हैं तो उसे खेलना होगा।

मैंने विश्वास लिया। मुझे खुद को तैयार करना होगा, स्कूल-मीटिंग के लिए।

चौथा दिन

अगर भारत को वर्ल्ड क्रिकेट पर अपना दायित्व रखना था, तो वह था मैच का चौथा दिन। हां, भारत ने 25 जून 1983 को वर्ल्ड कप जीत लिया था, वह भी काउंट करता है। पर मैं जिस दिन की बात कर रहा हूं, उस दिन दो भारतीय बल्लेबाजों ने ग्यारह आस्ट्रेलियन क्रिकेट खिलाड़ियों को नचा दिया था अपने हिसाब से। यह सब उन्होंने जनता के सामने किया और पूरा दिन लगा दिया। यह ठीक है। टैस्ट के चौथे दिन, ईश टी.वी. के सामने से बिल्कुल नहीं हटा। जो हुआ वो ऐसे था। लक्ष्मण और द्रविड़ लगातार खेलते रहे और उन्होंने पांचवीं विकेट पर 357 रन और अपने खाते में जोड़ दिए। चौथा दिन 274/4 से शुरू हुआ था और 589/4 पर खत्म हुआ।

आस्ट्रेलियन टीम के ग्यारह में से नौ खिलाड़ी बारी-बारी से बाउलिंग करते रहे पर कोई भी विकेट लेने में कामयाब नहीं हुआ। इडन गार्डन में भीड़ प्रभावित थी, इस मैच से। वो लक्ष्मण का नाम बार-बार ले कर स्टीव वेग को दरअसल बद-मिजाज बना रही थी। टीम, जिसने हमें फॉलो-ऑन के लिए कहा था, एक भी बल्लेबाज को आउट नहीं कर पाई थी।

लक्ष्मण ने 275 रन बनाए बिना आउट हुए सारी टीम ने पहली पारी में जितने रन बनाए थे, उससे कहीं ज्यादा अकेले लक्ष्मण ने बनाए। द्रविड़ ने बिना आउट हुए 155 रन बनाए। हमारे पास काफी विकेट बाकी थे, आस्ट्रेलिया से 337 रन ज्यादा चाहिए थे और हमारे पास मैच का केवल एक दिन बचा था।

‘मैं अब शांति से सो सकता हूं। मैंने डिनर भी खरीद कर लाना है।’ ईश ने कहा जैसे ही हमने दुकान का शटर बन्द किया।

‘शायद कुछ बच्चे पार्क में फिर आ गए हों’, मैंने कहा।

पांचवा दिन

मानव की आशाओं की कोई सीमा नहीं। मैच के चौथे दिन जबकि हम मैच ड्रा होने की प्रार्थनाएं कर रहे थे। दो दिन पहले, पांचवें दिन ने हमें और आशाएं दीं। लक्ष्मण ने 281 रन बना कर छोड़ दिया। स्टेडियम में हर किसी ने लक्ष्मण की ग्यारह घंटे की पारी से खुशी में तालियां बजाई और उसका अनुमोदन किया।

भारतीय कप्तान गांगुली ने एक चकित कर देने वाला निर्णय लिया। एक घंटा खेलने के बाद उसने 657/7 पर भारतीय पारी की घोषणा कर दी। इस का मतलब था कि अब आस्ट्रेलिया बल्लेबाजी करेगा। और उन्हें मैच जीतने के लिए समय खत्म होने तक 384 रन बनाने थे।

‘क्या गांगुली पागल है? यह रिस्की है। हमें खेल जारी रखना चाहिए था। ड्रा हो जाना चाहिए था और बात खत्म थी।’ मैंने कहा।

‘शायद उसके मन में कुछ और बात हो।’ ईश ने कहा। ‘क्या?’ ओमी ने अंगड़ाई ली।

मुझे गांगुली के नजरिए पर शक था। ठीक है फिर भी हमारी किस्मत अच्छी है और ड्रा तक गेम को ले जाएं। पर कप्तान ने पारी खत्म करने की घोषणा क्यों कर दी जबकि वो समय खत्म होने तक खेल सकते थे। शायद वो कोई निर्णय चाहता था। वह एक भारतीय जीत थी।

‘वह गंभीर नहीं हो सकता। हमें फॉलोऑन मिला था। हमें एक पारी की हार मिलती। अब, गांगुली सच में सोचता है कि उसने ऑस्ट्रेलियन टीम को बाउलिंग करके आउट करने का चांस लिया है।’

मैंने कहा।

ईश ने सिर हिलाया जैसे ही ऑस्ट्रेलियन बल्लेबाज क्रीज पर वापिस आए। गांगुली के पास जीत का स्कोर 384 था, जो ऑस्ट्रेलियनस ने बनाना था-कठिन था पर था संभव। ऑस्ट्रेलियन सेफ खेलते तो वे खेल को ड्रा तक ले जाते। पर ऑस्ट्रेलियन ऐसे नहीं खेलते। 'ए, मिस्टर मैथेमैटिशियन ऐसा कभी हुआ है? क्या कभी ऐसा देखा है कि फॉलो-ऑन करने वाली टीम मैच जीत गई हो?' ईश ने कहा और ओमी से विशेष, जरूरी प्रार्थना करने को कहा।

मैंने ऊपरी खाने से क्रिकेट की डाटा-बुक निकाली। हमने इनमें से शायद ही कोई बेची हो, पर प्रकाशक ने हमें जोर दिया था कि हम इस की कुछ कापियां रख लें। 'ओ.के. ऐसा पहले भी हो चुका है।' मैंने कहा। दस मिनट तक डाटा- बुक में खोजने के बाद।

'कितनी बार?' ईश ने कहा, आंखे स्कीन पर गड़ाए हुए।

'दो बार' मैंने कहा, 'और मैंने देखा कि ओमी की आंखे बन्द हैं और वो प्रार्थना कर रहा है।

'देखो, जो यह हुआ, दो बार कितनी अवधि में?' ईश ने कहा।' पिछले एक सौ दस वर्ष में दो बार।'

ईश मेरी तरफ आ। 'केवल दो बार?'

'एक बार 1894 में और दोबारा 1981 में,' मैंने जोर से पढ़ कर सुनाया। दोनों बार इंग्लैंड जीता अंदाजा लगाओ किससे, आस्ट्रेलिया से। सॉरी दोस्त, पर गणना के हिसाब से कहूं तो, यह मैच ओवर है।'

ईश ने सिर हिलाया।

'बेशक संभावना बहुत कम है, फिर भी मैं कहता हूं कि अगर इंडिया जीत गया तो गोवा के ट्रिप का खर्चा मैं करूंगा।' मैंने मजाक किया।

'या अगर इंडिया जीत गया तो मैं भगवान में विश्वास करना शुरू कर दूंगा?' ओमी ने अपना खेल खेला।

'हां', मैंने कहा।

'मैंने ओमी से कहा अधिक प्रार्थना न करो। ड्रा से भी काम चल जाएगा। गांगुली शायद विषमताओं को नहीं जानता था। सबसे बुरा होगा यदि ऑस्ट्रेलिया स्कोर बना गया।

161/3 ओमी ने ऑस्ट्रेलिया का स्कोर देखा। चाय के समय संयोग से हमारा भी ब्रेक का समय हो गया था।

'चलो भई दुकान साफ कर लें। मैच कुछ घंटों में खत्म हो जाएगा। हमारे पास शायद कुछ ग्राहक आ जाएं इसी बीच,' मैंने कहा।

'ड्रा ही ठीक रहेगा। हम ऑस्ट्रेलियनस को फिर कभी हरा देंगे।' ईश ने कहा और अनिच्छा से पोंछा लगाने वाला डंडा उठा लिया।

पांचवां दिन-चाय के बाद

भारतीय टीम ने अवश्य ही अपनी चाय में कुछ विशेष मिला लिया होगा। ऑस्ट्रेलिया वापिस आ गया और 166/3 पर ही टिका रहा। फिर पांच जबरदस्त ओवर हुए जिनमें हरभजन सिंह अकेला ही था। अगला ठहराव ऑस्ट्रेलिया का 174/8 पर आया। 8 रनों में लगभग आधी ऑस्ट्रेलियन टीम आउट हो चुकी थी।

'ईश टी.वी. के सामने न खड़े होओ।' मैंने कहा पर ईश खड़ा कहां था, वह तो छलांग मार रहा था।

'बेकार है तुम्हारे आंकड़े और संभावनाएं।' ईश हर्षातिरेक से चिल्लाया। मैं पसंद नहीं करता कि कोई मैथ्स का अपमान करे, पर मैंने ईश को कुछ नहीं कहा। इतिहास गवाह है कुछ खुशियों के आगे कुछ बुराइयों को भूलना पड़ता है।

जल्दी ही अंतिम दो बल्लेबाज भी आउट हो गए। ईश ने स्कीन पर भजन सिंह को चूमा। (उसका थूक टी.वी. स्कीन पर लग गया) छ : विकेट लिए और भारत मैच जीत गया शानदार ढंग से।

इडन गार्डन में हर सार्वजनिक स्थान पर लगे सूचना-पत्र, इतिहास और जो कुछ भी ज्वलनशील था, सबको आग

लगा दी, लोगों को छोड़ कर।

कामैन्ट्री सुनना मुश्किल हो गया था क्योंकि जब भी किसी भारतीय खिलाड़ी का नाम लिया जाता जनता शोर मचा देती थी।

ईश खड़ा हो गया, उसके हाथ जांघों पर थे और वह टी.वी. देख रहा था। उसकी आंखों में मैं संतुष्टि भरा प्यार देख रहा था। मैं देख रहा था कि वो खुशी से पागल हुए जा रहे लोगों को कैसे देख रहा था-काश वो भी उनमें से एक होता। पर आज उसे अपने प्रति कोई गिला-शिकवा या अफसोस नहीं था। वह चाहता था कि वो जीत जाएं। उसने देखा भजन छलांगों पर छलांगे लगाए जा रहा है। उसने तालियां बजाई जब गांगुली ट्रॉफी लेने आगे आया।

‘दो बॉलें जल्दी से, हमारा मैच है। एक लड़के ने पचास का नोट काउंटर पर रखते हुए कहा। ग्रेट इंडियन क्रिकेट सीजन का पहला ग्राहक।

मैंने अपने हाथ जोड़े और ऊपर आकाश की ओर देखा। भगवान का धन्यवाद है, उसने ऐसे करिश्मे हमारे ऊपर किए।

‘हम आप को सुझाव देने आए हैं, न कि अपना सामान बेचने।’ मैंने आरम्भ किया। मैंने अपनी पहली लाइन बड़ी सम्पूर्णता से कही। पिछले दो दिनों के अभ्यास को देखते हुए मैं काफी अच्छा बोला था, मैंने स्वयं से कहा। हम केन्द्रीय विद्यालय के प्रिंसिपल के आफिस में थे। ऑफिस की स्थिति कुछ ज्यादा अच्छी नहीं थी। जर्जर फर्नीचर और धूल से सनी ट्रार्फियां। अधिकतर सरकारी भवनों और दफ्तरों की तरह पुरानी फाइलें अल्मारियों के ऊपर पड़ी थीं। महिला- प्रिंसिपल तथा छः अन्य अध्यापक अर्धाकार में लकड़ी की मेज के गिर्द बैठे थे। मैंने सोचा यहां काम करना कितना कठिन होता होगा। किसी और के लिए करता तो और भी कठिन है, मैंने फिर सोचा।

‘आगे कहिए। प्रिंसिपल साहिबा ने कहा, क्योंकि अपना प्रभाव देखने के लिए मेरा मौन काफी लम्बा हो गया था।

‘हमारे साथ जिला-स्तर के चैम्पियन प्लेयर आए हुए हैं। वे आपको आपकी आवश्यकताओं और बजट को ध्यान में रखते हुए आपके लिए पैकेज बनाएंगे। मैंने ईश की तरफ इशारा किया और सभी अध्यापक उसकी ओर देखने लगे। स्कूल के आठ सौ विद्यार्थियों के मद्दे-नजर आवश्यकताओं की मासिक-सूची बनाई गई थी। मैंने कम्प्यूटर की दुकान से उसके लेजर प्रिंट निकलवा लिए थे, तीन रुपए प्रति कापी की दर से। चपरासी सबके लिए समोसे और चाय ले आया था।

‘इस पर कितना खर्चा आएगा’ मुख्य प्रशासक ने पूछा।

‘हमने कुछ कैस्कुलेशनस की है। आपका औसत खर्चा दस हजार रुपए मासिक होगा।’ मैंने कहा।

‘यह बहुत ज्यादा है। यह केन्द्रीय विद्यालय है। प्राइवेट स्कूल नहीं।’ प्रशासक ने कहा। उसने नोट बुक बन्द कर और मेरी तरफ बढ़ा दी।

मैंने एक गहरी सांस ली। मुझे इस बात की आशंका थी और उत्तर मेरे पास तैयार था

‘सर हम कुछ कम कर सकते हैं इसे।’

ईश ने हस्तक्षेप किया, ‘यह बारह रुपए प्रति विद्यार्थी प्रति मास होगा। क्या आप नहीं सोचते एक बच्चा जो पढ़ रहा है, खेल के लिए इतना भी हकदार नहीं कि एक पैन की कीमत जितना उस पर खर्च किया जा सके।’

अध्यापकों ने नोट-बुक से अपनी नजरें उठाई और एक-दूसरे की तरफ देखा। स्पष्ट कहें तो नहीं। हम अपने स्कूल के परिणामों से निर्णय करते हैं। पास प्रतिशतता और पहले दर्ज के हिसाब से।’ प्रशासक ने कहा।

‘अगर सभी ऐसा सोचने लगे तो भारत के खिलाड़ी कहां से आएंगे?’ ईश ने कहा। ‘अमीर परिवारों से।’ उन्होंने अपनी ऐनक उतार कर शीशे साफ करते हुए बड़ी गंभीरता से कहा।

‘परन्तु, प्रतिभा केवल धनवानों के हिस्से में नहीं बांटी गई। हमें इसका क्षेत्र बढ़ाना होगा।’

‘आपको पता है हमारे स्कूल के आधे कमरे बारिश के दिनों में लीक करते हैं।’ मुख्य ने कहा। ‘क्या हम चमकीली बॉलें लें और उन्हें लीक होने वाले स्थानों पर फिक्स कर दें?’ वे जाने के लिए उठ खड़े हुए।

मैंने मानसिक तौर पर कुछ बार एक शब्द दोहराया चलो गोविन्द, इसे बचाओ। तुमने बिजनैस करना है, कोई भी

बिजनैस।

## ग्यारह

‘गोवा, वाओ। ‘गुडलाइफ’। ‘विद्या ने कहा, पिन मुंह में डालते हुए। वह स्टूल पर खड़ी थी अपने कमरे में, और ‘दिल चाहता है’ फिल्म का आमिर खां का पोस्टर दीवार पर चिपका रही थी। मैं, उसका ट्यूटर पिन की ट्रे हाथ में लिए खड़ा था। यह मेरी हैसियत के लिए काफी था।

‘गोवा जाने का आइडिया तुम्हारे भाई का है। मैं काम में ब्रेक करने की जरूरत नहीं समझता। “बेशक, तुम्हें करना चाहिए” वह स्टूल से नीचे उतर गई थी, इससे तुम भूचाल वाली त्रासदी से उभर पाओगे।’

‘मुझे इससे कोई निकाल सकता है तो वह है मेरा काम। और पैसा ताकि मैं अपने लोन वापिस कर सकूँ। यह ट्रिप हमें तीन हजार का पड़ेगा।’ मैं उसकी डेस्क पर आ गया।

वो अपनी सीट पर आकर बैठ गई, अपनी किताब खोली और पन्ने उलटने पलटने लगी।

‘क्या तुम और दिलचस्पी ले सकती हो?’

‘मैं अच्छी एक्टर नहीं हूँ।’ उसने कहा।

‘फनी, क्या तुमने कैलकुलस का चेहरा अपने सो-कोल्ड स्वयं पढ़ने वाले मूड में कर लिया है।’

‘मैंने खुद ही पढ़ाई की है, क्योंकि तुम्हारे पास मेरे लिए टाइम नहीं है।’ उसने कहा। ‘पर किसी तरह भी ये मेरी समझ में नहीं आया हमेशा की तरह मैंने इसे रट लिया है। ये सब “डीएक्स डीटी” क्या होते हैं। और ये स्टोरी सिम्बल इतने सारे किसलिए है?’

‘विद्या तुम मैडीकल में प्रवेश ले रही हो, ऐसी बातें...’ मैंने वाक्य आधा छोड़ दिया। मैंने कैलकुलस का अध्याय खोला। कुछ बिगड़े बच्चों को जबरदस्ती चम्मच से खिलाना पड़ता है।

‘ऐसी बातें न करो, कैसी?’ विद्या ने कहा।

‘डफरों जैसी। अब पढ़ाई की तरफ ध्यान दो।’

‘मैं डफर नहीं हूँ। तुम गोवा जाओ, अपना बिजनेस मैनेज करो, धन कमाओ, उन लोगों का अपमान करो जो मैथ्स नहीं जानते और दोस्त बनाने के लिए कोई समय न निकालो। मैं अच्छे ढंग से मैनेज कर लूंगी।’

‘अच्छा ढंग’ काफी जोर से बोला गया था।

‘माफ करना, तुम्हें कोई प्रोब्लम है?’ मैंने कुछ देर रुककर कहा।

‘हां, कैलकुलस की प्रोब्लम। प्लीज क्या हम शुरू कर सकते हैं।’

मैं एक घंटा उसे कैलकुलस पर पढ़ाता रहा।

‘पीछे दी हुई ऐक्सरसाइज कर लेना। और जबतक मैं वापिस आऊँ अगला चैप्टर पढ़ लेना।’

मैंने कहा जैसे ही मैंने क्लास खत्म की।

वह चुप रही।

‘विद्या ऐसा क्यों लगता है कि कभी कभी तुम्हारे अंदर से बात निकलवानी कितनी मुश्किल होती है।’

‘मैं ऐसी ही हूँ, तुम्हें कोई, प्रोब्लम है? क्या केवल तुम्हें ही हक है कि तुम लोगों को नजर अंदाज कर सकते हो?’ वह पीछे की तरफ गिरने जैसी हो गई। उसकी आँखें धुंधला गई थीं। उसकी लम्बी लम्बी अंगुलियां कांप रही थीं। इससे पहले कि बादल बरस जाते मैं वहां से निकल गया।

‘मैं चार दिन में वापिस आ जाऊंगा?’ दरवाजा बन्द करते हुए मैंने कहा।

‘कौन परवाह करता है?’ उसने मेरे पीछे कहा।

‘खाना समय पर खा लेना और देर तक जागते न रहना।’ गाड़ी चलने लगी थी तो अली के पिता ने अली से कहा।

अली इतना उतावला हो रहा था कि उसे अपने पिता के निर्देश सुनने का समय नहीं था। उसने ऊपर वाली बर्थ चुन ली अपने लिए और छलांग लगा कर ऊपर चढ़ गया। ओमी ने सफर से पहले की अपनी प्रार्थना पढ़ी।

‘अली की अम्मी इसका इतना ध्यान नहीं रखती पर वह मेरे दिल का टुकड़ा है!’ अली के पिता ने कहा और उसकी आंखें भीग गईं, ‘कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि मुझे दोबारा शादी नहीं करनी चाहिए थी।

मैंने कैश और टिकट प्लास्टिक के लिफाफे में डाले और जुराब के अंदर रख लिए। एक बारह वर्षीय लड़के और दो और जवानों के साथ सफर करते यह जिम्मेवारी मेरी बनती थी।

‘चाचा, सब ठीक है, आप फिक्र न करें। अब आप आराम से अपनी चुनाव-रैली में बड़ौदा जा सकते हैं।

मैंने कहा।

‘यह ठीक है। मैं अली को चार दिन के लिए उसकी अम्मी के पास नहीं छोड़ सकता।’

‘क्या इस वर्ष आप को टिकट मिल रहा है।’

मैंने कहा और अपना सामान बर्थ के नीचे रख दिया।

ट्रेन चल पड़ी थी।

‘नहीं, नहीं, मैं इतना सीनियर नहीं हूँ पार्टी में।’

मैं बेलरामपुर वाले प्रतियोगी की मदद करूंगा। अली बेटे सीटों के बीच न कूदो। अली....’

उसकी आवाज गुम हो गई क्योंकि गाड़ी ने गति पकड़ ली थी।

ईश ने अली की बांह पकड़ी और उसे अपनी गोद में बिठा लिया। ‘अच्छी तरह से बाँय करो’ ईश ने कहा।

‘खुदा हाफिज, अब्बा’ अली ने कहा जैसे ही गाड़ी तेज हुई।

‘ऑरगेनाइजर्स। हमें ऑरगेनाइजर्स से मिलना है। हम अंदर चलते हैं।’ मैंने कहा। एक हाथ ने रोका हाथ सिक्योरिटी गार्ड का था जो बाहर वी. आई. पी. स्टैंड पर खड़ा था।

‘यहां तीस हजार लोग अंदर जाना चाहते हैं। तुम कौन हो? ऑटोग्राफ लेने वाले?’

‘इसे कहो,’ ईश ने कहा धीमे से मुझे कहा।

‘अपने सीनियर को बुलाओ, मैं उससे बात करना चाहता हूँ।’

‘क्यों?’ गार्ड ने कहा।

मैंने एक कार्ड उसे पकड़ाया। उस पर लिखा था ‘जुबेन सिंह, चेयरमैन, विल्सन स्पोर्ट्स।’

पंडित जी एक बार भारत की सबसे बड़ी स्पोर्ट्स कम्पनी के अध्यक्ष से मिले थे। यह कार्ड मैंने उनके संदूक से निकाल लिया था।

‘मेरे पास विल्सन स्पोर्ट्स है। हम इस संबंध में किसी डील के बारे में उनसे कुछ बात करना चाहते हैं। क्या आप हमारा काम करेंगे या....।’

गार्ड को पसीना आ गया और उसने अपने मैनेजर को बुलाया। मैंने वही कहानी उसके सामने दोहराई। उसने सबसे सीनियर सिक्योरिटी पर्सन को बुलाया। उसने सूट पहना हुआ था। मैंने उसके सामने एक झूठी कॉल फोन पर की, किसी दस करोड़ रुपये के आर्डर के बारे में वह सीधा खड़ा रहा। एक कॉल मैंने गुजराती में की और उसका चेहरा थोड़ा नम्र हुआ।

‘गुजराती?’ उसने कहा।

‘मैंने उसकी ओर देखा, कुछ अच्छा सा जवाब देने के लिए! भारत में यह कुछ नहीं पता चलता कि तुम किसी स्थान विशेष से सम्बन्ध रखते हो। यह जानकर कोई तुम्हें पसंद करेगा या नफरत करेगा।

‘हां’ मैंने धीरे से कहा।

‘ओह! आप कैसे हैं? उसने गुजराती में कहा। शुक्र है भारत में इतने राज्य हैं। सब ठीक हो गया मैंने सोचा ‘मैं अभी अहमदाबाद से आ रहा हूँ।’ मैंने कहा।

‘आप बिना एप्वाइंटमेंट लिए कैसे आ गए?’ उसने कहा।

‘मैं यहां मैच देखने आया हूँ। मैंने ऑस्ट्रेलियनस को खेलते देखा और सोचा कि शायद हम किसी ब्रांड एम्बैसेडर से मिल पाएं।’

‘ऑस्ट्रेलियन क्यों? तुम किसी इंडियन को क्यों नहीं लेते?’

कतई अप्रासंगिक प्रश्न था, पर यह संकेत करता था कि उनका विश्वास हममें बढ़ रहा है।

इंडियन टीम को एफोर्ड नहीं कर सकते। अच्छे खिलाड़ी काफी महंगे भी पड़ते हैं। बुरे खिलाड़ी, खैर, मुझे बताएं, क्या आप अजीत अगरकर द्वारा समर्थित बैट खरीदेंगे?’

गार्ड ने सिर हिलाया। वो कान में लगे माईक्रोफोन पर किसी से बात कर रहा था। फिर हमारी तरफ मुड़ा।

‘आपमें से एक हमारे साथ रह सकता है।’

सिक्योरिटी हैड ने कहा।

‘वह रहेगा,’ मैंने ओमी की ओर संकेत करते हुए कहा। ‘एक गार्ड आपके-साथ रहेगा। इस बच्चे का क्या करेंगे। उसे भी जाना होगा?’

‘ओह’ हां, वो इस कैम्पेन में है। हम कोच और स्टूडेंट थीम पर कुछ काम कर रहे हैं।’

गेट चरमराता सा खुला। गार्ड ने हमारी अच्छी तरह से तलाशी ली। आखिर में हम प्रवेश कर ही गए। हम वहां एक खाली कतार में 6 फाइबर ग्लास की बनी लाल रंग की सुन्दर सी बनी कुर्सियों पर बैठ गए। वहां से हमें स्टेडियम को सबसे अच्छा नजारा दिखाई दे रहा था। जब हम वहां पहुंचे तो भारतीय टीम ने अपनी पारी समाप्त कर दी थी। अब ऑस्ट्रेलिया बैटिंग करेगा। क्रीज पर आने वाले बल्लेबाजों को छोड़कर शेष सभी खिलाड़ी जल्दी ही अपने स्थानों पर आ जाएंगे।

‘ओमी ठीक रहेगा?’ ईश फुसफुसाया।

मैंने सिर हिलाया।

‘हम ऑस्ट्रेलियन टीम के आने का इंतजार करेंगे, ठीक है?’ मैंने सिक्योरिटी गार्ड से कहा, इसके पहले वो हम पर फिर कोई शक करे। उसने सिर हिलाया। ‘क्या तुम गुजरात से हो?’ ईश ने उससे कहा।

‘नहीं’, गार्ड ने कहा। वह कुछ परेशान सा लग रहा था, जैसे किसी गुजराती लड़की ने उसका दिल तोड़ा हो।

‘हे, पीछे की पांच लाइने देखो धीरे से।’ ईश ने कहा

मैं मुड़ा। वहां एक सिख युवक बैठा था। गहरे लाल रंग की पगड़ी और भारतीय टीम की ड्रेस पहने हुए।

‘शरणदीप सिंह, बारहवां आदमी हो सकता है वो जल्दी ही टीम में शामिल हो जाए। क्या मैं जाकर उससे हाथ मिलाऊं?’

‘ऐसी बेवकूफी न करना। अगर उन्हें जरा भी शक हो गया तो हमें यहां से निकाल देंगे।’ मैंने कहा।

‘क्या मैं वह ले सकता हूँ?’ अली ने कहा। वेटर अपनी वर्दी में ठंडा लिए घूम रहे थे।

‘ऐसा दिखाओ कि तुम दो सौ करोड़ की कम्पनी के मालिक हो। जाओ अली ले लो।’ मैंने कहा।

जल्दी ही हम सभी फैंटा पी रहे थे लम्बे गिलासों में। हे भगवान मदद करने के लिए धन्यवाद।

मरमर की आवाज आई। हर कोई पीछे मुड़ कर देखने लगा, पीले पहनावे में कुछ व्यक्ति आ रहे थे। ईश ने मेरा हाथ जोर से पकड़ा ज्यों ही उसने ऑस्ट्रेलियन टीम को आते देखा। वे हमारे आगे दो लाइनें छोड़कर बैठ गए।



‘वह स्टीव वांग है, ऑस्ट्रेलियन कप्तान’ ईश मेरे कान में फुसफुसाया। मैं उसके दिल की धड़कन उसके मुख से सुन रहा था।

मैंने सिर हिलाया और गहरी सांस ली। हां, हर एक वहां था-बैवन, लैहमन, साइमंड, और यहां तक मैक ग्राथ भी। पर हम यहां ऑस्ट्रेलियन को देखने नहीं आए थे, प्रशंसकों की तरह। यहां आने का हमारा एक मकसद था।

‘ईश भैया वो देखो।’

अली की ऊंची आवाज ने हमारी शांत रहने की अदाकारी को असफल कर दिया कुछ लोगों ने हमारी ओर देखा पर अली छोटा बच्चा है, देख कर उन्होंने ध्यान हटा लिया।

सच्चे वी. आई. पी. कभी भी चिल्लाते नहीं स्टार्स को देख कर चाहे वो उनके इर्द-गिर्द रहना कितना ही पसंद करते हों।

एक गोरा-चिट्ठा युवक, जिसे मैं पहचान नहीं पाया, आया और हमारी अगली लाइन में बैठ गया। उसने ऑस्ट्रेलियन टीम की कमीज पहनी हुई थी पर उसके साथ में खाकी निक्कर थी।

उसके बाल घुंघराले थे और आंखें नीली, मुश्किल से वह बीस का होगा।

ज्यों ही एडम गिलक्रिस्ट ने छक्का मारा, सारे वी. आई. पी. ने तालियां बजाईं। जनता की तरफ पीड़ा भरी चुप्पी थी। ईश बाउलर को गाली देना चाहता था, पर उसे अक्ल आ गई और वह चुप रहा।

ऑस्ट्रेलियन टीम छक्का लगने पर हाथ से जीत की खुशी जताई। घुंघराले बालों वाले लड़के की मुट्ठियाँ भिंच गईं।

अली ने अपना तीसरा फैंटा खत्म किया।

‘जाओ बात करो। मैंने अपना काम कर दिया है।’

मैंने ईश को कहा।

‘कुछ ओवरों के बाद, मैच को कुछ सैटल होने दो।’ ईश ने कहा।

ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली विकेट हेडन को खो दिया, 70 रनों पर। वी. आई. पी. कक्ष से बड़े सभ्य ढंग से तालियों की आवाज आ रही थी।

पोंटिंग जब क्रीज पर जाने के लिए उठा तो उसकी टीम वालों ने उसकी पीठ थपथपाई। श्रीनाथ ने तीन बलों में ही पोंटिंग को आउट कर दिया।

अब ईश आपे में नहीं रहा।

‘श्रीनाथ, चलते रहो।’ ईश खुश था। मैंने उसे कुर्सी पर खड़े होने से रोका।

‘गो इंडिया गो, हम यह कर सकते हैं। सीरीज जीती गई, कम ऑन, हम 2-2 है।’

ईश ने अपने आप से कहा।

वो लड़का हमें देखने लगा। ईश कुछ सतर्क हुआ।

‘इट इज ओ. के. अच्छा है, साथी?’ उसने कहा।

‘सॉरी, हम...’ मैंने कहा।

‘अगर मेरी टीम होती तो मैं भी ऐसा ही करता।’

उसने कहा।

मौका था बात करने का। हो सकता है कि वह टीम के किसी सदस्य का भाई या कुछ और हो।

मैंने ईश की कोहनी हिलाई।

‘हाय,’ ईश ने कहा, ‘मैं ईशान हूं, हम गुजरात के अहमदाबाद से आए हैं। और वह जुबीन है, वह विल्सन स्पोर्ट्स

का मालिक है। और यह अली है।’

‘आप से मिल कर अच्छा लगा। हाय, मैं फ्रैड हूँ, फ्रैड ली।’

‘आप टीम में खेल रहे हैं?’ मैंने फ्रैड से पूछा।

‘अभी नहीं, मेरी पीठ में तकलीफ है। पर हाँ, एक वर्ष पहले ऑस्ट्रेलिया के लिए खेलना शुरू किया था।

‘बैट्समैन?’

‘बाउलर, पेंस,’ फ्रैड ने उत्तर दिया।

‘फ्रैड, हम आप से बात करना चाहते हैं। इस लड़के के बारे में। हमें जरूरी बात करनी है।’

उत्तेजना से उसकी सांस उखड़ रही थी।

‘जरूर, मैं वहीं पर आ जाता हूँ।’ फ्रैड ने कहा और ईश के साथ आकर बैठ गया। सिक्यूरिटी गार्ड ने राहत महसूस की जब उसने एक गोरे को हमारे साथ देखा। निस्संदेह वहाँ हम काफी महत्वपूर्ण थे।

ईश ने एक घंटे में अपनी सारी कहानी सुना दी।

‘आप चाहते हैं कि मैं उसका टैस्ट लूं। साथियो, आप लोग उसे अपने सलैक्टर या किसी और को दिखाओ।’

‘विश्वास कीजिए, अगर इंडियन सलैक्टर इतने लायक होते तो हम इतने मैच ऐसे देश से न हारते जिसकी जनसंख्या हमारे देश का पांचवां हिस्सा है। इसमें कोई अपराध नहीं।’

‘हमारी टीम को हराना मुश्किल है। इसके कई कारण हैं,’ फ्रैड ने धीरे से कहा। ‘ठीक है, इसीलिए मैं चाहता हूँ कि आप इसका टैस्ट लें। मैंने अभी एक वर्ष से इसे सिखाना शुरू किया है, और आगे भी जारी रखूंगा। हम चौबीस घंटे का सफर कर के आए हैं, आपकी टीम में से किसी को मिलने क्योंकि मैं आप में विश्वास करता हूँ।’

‘और उससे क्या होगा? क्या होगा अगर मैं कह दूंगा कि वो अच्छा है?’

‘अगर आप कहेंगे कि लड़के में विधु-स्तर की योग्यता है तो मैं अपनी सारी जिन्दगी लगा दूंगा इसे वहाँ तक पहुंचाने में। मैं कसम खाता हूँ। प्लीज उसे कुछ बॉलें दें।’

‘साथी, अगर मैंने हर एक आने वाले के लिए ऐसा करना शुरू कर दिया तो....’

‘फ्रैड, मैं आपसे विनती करता हूँ, एक स्पोर्ट्समैन दूसरे स्पोर्ट्समैन से। या फिर छोटा स्पोर्ट्समैन बड़े स्पोर्ट्समैन से।’ फ्रैड ने अपनी नीली आंखें बिना झपकाए ईश की तरफ देखा।

‘मैंने जिला-स्तर तक खेला, मुझे कोई गार्डिंस नहीं मिली इसीलिए मैं आगे नहीं बढ़ पाया।’ ईश ने बोलना जारी रखा, ‘मैंने अपनी स्टडीज खराब की, अपने माता-पिता से लड़ा, इस गेम के लिए मैंने अपना कैरियर दांव पर लगा दिया। यह गेम ही मेरे लिए सब कुछ है। आपके पास आने वाला हर कोई ऐसा नहीं हो सकता।’

फ्रैड हंसा ‘साथी, तुम भारतीय भावुक होने में माहिर हो। विश्वास करो, मैंने भी इस गेम के लिए बहुत कुछ खोया है।’ ‘फिर आप मान गए?’

‘चार बॉलें, इससे ज्यादा नहीं। मैच के बाद। यहां नजदीक ही रहना।’ फ्रैड ने कहा और अपनी जगह पर वापिस चला गया। ‘और आप प्रार्थना करें कि ऑस्ट्रेलिया जीत जाए ताकि मैं अच्छे मूड में रहूँ और अपना वादा निभा सकूँ।’

ईश की हंसी रुक गई। ‘मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं भारत के विरुद्ध नहीं सोच सकता।’

‘मजाक न करो मित्र तुम लोग भावुक हो। पर हम ऐसे नहीं हैं।’ फ्रैड ने आंख दबाते हुए कहा। बात अधूरी रह गई थी। फिर भी हम हंसे।

‘हमारे दोस्त को बुलाओ, हमें उससे काम है।’ मैंने गार्ड के रौबिली आवाज में कहा।

दो मिनट बाद ही ओमी हमारे साथ था। वो इतना प्यासा था कि उसने अली का फैंटा झपट लिया।

‘तुम लोग क्या कर रहे थे? मैं दो घंटे से इंतजार कर रहा हूँ।’

‘मित्र बना रहे थे।’ मैंने कहा और फ्रैंड की तरफ देख कर मुस्कराया। तभी आस्ट्रेलिया ने एक चौका मारा। आस्ट्रेलिया मैच जीत गया। ईश के पास दुःखी होने का समय नहीं था। उसे अली को तैयार करना था।

मैच समाप्त होने के आधा घंटा बाद हम ग्राउंड में पहुंचे।

‘वह पेस बाउलर है।’ ईश अली की तरफ मुड़ा।

‘तुम्हें हैलमेट चाहिए?’

अली ने सिर हिलाया।

‘इसे पहन लो,’ ईश ने अली के सिर पर हैलमेट बांध दी।

‘रैडी मेट’ फ्रैंड ने बॉलर वाले स्थान से पूछा। अली ने सिर हिलाया। ईश विकेट-कीपर के स्थान पर खड़ा हो गया। फ्रैंड ने दस कदम लिए और बड़े जोर से बॉल मारी। बॉल अली के ऊपर से चली गई। ईश आगे बढ़ा इसे पकड़ने के लिए। ‘गिफ्टिड?’ फ्रैंड ने मुझसे कहा, ज्यों ही वह दूसरा रन-अप लेने के लिए।

‘हे, अली क्या हुआ?’ ईश ने कहा।

‘मैं देख नहीं सकता, बॉल सफेद है। और विदेशी अपने चेहरे भयानक बना लेते।’

‘चेहरे को अनदेखा करो और बॉल की तरफ ध्यान दो।’ ईश ने कहा और हैलमेट उतार दी। ओमी बाउंडरी पर काली शीट लगाने के लिए भागा।

फ्रैंड ने दूसरी परफैक्ट बॉल दी। इस बार अली ने मारा। बैट ने बॉल को 45 डि. पर मार कर उसकी दिशा बदल दी, बॉल नीची ही रही पर जमीन पर नहीं लगी जब तक वो बाउंडरी पार नहीं कर गई। छक्का।

‘ब्लडी हैल! वह कहाँ से आया था?’ फ्रैंड ने कहा। ‘दो बॉलें और’ मैंने कहा। मैं जानता था कि फ्रैंड के दिमाग में क्या चल रहा है। उसे ऐसा लग रहा होगा जैसे उसे रौंद दिया गया हो अंग-भंग कर दिया गया हो, या उसे पूर्णतया परास्त कर दिया गया हो और उसे वह भी एक छोटे से लड़के द्वारा जिसने अभी शुरू ही किया है।

फ्रैंड की तीसरी बॉल पर चौका और चौथी पर छक्का बना। फ्रैंड का चेहरा अब भयानक की जगह अपमानित सा लग रहा था। उसने बाद में भी कई बार ‘मेट’ (साथी)

शब्द का प्रयोग किया पर अब उसका लहजा बदल गया था शांति ने चिंता का स्थान ले लिया था। वो ऐसे व्यक्ति जैसा लग रहा था जिसकी क्रिकेट के बारे में सारी आस्थाएं हिल गई हों।

‘उसने ऐसा कैसे किया?’ फ्रैंड बुड़बुड़ाया अपने घुंघराले बालों को छेड़ते हुए। हमने अली को देखा। वह फर्श पर बैठा था, अपना सिर हाथों में लिए हुए। ‘तुम ठीक हो?’ ईश ने कहा। अली के ऊपर दबाव बढ़ा हुआ था।

‘क्या हुआ?’ फ्रैंड ने कहा।

‘विशेष फोकस करने से उसका भीतर हिल जाता है। कुछ बड़ी हिट्स के बाद उसे जैसे री-चार्ज करने की जरूरत पड़ती है। मैंने उसे पड़ोस में पूरी पारी खेलना सिखाया है पर आज....’

‘स्ट्रैस, दबाव, मेट यह चलता है और तुमने उसे एक भयानक सफेद चेहरे के आगे धकेल दिया।

‘उसे यह सब फेस करना है। ईश ने कहा। वह झुका और उसने अली के पैड खोले। ‘हां, उसे दम-खम और प्रशिक्षण की आवश्यकता है। वह कई जगहों पर जाएगा।’ फ्रैंड ने कहा।

‘क्या आप ऐसा सोचते हैं?’

‘यह फ्रैंड का अभिमत है।’

‘हां, तो तुम लोग थोड़ा इंतजार कर सकते हो। मैंने एक फोन करना है।’ फ्रैंड ने कहा और थोड़ा दूर जा कर उसने अपने सैलफोन का नम्बर डायल किया। मैं सुन तो नहीं पाया, फ्रैंड दस मिनट तक किसी से कोई जोश भरी बात-चीत करता रहा। फिर हमारे पास आया।

‘थैंक्स फ्रेंड’ ईश ने कहा। मैंने ईश के चेहरे पर गर्व के भाव देखे।

‘गुडोनिया, आप इसे कुछ समय के लिए आस्ट्रेलिया क्यों नहीं लाते? मेरी एकेडमी में रहेगा और ट्रेनिंग लेगा।’ फ्रैंड ने ऐसे निमंत्रण दिया मानो आस्ट्रेलिया जाना इतना आसान है जैसे नवरंगपुरा के लिए ऑटो लेना।

‘सच में?’ ईश ने कहा।

‘क्या यह ठीक है। हमने गोवा आने के लिए कितनी मुश्किल से सेकंड क्लास की टिकटें खरीदी हैं। और पैसे बचाने के लिए उसी रात वापिस जा रहे थे। फिर भी ईश आस्ट्रेलिया जाना चाहता है।’

‘हम नहीं जा सकते फ्रैंड,’ मैंने दखल दिया।

‘क्यों?’ फ्रैंड ने कहा।

‘हम अफोर्ड नहीं कर सकते। मेरा कोई क्रिकेट बिजनेस नहीं है।’

‘क्या....?’

‘मेरी एक छोटी सी क्रिकेट की दुकान है। हमने आप तक पहुंचने के लिए झूठ बोला था।’ वातावरण में तनाव था।

‘होली-मोली’ फ्रैंड मुस्कराया, ‘तुम लोग! काफी साहसी हो। खैर छोड़ो। मैं भी कोई ज्यादा अमीर नहीं हूँ तुम्हारी भारतीय टीम के खिलाड़ियों की तरह। मेरी तरफ से तुम्हें कोई डर नहीं। पर अगर तुम पकड़े जाते तो काफी मुसीबत में फंस जाते।’ मैंने पक्का सोच रखा था कि किसी बैस्ट से ही अली का टेस्ट करवाना है। ईश ने कहा।

‘तब उसे ऑस्ट्रेलिया ले जाओ। मैं कल भारत से जा रहा हूँ। तुम्हारा बिजनेस कितना बड़ा है?’

‘यह छोटा सा ही है।’ ईश ने कहा। ‘और टिकट काफी महंगे हैं।’

‘ठीक मेरी एक पहले की गर्ल-फ्रैंड कवेंटास के साथ काम करती है। मैं देखता हूँ मैं क्या कर सकता हूँ।’ फ्रैंड ने कहा, जैसे ही हम वापिस जाने को हुए। ‘यह केवल ईश और अली ठीक है?’

‘वह ठीक रहेगा।’ मैंने जल्दी से कहा।

‘नहीं फ्रैंड, हम पार्टनर्स हैं। या तो हम सारे आएंगे या कोई भी नहीं। हमें चार टिकट चाहिए।’

‘ठहरो’ फ्रैंड ने कहा और मुड़ा एक और फोन करने के लिए।

‘ठीक है।’ फ्रैंड ने कहा जैसे ही वो वापिस आया,

‘मैं चार टिकट के लिए कर सकता हूँ।’

‘हुर्रे’, ईश खुशी से चिल्लाया, ‘अली देखो यह सब तुम्हारी वजह से हो रहा है।’ अली मुस्कराया।

‘पर जुलाई ज्यादा ठीक है।’ फ्रैंड ने कहा,

‘इस वक्त ऑस्ट्रेलिया में सर्दी है, और टिकट सस्ते हैं।’

‘जुलाई में काम होता है।’ मैंने कहा, ‘हम गर्मियों की छुट्टियों में नहीं आ सकते, सेल का सीजन होता है।’

मैं सोच रहा था टिकटों के अतिरिक्त भी पासपोर्ट, विजा, ट्रिप के दौरान रहने का खर्चा, इन सबके लिए पैसा कमाना होगा और उसके लिए थोड़ा वक्त चाहिए। पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जाने का मौका भी हर रोज नहीं मिलता।

## बारह

‘यहां कुछ कबाड़ पड़ा है। पर तुम्हारी दुकान के लिए यह एक अच्छा गोदाम बनेगा।’ मामा ने कहा, एक पुराने टूटे-फूटे गोदाम का दरवाजा खोलते हुए।

वर्षों के बाद जैसे धूप ने भीतर प्रवेश किया हो, दो चूहे भाग कर दूसरी तरफ गए। हमने बड़ी मुश्किल से बोरियों, शैलों, ईंटों और कबाड़ में से रास्ता बनाया भीतर जाने के लिए।

इसे ठीक करने में हफ्तों लग जाएंगे। ओमी छत पर छः लाइटों की जरूरत पड़ेगी।’ मैंने कहा।

‘यह पचास बाई पचास का है, अच्छा साइज है,’ मामा ने कहा।

‘मामा इसका आप क्या किराया लोगे?’ मैंने कहा। मैंने होल-सेल बिजनैस करने का विचार बना लिया था। मैं निश्चित था कि इस बार क्रिकेट सीरीज अच्छा बिजनैस देगी। अगर मुझे क्रेडिट पर सामान मिल गया तो मैं काफी धन कमा लूंगा।’

‘बेवकूफ, एक पिता क्या अपने बेटे से किराया लेगा।’ मामा ने कहा।

मुझे ऐसे परोपकारों से सख्त नफरत थी। मैंने गोदाम का किराया दुकान के किराए से आधा सोचा था। इसे रीटेल के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता था क्योंकि इसका आगे का भाग रीटेल के उपयुक्त नहीं था।

‘बेटों की बात पर, मैं तुम्हें अपने बेटे से मिलवाता हूं। धीरज! धीरज! मामा के चौदह वर्ष का बेटा मंदिर-परिसर से भागता हुआ आया। स्पाईडर मैन की टी. शर्ट, और जीन पहने, हाथ में नारंगी और सिंदूरी रंग की प्लेट लिए, दोनों बातें एक दूसरे के विपरीत लग रही थीं।

‘बाबा, आइए, आप के तिलक लगा दूं।’

धीरज ने मामा के माथे पर तिलक लगा दिया।

‘अपने भाइयों से मिलो।’ मामा ने कहा, ‘गोविन्द, ईशान और ओमी भी।’

‘हाय’ मैंने कहा।

‘क्रिकेट की दुकान के मालिक। मुझे क्रिकेट बहुत अच्छा लगता है।’ लड़के ने किशोरावस्था की आवाज में कहा।

‘बच्चा है अभी, फिर भी वो स्कूल के बाद मेरे काम में मेरी मदद करता है।’ मामा की आवाज में गर्व था। अयोध्या दो बार जा चुका है। बेटे, अपने भाइयों को भी तिलक लगाओ।’

धीरज ने हम सबको तिलक लगाया। ‘ईश भैया मैंने अभी पूजा करनी है। आप किसी दिन मुझे क्रिकेट-टिप्स देना।’ ‘जरूर, अब जाओ,’ मामा ने कहा।

हम गोदाम से बाहर आ गए और मामा ने दरवाजा बन्द कर दिया।

‘मामा सब कैसा चल रहा है? आप को मेरी जरूरत है?’

ओमी ने कहा।

‘चुनाव छः महीने के बाद हैं। कुछ महीनों में रैलियां शुरू हो जाएंगी। मैंने पारेख जी को दिखलाना है कि मैं कितना अच्छा काम कर सकता हूं।

मैंने सौ-सौ के दस नोट मामा के हाथ में थमा दिए।

‘गोदाम का किराया, मामा,’ मैंने कहा।

‘नहीं, इसे छोड़ दो।’ उन्होंने कहा।

‘मामा, ना मत करना। आपके पहले ही हमारे ऊपर बहुत अहसान हैं बिजनैस ठीक चल रहा है। हम आपका लोन

भी जल्दी ही चुका देंगे।' मैंने कहा।

'हैलो पंडितजी? क्या आप मेरी आवाज सुन रहे हैं।' मैंने कहा। गोदाम खोलने के एक महीने बाद पंडित जी का फोन आया था। दुकान पर मंदिर की घंटियों की आवाज के कारण बात करनी मुश्किल थी। मुझे अपने कानों पर बहुत जोर डालना पड़ता था सुनने के लिए।

'गोविन्द, मेरे पास काफी सामान पड़ा है। मैं अपनी लड़कियों की शादी करना चाहता हूँ और फिर वापिस कश्मीर चला जाऊंगा।'

'मैं जानता हूँ पंडित जी।' मैंने कहा। यह कहानी वे मुझे कई बार सुना चुके थे। 'हां, पिछले हफ्ते एक अच्छा परिवार हमारे यहां आया था। उनके दो लड़के हैं, जो लंदन में रहते हैं। वे मेरी दोनों लड़कियों को ले जाएंगे। वे जल्दी से जल्दी करना चाहते हैं।'

'एक ही फंक्शन में?'

'हां, सोचो कितनी बचत होगी। अगर एक ही फंक्शन करना होगा, तो वे चाहते हैं कि अच्छा हो। मैंने गोदाम बेच दिया है। पर अपने सामान के लिए मुझे खरीददार की जरूरत है।'

'आपके पास सामान कितने का है?'

'दो लाख की सेल वैल्यू है। जिसमें से आप जैसे रिटेलर को 20 प्रतिशत कटौती और मैं 10 प्रतिशत की और दूंगा तुम्हें। असली रकम बनेगी एक लाख चालीस हजार। 'मैं एक लाख दे सकता हूँ।' मैंने भावुकता में कह दिया। ईश और ओमी हैरानी से मेरी तरफ देखने लगे कि अब मैं कौन सी पागलपन की स्कीम बना रहा हूँ।

'एक लाख चालीस हजार की लागत है और तुम मुझे इसे घाटे में बेचने को कह रहे हो?'

'मैं हर चीज खरीद रहा हूँ।'

'अगले महीने मुझे रकम दे देना। तुम एक लाख दस हजार दे देना।'

'मैंने कहा एक लाख। ज्यादा नहीं।' मैंने दृढ़ आवाज़ में कहा।

'तुम सामान कब ले कर जाओगे। गोदाम वाला इसे जल्दी खाली करने को कह रहा है। 'पंडित जी ने कहा।

'आज' मैंने कहा।

बाद में जब मैंने ईश और ओमी को इस सौदे के बारे में बताया तो उनके माथे पर त्यौरियां पड़ गईं। मुझे यह सौदा सोने की खान लगा। भारत ने इस सीरीज में अच्छा खेला है। कुछ हफ्तों में गर्मियों की छुट्टियां शुरू हो जाएंगी। अगर मैंने ये सारा सामान बेच दिया तो मैं दुगुनी कमाई कर लूंगा।

'तुम जानते हो तुम जो करने जा रहे हो क्या वो ठीक है?' ईश को संदेह था। मैंने उसकी ओर देखा। मेरे एक कदम से वह निराश था। पर तुम बिजनैस नहीं कर सकते खतरा मोल लिए बिना।

'हां, मुझे ठीक लगता है। तुम्हें मुझ पर विश्वास है?'

'बेशक है।' उसने कहा। 'पर उसकी लड़की चली गई हैं।'

'क्या....?' मैं व्याकुल हो गया।

'तुम्हारे पास उसके लिए कुछ था।' ईश ने मुझे याद दिलाया।

'ओह!' मैंने कहा और दूसरी तरफ देखने लगा। तुम्हें कोई अंदाजा नहीं किसके लिए क्या था।

मैंने सोचा।

अगले तीन महीने बिजनैस बड़ा अच्छा चला। भारत का हर बच्चा मई-जून में क्रिकेट खेलता है। माहिरो ने भारत-ऑस्ट्रेलिया सीरीज को ऐतिहासिक बताया। असली मैच परीक्षाओं के दिनों में होने नियत हुए। छुट्टियों में ही क्रिकेट भली-भांति खेला जाता है।

‘क्या ऐसे हरभजन अपनी बॉल पर पकड़ रखता है?’ एक सात-वर्षीय लड़का क्रिकेट बॉल को अपनी छोटी सी मुट्ठी में पकड़ने का प्रयत्न कर रहा था।

‘लक्ष्मण और मेरा बैटिंग स्ट्राइल एक जैसा है।’ पार्क में खड़े एक दूसरे लड़के ने कहा।

मंदिर वाली दुकान पर ग्राहक तीन गुना हो गए। दूसरी तरफ हमारा होल-सेल का काम और भी अच्छा चल रहा था। रीटेलर कभी भी बुलाना बन्द नहीं करते।

‘क्या? पंडित जी कश्मीर वापिस जा रहे हैं?’

अच्छा, गेंदों के दो बॉक्स सिटी मॉल स्पोर्ट शॉप में भेज देंगे?’ एक ने कहा। ‘मैंने पंडित जी का बिजनेस ले लिया है। हमें कहिए हम दो घंटे में डिलिवरी भेज देंगे।’

मैंने सैटेलाइट में एक और बड़ी दुकान को बताया।

‘नहीं, केवल नकद। अहमदाबाद में अच्छा स्टॉक नहीं है। आप को अभी चाहिए तो पेमेंट भी अभी।’ मैंने एक उधार मांगने वाले को कहा।

मैं कैश का हिसाब रखता था। ओमी डिलिवरी देता था, जबकि ईश दुकान पर बैठता था। जब स्कूल खुल गए तो वह महीने की सप्लाई का काम करता था। हमने चार स्कूलों को सप्लाई भेज दी थी। 15 अगस्त को नैशनल छुट्टी वाले दिन हमने दुकान पर शांति से दिन बिताया। हमें पतंगे भी रखनी चाहिए, आकाश की ओर देखो, आसानी से धन कमाया जा सकता है।’

मैंने कहा जैसे ही मैं कैश गिन रहा था।

‘जल्दी से अकाउंट्स का काम खत्म करो।’

ओमी ने कहा। ‘हमें चार बजे तक मामा के पास पहुंचना है।’

मामा ने स्वतन्त्रता दिवस पर अपनी रैली रखी थी, उसी दिन जिस दिन अली के अब्बा का भाषण था अपनी पार्टी के प्रतियोगी के लिए। और यह भी दोनों पार्टियों का आयोजन भी एक ही स्थान पर था नाना पार्क के दो किनारों पर।

‘हम वहां चार बजे पहुंच जाएंगे। अच्छा अंदाजा लगाओ कि हमारा पिछले चार महीनों का कितना लाभ है, मैंने दोनों की तरफ देखा।

दोनों ने कंधे हिलाए।

‘सत्तर हजार।’ मैंने कहा।

‘सत्तर क्या?’ ईश ने कहा।

‘ठीक है। इसमें से हम 40 हजार लोन वापिस करने में लगाएंगे। बाकी के तीस हमारे हैं।’

मैंने कहा और नोटों का एक-एक बंडल उन्हें दिया।

‘किसने फैसला किया कि रकम को ऐसे इस्तेमाल करना है?’ ईश ने कहा। ‘मैंने, कोई प्रोब्लम?’ मैंने कहा और फिर मैंने महसूस किया कि मैंने कुछ ज्यादा ही दृढ़ता से यह बात कह दी।

‘नहीं। फिर भी हमारे लोन और कितने रह गए हैं।’

‘केवल बीस हजार और, अगर तुम ब्याज भी लगा लो। हम इस वर्ष के अन्त तक सारा लोन चुका देंगे।’ मैंने कहा और सेफ को ताला लगाया। मैंने चाबी अपनी शर्ट की जेब में डाल ली। मैं खड़ा हो गया और गोदाम में स्टॉक चैक करने लगा।

‘ऐ गोविन्द,’ ईश ने मेरी बांह पकड़ी।

‘क्या?’

‘ऑस्ट्रेलिया।’ उसने कहा।

‘कम-ऑन,’ हमने इसे डिस्कस कर लिया है।

‘हां, फ्रैंड से मुलाकात अच्छी रही और अली भी ठीक है। पर वीजा के लिए तीन-तीन हजार भी जरूरत है।’

‘फ्रैंड टिकट दे रहा है।’ ईश ने कहा।

‘पर फिर भी हमें काफी खर्च करना पड़ेगा। मेरे हिसाब से दस हजार प्रति व्यक्ति हमें चाहिए। चारों के लिए चालीस हजार।’ मैंने कहा।

मैं भी जाना तो चाहता था, ‘पर मैं इस झंझट पर इतना खर्च नहीं कर सकता था। ‘यह मेरे दस हैं’ ईश ने कहा और बंडल मुझे वापिस कर दिया। ‘ऑस्ट्रेलिया फंड के लिए मेरा योगदान।’

मैंने ईश और ओमी की तरफ देखा। ये लड़के पागल हैं, सुपर पागल।

‘ये पैसे घर ले जाओ और अपने डैड को दे दो। तुम्हें इसकी जरूरत है।’

‘डैड फिर किसी और बात को लेकर झगड़ा कर लेंगे।’ ईश ने कहा।

‘यह मेरे हैं,’ ओमी ने भी अपना बंडल मुझे पकड़ा दिया।

‘कम-ऑन ओमी,’ मैंने कहा।

‘मैं पैसों के लिए यहां काम नहीं करता। मैं तुम लोगों के साथ हूं और पुजारी भी नहीं बनना चाहता। मेरे लिए यही काफी है।’

‘ठीक है फिर हम इसे बिजनैस के लिए बचा लेते हैं और...’ मेरी बात में एकदम दखल दिया गया।

‘नहीं यह धन केवल ऑस्ट्रेलिया के लिए है।’

‘हमारा बिजनैस ठीक है।’ मैंने कहा और मैंने भी अपना बंडल रख दिया।

‘ठीक है।’ ईश ने कहा ‘अब हमारे पास तीस हजार हो गए। अब अगर तुम इस बार लोन न दो तो।’

‘नहीं किसी तरह भी नहीं ईश, लोन तो वापिस करना ही होगा।’

‘हम इसे बाद में दे देंगे।’ ईश ने कहा।

‘ईश तुम सुनते नहीं हो। अगर दूसरे खर्च बढ़ गए तो क्या होगा?’

‘जितना कम हो सकेगा हम खर्च करेंगे।’

हम देपला और खकरा खा कर ही गुजारा कर लेंगे। फ्रैंड रहने का इंतजाम कर देगा। इस बारे में सोचो दोस्त, ऑस्ट्रेलियन क्रिकेट टीम’ ईश ने कहा। मैं बैठ गया और गहरी सांस ली। मेरे दोस्त, जो आर्थिक दृष्टि से नहीं देखते थे, मेरी तरफ ऐसे देख रहे थे जैसे बच्चे कैंडी का इंतजार कर रहे हों।

‘ठीक है। अच्छा यह ब्लडी ट्रैवल एजेंट कौन है, मुझे उससे बात करने दो।’ मैंने कहा।

‘हां, चलो हम चलते हैं।’ ईश ने कहा और एजेंट का नम्बर मिलाया।

‘एक हफ्ता, मैं अपना बिजनैस और नहीं छोड़ सकता और वहां रोजाना का खर्चा भी काफी होगा। मैंने कहा जैसे ही मैंने फोन पकड़ा।

ओमी ने फोन काट दिया। और कहा ‘बाद में, आओ अभी हमने नाना पार्क जाना है।’

‘दो बार। उन्होंने दो बार अयोध्या की भूमि को खोदा। दो बार’, मामा ने दो उंगलियां उठाईं।

उनकी आवाज गूंज रही थी, लाऊडस्पीकर अच्छे न होने के कारण, उनकी आवाज का प्रभाव अच्छा नहीं पड़ रहा था। मैं और ईश पहली पंक्ति के एक सिरे पर बैठे थे। ओमी स्टेज पर खड़ा था। पार्टी बैज लगाए वह अपने को विशेष समझ रहा था। बेशक वो छोटी-मोटी चीज पकड़ाने के लिए ही खड़ा था। उसकी जिम्मेदारी थी स्टेज पर



बैठे लोगों तक मिनरल वॉटर की बोतलें पहुंचाने की।

‘मामा ने पब्लिसिटी के लिए अच्छा काम किया था। दो सौ लोग थे। जब कि दूसरी पार्टी सामने काम कर रही थी उसके हिसाब से। उम्मीदवार हसमुख जी बड़े अनुभवी राजनीतिज्ञ थे और पारेख जी के पुराने सहयोगी। वे मंच के बीच में बैठे थे। मामा

हसमुख जी के लिए पांच मिनट के भाषण का आनन्द ले रहे थे, माईक के सामने।

‘बहुत पीछे 1978 में अयोध्या में सरकार ने अपने स्तर पर काम करवाया और मंदिर के सबूत हासिल किए। पर हमारी सैकुलर सरकार ने उन्हें दबा दिया। फिर 1992 में हमारे कार सेवकों को काम करने के लिए भेजा गया और उन्हें वहां कुछ प्राप्त हुआ।’

ईश ने अपनी उंगलियां चटकाई और मामा के भाषण में विराम चिन्ह लगाने लगा।

‘वहां उन्हें हरी-विष्णु के लेख मिले जिनसे प्रमाणित होता था कि प्राचीन काल में वहां मंदिर था इसमें कोई संदेह नहीं। पर सैकुलर पार्टी ने इस समाचार को भी दबा दिया। उन्होंने कार सेवकों को अपना लक्ष्य बनाया और उन्हें विध्वंसक घोषित कर दिया। पर उस ऐवीडेंस का क्या हुआ उस प्रमाण का क्या हुआ। क्या एक हिन्दु भारत में अपने लिए न्याय मांग सकता है या नहीं? हम कहां जाएं? अमरीका में?’

सबने करतल धन्नि की जैसे ही मामा स्टेज से नीचे उतरे, सबने साधुवाद किया। मामा में उम्मीदवार होने की योग्यता है, मैंने सोचा।

अब हसमुख जी माईक पर आए। उन्होंने जनता से विनती की कि वे सब आंखें बंद कर गायत्री मंत्र का तीन बार जाप करें। यह सदैव स्वार्थ सिद्ध करता है। जनता पर इसका प्रभाव पड़ा। हसमुख जी के एक भी शब्द बोलने से पहले जनता उनकी श्रद्धालु हो गई।

ओमी स्टेज से नीचे उतरा और मेरे पास आया। ‘गोविन्द मामा चाहते हैं कि तुम अली के डैड की रैली में जाओ और कुछ समाचार लाओ। और ईश क्या तुम मेरे साथ स्टेज के पीछे आ सकते हो, स्लैक्स सर्व करनी हैं।’

‘पर क्यों?’ मैं हड़बड़ाया।

‘तुम ने वादा किया था कि तुम मामा की मदद करोगे। याद है?’ ओमी ने कहा। उसका रेशमी बैज हवा में फहरा रहा था।

मैं पार्क के दूसरी तरफ चला गया था दूसरी रैली में। यहां नारंगी रंग कम और सफेद ज्यादा था।

‘गुजरात बुद्धिमानों का राज्य है।’ अली के अब्बा कह रहे थे, ‘राजनीति और धर्म अलग-अलग क्षेत्र हैं, वे इस बात को जानते हैं।’

मैं अंतिम पंक्ति में बैठ गया और आंखें घुमा कर भीड़ को देखा। मामा की रैली में जहां केवल हिन्दु थे, इसके उल्टे वहां भिन्न-भिन्न धर्मों, जातियों के लोग थे। जैसा कि मामा कहते हैं अगर सैकुलर पार्टी इतनी पक्की मुस्लिम है तो फिर यहां इतने हिन्दु क्यों बैठे हैं?

‘देवता जिनकी हम पूजा करते हैं, अपने समय में वे राजनीति से दूर रहते थे। अगर हम वास्तव में उन्हें भगवान मानते हैं तो हमें अपने धर्म को राजनीति से अलग रखना चाहिए। धर्म निजी है, जब कि राजनीति जनता की।’

अली के पिता ने कहा।

‘तुम पार्टी के सदस्य हो?’ किसी ने मुझसे पूछा। मैंने सिर न में हिलाया। मैंने अंदाजा लगाया, वह हिन्दु था।

‘तुम्हारे बारे में?’ मैंने कहा।

‘हां, पीढ़ियों से।’ उसने कहा।

अली के पिता ने मुख्य उम्मीदवार गुलाम जियार को मंच पर आमंत्रित किया। ज्यों ही वे बोलने लगे, माईक बंद हो गया, पैडस्टल फैन की ध्वनि राहट रुक गई। भीड़ में फुसफुसाहट होने लगी। क्या बिजली चली गई है? नहीं यहां इनके जेनरेटर लगे हुए हैं।

‘यह तोड़ फोड़ का मामला है, हिन्दुओं ने यह सब किया है। वातावरण में तनाव पैदा हो गया था। लोग हिन्दु रैली पर हमला करने की बातें करने लगे।’

‘हमें उन लोगों को सबक सिखाना चाहिए।’ एक हट्टा-कट्टा व्यक्ति बोला और उसने कुर्सी उठा ली। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं मामा के पास जाऊं और चेतावनी दूं।

‘बिजली आ गई है, लेडीज ऐंड जेंटलमैन प्लीज बैठ जाइए।’ अली के पिता मंच पर हाथ जोड़े आए। पंखे फिर चलने लगे

मुझे वो किसिंग चिम्पैंजीस की बात याद आ गई, समझौतावाद की। पर यहां कोई चुम्बन नहीं थे। केवल कुर्सियां फेंकी जाती हैं जब भी बिजली बंद होती है।

मैं बाहर आ गया। मैंने एक ट्रैवल एजेंट को बुलाया। हम ऑस्ट्रेलिया के लिए चार पासपोर्ट और विजा के लिए सप्लाय करना चाहते हैं। और हां मुझे खर्चा ठीक बताना।’

मैं गुलाम जियां के भाषण में वापिस आ गया। अली के पिता ने मुझे देख लिया था। वे मेरे पास आए। ‘गोविन्द भाई, आपकी बड़ी इनायत है। आप यहां कैसे आए? आपका स्वागत है।

‘आपने बहुत अच्छा बोला। आप जानते हैं ईश का अली को ऑस्ट्रेलिया ले जाने की प्लान है?’ मैंने कहा।

‘उसने मुझे बताया था, इंशाअल्लाह, आप जाओगे। अली ईशान भाई का नाम दिन में कम से कम दस बार लेता है। कभी-कभी मुझे लगता है कि ईशान भाई मेरे से ज्यादा उसका पिता है। गोवा, ऑस्ट्रेलिया, मैंने कभी उसको इंकार नहीं किया। क्या वह यहां नहीं है?’

‘वह और ओमी...’

‘दूसरी रैली में हैं, यही न? फिक्र न करो। मैं समझता हूं। तुम्हारी पसंद।’

‘मैं बिजनैसमैन हूं। मुझे राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं।’ मैंने कहा ‘अब मैं जाना चाहूंगा।’

वे मेरे साथ चलने लगे। ‘मैं भी आपके साथ चलता हूं, ईशान भाई को मिलने।’ मैं उन्हें बताना चाहता था कि मामा की रैली में उनका जाना खतरे से खाली नहीं। राजनीति बेशक टाईम-पास हो सकता है पर मामा के लिए तो यह जिन्दगी और मौत है। मैं चुप रहा जैसे ही वे मामा की रैली की तरफ चले। हसमुख भाई अभी भी जारी थे, तालियों की गूंज में। ‘अपना हाथ अपने दिल पर रखो। तुम्हें नहीं लगता तुम हिन्दुओं के साथ गलत हो रहा है? और अगर हजारों साल पहले हमारी सभ्यता और हमारा शासन सबसे अच्छा था, तो अब क्यों नहीं हो सकता?’

मामा ने हमें देख लिया था और अंगुली से संकेत किया। भीड़ में से कुछ लोगों ने मुझे और अली के पिता को देखा।

‘ओए! यह कौन है?’ एक पार्टी कार्य-कर्ता ने कहा।

भीड़ कर्कश ध्वनि से हम पर चिल्लाई।

अली के पिता को दाढ़ी बिलकुल अलग लग रही थी।

‘यहां से चले जाओ, देशद्रोही,।’ भीड़ में से एक व्यक्ति बोला।

‘हमें इसे सबक सिखाना चाहिए।’ एक और व्यक्ति ने कहा।

हसमुख जी ने बोलना बंद कर दिया।

किस्मत से वे चुप रहे।

अली के पिता ने मामा और हसमुख जी को हाथ हिलाया।

‘आप चले जाइए अली के अब्बा।’ मैं बिना उनकी ओर देखे फुसफुसाया।

ओमी भागता हुआ मेरे पास आया और मेरा हाथ पकड़ लिया। ‘तुम यह क्या झगड़ा कर रहे हो? मैंने तुम्हें जासूसी करने के लिए भेजा था और तुम दूसरे जासूस को लेकर आ गए?’

अली के पिता ने ओमी की बात सुनी और मेरी तरफ देखा। मैंने अपना सिर हिलाया। उन्होंने मुझे स्माईल दी जैसे वे सब जानते हैं और वापिस जाने के लिए मुझे।

‘मैंने इसका अंदेशा भी नहीं होने दिया।’

मैं वापिस चिल्लाया। मुझे शक है उन्होंने सुन लिया था।

## तेरह

‘पहले गोवा, अब ऑस्ट्रेलिया। तुम क्या बिजनैस करोगे?’ विद्या ने कहा। उसकी आंखें एक रुपए के नए सिक्के जितनी बड़ी।

‘फ्रैंड ने अपना वादा निभाया जब ईश ने उसे दोबारा लिखा। हमें मेल से टिकट मिल गए।’

मैंने कहा। हमारी क्लास खत्म हो गई थी और मैं उसे अपने जाने के बारे में बताना चाहता था।

‘सो, कौन से दो लोग जा रहे हैं?’ उसने कहा।

‘दो नहीं चार। अली और हम तीनों जा रहे हैं।’

मैंने कहा।

‘लकी, बम्बसा’, वह हंसी।

‘इसीलिए मैं दस दिन के लिए जा रहा हूं। पर तुम्हारी किताबें नहीं। विद्या मेरे सभी स्टूडेंट्स अच्छा काम करते हैं। प्लीज मुझे नीचा न दिखाना।’

‘तुम भी न करना।’ उसने कहा।

‘कैसे?’

‘छोड़ो, बताओ ऑस्ट्रेलिया में तुम कहां जाओगे?’

‘सिडनी, फ्रैंड वहां का रहने वाला है। अली उसकी ऐकेडमी में एक हफ्ता प्रैक्टिस करेगा। तुम्हारा भाई जब किसी बात पर अपना मन बना लेता है तो उसके लिए वह किसी भी हद तक जा सकता है।’

‘बिकुल मेरे से उलट। मैं किसी बात पर फोकस नहीं कर सकती। मुझे लगता है मैं प्रवेश परीक्षा पास नहीं कर पाऊंगी। और मुझे कालेज में भी इसी नरक जैसे घर में रहना होगा और फिर मेरी शादी गुजरात के किसी बैकवर्ड पार्ट में किसी ऐसे ही नरक-घर में हो जाएगी।’

‘गुजरात बैकवर्ड नहीं है।’ मैंने विरोध किया।

‘हो सकता है मैं बहुत फारवर्ड होंऊं?’

हमने फिर आंखें बन्द कर लीं। प्रवेश-परीक्षा में विद्या जरूर पास हो जाएगी। मैंने उसकी गार्ड की किताबें खोली।

‘पढ़ाई इतनी बोरिंग क्यों होती है? तुम्हें वो अब क्यों करना पड़ता है जिसमें तुम्हारी कोई दिलचस्पी नहीं होती जिन्दगी में कुछ बनने के लिए?’

‘विद्या, कोई दार्शनिक प्रश्न नहीं। मैथ्स के सवाल केवल, हां।’ मैंने कहा और जाने के लिए खड़ा हो गया।

‘क्या तुम ऑस्ट्रेलिया से मेरे लिए कुछ लाओगे?’

‘अपने भाई से कहना! वह ला देगा जो तुम चाहती हो।’ मैंने किताबें ठीक कीं। किसी भी तरह नहीं। मैं जरूरत से ज्यादा खर्च नहीं करूंगा। ‘बात यह है कि हमारा बजट थोड़ा है।’ मैंने स्पष्टीकरण दिया।

उसने सिर हिलाया जैसे वह समझती है यह बात।

‘तो, क्या तुम मुझे मिस करोगे?’

मैं नीचे देखता रहा।

‘क्या इसमें भी तुम्हारा बजट है कि तुम कितने लोगों को मिस कर सकते हो?’ उसने कहा।

‘विद्या अपना काम कर लेना मैथ्स का, फोकस।’

मैंने कहा और बाहर निकल आया।

‘आप लोग थक गए होंगे या प्रैक्टिस करना चाहते हो?’ फ्रैड के पहले शब्द थे जब वह एक हवाई अड्डे पर हमें लेने आया था।

‘मेरा बैड कहां है?’ मैं पूछना चाहता था।

हमने अहमदाबाद से बम्बई तक पूरी रात सफर किया था ट्रेन में। फिर छः घंटे प्रतीक्षा की, फिर चौदह घंटे की फ्लाईट ली सिडनी के लिए सिंगापुर होते हुए। तीस घंटे के सफर ने बुरा हाल कर दिया था और अब मैं सोना चाहता था।

‘ओह, हमारा प्रैक्टिस का टाइम फिक्स हो गया है।’ ईश सिडनी की गलियां देख रहा था! सुबह सात बजे जॉर्जस जॉर्जिंग कर रहे थे। कॉफी की दुकानें थी, साथ में खाने की चीजें।

मैंने बैग में रखे अपने खकरा को टटोला। हम यहां इस शहर में केक खाना अफोर्ड नहीं कर सकते।

‘मैं सुबह एकेडमी-ग्राउंड में चला जाता हूं।’ फ्रैड ने कहा, गैस जलाते हुए। ‘मैंने हॉस्टल में तुम्हारा इंतजाम कर दिया है। कुछ नाश्ता कर लो। शाम को फिलीप तुम्हें प्रैक्टिस के लिए ले जाएगा।’

‘लड़को, यह अली है। वह एक बैट्समैन है।’ फ्रैड ने दूसरे खिलाड़ियों को बताया जो प्रैक्टिस के लिए आए हुए थे। फिलिप के अतिरिक्त वहां एक थोड़ा मोटा सा लड़का था, पीटर और एक चश्माधारी लड़का स्टीव। बाकी लड़कों के नाम मुझे याद नहीं। फ्रैड ने कहा; पांच चक्कर सबके।

बाउंडरी लाइन के साथ-साथ, कोई शार्ट-कट नहीं।’

ऑस्ट्रेलियन प्रैक्टिस के पहले दो घंटे मौत की प्रैक्टिस जैसे थे। एकेडमी के पांच चक्करों का मतलब था नाना पार्क के बीस और बैंक के पिछले ग्राउंड के पचास चक्कर। दौड़ के बाद हमने अनगिनत डंड-बैठकें तथा और कसरतें की। तीन-तीन प्रशिक्षक पांच-पांच बच्चों की निगरानी कर रहे थे। पहली बार मैं दर्द से कराहा। एक भागता हुआ मेरे पास आया। उसने कहा ‘अगली बार यह ड्रामा न करना दोस्त।’ इतने कठिन अभ्यास के बाद हम पिच पर आए। मैंने उन्हें बताया कि मैं खिलाड़ी नहीं हूं। पर मैंने फील्ड करना है किसी भी तरह।

‘यहां बॉल है।’ फ्रैड ने अली को बॉल दी।

‘वह बाउलिंग नहीं करता,’ ईश ने कहा।

‘मैं जानता हूँ उसे बर्ल करने दो।’

फ्रैड ने ताली बजाई।

फिलिप बाउंडरी पर मेरे साथ ही खड़ा हो गया फील्डिंग के लिए।

‘यह बर्ल क्या होता है?’ मैंने उससे पूछा।

फिलिप हंसा, ‘इसका मतलब है उसे कोशिश करने दो।’

ईश को विकेट-कीपर बनने को कहा गया, पर फ्रैड ने उसे स्लिप पर रहने को ही कहा। इन स्टेट-लेवल के खिलाड़ियों के लिए अली की बाउलिंग कोई मैच नहीं रखती थी। रोजर ने कई बार बॉल को बाउंडरी की तरफ जोर से मारा। एक बार बॉल मेरे और फिलिप के बीच में आ गई। और हमारे लिए कठिन हो गया इसे पकड़ना। ‘रैटल सुअर डैगज, मेट’ एक और फील्डर मुझ पर चिल्लाया। कोई भी मुझे बताने वाला नहीं था कि इस का अर्थ है ‘जल्दी करो’।

मैंने बॉल वापिस फेंक दी। मैं यहां इस ऑस्ट्रेलियन ग्राउंड के बीच क्या कर रहा हूँ।

ज्यों ज्यों दिन बीतता गया मुझे ऑस्ट्रेलियन शब्दों का शान होता रहा। ‘ओन्या’ का मतलब था ‘तुमने अच्छा किया।’ ‘मतलब अच्छा खेला।’ एक आसान बॉल के लिए ‘पीस ऑफ पिच’ जबकि अच्छी के लिए ‘पैकड ए वैलोप’। मच्छरों के लिए ‘मूजीज’ और सॉफ्ट ट्रिंक के लिए ‘कोल्डीज’। जब मैंने एक ब्रेक लिया तो फिलिप फिर ऑस्ट्रेलियन में बोला ‘यू गॉट टू सिफोन द पिथौन, इज इट?’

अंधेरा होने लगा था।

‘पैक-अप टाईम है’ फ्रैड ने कहा जबकि अली ने अभी तक बैटिंग नहीं की थी। फ्रैड आया, ईश के पास कमरे में और आंखों से ही पूछा, कैसे हो?

‘मैं ठीक हूँ’ ईश ने कहा। ओमी और अली क्लब से बाहर सैर करने गए हुए थे।

‘फेयर डिनकम?’

ईश लकड़ी के स्कूल पर बैठ गया था, उसे देखने लगा।

‘वह कह रहा है कि तुम सच कह रहे हो’ मैंने नई भाषा को समझने की कला दिखाई।

‘कल प्रैक्टिस कितने बजे है, फ्रैड, हो सके तो इंग्लिश में बताना।’ ईश ने कहा। ‘यू ए विंगर?’ फ्रैड ने कहा।

‘विंग का मतलब....’ मैंने कहा जैसे ही ईश ने दखल दिया।

‘मैं जानता हूँ कि विन्ज का मतलब क्या होता है, क्या मुझे कोई बता सकता है कि एक बल्लेबाज को हजारों मील दूर से बुलाकर फिर भी उससे बल्लेबाजी न करवाना। फ्रैड मुस्कुराया ‘ओह तो तुम चाहते थे कि तुम्हारी छोटी खोज बल्लेबाजी करो। किसलिये ताकि वह कोई जड़ सके। तुम चाहते हो कि बच्चा पहले दिन से ही चमकने लगे।’

‘नहीं, मेरा यह.....’ दोस्त मैं बहुत सी योग्यता देखता हूँ इसमें। हर ए. आई. एस. वजीफा लेने वाला बच्चा अपने आप पर टिकट रखता है। अगर मैं उनका अहं नहीं तोड़ता तो वे सारा जीवन हूनस ही रहते। खिलाड़ी फिल्मी सितारे नहीं होते। हालांकि तुम्हारा देश उनसे ऐसा ही व्यवहार करता है।’

‘लेकिन फंड.....।’

‘तुम भारतीयों के पास अच्छा कौशल है लेकिन प्रशिक्षण. ... उस पर मेरा विश्वास करो दोस्त।’

‘हम यहां केवल एक सप्ताह के लिये हैं।’ ईश असहाय सा बोला।

‘मैं इस सप्ताह को उत्पादक बना दूंगा। लेकिन आज का अध्याय बहुत महत्वपूर्ण था। अगर वह नम्र नहीं है तो, वो ज्यादा दिन नहीं चलेगा। फ्रैड ने अपनी घड़ी की तरफ देखते हुए कहा। ‘कभी मुझे मिस अस का वायदा करो तो मैं दुल्हन की नाईटी की तरह खुला हूँ।’

‘चियर्स’ सब चिल्लाये हमने अपनी फोर एक्स बीयर की भूरे रंग की बोतलें जो कि फोर एक्स के रूप में भी जानी जाती हैं, को ठनठनाया।

‘हाय’ हैजल ने जो कि हमारी शराब परोसने वाली थी फ्रैड से लिपटते हुए कहा। ‘ओह’... फ्रैड के विद्यार्थियों ने उसे देखते हुए कहा।

‘कोई फायदा नहीं दोस्त मिसअस मुझे किसी और की तरफ देखने की आशा नहीं देगी। लेकिन तुम सभी कुंवारे हो। भारत में तुम सब के आस-पास सुन्दर लड़कियां होंगी।’

हर व्यक्ति हमारी तरफ देखने लगा। ‘हमारी कोई महिला मित्र नहीं है’ ओमी बोला।

‘लेकिन क्यों? भारतीय स्त्रियां हॉट हैं?’ मिशैल ने अपनी आंखों को मटकाते हुए कहा।

‘काम में व्यस्त रहता हूँ,’ मैंने कहा।

‘व्यस्त’ कभी ऐसी आश्चर्यजनक बात नहीं सुनी। ‘रोजर ने कहा। सभी हंसने लगे।

उन चार सुन्दरियों को देखो मिशैल बोला जैसे ही चार लड़कियाँ अन्दर दाखिल हुई। ब्राउन रंग के कपड़े पहने वह लड़की बुरी नहीं लग रही। मिशैल ने कहा “एन. सी. आर -5

‘एन. सी. आर. - 10’ रोजर ने कहा

‘और नीले रंग वाली’ फिलिप बोला

वह एन. सी. आर. है रोजर बोला।

सभी हंस पड़े।

‘यह एन. सी. आर क्या है?’ मैंने पूछा।

एन. सी. आर. है आपको कितने कैन की आवश्यकता है। आपको कितने बीयर शराब की आवश्यकता है एक लड़की के साथ के लिये फ्रैड ने कहा।

मिशैल एक बार एक बदसूरत लड़की को डेट पर ले गया। उसने माना यह एनसीआर 40 था। रोजर ने कहा। सभी खिलखिलाए।

‘यह लो, भूखे लड़कों’ हैसल ने-प्लेटें पकड़ते हुए छेड़खानी के अन्दाज में कहा। ऑस्ट्रेलियन ज्यादा मीट खाते हैं। हमें पिजा पर ही सन्तोष करना पड़ा क्योंकि यहीं केवल जानी पहचानी डिश थी।

‘तुम लोगों को ज्यादा प्रोटीन खाने चाहिये।’ मिशैल ने खाते हुए कहा।

‘मैं हर रोज दो लीटर दूध पीता हूं।’ ओमी बोला।

ईश, फ्रैड के साथ बैठा था। मैं दोनों की बात-चीत नहीं सुन सकता था लेकिन मैंने ईश को कई बार सिर हिलाते देखा। मैंने ऑस्ट्रेलियनस की कहानियों को छोड़कर ईश की तरफ रुख किया।

‘अगर तुम बाउलर हो और बॉल तुम्हारे हाथ में है तब तुम खेल का नियन्त्रण कर रहे हो। तुम्हें बल्लेबाज को यह अहसास करवाना चाहिये कि बॉस कौन है।’ फ्रैड कह रहा था। ‘अली के लिये भी यही बात है उसे शॉट मारने की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता इस बात की है कि दूसरी टीम को बतायें कि बॉस कौन है।’

‘सही बात’ ईश बोला।

‘मेरे, खिलाड़ी अली को गेंद करने के नये तरीके ढूँढ लेंगे एक निश्चयी मन, एक उपहार को नियन्त्रित कर सकता है। एक विजेता के पास दोनों ही होते हैं, ईश ने गर्दन हिलाई।

‘हाय गोविन्द’ फ्रैड ने मुझे पहचान कर बोला। ‘तुम मूल टिप नहीं चाहते हम यहां कोच के बारे में बोरियत बातें कर रहे हैं।’

ईश का सीना गर्व से फूल गया जब फ्रैड ने उसे बराबरी का स्तर दिया।

मैंने कुछ याद करते हुए कहा, ‘तुमने कल किसी वजीफे के बारे में बताया था, वो क्या था? सच्चाई में ऑस्ट्रेलिया में खेलों में किस तरह के कार्य होते हैं।’

तुम जानना चाहते हो ऑस्ट्रेलियनस हमेशा क्यों जीतते हैं?

‘लेकिन हमेशा नहीं जीतते।’ ईश बोला हमेशा नहीं, हमें प्रतिद्वंद्वियों पर धाक जमाना अच्छा लगता है पर साथ ही समानता का खेल पसंद है। और फिर यह जब एक चुनौती हो तो यह आप में से सर्वोत्तम निकाल कर लाता है।

‘हाँ चाहे हर बार नहीं पर फिर भी ऑस्ट्रेलिया काफी जीतता है। हर ओलंपिक्स में ऑस्ट्रेलिया बहुत से मैडल जीतता है। क्रिकेट में भी उन का वर्चस्व कायम है। यह क्यों है, फ्रैड मैंने पूछा।

‘दोस्त, इसके बहुत से कारण हैं। लेकिन यह हमेशा इस तरह नहीं होता।’ फ्रैड ने पानी का घूंट पीते हुए कहा।

सच्चाई यह है कि 1976 में मॉन्ट्रियल की ओलंपिक खेलों में ऑस्ट्रेलिया ने एक भी पदक नहीं जीता था।

‘लेकिन पिछले साल तुम्हारा प्रदर्शन अच्छा था।’ ईश बोला।

‘हां’ सिडनी, 2000 में ऑस्ट्रेलिया ने 56 पदक जीते थे और वह केवल अमेरिका, रूस और चीन से ही पीछे था। इन सभी देशों की जनसंख्या दस गुणा ज्यादा थी।’ वह कुछ देर चुप रहा फिर बोला, ‘ऑस्ट्रेलियनस ने मॉन्ट्रियल की असफलता को एक राष्ट्रीय-अपमान के रूप में लिया। इसलिये सरकार ने ऑस्ट्रेलियन स्पोर्ट संस्थान अथवा ए. आई. एस. की स्थापना की और दुनिया के बेहतरीन सॉलरशिप कार्यक्रमों की शुरुआत की।’

फ्रैड ने गिलास खाली किया और फिर कहने लगा, ‘आज ए. आई. एस. के पास सैकड़ों कर्मचारी हैं जिन में कोच, डाक्टर और फिजी शामिल है। उन्हें 200 मिलियन डॉलर का फंड मिलता है और उनके पास शानदार सुविधाएं

भी हैं। वे एक वर्ष में 700 वजीफे देते हैं।' फ्रैंड ने स्पेगेटी की प्लेट मेरी तरफ बढ़ाई।

मैंने यह सब रिबन जैसे पास्ता के साथ उलझते हुए सुना। मैंने हिसाब लगाया अगर आस्ट्रेलिया में 700 वजीफे दो करोड़ लोगों के लिये हैं तो भारत में इसके बराबर कितने वजीफे होंगे। यह एक वर्ष में 35 हजार के बराबर था।

‘यह वजीफा क्या है? पैसा?’ ईश ने जानना चाहा।

‘केवल पैसा नहीं, दोस्त यहां हर चीज का वजीफा है। दक्ष कोचिंग, रहने की व्यवस्था, खेलों की स्पर्धा में जाने का वजीफा, खेल, विज्ञान, दवाइयां, आप नाम लीजिये। सबसे बेहतर भाग उस समुदाय के लिये यह है कि उनकी एक ही खेल के प्रति वचनबद्धता है। मैं इस भावना को ध्यान नहीं कर सकता।’ फ्रैंड चमकती आंखों के साथ बोला।

‘मैं इस भावना को जानता हूं।’ ईश ने कहा। हालांकि ईश की आंखें नीली नहीं थीं पर वे उसकी आंखों के समान ही चमक रही थीं।

परिवेशिका ने हमारी प्लेटें उठाई जैसे ही हमने अपना खाना खत्म किया।

‘वजीफा के कार्यक्रम से आने वाले कोई प्रसिद्ध खिलाड़ी।’

हीपस, माईकल बेवन, एडम गिलक्रिस्ट, जस्टिन लेगर, डेमिन मार्टिन, ग्लैन मैकग्रेथ, रिकी पोंटिंग, एंडीव सैमड्स, शेनवार्न।

‘क्या बात कर रहे हो? यह सब महान क्रिकेट खिलाड़ी हैं।’ ईश ने कहा।

‘महान-अच्छा शब्द है।’ फ्रैंड ने हंसकर कहा, ‘आशा करता हूं मैं भी एक दिन वहां पहुंचूंगा।’

‘तुम्हारे पास भी वजीफा है।’ मैंने कहा।

फ्रैंड ने गर्दन हिलाई।

‘फ्रैंड तब तुम महान हो।’ ईश ने कहा।

‘नहीं, मैं केवल आरम्भ कर रहा हूँ। और लड़को, मैं तुम्हें बताना चाहता हूँ कि सारी महानता की बातें दूरगामी हैं। तुम थोड़ी सी योग्यता दिखाओ, इसे लागू करो और अच्छा अपने आप होता चला जाता है। इस आशय से ऑस्ट्रेलिया महान लोगों को पैदा कर रहा है।’

‘और क्या हम नहीं कर पा रहे?’ ईश ने पूछा।

‘बेशक, तुम कर सकते हो, यद्यपि वर्तमान में तुम प्रशिक्षण की अपेक्षा योग्यता पर विश्वास कर रहे हो। तुम्हारे पास अधिक जनसंख्या है और उन में से कुछ पैदाइशी योग्य है जैसे कि तेन्दुलकर और कह सकते हैं अली जैसे।’

‘हां,’ ईश ने अपनी हथेलियों को मसलते हुए कहा, ‘सोचकर देखो कि क्या हो अगर इस तरह का प्रशिक्षण भारत में मिल सकता हो?’

‘क्रिकेट खत्म हो जायेगी। भारत का वर्चस्व होगा और हम जैसे कहीं दिखाई नहीं देंगे। कम से कम हम अभी अपने आपको "महान" कह सकते हैं। फ्रैंड ने आखिरी शब्द पर अपनी अंगुलियां घुमाते हुए कहा।

अगले दिन अली ने बल्लेबाजी की। हर गेंद-बाज को उसके छक्कों का सामना करना पड़ा। हालांकि अली ने अपने आप को संयत रखा और सही खेल खेला। उसने अर्ध शतक कई बार बनाया। शुक्रवार की सुबह, अली ने एक रक्षात्मक शॉट खेला। गेंद अधिक दूर नहीं गई, अली ने क्रीज पर ही रहने का निर्णय लिया।

‘भागो, यहां एक रन मिल सकता है।’ अली सीमा रेखा से चिल्लाया।

‘भागो अली’ ईश फिर बोला अली निर्देश मिलने पर हैरान हो गया, फिर भी भागा।

‘तेजी से’ ईश चिल्लाया, ‘सोते न रहो।’

अली और तेज भागा जैसे ही मैदान रक्षक ने बॉल गेंदबाज को वापिस की। “कूदो” ईश ने कहा। अली ने छलांग लगाई वह क्रीज में आ गया, पर अपने पूर्ण शरीर के वजन के साथ अपनी दाहिनी एड़ी के भार पर गिर गया। हर कोई उसकी तरफ भागा। वह मैदान में पड़ा अपने दांतों को किटकिटा रहा था और अपने आसुओं को रोकने की



कोशिश रहा था।

‘ओह, उठो। नाटक के लिये कोई समय नहीं।’ ईश ने कहा।

‘आराम से दोस्त’, फ्रैड ने ईश को कहा और फिजिओ को इशारा किया। कुछ ही मिनटों में डाक्टर के सहयोगी पहुंच गए और अली को सूजी हुई एंडी पर बर्फ रखी। ‘किस्मत वाले हो, हड्डी नहीं टूटी, न ही इधर-उधर हुई है’, लगता है स्नायु इधर उधर हो गये हैं।’ फिजियों ने दर्द निवारक गोलियां देते व पट्टियां बांधते हुए कहा। अली फिजियों पर झुक गया जब उसने खड़े होने की कोशिश की। ‘दो दिन के लिये आराम करो, तुम अच्छे हो जाओगे।’

‘चिन्ता न करो, यह कुछ ही घण्टों में ठीक हो जायेगा।’ ईश ने एक खिसियाता सा भाव लिये हुये कहा। ग्लानि उस की आंखों में दिख रही थी।

‘सभी यहां आओ और बैठो,’ फ्रैड ने ताली बजाई।

हम फ्रैड के आस-पास चक्कर बना कर बैठ गये।

‘तुम बड़े लड़के हो और सशक्त खिलाड़ी हो। तुम अपना समस्त देना चाहते हो। लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि तुम अपने शरीर की सीमाओं का भी ध्यान रखो। मैं देता हूं, ईश ने बोलने की कोशिश करते हुए कहा। लेकिन वहां एक रन था और यही है जो हम भारतीय खो देते हैं। हम छलांग लगाना नहीं चाहते। हम खतरा लेना नहीं चाहते।’

‘खेल मर्दाना ताकत दिखाने के लिये नहीं है तुम एक क्षण में यह बात नहीं भूल सकते।’

‘भूलना, क्या।’ मैंने कहा।

‘भूलना यह कि तुम्हारा एक नाजुक शरीर है, इसे खो दोगे तो कहीं के नहीं रहोगे। तुम्हें इसकी सम्भाल रखनी चाहिये। और ईश, तुम्हें अपने विद्यार्थियों का ख्याल रखना चाहिए।’

ईश ने अपना सिर शर्म से झुका लिया।

‘मैंने अपना कैरियर शुरू ही किया था जब मेरी कमर दर्द ने मेरे खेल को खत्म तक कर दिया था।’

फ्रैड ने कहा मैं किसी दुकान में अपना बाकी का जीवन सूट बेचते हुए गुजारता क्योंकि वही कार्य था जो मुझे मिल सकता था।’

उसने अपनी बात जारी रखी ‘मैंने भी यही गलती की थी मैं खेल के लिए अपने आप को मारना चाहता था, मैं उस दिन खेलूंगा। लेकिन अगर तुम लम्बा कैरियर चाहते हो तो दूर की सोचो। हां, जोश महत्वपूर्ण है लेकिन मैच के समय अपने आप को संयत रखो।’

ईश ने बाद में फ्रैड से माफी मांगी।

‘मैं नहीं चाहता था कि अली को चोट लगे।’

‘बच्चा अच्छा है, मेरे पास तुम्हारे लिये एक अच्छा समाचार है, तुम शनिवार शाम को जा रहे हो।’

ईश ने कहा, ‘हां दो दिनों के भीतर, विश्वास नहीं होता एक सप्ताह इतनी जल्दी बीत गया।’

‘रविवार का नाश्ता मेरे साथ करना मैं तुम्हें किसी विशिष्ट व्यक्ति से मिलवाना चाहता हूं।’

बोन्डी बीच इतना सुन्दर है कि इसे अपनी स्वयं की एक कॉफी मेज पुस्तक की आवश्यकता है। ऑस्ट्रेलिया के आसमान का रंग, भारतीय आसमान से भिन्न है। यह वास्तव में उस प्रकार लगता है जैसा कि हम रंगों की दुकान पर नीले आसमानी रंग को देखते हैं। यह इतना कड़क है कि आपकी आंखें दर्द करने लगती हैं। यहां कोई प्रदूषण नहीं है और मीलों तक समुद्र को देखा जा सकता है। किनारों पर प्रशांत महासागर रेत के साथ मिल कर लहरें पैदा करता है। ये इतनी मजबूत होती है कि आप इन पर चल सकते हैं फिर भी इतनी नरम कि आपको आराम पहुंचा दे।

लेकिन उन गर्मियों में बीच का सबसे अच्छा भाग वहां के लोग थे जो कि पुरुष नहीं थे। हां ये वे औरतें थीं जो शानदार और ऊपरी वस्त्रों के बिना थीं। और अगर आप ने जीवन में इससे पहले कभी टॉपलैस औरत को नहीं देखा

तो यह स्थान आपके लिये सर्वोत्तम है।

ईश ने सीटी बजाई। 'यहां सैकड़ों की तादाद में औरते हैं और एक से बढ़ कर एक।'

यह सच था, ऐसा महसूस हो रहा था मानो दुनिया की सभी औरतों ने बोन्डी में मिलने का निर्णय लिया था।

'तुम छाता चाहते हो,' मैंने कहा जैसे हो हम उस शानदार दृश्य की जगह पर पहुंचे। छः टॉपलैस औरतें फ्रिसबी खेल रही थीं।

ओमी ने इशारा करते हुए कहा 'तुम उनके नि... देख सकते हो।'

'यहां सौ के करीब औरतें हैं।' इसलिये हमें देखने के लिये सौ स्तन हैं। मैंने कहा,

'और मुझे हर स्थान पर हिसाब-किताब लगाने के लिये उन्होंने छोड़ा।'

उस स्थान पर बड़ा होना जहां बिना बाबू का ब्लाउज एक दृश्य खड़ा कर देता था। 'टॉप ऑफ' एक एम. बी. ए. के शब्दों में एक शब्दरूपावली है।

'मैं उनके साथ नहीं खेल सकता, क्योंकि मैं कभी भी फ्रिसबी की तरफ नहीं देखता।' ईश ने कहा।

मैंने कहा 'उस भूरे बालों वाली को देखो वह भारी भरकम है।'

ओमी ने कहा, 'यह वह है जैसा स्वर्ग है मेरी आंखें झपकने के अभाव में दुखने लगीं हैं।'

यह हास्यास्पद था कि कुछ ही मिनटों में नंगे स्तन दिनचर्या जैसे लगने लगे। मेरा मानना है कि आपको अच्छी वस्तुओं की जल्दी आदत पड़ जाती है। मैं एक समय में सौ टॉपलैस महिलाओं को देखने की अपेक्षा एक निर्वस्त्र औरत को प्रतिदिन सौ दिन तक देखना चाहूंगा। मैं रेत पर बैठ गया। ईश और ओमी जल्दी समुद्र में तैरने चले गये और अगर देखना है कि निर्वस्त्र औरतें और कितनी शानदार लग सकती हैं तो गीले हो जाइये। हां, हम बीमार प्रवृत्ति के लोग हैं।

मैंने एक शानदार औरत को अपने करीब एक छतरी के नीचे बैठे देखा। उसने अपनी बिकनी के ऊपर एक कमीज डाल रखी थी और उसकी पीठ मेरी तरफ थी। उसके लम्बे काले बाल उसकी कमर पर गिरे हुए थे। उसने अपने बालों में कुछ लगाया। शायद तेल अथवा लोशन जो अक्सर लड़कियां अपनी मौजूदगी को दिखाने के लिये प्रयोग करती हैं।

मेरे अन्दर कुछ होने लगा। मैंने ऐसा महसूस किया जैसे कोई मेरी छाती दबा रहा है। वह औरत विद्या की तरह अपने बालों में मालिश कर रही थी। मैंने देखा ओमी और ईश कुछ दूरी पर पानी में खेल रहे थे। वे एक दूसरे को धक्का मार कर हंस रहे थे। तरह-तरह के विचार मेरे मन में आने लगे जैसे उसके बालों में हाथ फेरना। क्या यह अच्छा नहीं होता कि विद्या यहां होती। क्या ये वहीं नहीं है जो वह सबसे ज्यादा चाहती। आजादी सब चीजों से। क्या उसे बोन्डी भावना नहीं आ सकती थी, यद्यपि मैं उसे मार देता, अगर वह बिकनी में घूमती। एक मिनट ठहरो, या मैं मार देता या उसका भाई ईश उसे मार देता। मैं क्यों चिन्ता करूं! लेकिन मैं कहूंगा कि मैं मार देता और मैं उसके बारे में क्यों सोच रहा हूं जबकि यहां अनगिनत निर्वस्त्र औरतें मुझ आकर्षित करने के लिये हैं और क्यों मैं सोने से पहले उसके बारे में सोचता हूं और मैं अपने मन को इस प्रकार के बेवफाकूफाना सवालों को पूछने से रोक क्यों नहीं सकता। अगर आप हजारों मील दूर नग्न स्तनों के बीच में होते हुये भी किसी लड़की को याद कर रहे हैं तो कुछ न कुछ गलत है। मैंने अपनी डायरी निकाली जो मैं हर समय अपने साथ लेकर चलता था। मैं अगले तीन महीनों का बजट बनाना चाहता था। मुझे एक लम्बा बाल मिला जो ना मेरा, ना ओमी का और ना ईश का था। मैं केवल एक ही व्यक्ति को जानता हूं जिसके लम्बे बाल हैं। मैंने डायरी उसे भुलाने के लिये खोली थी लेकिन इससे वो और भी ज्यादा याद आने लगी।

ओमी भागता हुआ मेरे पास आया। पानी उसके शरीर से मेरी टांगों पर गिरा, मैंने अपनी डायरी बन्द कर दी।

उसने अपनी सांसों पर काबू पाते हुए कहा, 'पानी मजेदार है, इसके अन्दर आओ।'

मैंने कहा 'मुझे काम है मैंने एक फोन करना है।'

'किसे?'

मैंने-उससे आंखें मिलाये बिना कहा, “पूर्तिकर्ता को।

‘यहां से क्या महंगा नहीं होगा।’

‘छोटी बात करूंगा, मुझे कुछ सिक्कों की आवश्यकता है। मैंने सिक्कों को लेते हुए कहा।

‘तुम बोन्डी पर कार्य कर रहे हो, ‘कुछ भी हो मैं छलांग लगाने के लिये दोबारा जा रहा हूँ।’ ओमी ने वापस समुद्र की ओर भागते हुए कहा।

मैंने अपना सामान इकट्ठा किया और बीच की दुकानों की तरफ चल पड़ा, मैंने वहां एक सार्वजनिक फोन पाया। मैंने उसका नम्बर मिलाया।

## चौदह

फोन दो बार बजा। मैंने उसे काट दिया। मैं बूथ से बाहर आने के बारे में सोच रहा था, मैंने सिक्का फिर डाला और नम्बर मिलाया।

‘हैलो! ईशान भैया’ विद्या ने फोन उठाकर कहा।

फोन दो डालर के बराबर के सिक्के खा गया। मैंने फोन फिर काट दिया।

लेकिन मैं कर क्या रहा था!

मैंने नये सिक्कों के साथ फिर नम्बर मिलाया। उसने फोन तुरन्त उठाया।

‘भैया, क्या आप मुझे सुन सकते हो?’

मैंने एक कमाल की चीज की। मैंने लम्बी सांस ली। मैं एक असंगत बात कर रहा था लेकिन मैं इससे कुछ अच्छा कह भी नहीं सकता था।

‘गोविन्द!’, उसने सावधानीपूर्वक कहा।

क्या उसने मुझे मेरी सांस द्वारा पहचान लिया। ‘इस बच्चे के साथ यह क्या है। ‘हैलो’ मैं अपने आपको ज्यादा देर नहीं रोक सकता था।

‘गोविन्द’ मैंने अन्तर्राष्ट्रीय नम्बर देखा। तो बताओ?

टेलीफोन पर कहे जाने वाले सभी वाक्यों में से मैं, मुझे बताइये को सबसे ज्यादा नफ़रत करता हूँ। क्या मुझे कुछ कहना पड़ेगा क्योंकि मैंने टेलिफोन मिलाया है। ‘अच्छा मैं....’

‘आस्ट्रेलिया कैसा है? मजे कर रहे हो? मुझे बताओ?’

मैं उसे मार सकता था अगर वो ‘मुझे बताओ’ फिर प्रयोग मैं लाती। लेकिन शायद मुझे उसे कुछ बताना चाहिये मैंने सोचा।

मैंने कहा, ‘हां, यह अच्छा है, तुम इस स्थान को पसन्द करोगी।’

‘कौन सा स्थान? मुझे और बताओ, तुम अब कहां हो?’

‘बोन्डी बीच। यह एक मनमोहक स्थान है। मैंने कहा, बेशक मैंने मूर्खतापूर्ण व्याख्या की। लेकिन आप उस लड़की को फोन करने की कोशिश कर रहे हैं जिसे आपको पहली बार ही फोन नहीं करना चाहिये था।

मेरी घबराहट को बढ़ाते हुए फोन तीव्र गति से सिक्के खत्म कर रहा था और सिक्कों को डालना जारी रखा, क्योंकि फोन हर, तीस सेकेन्ड में एक डॉलर ले रहा था। ‘वह! मैंने अपने जीवन में सचमुच का बीच नहीं देखा यह कैसा है। क्या पानी कभी खत्म नहीं होता? क्या आप क्षितिज तक देख सकते हैं?’

‘हां आसमान की कोई सीमा नहीं। बेवकूफ उसके कहे वाक्यों को दोहराने के अतिरिक्त भी कुछ कहो।’

‘ईश और ओमी कहां है?’

मैंने कहा ‘वे पानी में हैं, और मैं बूथ में हूँ।’

उसने फिर ऐसा सवाल किया जो मैं नहीं चाहता था कि वो पूछे।

‘तो, तुमने कैसे फोन किया।’

‘कुछ खास नहीं। तैयारी कैसी चल रही है? संगठन बहुत महत्वपूर्ण है।’

‘तुमने मुझे संगठन के बारे में पूछने के लिये फोन किया है।’

‘हां ठीक है और दूसरे....’

‘क्या तुम मुझे याद करते हो।’

‘विद्या’

‘क्या?’

‘बेवकूफी के सवाल मत करो’

‘मैं तुम्हें बहुत याद करती हूँ। बहुत ज्यादा।’

उसने कहा। उसकी आवाज बहुत भारी हो गई थी।

मैंने कहा, ओह. .. अच्छा ठीक है। ‘कुछ और भी बोलो निरर्थक, एकाक्षर के चैम्पियन।’

‘हां, लेकिन एक शिक्षक के रूप में नहीं, एक अच्छे दोस्त के रूप में।’ एक ‘बहुत अच्छा मित्र’ भारतीय लड़कियों के लिए एक खतरनाक वर्ग है। यहां से आप तीव्र गति से उन्नति कर सकते हैं, और अगर आप ने गलत तरीके से किया तो आप निम्न वर्ग जो कि भारतीय औरतों ने खोजा है राखी भाई। राखी भाई का असल में मतलब है ‘तू मेरे साथ बात कर सकते हो लेकिन बोर आदमी, इससे ज्यादा कुछ करने की सोचना भी मत। मेरे मन के कोने से आवाज उठी मूर्ख आदमी उसे बताओ कि तुम उसे याद करते हो अन्यथा सारा जीवन राखियां लेते रह जाओगे।’

‘अगर तुम यहां होती सिडनी में और भी आनन्द आता।’

‘वाह, यह तुमने मुझसे सबसे बढ़िया बात कही है।’

मैं चुप रहा। क्योंकि जब आप कुछ अच्छा कहते हैं तो जल्दबाजी में और बोल कर उस अच्छी लाइन को बर्बाद न करें।

मैंने कहा, ‘क्या मैं तुम्हारे लिये यहां से कुछ लेकर आ सकता हूं।’

उसने कहा, ‘बजट कम है, क्या नहीं।’

‘हां, लेकिन थोड़ा बहुत लाने में कुछ फर्क नहीं पड़ेगा’ मैंने कहा।

‘मुझे एक विचार आया है। तुम जिस बीच पर अभी हो वहां से थोड़ी रेत उठा लाना।’

‘इस ढंग से मुझे सिडनी का कुछ भाग मिल जायेगा।’

‘रेत’। यह एक सनकी अनुरोध था। कम से कम यह कम कीमत की, वास्तव में मुफ्त थी।

मैंने पूछा, ‘सचमुच।’

‘हां, मेरे लिये एक माचिस की डिब्बी में रेत भर कर ले आना और अगर जगह खाली हो तो उसमें जरा सी भावनायें डाल देना।’

फोन ने मुझे इशारा किया कि और पैसे डालो, अन्यथा मेरी पहली रोमान्टिक बातचीत खत्म हो जायेगी। लेकिन मेरे पास सिक्के नहीं बचे थे। मैंने कहा, ‘सुनो, मुझे अब जाना पड़ेगा क्योंकि मेरे पास और सिक्के नहीं हैं।’ ‘अच्छा जल्दी वापिस आना। यहां तुम्हें कोई याद करता है।’

‘मैं तीन दिन के भीतर वापिस आ जाऊंगा, मैं भी तुम्हें मिस करता हूं।’ मैंने अपना गला साफ करते हुए कहा,

‘वाह,’ मैंने वास्तव में वह कह दिया जो मैं महसूस करता हूं।

उसने कहा, ‘मैं तुम्हें कुछ और बताना चाहती हूं।’

‘क्या’

बीप - बीप - बीप एक मूर्ख टेलिस्ट्र नामक आस्ट्रेलियन कम्पनी ने मेरे पहले रोमांटिक क्षण को खत्म कर दिया।

मैं वापस आ गया, मैं उस लड़की के बारे में सोचता रहा जो केवल रेत चाहती है। मैंने उस पैसे के बारे में भी सोचा जो उस संचार कम्पनी ने मेरी छोटी सी टेलीफोन कॉल से बनाये थे।

मैंने एक क्यू रेंज कैफे नाम के बाहरी रेस्तरां को पार किया। ऑस्ट्रेलिया वासियों ने लैंड बैंक को एक नया अर्थ दे दिया है। लोग एक गिलास बीयर के साथ घण्टों बैठे रहते हैं। रूपसी परिचारिकायें इधर-उधर घूमते हुए लोगों के लिये बर्गर और सैंडविच लाती हैं।

मैंने बाहर से एक माचिस ली और उसकी तीलियों को कूड़ेदान में फेंक दिया। मैं किनारे की तरफ वापिस आया जबतक पानी मेरे पैरों को छूने न लग गया, मैंने इधर-उधर देखा और झुक कर कुछ रेत माचिस की डिब्बी में डाल कर, डिब्बी अपनी जेब में रख ली।

‘अरे, तुम क्या कर रहे हो?’ ओमी ने कहा वो मुझे दुनिया की सबसे बदसूरत जलपरी की तरह महसूस हुआ।

‘कुछ नहीं’ ‘नहीं, तुम इस तरफ क्या कर रहे हो। लहरें दूसरी तरफ ज्यादा अच्छी है।’ मैंने कहा।

‘मैं तुमसे मिलने आया था। क्या तुम मुझे कोक के लिये कुछ सिक्के दोगे, मुझे प्यास लगी है।’

‘सिक्के खत्म हो गये हैं। आज के लिये कुछ कैश बचा है लेकिन इस की जरूरत हमें दोपहर के भोजन के समय पड़ेगी।’

ओमी ने कहा, ‘खत्म हो गये?’

‘हां’ मैंने झुंझलाते हुए कहा। मुझे यह पसंद नहीं है कि जब मुझसे कम योग्य व्यक्ति मुझसे सवाल करे।

ओमी ने कहा, तुमने किसे कॉल की है।’

‘उपभोक्ता’

‘कौन से वाले को?’

‘छोड़ो ओमी, आओ खाना खाने चलें, क्या पहले तुम कुछ सूखा लोगे?’ ‘विद्या’

मैंने मूर्खतापूर्ण उसे देखा। क्या अन्दाज है और यह इसका कार्य नहीं है।

‘क्या’, मैंने हैरानी से पूछा।

‘मुझसे झूठ मत बोलो’

‘क्या बात करते हो ओमी, मैं क्यों विद्या को फोन करूंगा।’

‘मैं उतना मूर्ख नहीं हूं’

मैंने कहा, ‘तुम हो।’

‘हम रेस्तरां की ओर बढ़े, मैं उससे कुछ कदम आगे चल रहा था।

उसने मेरे पास आते हुए कहा,

‘मैंने देखा है तुम एक दूसरे को कैसे देखते हो।’

‘दफा हो’ मैंने तेजी से चलते हुए कहा।

हम बीच के नजदीक कैम्पवैल पेरेड जहां कई शराब-घर और कैफे, थे, वहां पहुंचे।

‘और मैंने इस ओर भी ध्यान दिया है कि जब से तूने उसे पढ़ाना आरम्भ किया है तुम उसके बारे में बातचीत नहीं करते।’

मैं हॉगस ब्रीथ कैफे में दाखिल हुआ। पांच दिन इस देश में बिताने के बाद यह नाम मुझे अब सनकी भरा नहीं लगता था।

हम एक दूसरे के सामने बैठ गये। मैंने अपना चेहरा मैन्यू कार्ड से ढक लिया और बातचीत से बचना चाहा।

‘तुम छुपा सकते हो, अगर तुम चाहो। लेकिन मैं जानता हूं।’

मैंने मेन्यू को नीचे रख दिया।

‘ऐसा कुछ नहीं है। चलो मान लिया कुछ है लेकिन चिन्ता करने जैसी कोई बात नहीं है।’ मैंने कहा।

मैंने अपना मुंह मैन्यू कार्ड के पीछे फिर छुपा लिया।

भारतीय पुरुषों में एक अनबोला नियम है जो कि तुम ने तोड़ा है।

‘कौन सा, नियम’ मैंने मैन्यू को मेज पर पटकते हुए कहा।

‘तुम अपने सबसे अच्छे मित्र के साथ कुछ नहीं करोगे, कुछ भी नहीं। यह न्यायाचार के विरुद्ध है।’

‘न्यायाचार, यह क्या है, एक सेना। मैंने उसे नहीं उकसाया, उसने ही मुझे उकसाया।’ मैंने कहा।

‘लेकिन तुमने उसे उकसाने पर क्यों मजबूर किया।’

‘अच्छा यह इस तरह हिट होने जैसी’ कोई बात नहीं थी। क्योंकि यह अच्छा लगता था।’ मैंने कहा।

मैंने दांत कुरेदना शुरू किया ताकि उसकी आंखों से आंखें मिलाने से बच सकूं। ‘तुम कितनी दूर तक चले गये हो।’ क्या?, ओमी जाओ ईश को दोपहर के खाने के लिये बुला लाओ। हमारे यहां होने का उसे पता नहीं है।

‘हां उसे वाकई ही कोई अन्दाजा नहीं है।’ ओमी ने कहा और चला गया। एक शोर मचाने वाला समूह हमारी साथ की मेज पर पूल खेल रहा था। मेरे पास पांच मिनट थे जब तक ईश वापिस आता। विचार मेरे मन में आने लगे। क्या ओमी उसे मूर्खतापूर्ण बात तो नहीं कह देगा। नहीं, ओमी इतना मूर्ख नहीं है।

ओमी और ईश हंसते हुए अन्दर आये। ठीक है, सब अच्छा है।

हॉगस बैथ, ‘क्या तुम एक रेस्तरां के लिए इससे गन्दा नाम सोच सकते हो!’ ईश ने हंसते हुए कहा।

ओमी ने कहा, ‘मैं सोच सकता हूं।’

‘इसे मत कहो, फिर भी टॉयलेट कहां है? मैं इस्तेमाल करना चाहता हूं। मैं वहां....।’ ईश ने कहा।

मैंने उसे बीच में टोकते हुए एक तरफ इशारा करते हुए कहा, ‘वहां है।’

मेरे पास ऑस्ट्रेलिया वाले जीवन भर के लिए हैं।

‘क्या तुम उसके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हो।’ ओमी ने आगे बात चलाई। मैंने कहा ‘क्या तुमने उसे कुछ कहा है।’ ‘तुम समझते हो कि मैं मूर्ख हूं।’

‘हूं।’

‘मैंने उसे कुछ नहीं बताया। अब तुम बताओ तुम्हारे सम्बन्ध किस हद तक पहुंच गये हैं।’ ओमी ने कहा।

मैंने कहा, ‘हद?’

‘हां, एक सिर्फ हम देखते हैं की हद होती है, जो कि पुराने शहरों में सबसे आम है। उसके बाद, ‘हम केवल बात करते हैं की हद है। उस के बाद ‘हाथ पकड़ने की हद’ उसके बाद....’

‘ऐसा कुछ नहीं है। हमारे सम्बन्ध भिन्न हैं।’ ‘ओह, यह एक आगे की अवस्था है जब तुम सोचते हो कि तुम्हारे सम्बन्ध सब से भिन्न हैं। कोई मूर्खतापूर्ण बात न कर बैठना। ठीक है।’

‘मूर्खता...’

ओमी फुसफुसाने के लिये आगे झुका।

‘मूर्ख व्यक्ति, तुम जानते हो ईश या उसके पिता तुम्हें मार डालेंगे। या कोई भी व्यक्ति जो कि उससे सम्बन्ध रखता है, ऐसा कर देगा। तुम्हें वह कार वाला व्यक्ति याद है! मेरा विश्वास करो, तुम वह लड़का या वह कार नहीं बनना चाहोगे।’

‘ऐसा सच मैं कुछ नहीं है, हम केवल अच्छे मित्र हैं।’ मैंने टॉयलेट की ओर देखते हुए कहा।

‘केवल अच्छे मित्र जैसे वाक्यों पर पाबन्दी लगनी चाहिये। इससे अधिक गुमराह करने वाली बात कोई नहीं है।’

शर्म करो, तुम उसके शिक्षक हो। कितने साल की है वो। सत्रहा।’

‘कुछ महीनों में अठारह की हो जायेगी।’ ओमी बोला बढ़िया है।’

ईश टॉयलट से बाहर आया और उस ने पूल खेलने वाले व्यक्तियों के साथ कुछ हंसी की बात की।

मैं ओमी की तरफ मुड़ा।

‘मैं इसके बारे में कोई बात नहीं करना चाहता। चिन्ता मत करो, मैं कोई मूर्खतापूर्ण बात नहीं करूंगा। वो गणित में कमजोर थी, मुझे नहीं मालूम मैंने उसे पढ़ाना क्यों मान लिया।’

‘तब उसे पढ़ाना बन्द कर दो।’ ओमी ने कहा।

‘क्या...? अब हम खाना मंगवा सकते हैं। मैंने मेन्यू-कार्ड को पढ़ते हुए कहा। ‘मैं केवल इतना कह रहा हूँ...।’

‘ईश, मैंने चिल्ला कर कहा, ‘तुम क्या खाना चाहोगे। लहसन की डबल रोटी सब से कम कीमत की है।’

‘कुछ भी, मैं तुम पर विश्वास करता हूँ।’

उसने चिल्ला कर उत्तर दिया। और उन ऑस्ट्रेलियन लड़कों के साथ पूल खेलना जारी रखा। उसके अंतिम शब्दों ने मेरे दिमाग में तूफान खड़ा कर दिया।

‘यहां घर बहुत बड़े हैं। मैंने कहा जैसे ही हमने डबल वे कहलाने वाले क्षेत्र को पार किया।

फ्रैंड हमें रविवार को नाश्ते के लिये ले जा रहा था। ईश, ओमी और अली फ्रैंड की साब कन्वर्टीबल कार की पिछली सीट पर बैठे थे और मैं आगे।

सिडनी की सुबह-सुबह की ठण्डी हवा के झोंके आने लगे।

फ्रैंड ने कहा, लेकिन अधिकतर यहां ठीक-ठाक जगह है, आस्ट्रेलिया में हम पैसे या कार के बारे में शेखी नहीं बघारते। यहां तक कि लोग आप की नौकरी के बारे में भी नहीं पूछते। क्या तुम जानते हो कि लोग सब से ज्यादा क्या पूछते हैं?’

‘क्या?’ ईश बोला।

‘तुम क्या खेलते हो? यह पूछते हैं।’ फ्रैंड ने कहा।

ईश ने आगे झुकते हुए कहा, मैं ऑस्ट्रेलिया को पसन्द करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि भारत में भी खेलों के प्रति ऐसी भावना आये।

‘यहां खेल एक राष्ट्रीय धुन है।’ फ्रैंड ने कहा।

‘तुम्हारे देश में किस बात की धुन रहती है?’

‘वहां बहुत अधिक लोग है इसलिये धुनें भी बहुत हैं। यही समस्या है।’ ईश ने कहा।

मैंने जोड़ते हुए कहा, ‘लेकिन धर्म और राजनीति वहां मुख्य हैं और अगर उनको जोड़ दो तो और भी बड़ी हो जाती हैं।’ मैं इस झंझट से दूर रहता हूँ और फिर ऑस्ट्रेलिया, की राजनीति एक मजाक है।’ फ्रैंड ने कार का इंजन बन्द करते हुए कहा।

हमने अपनी कार परमअत्ता-पार्क नामक स्थान पर खड़ी की। फ्रैंड हमें ओल्ड क्लोनीअल हाऊस के लचन रेस्तरां में लाया था। जब हम रेस्तरां के अन्दर गये तो दो व्यक्तियों को अपने इन्तजार में पाया।

‘गुड-मार्निंग श्री मान कटलर और श्री मान ग्रीनर’ फ्रैंड ने दोनों व्यक्तियों को हमसे मिलवाते हुए कहा।

ग्रीनर ने अली की पीठ थपथपाते हुए कहा, ये एक योग्य लड़का है।

‘हां, उतना ही योग्य जैसा कि ऊपर वाले व्यक्ति भेजते हैं।’ फ्रैंड ने एक जगह बैठते हुए कहा।

‘यहीं वह दोनों भद्र पुरुष हैं जिन्होंने आप की टिकटों में मदद की थी मेरी बीते दिनों की महिला मित्र नहीं।’ फ्रैंड ने आख मारते हुए कहा।



‘क्या’ ईश ने बात को समझते हुए कहा।

‘एक सप्ताह केवल खेलने के लिये नहीं था।’ फ्रैड ने कहा ‘तुम्हें याद है मैंने गोवा से इन्हीं भद्र पुरुषों को फोन किया था।’

श्रीमान ग्रीनर, ऑस्ट्रेलिया खेल संस्था के सभापति हैं और श्रीमान कटलर ए, आई, एस वजीफा कार्यकारी के अध्यक्ष हैं।’ फ्रैड ने बैड पर मक्खन लगाते हुए कहा, ‘मैंने अली के बारे में बताया कि यह सचमुच में कितना अच्छा खिलाड़ी है और सही प्रशिक्षण के साथ यह कहीं का कहीं पहुंच सकता है।’

मैंने देखा ईश का चेहरा किसी आने वाली बात को सोच कर सख्त हो गया। क्या वे अली को प्रायोजित करेंगे।

‘अगर यह वास्तव में उतना अच्छा है जैसा कि फ्रैड ने कहा और उन लड़कों ने जो तुम्हारे साथ खेल चुके हैं। तो श्रीमान् ग्रीनर ने कहा, हमसे जो बन पड़ेगा हम तुम्हारी मदद कर सकते हैं।’

‘धन्यवाद’ ईश ने कहा। अधिक उत्साहित होना ईश की एक समस्या रहती थी। उसकी बहन की भी यही समस्या है। शायद यह वंशानुगत समस्या थी।

श्रीमान् कटलर ने अपना गला साफ करते हुए कहा, ‘देखिए ए.आई.एस. विभिन्न राज्यों के संस्थानों से आने वाले नामांकनों में से चुनाव करता है। मैं अली का चुनाव करवा सकता हूँ, लेकिन अली किसी भी आस्ट्रेलियन राज्य में नहीं रहता।

ईश ने कहा, ‘तो।’

ए. आई.एस. नियमों के अनुसार वजीफा प्राप्त करने वाले व्यक्ति का एक आस्ट्रेलियन नागरिक होना आवश्यक है या कम से कम वह नागरिक बनने की प्रक्रिया में हो।

‘क्या हम यहां विशेष सहूलियत नहीं दे सकते?’ मैंने कहा। ओमी खाने में व्यस्त था। ओमी और अली ने समस्त भ्रमण में कुछ ही वाक्य बोले थे। ऑस्ट्रेलिया के बोलने के ढंग को वे समझ नहीं पा रहे थे।

श्रीमान कटलर ने एक फाइल में से कुछ कागज मेज पर फैलाते हुए कहा, ‘इसका एक रास्ता निकल सकता है।’

श्रीमान् ग्रीनर ने हंसते हुए मजाकिया अन्दाज में कहा, ‘कटलर को प्रवासी विभाग में सूत्र बनाने आते हैं।’

कटलर ने कुछ कागज आगे करते हुए कहा, ‘यह आस्ट्रेलिया की नागरिकता लेने के कागज हैं जैसा कि आप जानते हैं विधु में बहुत से लोग यह चाहते हैं लेकिन अली की शानदार योग्यता को देखते हुए हम इसे ऑस्ट्रेलिया की नागरिकता देने की पेशकश करते हैं

अली और ओमी ने जैसे ही मेज पर रखे कागजों को देखा उन्होंने खाना बन्द कर दिया।

ओमी ने कहा, ‘ये ऑस्ट्रेलिया का वासी बन जायेगा।’

‘यह चैम्पियन बन जायेगा।’ फ्रैड ने कहा ‘इसके माता-पिता को भी नागरिकता मिल जायेगी और ईश तुम और तुम्हारे दोस्त भी अर्जी दे सकते हैं। हम तुम्हें हर सम्भव मदद कर देंगे। अवसर अच्छा है।’ श्रीमान कटलर ने कहा। ‘तुम्हें ऑस्ट्रेलिया पसन्द है।’ फ्रैड ने ईश को आख मारते हुए कहा।

‘बच्चे के भविष्य के बारे में सोचो, जहां तक मैंने सुना है, उसके स्तोत बहुत सीमित हैं।’ श्रीमान कटलर ने कहा।

उनका मतलब गरीबी से था। मैंने हां में गर्दन हिलाई। अली के जीवन में बहुत बड़ा बदलाव आयेगा, ‘उन की बात में वजन है।’ मैंने ईश को बताया जो कि अभी तक स्तब्ध था।

श्रीमान् ग्रीनर बोले, ‘तुम सबसे पहले अली से क्यों नहीं पूछते। यह उसका जीवन व उसका निर्णय है।’

‘हां, कोई, दबाव नहीं।’ फ्रैड ने अपनी दोनों हथेलियां मसलते हुए कहा। हमने अली को स्पष्ट शब्दों में इस प्रस्ताव के बारे में बताया।

‘अली....तुम क्या चाहते हो?’ ईश ने कहा।

‘अगर मैं टीम में आ जाता हूँ तो मैं किसके लिये खेलूंगा।’ अली ने पूछा। श्रीमान कटलर ने उत्तर दिया, ‘

आस्ट्रेलिया के लिए।’

‘लेकिन मैं भारतीय हूँ।’ अली ने कहा।

‘लेकिन तुम एक ऑस्ट्रेलियन नागरिक भी बन सकते हो। हमारा एक बहु-सांस्कृतिक समाज है।’ श्रीमान ग्रीनर बोले। ‘नहीं’ अली ने कहा।

‘क्या?’

‘मैं भारतीय हूँ, मैं भारत के लिये ही खेलना चाहता हूँ, किसी और देश के लिये नहीं।’

‘लेकिन बेटे, हम तुम्हें तुम्हारे अपने देश जैसा ही सम्मान देंगे और अच्छा प्रशिक्षण भी।’ श्रीमान ग्रीनर ने कहा।

‘मेरे पास अच्छा कोच है।’ अली ने ईश की तरफ देखते हुए कहा। ईश का सीना गर्व से भर गया।

‘तुम्हें अपने देश में बहुत मुश्किल आयेगी। तुम्हारा कोच यह सब जानता है।’ श्रीमान कटलर ने कहा।

अली ने कुछ रुक कर बोलना आरम्भ किया, ‘अगर मैं एक खिलाड़ी नहीं बन पाता तो सब कुछ ठीक है, लेकिन अगर मैं भारतीय नहीं रह जाता तो यह बिकूल ठीक नहीं है।’ शायद वो इतनी गहन बात नहीं कहना चाहता था लेकिन यह उसका सबसे गम्भीर कथन था।

‘क्या?’ श्रीमान कटलर ने कहा। वह थोड़ा आगे को झुके और उन्होंने अली के कंधे पर हाथ रखा।

अली ईश के पास खिसका और उसके पीछे छिप गया।

अफसरों ने आधा घंटा और कोशिश की। उन्होंने पूछा कि हम अली के माता-पिता से बात कर सकते हैं पर उन्हें महसूस हुआ कि ऐसे बात नहीं बनेगी। मैंने नम्रतापूर्ण बातचीत जारी रखी।

‘हमें माफ कर दें, हमें मालूम है यह हमारे लिये बहुत बड़ा सम्मान है।’ मैंने कहा, ‘फ्रैड हमें माफ करे। जो कुछ तुमने हमारे लिये किया वह बड़ी बात है।’

‘कोई चिन्ता की बात नहीं दोस्त। तुम्हारा बच्चा अच्छा है और वह यह बात जानता है। अगर तुम लाखों लोगों को खुश रख सकते हो तो हमारे जैसे लोगों की चिन्ता क्यों करते हो।’ फ्रैड ने हंस कर कहा। उसने अपनी उदासी प्रकट नहीं होने दी। खेल की भावना, मैंने अन्दाज लगाया।

हमने अफसरों को उनकी कार तक छोड़ा।

‘दोस्त, बुरा मत मानना, शायद कुछ समय बाद, इस केस में, अगले जन्म में कौन जानता है तुम ऑस्ट्रेलियन नागरिक हो सकते हो।’ श्रीमान ग्रीनर ने अपनी होंडा एर्कोड में बैठते हुए कहा।

‘मैं नहीं चाहता।’ अली ने अपना चेहरा ईश के पीछे से निकाल कर कहा।

‘क्या?’

‘मैं अगले जन्म में भी ऑस्ट्रेलियन नहीं बनना चाहता। अगर मेरे पास अगले सौ जन्म होते हैं तो मैं सब में भारतीय ही बनना चाहूंगा।’ अली ने कहा।

एक हवाई जहाज ऊपर उड़ कर गया। मैंने आसमान की तरफ देखा। मुझे खुशी थी कि आजरात मैं घर की तरफ जा रहा था।

## पन्द्रह

विद्या-विद्या-विद्या, उसका नाम मेरे मन में एक अलार्म की तरह बजने लगा। मैं उसके घर समय से पहुंचने के लिये टमाटर बेचने वाले व कंचे खेलने वाले बच्चों के ऊपर से होता हुआ दौड़ा।

मेरे पास बहुत ज्यादा काम था। पूर्तिकर्ता इन्तजार कर रहे थे। माल का अम्बार लग गया था और माल भेजना बाकी पड़ा था। लेकिन फिर भी विद्या का ख्याल इन सबसे ऊपर था। हालांकि नियमानुसार, यह एक अच्छा विचार नहीं था। व्यापारियों को महिलाओं जैसी मूर्खतापूर्ण बातों पर अपना समय बर्बाद नहीं करना चाहिये। लेकिन मेरे मन का दूसरा कोना उसे प्यार कर रहा था और यही भाग मेरा समय नियन्त्रित कर रहा था। विद्या कहां है? मैंने उसकी खिड़की की तरफ देखा और घर की घंटी बजा दी। 'गोविन्द' विद्या के पिता ने दरवाजा खोलते हुए कहा। मैं सुन्न रह गया। ऐसा क्यों होता है कि जिस लड़की को आप प्यार करते हैं उसके परिवार का हर पुरुष सदस्य आप में डर की भावना पैदा कर देता है।

मैंने कहा, 'अंकल, विद्या.. ट्यूशन'।

'वह ऊपर के कमरे में है।' उन्होंने मुझे अन्दर आने के लिए कहते हुए कहा। उन्होंने मेज पर से अखबार उठा लिया। बूढ़े लोग अखबार को इतना पसन्द क्यों करते हैं? उन्हें समाचार पढ़ना अच्छा लगता है, लेकिन वे इसका करते क्या हैं। मैं ऊपर के कमरे में जाने के लिये सीढ़ियों की ओर बढ़ गया।

जैसे ही मैं सीढ़ियों पर चढ़ने लगा वे फिर बोले, 'वह कैसी है क्या वह मैडिकल परीक्षा पास कर जाएगी?'

मैंने धीमे स्तर में कहा, 'वह एक होशियार विद्यार्थी है।'

अंकल ने फिर से अखबार उठाते हुए कहा, 'ये अपने बेकार भाई की तरह नहीं है।'

मैं सीढ़ियां चढ़ कर ऊपर पहुंचा, विद्या वहां विमान-परिचारिका वाली मुस्कराहट लिये खड़ी थी, 'ट्यूशन पर आपका स्वागत है।'

वह सफेद कुर्सी पर बैठ गई। मैं उसके सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। 'परीक्षा के लिये मेरे मन में बहुत से सन्देह हैं।' उसने कापी के पन्ने पलटते हुए कहा।

मेज के नीचे से धुआ निकलने लगा।

मैंने कहा, 'यह क्या है?'

'मच्छर भगाने वाली।' उसने बताया।

मैं मेज के नीचे झुका और मुझे मच्छर भगाने वाली हरी चक्कराकार सुलगती काँयल के साथ उसके पैर भी दिखाई दिये। उसने अपने अंगूठे के नाखून पर अपनी खास पर्ल-सफेद नेलपालिश लगाई हुई थी। 'चक्कराकार काँयल बुझी हुई हैं, मैंने कहा, 'मैं तुम्हारे सिर पर 'मोजी' को डांस करते देख सकता हूं।

'मोजी'

'ऑस्ट्रेलिया में मच्छरों को इसी नाम से पुकारते हैं, मैंने बताया। 'आह! तो तुम विदेश, हो आये हो, ऑस्ट्रेलिया कैसा था?'

'बहुत अच्छा' मैंने उसकी तरफ देखते हुए कहा। मैं अपने आपको संयत रखने की कोशिश कर रहा था जो कि मैं उस काल को करने के बाद नहीं था। मैं अपने पत्ते खोल चुका था। अब कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं इसे छुपा के रखूं क्योंकि वह सब देख चुकी थी।

मैंने उसके कपड़ों की तरफ ध्यान दिया। आज उसने जामुनी और सफेद रंग की सलवार कमीज पहन रखी थी। उसने जामुनी रंग का ही हार और उससे ही मिलते जुलते कांटे पहन रखे थे। वह अभी-अभी नहा कर आई थी। उसके बालों से डेटोल साबुन की खुशबू आ रही थी। हर लड़की जब वह नहा कर आती है, तो उसमें से शानदार

भीनी-भीनी सी खुशबू आती है। मैं सोचता हूँ उन्हें इस खुशबू को बोतल में बन्द कर बेचना चाहिए।

‘तुम मेरा तोहफा लाये हो।’ उसने चुप्पी तोड़ते हुए कहा।

‘हां, मैंने जवाब दिया।

मैंने खड़े होकर अपनी जीन की जेब से माचिस की डिब्बी निकाली।

‘क्यू रेंज कैफे। क्या बात है!’ उसने कहा उसने माचिस की डिब्बी ली और अपनी नाजुक अंगुलियों के साथ खोला। ‘वाह, ऑस्ट्रेलिया का बीच मेरे हाथों में है।’ उसने कहा। उसने इसे इतने प्यार से पकड़ा हुआ था जैसे कि मैंने किसी रानी के चुराये हुए हीरों को उसे उपहार में दिया हो।

‘मैं भी कैसा मूर्ख हूँ। मुझे तुम्हारे लिये कुछ अच्छा लाना चाहिये था।’ मैंने कहा। ‘नहीं, यह ठीक है, देखो इसके अन्दर छोटी सी सीपी भी है।’ उसने आगे झुकते हुए इशारा किया। हमारे सिर आपस में टकराये। जैसे ही हमने माचिस की डिब्बी की अन्दर की चीजों को देखने की कोशिश की।

उस के पांव मेरे पांवों से टकराये।

‘आउच’ उसने अपने पैर अलग करते हुए कहा।

‘क्या हुआ?’ मैंने पूछा।

‘कुछ नहीं, मच्छर वाली चक्करी मेरे पैर को लग गई थी उसने मुझे बताया। मैं सीधा होकर बैठ गया। पानी की बूंदें उसके बालों से मेरे बालों में गिर गई थीं। उसके सिर पर मंडराने वाले मच्छर मेरे सिर पर भी मंडराने लगे थे।

‘क्या मैं इतना भी खर्च कर सकता?’ मैंने पूछा।

‘नहीं ठीक है, तुम ने कॉल पर भी काफी खर्च किया होगा।’

‘हां पांच डालर और 60 सैण्ट्स।’ मैंने कहा और अगले क्षण ही मुझे एक मुनीम की तरह बोलने पर अफसोस हुआ। ‘यह ठीक है क्योंकि जीवन के सबसे बेहतरीन तोहफे मुफ्त हैं।’ उसने अपने बालों को रबर से बांधते हुए कहा।

मैंने गर्दन हिलाई। मेरे अन्तरमन ने कहा अब बहुत हुआ, अब पढ़ाई शुरू की जाये।

‘मैंने तुम्हें बताया था।’, मैंने फुसफुसाते हुए कहा।

‘क्या तुम मुझे सच में याद करते थे, उसने मेरे हाथ पर अपनी हथेलियां रखते हुए कहा।

मैंने अपना हाथ खींच लिया। वो हैरान हुई।

‘मुझे अफसोस है विद्या, मुझे यह नहीं करना चाहिये था। मुझे अपना ध्यान व्यापार पर रखना चाहिए। यह चीजें मेरे, लिये नहीं हैं लेकिन....’ मैंने यह कहा और अपना मुंह मोड़ लिया। मैं उसकी तरफ देखते हुए बात नहीं कर सकता था और या कह सकते हैं कि मैं बात नहीं कर सकता जब वह मेरी ओर देख रही हो।

‘ठीक है, ‘आपको अफसोस करने की आवश्यकता नहीं।’ उसने कहा।

‘नहीं यह ठीक नहीं है, मेरे पास इन भावनाओं के लिये समय नहीं।’ मैंने मजबूत आवाज में कहा, ‘और यह ठीक भी नहीं है क्योंकि तुम मेरे सबसे अच्छे दोस्त की बहन हो कितनी बुरी बात है....’ वो हंसी।

‘गम्भीर रहो, विद्या। यह ठीक नहीं है।’

‘मैं तुम्हारा अध्यापक हूँ, तुम्हारा भाई मुझ पर एक मित्र की तरह विश्वास करता है। मेरी अपनी जिम्मेदारियां हैं जैसे कर्ज, व्यापार और मेरी मां। तुम अभी अट्टारह की भी नहीं हुई हो।’

‘दो महीने,’ उसने दो अंगुलियां दिखाई और कहा, ‘और मैं अट्टारह की हो जाऊंगी। और तब तुम्हें मुझे एक अच्छा सा तोहफा देना पड़ेगा। चलो छोड़ो, आगे बोलो।’

‘चलो ठीक है, बिन्दु, कुछ भी हो मेरे लिये सही यही है कि मुझे इस तरह की बेकार की भावनाओं में नहीं बहना

चाहिए। और मैं चाहता हूँ...।’

वो उठी और मेरे बराबर आकर खड़ी हो गई। वो मेरी कुर्सी की बाजू पर बैठ गई। उसने मेरे मुंह पर अंगुली रख दी और मेरा चेहरा अपनी हथेलियों में छुपा लिया। ‘तुम रोज शेव नहीं करते?’ उसने कहा ‘ऊँह’, उसने कुछ थूका।

‘क्या हुआ?’ मैंने उसकी तरफ देखते हुए पूछा। मेरा ख्याल है मच्छर मेरे मुंह में चला गया उसने दोबारा धूकते हुए कहा।

‘क्या यह अभी भी मेरे मुंह में है?’

उसने अपना मुंह खोला और मेरे करीब ले आई। उसके होंठ मेरे होंठों से केवल आठ मिलीमीटर दूर थे।

जल्द ही यह दूरी शून्य में बदल गई। मैं नहीं जानता कि मैं उसकी तरफ बढ़ा या वो मेरी तरफ। दूरी इतनी कम थी कि यह बताना मुश्किल है कि किसने पहल की। मैंने अपने होठों पर गर्म सा महसूस करते हुए सोचा कि हम कितना करीब आ गये हैं या शायद बहुत दूर।

हमने फिर चुम्बन लिया। हमारे दोनों के सिरों पर मंडराते मच्छर एक हो गये। मुझे कहने में बड़ा अच्छा लगता है कि मेरे पहले चुम्बन के दौरान मुझे तारे दिखाई दिये और मीठा संगीत सुनने को मिला। लेकिन पार्श्व से आती हुई आवाजें कुछ अलग थीं (अ) विद्या की मम्मी की प्रेशर कुकर की नीचे से आती हुई आवाजें (आ) आने वाले चुनावों में विभिन्न पार्टियों के लिये शोर मचाता ऑटो (इ)। और मोजीयों की भिनीभिनाती आवाजें। लेकिन जब आप एक चुम्बन के बीच में होते हो तो आवाज और दृश्य बन्द हो जाते हैं। मैंने इधर-उधर देखा यह जानने के लिये कि बाकी छतें खाली थीं।

उसके बाद मैंने अपनी आंखें बन्द कर दीं।

‘विद्या, हम क्या कर रहे हैं?’ मैंने उसे छोड़े बिना कहा। मैं रुक नहीं सकता था। अलजबरा, ट्रिगोमैट्री सबको जोश ने ढक लिया था।

‘यह ठीक है, यह ठीक है।’ उसने मुझे विश्वास दिलाते हुए चुम्बन लिया।

हम एक दूसरे से अलग हुए क्योंकि जोश भरे लोगों को भी आक्सीजन की आवश्यकता होती है। उसने मुझे एक बड़ी मुस्कुराहट के साथ देखा।

मैंने अपने पैर और किताबें इकट्ठी कर लीं। आज कोई हिसाब नहीं पढ़ाया जायेगा।

‘तुम मुझ से आंखें क्यों नहीं मिला रहे हो?’ उसने अपनी आवाज में शरारत भरते हुए कहा।

मैं चुप रहा।

‘तुम मेरे से बड़े हो और हिसाब में मुझसे कई गुना ज्यादा अच्छे हो लेकिन कई चीजों में मैं तुमसे बहुत समझदार हूँ।’

‘अच्छा! मैंने अपनी पाठ्य पुस्तकों को इकट्ठा करते हुए कमजोर से शब्दों में चुनौती थी।

उसने मेरी उड़ी ऊपर उठाई।

मैं अट्टारह की होने जा रही हूँ और जो मेरे मन में है वह कर सकती हूँ। उसने कहा। किसी पार्टी का भोंपू पास में ही बज रहा था। ‘मैं चुनावों में वोट डाल सकती हूँ’, उसने आगे बोलते हुए कहा ‘मैं बैंक में खाता खोल सकती हूँ? मैं शादी कर सकती हूँ, मैं कर सकती हूँ.....। मैंने उसे रोकते हुए कहा, ‘पढ़ाई, तुम एक अच्छे महाविद्यालय में दाखिला लेने की कोशिश कर सकती हो।’

वो हंसी। हम खड़े हुए और छत पर बनी हुई पानी की टंकी के पास चले गये। हमने टैंक के पास खड़े होकर सूर्य अस्त होते देखा। हमने हिसाब के अतिरिक्त हर चीज पर बातें कीं। मैंने उसे अकादमी के बारे में, फ्रैंड के साथ खाने के बारे में, नीले ऑस्ट्रेलिया के आसमान के बारे में और बोंडी बीच के झागदार पानी के बारे में बताया। उसने यह सभी बातें उत्साह पूर्ण सुनीं। उसने कहा कि वो चाहती है कि उसका भी बीच पर एक घर हो और घर की दीवारों को पीले और गुलाबी रंग में रंग देगी। यह हैरानी की बात है कि कैसे कुछ विशेष लड़कियां सारांशीय दृश्यों को ले आती हैं। ‘कॉफी पिओगे?’ उसने पूछा।

‘तुम्हें नीचे जाना पड़ेगा’, मैंने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा। मेरे अन्तर्मन की आवाज ने विरोध जताया पर अब इस आवाज में कोई दम नहीं था।

‘नहीं, मैंने पानी की टंकी के नीचे एक गुप्त जगह बना रखी है, ‘उसने मेरा हाथ खींचते हुए कहा।

पांच फुट सीमेंट की टंकी जमीन से लगभग चार फुट ऊपर स्तम्भों पर खड़ी थी। हम टंकी के नीचे जमीन पर बैठ सकते थे।

यह बचपन से मेरी पसन्द की जगह रही है। मैंने घुटने मोड़े और उसके पीछे-2 बैठ गया। उसने एक पिकनिक पर ले जाने वाली टोकरी निकाली, उसमें थर्मस, लाल प्लास्टिक के कप और मैरी के बिस्कुट थे।

‘विद्या के’ रूफ-टॉप कैफे’ में आपका स्वागत है श्रीमान्।’ उसने मुझे कप पकड़ाते हुए कहा।

मैंने उसकी तरफ देखा। वह हिसाब पढ़ने के लिहाज से बहुत सुन्दर थी। हिसाब, मेरे जैसे हारे हुए व्यक्तियों के लिए है

मैंने एक घूंट भरा। मेरे होंठ अभी तक उसके होंठों की गर्माहट को महसूस कर रहे थे। मैंने अपनी कोहनी के बल लेटने की कोशिश की लेकिन सख्त फर्श ने मुझे कष्ट पहुंचाया।

‘मैं अगली बार कुशन लेकर आऊंगी। ‘उसने हंसते हुए कहा।

‘यह ठीक रहेगा। ‘मैंने उत्तर दिया।

हमने अपनी काफी खत्म की और बाहर आ गये। हमने छत के बत्व को बन्द किया। मैंने चुम्बन व काफी को भूलने के लिये पाठ्य पुस्तक को पलटा। संगठन के निशान जीवन में पहली बार मुझे फीके लगे। एक स्तर पर हिसाब बेकार लगता है। ‘धन्यवाद’, ‘मैंने कहा।

‘किसलिये? उसने पूछा।

‘काफी और... तुम जानती हो।’

उसने आगे झुक कर मेरे गालों पर चुम्बन लिया, ‘उपहार के लिए धन्यवाद, यह सच्ची और पक्की दोस्त का उपहार। ‘सच्ची-पक्की दोस्ती एक-दूसरा चिह्न जिसका अर्थ है उन्नति।

मैं बाहर जाने के लिये नीचे आया। जब मैंने अपने पीछे दरवाजा बन्द किया तो विद्या के पिताजी अपनी पत्नी को कह रहे थे, ‘कितना अच्छा जिम्मेदार लड़का है। ईश ने इससे कुछ नहीं सीखा।’

मैं अपना हिसाब-किताब का काम कहीं ज्यादा तेजी से कर सकता था अगर मैं एस.एम.एस. के द्वारा साथ-साथ बातचीत न कर रहा होता। मेरे फोन ने पांचवी बार बीप किया।

ओमी ने गुस्से से काउंटर पर से पूछा, ‘यह कौन बेवकूफ तुम्हें एस.एम.एस. कर रहा है।’

शाम के छः बजे थे और दुकान को बन्द करने का समय था। ईश एक के.वी. के पास गया हुआ था और ओमी शाम की आरती के लिये जाने वाला था। दो दर्जन बिल, कापियां, पैन और कैलकुलेटर मेरे आस-पास पड़े थे।

‘कुछ नहीं मैं एक पूर्तिकर्ता से मोल भाव कर रहा था।’ मैंने फोन की आवाज को बन्द करते हुए कहा।

‘उसे फोन मिलाओ।’ ओमी ने कहा।

इससे मैं ज्यादा उत्सुक लगूंगा, इसलिए मैं चाहता हूं कि वो मुझे पहले फोन करे। ‘गोविन्द पहले हिसाब किताब करो, इतना माल भेजने को पड़ा है, सब काम खराब हो रहा है।’ ओमी ने एक टॉफी मुंह में डालते हुए कहा। मैं कुछ नहीं बोला।

मैं एस.एम.एस. से उसका ध्यान किसी भी तरह हटाना चाहता था।

मेरा फोन फिर चमका और एक सन्देश नजर आया।

मेरा जन्म दिन है।

मैं इसे अपने लोग से मनाना चाहती हूँ

तुम केक लाओगे कि नहीं???

मैंने विद्या का नम्बर विद्यानाथ के नाम से 'सेव' किया हुआ था। मैंने उस सन्देश को पढ़कर साथ ही साथ मिटा दिया।

'मेरा ख्याल है तुम ईश की बहन से मिल नहीं रहे हो।' ओमी ने कहा। मेरे हाथ ठण्डे पड़ गये लेकिन मैंने अपने आप को आश्वस्त किया कि यह.....है ओमी को नहीं पता कि मैं किस को सन्देश भेज रहा हूँ।

मैंने सन्देश का उत्तर दिया।

अच्छा तुम जीती

एक छोटा ले कर आऊंगा

तुम पढ़ो और मुझे काम करने दो।

मैंने फोन को एक तरफ रख दिया। मुस्कराते चेहरे मेरे जीवन में आ गये थे। मैंने काम में व्यस्त होते हुए कहा, 'मैं उसे केवल पढ़ाता हूँ, ओमी उसकी प्रवेश परीक्षा में कुछ ही महीने रह गये हैं।'

'क्या वह.....' ओमी ने बात-चीत दोबारा आरम्भ करने की कोशिश की।

'क्या मैं अपना काम कर सकता हूँ या तुम मेरे विद्यार्थियों के बारे में बातचीत करना चाहोगे।' मैंने ओमी की तरफ देखते हुए कहा।

मामा मेरी दुकान पर भागते हुए आया, 'टी.वी. लगाओ।'

बी.बी.सी के समाचार पढ़ने वाले ने कहा, 'दो हवाई जहाज न्यूयार्क के वर्ल्ड ट्रेड' सेण्टर से टकरा गये हैं।'

घटना की तस्वीरों को गुणवत्ता एक अच्छी फिल्म से भी बेहतर थी। सौ मंजिला इमारतें बीच में से इस तरह कट गई थीं जैसे किसी ने डबलरोटी को बीच में से काट दिया हो।

टी.वी. पर एक मिलट्री विशेषज्ञ कह रहा था कि दो हवाई जहाज जिसका मतलब है योजनाबद्ध आतंकवादी हमला।

'इस घटना के बाद दुनिया ऐसी नहीं रहेगी।' इजरायली प्रधान मन्त्री ने कहा।

हमने शटर को आधा बन्द कर दिया। हर व्यक्ति मन्दिर में टी.वी. के आसपास खड़ा था जहां मीनारों का गिरना बार-बार दिखाया जा रहा था। धुआ, मिट्टी और, कंकरीट न्यूयार्क की सड़कों पर बिखरी पड़ी थी। रिपोर्ट ने हजारों के मरने की बात कही।

'क्या....' ईश ने दुकान के अन्दर आते हुए कहा, 'मुस्लिम आतंकवादी मैं विश्वास से कह सकता हूँ।' मामा बोला जैसे ही उसका फोन बजा। उन्होंने नम्बर देखा और खड़े हो गए।

'पारेख जी,' मामा ने अपनी आवाज में नम्रता लाते हुए कहा।

मैं पारेख जी के शब्द नहीं सुन सकता था।

मामा ने कहा, 'जी हां, मैं देख रहा हूँ, वे पागल हो गये हैं। जी जनाब हम चुनाव के लिए तैयार हैं, जी हां, पारेख जी' मामा अपनी छाती पर से पसीना पोंछते हुए बोले बेलरामपुर समस्या नहीं है, लेकिन आप जानते हैं, आस-पास काम करना पड़ेगा; लेकिन आप जानते हैं हसमुख उतना कार्य नहीं कर रहे।'

बिट्टू मामा हमसे दूर जा कर खड़े हो गये। पारेख जी उसे अगले हफ्ते में होने वाले चुनावों की जानकारी दे रहे थे।

शाम के समय पहले सन्देशपद का चित्र दिखाया गया। चार मुस्लिम लड़कों ने कुछ महीने पहले हवाई जहाज सीखने वाले स्कूल में दाखिला लिया था। उन्होंने एक आम चालू की सहायता से एक हवाई जहाज चोरी किया और दुनिया में आदमी द्वारा निर्मित विपत्ति खड़ी कर दी। एक बिनलादेन नाम के मरियल से व्यक्ति ने इसे अपना

विचार बताया।

‘क्या हुआ’ ओमी ने मामा से पूछा जैसे ही उन्होंने अपनी बातचीत बन्द की ‘हसमुख जी, हर चीज निश्चित मान कर चल रहे हैं वे अपने इलाके में काम नहीं कर रहे।’

‘क्या पारेख जी, खुश नहीं है?’ ओमी ने पूछा ‘वो मेरे साथ ठीक है, वह ज्यादा चिन्तित नहीं है। गुजरात में केवल दो सीटों के लिए हो रहा है। असली चुनाव तो अगले वर्ष है।’

‘मामा तो अगले साल,’ ओमी ने मामा की पीठ थपथपाते हुए कहा, ‘हमारे परिवार में एक एम.एल.ए. होगा।’

मन्दिर की घंटियां आरती के लिये बजने लगी। ओमी और मामा जाने के लिये खड़े हो गये।

‘मुझे पारेख जी को दिखाना होगा कि मैं काबिल हूँ। यह सीट जीतने से मदद मिलेगी।’ मामा ने कहा।

‘तुम्हें और भी किसी मदद की आवश्यकता है?’ ओमी ने पूछा, ‘तुम इतना कुछ कर चुके हो मामा ने ओमी का चुबन लेते हुए कहा, लेकिन अगले सप्ताह हमें थोड़ी अधिक मेहनत करनी पड़ेगी। पारेख जी बता रहे थे कि यह हमले हमारी मदद कर सकते हैं। आओ यह बात हम सबको पूजा में बतायें।’

वे दुकान से निकल मन्दिर में चले गये।

तुम्हारा फोन चमक रहा है क्या इसकी आवाज बन्द है?’ ईश ने पूछा उसने जमीन पर पड़े सभी बिलों को इकट्ठा किया। हम दुकान को बन्द करने जा रहे थे।

‘ओह, शायद गलती से, ‘मैंने फोन उठाते हुए कहा, ‘एक पूर्तिकर्ता सन्देश भेज रहा है।’

मैंने पूर्तिकर्ता विद्यानाथ का एस.एम.एस. पढ़ा।

जब मैं पड़ती हूँ, मैं चुम्बन के बारे में सोचती हूँ,

तुम और केवल तुम याद आते हो।

मैंने फोन अपनी जेब में रख लिया।

‘क्या बात है तुम्हें कुछ बेचने की कोशिश कर रहा है।, ईश ने पूछा।

‘हां, बहुत सख्त कोशिश कर रहा है, ‘मैंने कैश बॉक्स को ताला लगाते कहा।

‘मैं जानता था, वो बूढ़ा आदमी नहीं सुनेगा। ‘मामा बोला।

उसका मन गुस्से और आंसुओं के बीच में था। उस जैसे मजबूत बड़े आदमी के लिये रोना बड़ा मुश्किल था और इससे भी ज्यादा मुश्किल था महीनों काम करके चुनाव हारना। हम गिनती करने वाले बूथों के बाहर खड़े थे, अफसर आखिरी कुछ वोट गिन रहे थे हालांकि धर्म-निरपेक्ष दल ने ढोल बजाने शुरू कर दिये थे।

‘बलरामपुर की वोटों की तरफ देखो।, ‘मामा ने मतपेटी की तरफ इशारा करते हुए कहा, ‘हिन्दु पार्टी को जबरदस्त जीत मिली है, यह मेरा क्षेत्र था। जो दो अन्य क्षेत्र मुझे दिये गये थे, वहां भी हमने अधिक मत पाये हैं।’ उसके बीस के करीब समर्थक अपना सर झुकाये खड़े थे। और दूसरे क्षेत्रों की तरफ देखो, उस मुस्लिम प्रोफेसर के पास सारा दिन करने को कुछ न था। वह बूढ़ों स्त्रियों को भी मिलता था, लेकिन हसमुख जी, उन्हें उच्चजाति का होने का रौब था, गलीचों में घूम नहीं सकते थे और सोचते थे कार में बैठकर हाथ हिलाने से चुनाव जीता जा सकता है। और देखो, वह गिनती शुरू होने के 2 घण्टे के अन्दर भाग गये।’

मामा ने अपने हाथों से अपना चेहरा साफ कर फिर बोलना शुरू किया, ‘क्या मैं पुजारी का बेटा नहीं हूँ? क्या मैं निचले इलाकों में नहीं जाता? क्या वहां हिन्दु मत नहीं है? वो क्यों नहीं गया?’

धर्मनिरपेक्ष पार्टी के कार्यकर्ताओं ने मामा के कार्यकर्ताओं का मजाक उड़ाया। दोनों तरफ से गुस्सा बढ़ने लगा, जैसे ही मामा के समूह के सदस्यों ने एक ढोल बजाने वाले को हड़काया। ‘यहां स्थिति खराब होने वाली है। ‘मैंने ओमी को उसकी कार में कहा, ‘आओ यहां से निकलो।’

‘मैं नहीं जा सकता, मामा को मेरी आवश्यकता है।’ ओमी का उत्तर था।



एक सफेद रंग की मर्सडीज मतगणना केन्द्र के बाहर आ कर रुकी। अंगरक्षकों की एक जीप साथ थी। अंगरक्षकों ने क्षेत्र को घेर लिया जैसे ही पारिख जी ने बाहर कदम रखा।

मामा, पारिख जी की तरफ भागा। वह जमीन पर गिर गया और पारिख जी के पैरों को हाथ लगाया।

‘मैं आप का गुनहगार हूं, मुझे सजा दीजिये, ‘मामा ने भारी आवाज में कहा। पारिख जी ने अपने दोनों हाथ मामा के सिर पर रखते हुए कहा, ‘बिन्दु उठो।’ ‘नहीं-नहीं मैं यही मरना चाहता हूं। मैंने आप जैसे महान् आदमी को नीचा दिखाया है, ‘मामा गिड़गिड़ाया।

पारिख जी ने नौजवानों पर एक सख्त निगाह डाली। हर कोई पीछे हट गया पारिख जी ने मामा को कंधों पर से उठाया, आओ विशला में खाने के लिये चलते हैं, मुझे तुमसे कोई बात करनी है।

मामा सर झुकाये, पारिख जी की कार की तरफ बढ़ गया।

‘आओ बेटे, ‘पारिख जी ने ओमी को कहा। ईश और मैंने एक दूसरे की तरफ देखा शायद यह मेरे और ईश के चले जाने का समय था।

‘क्या ईश और गोविन्द हमारे साथ आ सकते हैं? वे गांधी नगर भी आये थे। ‘अन्ना बोला मेरा ख्याल था वो हमें विशला में खाना खिलाना चाहता था जो कि आमतौर पर हमारे लिए महंगा था।

पारिख जी ने हमारी ओर देखा और पहचानने की कोशिश की। मुझे नहीं लगता कि वो हमें पहचान सकते थे। ‘जीप में बैठो, ‘उन्होंने कहा।

विशला विलेज रेस्तरां और यूटैनिसिल संग्रहालय अहमदाबाद के बाहर सरखेज नामक गांव में स्थित था जिसमें हथकरघा संग्रहालय और चौपाल के अतिरिक्त एक भिन्न देशी रेस्तरां था जो गुजराती पकवानों को परोसता था।

हमने एक अर्ध निजी कमरा लिया जिसमें मिट्टी के फर्श पर बैठने की व्यवस्था थी। पारिख जी के अंगरक्षक बैठ गये। उनकी बंदूकों ने वेटरों को मेहमान की महत्ता बता दी जिससे हमारी अच्छी सेवा सुनिश्चित हो गई। कुछ ही मिनटों में हमारे सामने दो दर्जन पकवान थे।

‘खाओ, और राजनीति के बारे में अधिक भावनात्मक होने की आवश्यकता नहीं। भावनात्मक उपदेश अच्छे हैं लेकिन अपना मन साफ और स्पष्ट रखो। ‘पारिख जी ने मामा को शान देते हुए कहा।

हमने ढोकला, खांडवी, घुघरा, गोटा, दालबड़ा और अन्य गुजराती व्यंजनों को चखा। मेरा पेट मुख्य खाना आने से पहले ही भर गया।

‘अब देखो’, पारिख जी ने अपना चाय का गिलास खत्म करते हुए कहा, ‘चीज उतनी आसान नहीं जितनी लगती है। हसमुख जी की हार एक पिछली कहानी है। हम इसकी आशा करते थे।’

‘क्या!’ मामा ने आश्चर्यचकित स्तर में कहा जबकि ओमी, ईश और मैं मजे से खाना खाने में लगे हुए थे।

‘हसमुख जी सीनियर थे इसलिये उन्हें टिकट मिल गई, लेकिन उनकी सोच पुरानी है जो कि वर्तमान मुख्यमन्त्री की भी है। दिल्ली में हमारे उच्च-पदाधिकारी उनसे खुश नहीं हैं।’

‘वे नहीं हैं।’ मामा ने मूर्खतापूर्ण ढंग से बात को दोहराया।

‘नहीं, हम एक हिन्दु पार्टी है लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि हम सारा दिन उपदेश देते रहें और कुछ काम न करें। गुजरात एक व्यापारिक क्षेत्र है यह सुस्त क्षेत्र नहीं है। दिल्ली में बैठे लोग उनके भूचाल के राहत कार्यों के प्रबन्धों को पसन्द नहीं किया। लोगों ने उसमें बहुत कुछ खोया। मैं जानता हूं तुम लड़कों ने भी बहुत कुछ खोया होगा।’ उन्होंने मुड़कर हमारी ओर देखते हुए कहा।

हमने हामी भरी। भूचाल के नाम से ही कष्ट होने लगा था, ‘इन सीटों पर उपचुनाव हमारे लिये वरदान थे। पुराने विचारों वालों ने अपने उम्मीदवार खड़े कर दिये, हम जानते थे वे कमजोर हैं। बेशक बिट्टू जैसे मेहनती लोगों ने बहुत काम किया लेकिन एक निरर्थक उम्मीदवार निरर्थक है। इस कारण हम दोनों सीटें हार गये। मुख्य चुनाव अगले बारह महीनों में होने वाले हैं, सारी पार्टी मशीनरी हिल गई है और दिल्ली में बैठे लोगों को बदलाव का मौका मिल गया है।’

‘कौन सा बदलाव?’ मामा ने पूछा। ‘वे मुख्यमंत्री को बदल रहे हैं।’

‘क्या?’ केवल दो सीटें हारने पर! मामा बोला, ‘कुल सीटें हैं.....।’

‘182’ पारिख जी ने बाजरे की रोटी चबाते हुए कहा, जैसा कि मैंने पहले कहा कि उन्हें बदलाव के लिये कारण मिल गया है। गुजरात हमारी पार्टी के लिये महत्वपूर्ण है। हम यहां हारने के बारे में सोच भी नहीं सकते।’

‘नया मुख्यमंत्री कौन होगा?’ मामा ने पूछा।

‘वो कुछ दिन में नाम की घोषणा करेंगे, वो मेरा पुराना मित्र है। वह मजबूत सशक्त और ईमानदार है। अगले वर्ष चुनावों में उसके साथ पूरे विश्वास के साथ जाया जा सकता है।’

‘हम जो कुछ भी बन पड़ेगा करेंगे पारिख जी, मेरा जीवन आपका है।’

पारिख जी बोले जैसे ही वेटरों ने हमारे लिये दाल व सब्जी को तीसरी बार भरा, ‘मैं तुम्हें पसन्द करता हूं बिट्टो।’ पारिख जी ने हमारी तरफ देखते हुए कहा।

‘पारिख जी क्या मुझे अगले चुनावों में टिकट मिल सकता है? आप मेरी प्रतिबद्धता जानते हैं।’ मामा ने कहा।

पारिख जी का चेहरा सख्त हो गया।

‘मैं माफी चाहता हूं अगर मैंने अपनी सीमा पार की है।’ मामा बोले।

पारिख जी मुस्कराते हुए बोले, ‘नहीं। हमें पार्टी में तुम्हारे जैसे महत्वाकांक्षी कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। बिट्टू लेकिन तुम जानते हो टिकट कम है और कार्यकर्ता हजारों की संख्या में है। तुम अच्छे प्रतिबद्ध कार्यकर्ता हो, मैं तुम्हारी मदद करना चाहता हूं लेकिन.....।’

‘लेकिन क्या, पारिख जी? मुझे रास्ता दिखाइए।’

‘ऊपर के स्तर पर आने के लिये तुम्हें अच्छा कार्य करने के साथ-साथ वह कार्य भी करना पड़ेगा जो तुम्हें पहचान दिलाये।’

मामा ने धीरे से गर्दन हिलाई। ‘मैं तुम्हारी आलोचना नहीं कर रहा। मैं तुम्हें सलाह दे रहा हूं ताकि तुम अगले स्तर तक पहुंच सको क्योंकि तुम में योग्यता है। केवल पीछे मत चलो शुरूआत करो वो तुम्हें नेता बनायेगा, ठीक है।’

‘मैं हर महीने नौजवानों को अयोध्या ले कर जाता हूं। मैं उन्हें अपनी सभ्यता व संस्कृति समझाने की कोशिश करता हूं और इससे हमारी पार्टी की मदद करने वालों की संख्या बढ़ती है।’

‘अच्छा, कार्य करते रहो, जब तुम और कार्य कर लोगे तो मैं दिल्ली तुम्हें ले चलूंगा। और इसके बाद मैं तुम्हें एक अलग से प्रोत्साहन दूंगा। यह वायदा है।’

पारिख जी ने हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे निकाला लेकिन मामा ने पारिख जी के पैरों की तरफ हाथ बढ़ाया। यह शरीर का वो भाग है जो राजनीति में बड़ों से परस्पर कार्यों के लिये अहमियत दे?

‘क्या बात है, कुछ मीठा नहीं आ रहा?’ पारिख जी ने कहा। क्योंकि मुख्य खाना खाने के बाद देर हो रही थी।

‘साहब के लिये आमरस कौन लायेगा, ‘मामा वेटरों पर चिल्लाया।

## सोलह

‘तुम्हारा सबसे छोटा चॉकलेट का केक कौन सा है?’ मैंने अहमदाबाद की सबसे बड़ी केक की दुकान नवरंगपुरा टेन, पर पूछा।

विद्या 19 नवम्बर 2001 को 18 की होने जा रही थी। अब वह अधिकारिक तौर पर अपने निर्णय स्वयं ले सकती थी। अनाधिकारिक रूप से वह यह निर्णय अपने पैदा होने से ले रही थी।

‘कृपया कर कोई बैग नहीं।’ मैंने कहा जैसे ही मैंने केक का डिब्बा किताबों वाले बैग में रखा। मैंने बैग को सीधा अपनी गोदी में रखा जब तक कि मैं विद्या के घर नहीं पहुंच गया।

विद्या के घर में केक को छुपा कर ले जाना बहुत मुश्किल था। ईश के घर में होने के कारण यह और भी मुश्किल हो गया था। भारत और इंग्लैंड का दिन-रात का मैच ईडन गार्डन कलकत्ता में चल रहा था। ईश सैंडविच, दूध, चिप्स और बिस्कुट और अन्य चीजों जो उसे अगले आठ घण्टे चाहिये थीं, लेकर सोफे पर बैठा था। ईश के डैड खाने की मेज पर अखबार लेकर बैठे थे और अपनी पी.एच.डी. को जारी रखे हुए थे। जैसा कि अक्सर होता था जब ईश आस-पास होता था अंकल के चेहरे पर बुरे-भाव होते थे।

मैंने बैग को अपनी बाजू के बीच में रखकर टांग लिया।

भारत खेल रहा हैं-गांगुली और तेन्दुलकर 10 ओवर के बाद बिना खोये 70 रन बना चुके हैं।’ ईश ने कहा और चिल्लाया, ‘मोम सॉस।’

अंकल ने खाने की मेज से सॉस की बोतल उठाई और कॉफी की मेज पर अपने बेटे के आगे जोर से रख दी।

‘धन्यवाद डैड’ ईश ने कहा, ‘क्या आप हट सकते हैं, मुझे टी.वी.नहीं दिखाई दे रहा।’

ईश के डैड ने अपने बेटे को गन्दी नजर से देखा और हट गये।

‘बैठो’ ईश ने मुझे कहा।

‘ट्यूशन’ मैंने विद्या के कमरे की ओर इशारा करते हुए कहा।

‘अहा, तुम इस बात के लिए आये हो, वह अपने जन्मदिन वाले दिन पढ़ रही है क्या पढ़ाकू है।’

‘कुछ लोग अपने जीवन के बारे में गम्भीर होते हैं।’ ईश के डैड ने अखबार पढ़ते हुए कहा।

ईश ने टी.वी. रिमोट से विरोधस्वरूप जितनी आवाज बढ़ा सकता था बढ़ा दी।

‘इसकी मां ने इसे एक दानव बना दिया है, ईश के डैड ने अपने सोने के कमरे में जाते हुए कहा। तेन्दुलकर ने चौका मारा और दानव ने तालियां बजाई।

‘चिन्ता मत करो, डैड ठीक है।’ ईश ने मेरे घबराए हुए भाव को देखते हुए कहा, ‘उसे शुभकामनाएं देना, वो इसे पसन्द करेगी। मैं सुबह यह भूल गया था।’

ईश ने एक सैंडविच का टुकड़ा उठाया और बहुत से चिप्स व सॉस डाल कर एक बड़ा सा टुकड़ा काटा। मेरे दोस्त ने अपना प्यार पा लिया था। मुझे अपना ढूंढना था। मैं सीढ़ियां चढ़ा। मेरा दिल तेजी से धड़क रहा था।

‘जन्मदिन मुबारक मिस, अट्टारह।’ मैंने उसे छत का दरवाजा बन्द करते हुए शुभकामनाएं दीं।

उसने चमकती लाल कुर्ती के साथ सफेद पैंट पहन रखी थी। कपड़ों की पसन्द थोड़ी सी शोख थी पर मेरा ख्याल है कि जन्म-दिन के दिन ठीक थी।

‘क्या तुम जानते हो अट्टारह, केवल वह अंक है जो अपने अंकों के जोड़ से दुगना है।’ उसने कहा।

मैंने केक निकाला और सफेद प्लास्टिक की मेज पर रख दिया। टैन से केक कोई उच्च स्तर का हो रहा है। उसने

छेड़ा

‘तुम्हें चॉकलेट पसन्द है, उनके पास सबसे बढ़िया है।’ मैंने डिब्बा खोलते हुए पूछा। वो अपनी कुर्सी से खड़ी हुई और केक को देखने के लिये मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

‘तुम बदल गये हो जबसे हमें वह चीज मिली है।’

‘कौन सी चीज?’ मैंने उस की बड़ी आंखों में झांकते हुए कहा।

‘यह चीज’ उसने कहा और मेरा चुम्बन लेने के लिए आगे बढ़ी। पिछले महीने से हम लगभग हर कक्षा में चुम्बन लेते थे। इसलिए यह कोई बड़ी बात नहीं थी। कई बार हम चुम्बन लेते थे जब वह समस्या का समाधान कर लेती थी और अन्य समय पर हम हर पन्द्रह मिनट के बाद हम चुम्बन ब्रेक लेते। एक बार हमने एक भी चुम्बन नहीं लिया क्योंकि उसने मॉक टेस्ट दिया था। लेकिन हमने इसकी कसर अगली कक्षा में पहले दस मिनट चुम्बन ले कर निकाल दी। और

अगले दस मिनट में हमने उसकी गलियों पर विचार विमर्श किया। हमारी जब इच्छा होती हम चुम्बन लेते, लेकिन जब हमें शर्मिन्दगी महसूस होती हम पढ़ते। लेकिन फिर भी हमने हिसाब और रोमांस को एक घण्टे में मापना सीख लिया।

हम छत के कोने की तरफ चले गये सूर्य की आखिरी किरणें भी लुप्त हो गई और आसमान गहरा संतरी हो गया। शाम की हवा थोड़ी सी ठण्डी थी। थोड़ी सी दूरी पर हमने ओमी के मन्दिर का गुम्बद देखा।

उसने अपने हाथ मेरे हाथ से बांध लिये और मेरी तरफ देखा, ‘तुम मुझे बताओ।’ उसने अपने चेहरे से बाल हटाते हुए कहा, ‘क्या मुझे डॉक्टर बनना चाहिए।’

मैंने गर्दन हिलाई।

‘मैं कैसे बाहर निकल सकती हूं?’

‘किसी भी कॉलेज में दाखिला लो और जाओ।’ मैंने कहा,

‘कैसे?’ उसने मेरा हाथ थपथपाते हुए कहा, मुझे दाखिला लेने के लिये दाखिला फीस कैसे मिलेगी? मैं मुम्बई में कैसे रह पाऊंगी?’

‘तुम्हारे माता-पिता सम्भवतः आगे आयेंगे। वे तुम्हारी पढ़ाई के लिये खर्च करेंगे, तब के लिए...।’

एक जोरदार आवाज चारों तरफ गूंजी जिसने हमें झकझोर दिया। भारत ने छक्का मारा था।

‘तब तक क्या? उसने शोर थम जाने पर पूछा।

‘तब तक मैं तुम्हारी मदद करूंगा।’ मैंने कहा, हमने एक दूसरे की आंखों में देखा। वह मुस्करायी। हमने छत का एक चक्कर लगाया।

‘तो मेरा शिक्षक यह विश्वास करता है कि मुझे हिसाब की समस्याओं को हल करने की आवश्यकता नहीं।’

‘जीवन के हिसाब का हल निकालना ज्यादा महत्वपूर्ण है।’ मैंने कहा।

‘वो क्या है?’

‘तुम क्या हो, तुम क्या चाहते हो, इसके विपरीत लोग तुमसे क्या चाहते हैं। और लोगों को ज्यादा तंग किये बिना तुम वो कैसे रख सकते हो जो तुम चाहते हो।’ ‘क्या यह संभव है, कि मैं भाग भी जाऊं और मेरे माता-पिता नाराज भी न हो।’ ‘तुम नराजगी की अवस्था को कम कर सकती हो लेकिन इसे बिलकुल खत्म नहीं कर सकती। हम जीवन में उम्मीद.....कर सकते हैं पर इसे सुलझा नहीं सकते।’ मैंने कहा जैसे ही हम छत के कोने के करीब आ गए।

‘क्या मैं तुम्हें सनकी बात बता सकती हूं।’

‘क्या?’

‘जब तुम पूर्ण हिसाब की बात कर रहे होते हो, और जब तुम उन फार्मूलों को बोल रहे होते हो जो मेरे सिर के ऊपर से निकल जाते हैं’ उसने अपने सिर के ऊपर से हाथ का इशारा करते हुए कहा।

‘हां, तो क्या?’

‘यह मुझे उत्तेजित कर देता है।’

‘विद्या, तुम्हारा खुलापन...’ मैंने हैरान होते हुए कहा।

‘तुम्हें शरमा देता है, ठीक है न’, उसने हंसते हुए कहा।

मैंने विषय को बदलते हुए कहा, ‘हम केक काट रहे हैं या नहीं।’

‘बेशक, आओ कैफे विद्या में चलें।’

हम पानी की टंकी के नीचे खिसक कर बैठ गये। वह छः पिन कुशन और एक चटाई ले आई थी।

मैं इन्हें अपने कमरे से यहां ले आई थी ताकि हम पार्टी कर सकें! उसने मुझे दो कुशन पकड़ाते हुए कहा। कुशनों के नीचे एक स्टीरियो भी पड़ा था।

‘संगीत’ उसने कहा, उसका चेहरा एक गाने की तरह सुन्दर लग रहा था। मैंने हां में गर्दन हिलाई। ‘मैं बायजोन लगाऊंगी क्योंकि यह मेरा पसन्दीदा है,’ उसने कहा।

मैंने अपनी जेब से अट्टारह मोमबत्तियाँ निकालीं जो कि केक के साथ आई थी। ‘आओ हम सब को जलायें’ उसने कहा।

मैं छत की बत्तियाँ जलाना चाहता था क्योंकि अंधेरा होने वाला था।

‘रहने दो,’ उसने अट्टारहवीं मोमबत्ती जलाते हुए मेरा हाथ खींचते हुए कहा। ‘लेकिन अगर कोई आ गया।’

‘मेरे माता-पिता के घुटनों में दर्द है। वह कभी छत पर नहीं आते और ईश, भी नहीं आ सकता क्योंकि नीचे मैच चल रहा है।’

हमने नीचे से आता हुआ जबरदस्त शोर सुना। भारतीय पारी अन्तिम ओवर में पहुंच चुकी थी।

जैसे ही मैं फिर से बैठा उसने मेरा हाथ छोड़ दिया। वह मोमबत्ती की रोशनी में बहुत सुन्दर लग रही थी। ‘नो मैटर वैट’ गाना बजने लगा। हर रोमान्टिक गाने की तरह इसके शब्द भी हमारे लिये ही बने थे।

कोई फर्क नहीं पड़ता, वे हमें क्या कहते हैं

कोई फर्क नहीं पड़ता के वे क्या करते हैं,

कोई फर्क नहीं पड़ता के वे क्या सिखाते हैं,

हम जिस पे विश्वास करते हैं वह ही सच है।

मोमबत्ती की लपटें संगीत की धुन पर इधर-उधर होती लग रही थीं। उसने प्लास्टिक के चाकू से केक को काटा। मैंने फिर से उसे मुबारकबाद दी और केक का एक टुकड़ा उसके मुंह में डाल दिया। वह मेरी ओर झुकी, उसने मुझे कुशनों पर गिराते हुए मेरा मुंह अपने मुंह के करीब कर दिया ताकि मैं अपना केक का हिस्सा ले सकूँ। उसने मुझे ऐसा चुम्बन दिया जैसा उसने मुझे कभी नहीं दिया था। ऐसा नहीं था कि उसने कुछ भिन्न किया लेकिन उसके पीछे भावना बहुत अधिक थी। उसके हाथ मेरे कंधे से होते हुए मेरी कमीज के नीचे चले गये।

संगीत जारी था।

‘मैं उसे झुठला नहीं सकता जिसमें मैं विश्वास करता हूँ

मैं वो नहीं हो सकता जो मैं नहीं हूँ

मैं जानता हूँ प्यार हमेशा के लिये है

और इसके इलावा किसी चीज से फर्क नहीं पड़ता।’

मैं नहीं जानता कि यह मोमबत्ती की रोशनी थी या जन्म दिन का मूड या कुशन या कुछ भी। लेकिन मैंने यहां तब अपने जीवन की दूसरी गलती की।

मैंने उसकी कुर्ती के ऊपर के बटन को खोला और अपनी अंगुलियां कुर्ती के अन्दर डाल दीं। मेरी अन्दर की आवाज ने मुझे रोकने की कोशिश की, मैंने अपना हाथ बाहर निकाल लिया, लेकिन उसने मुझे चूमने को जारी रखने के साथ अपनी कुर्ती के बाकी के बटन भी खोल दिये। उसने मुझे अपनी तरफ खींच लिया।

‘विद्या.....’ उस समय तक मेरे हाथ उस जगह पहुंच गये थे जहां पर किसी व्यक्ति के लिये हटाने मुश्किल थे। इसलिये मैं भावना, परवाह, इच्छा या जो कुछ भी लोग इसे कहते हैं, जो मानव की समझ को उड़ा देती है, उसमें बह गया।

उसने अपनी कुर्ती उतार दी। ‘अपने हाथ हटाओ वे भाग नहीं जायेंगे।’ ‘हां’ मैंने कहा। उसने अपनी ब्रा की तरफ इशारा करते हुए कहा, ‘मैं इसे कैसे उतारू?’

मैंने अपने हाथ उस के पेट पर रखे और वह ब्रा उतार कर मेरे ऊपर लेट गई। उसने मेरी कमीज को पकड़ते हुए कहा, ‘इसे उतारो, उस समय अगर वह मुझे छत से छलांग लगाने को भी कहती तो मैं करता। इसलिये मैंने उस के निर्देशों का पालन किया।

ना संगीत रुका, ना हम। हम आगे और आगे बढ़ते गये जैसे-जैसे केक की मोमबत्तियां एक के बाद-एक जलती रहीं। हमारा शरीर पसीने की बूंदों से चमकने लगा। विद्या ने बीच में एक बार को छोड़कर कुछ नहीं बोली।

‘क्या तुम मेरे ऊपर से नीचे आओगे।’ उसने ऐसा करने के बाद ही कहा।

मैं नीचे गया और ऊपर आ गया। हम जैसे ही एक हुए, हमने एक दूसरे की आंखों में देखा। नीचे से चीखें जारी थी क्योंकि इंग्लैंड कुछ विकटें खो चुका था।

केवल चार मोमबत्तियां बची थीं, जब तक हमने खत्म किया। हमने छः कुशनों को जोड़ कर एक गद्दा बनाया और उस पर लेट गये। हमें तब पता चला कि उस समय कितनी सर्दी और ठण्डी हवा चल रही थी। हमने अपने आप को मेरी जैकेट से ढक लिया और अपने ठण्डे पांव कुशन के नीचे कर लिये।

‘वाह, मैं व्यस्क हो गई हूं और कुंआरी भी नहीं रही हूं, क्या बात है, धन्यवाद भगवान,’ उसने मुस्कुराते हुए कहा। वह मेरे साथ सिमट गई। एक सच्चाई की भावना, जोश के कम होते ही दिखाई देने लगी। ‘तुम ने क्या कर दिया, गोविन्द पटेल।’

‘देखो, मेरे अभी भी गुंस बम्बस है’ उसने अपनी बाजू उठाते हुये कहा। छोटे पिक बम्पैस उसकी साफ मुलायम बाजू पर दिखाई दे रहे थे।

मैंने अपने आप को गाली देते हुए कहा, तुम क्या पर क्या कर रहे हो उस के गुंस बम्पंस को छू रहे हो?’ मेरे अन्दर की आवाज मजबूत हो गई।

‘मैं खुश हूं कि यह कुछ हुआ। क्या तुम नहीं हो?’ उसने कहा।

मैं चुप रहा।

‘कुछ कहो।’

‘मुझे जाना चाहिए।’

‘क्या तुम्हें यहां अच्छा नहीं लग रहा?’

‘यहां,’ तुम जानती हो हम तुम्हारे डैड, मम्मी और भाई के ऊपर है।’

‘बेमतलब की बात न करो।’ उसने कहा।

‘मुझे अफसोस है, पर मैं घबराया हुआ हूं।’

‘न घबराओ’ उसने मुझे बांहों में लेते हुये कहा। उसने मेरे शरीर को कांपते हुए महसूस किया। ‘क्या तुम ठीक हो?’ मैं नहीं जानता क्यों, पर मेरी आंखों में आसू थे। शायद मैं डर गया था। शायद किसी ने इससे पहले मुझे इस तरह

पकड़ कर नहीं पूछा था कि मैं ठीक हूं, शायद मैं नहीं जानता था कि मुझे इस तरह महसूस करना सम्भव है। शायद मैंने अपने सबसे अच्छे दोस्त को धोखा दिया है। मैं आमतौर पर रोता नहीं हूं लेकिन एक ही समय में इतने कारणों के कारण ऐसा न होना असम्भव था।

‘अरे, मैं लड़की हूं, मुझे रोने वाला हिस्सा करने दो।’ उसने कहा। मैंने उसकी भीगी हुई आंखों में देखा।

मैं उठा और अपने कपड़े पहने। जैसे ही हम बाहर आये चांद छत पर आ चुका था। मैंने अपनी घड़ी देखी। मैंने अपनी क्लास पढ़ाने से तीस मिनट ज्यादा ले लिये थे!

‘मैं तुमसे प्यार करती हूँ।’ उसने पीछे से कहा, जैसे ही मैंने छत का दरवाजा खोला।

‘जन्मदिन मुबारक’ मैंने कहा और नीचे उतर आया।

मेरे नीचे उतरते ही ईश बोला, ‘अरे, तुमने खेल का अच्छा भाग खो दिया। हम इसे जीत जायेंगे, तुम रुको।’

‘नहीं, मैं थक गया हूं मैं इसे घर जाकर देखूंगा।’, मैंने मुख्यद्वार पर पहुंचते हुए कहा। ‘खाना खाकर जाना बेटे’, ईश की मां ने खाने की मेज सजाते हुए कहा। ‘मैंने, विद्या के जन्म दिन के लिये खास पकवान बनाये हैं।’

‘नहीं, आंटी, मेरी मम्मी ने घर पर खाना बनाया हुआ है।’, मैंने कहा।

मैंने उनकी बेटी का जन्मदिन मना लिया था।

‘कितना अच्छा लड़का है’, उसने प्यार से कहा, जैसे ही मैं घर से निकला।

## सत्रह

‘इसे ठीक से पकड़ कर रखो, यह हिल रहा है,’ ओमी ने कहा। वो एक स्टूल पर खड़ा था ताकि एक छत पर पहुंच सके। हम पंखे पर तिरंगे रिबनों को टांगने की कोशिश कर रहे थे। मैंने स्टूल की टांगे पकड़ रखी थी। ईश गोंद और सैलो टेप के साथ हमारे साथ खड़ा था।

‘मैं गिर जाऊंगा,’ ओमी ने स्टूल से अपने दाहिने पैर को हिलाते हुए चेतावनी दी।

‘यह मेरी गलती नहीं है, स्कूल की टांगे थोड़ी ढीली हैं,’ मैंने कहा।

मैं कभी भी गणतन्त्र दिवस मनाना नहीं चाहता था जोकि एक हफ्ते में आ रहा था। लेकिन हम भूचाल के एक साल बाद अपनी पुनर्जीवन को मनाना चाहते थे। हालांकि उस दिन के विचार से ही मैं कंपकंपाने लगता था। लेकिन मुझे सन्तुष्टि थी कि हमने अपने सभी कर्ज उतार दिये थे। हमारा व्यापार एक वर्ष में तीन गुना हो गया था और यह सभी कुछ इसी दुकान में से ही हुआ था।

‘26 जनवरी की तैयारियाँ, लगे रहो’, मामा के आने से हम बधित हुये। ओमी स्टूल से उछला और फर्श पर आ गिरा। रिबन उसके सिर पर आ गिरे।

‘तुमने इसे जाने दिया’, उसने मुझे दोषी ठहराया, लेकिन हर कोई हंसने लगा। मामा ने समोसे का भूरे रंग का बैग और कुछ पीले रंग के पर्चे मेज पर रखे। हमने एक-एक समोसा उठा लिया।

‘एक साल निकल गया उस दुःखदपूर्ण घटना को’, मामा ने ठण्डी सांस भरते हुए कहा, ‘मुझे गर्व है कि तुम मेहनत कर फिर से अपने पैरों पर खड़े हो गये हो। कुछ और भी बदला था।’ गोविन्द क्या तुम्हें याद है? इसे कभी मत छोड़ना, ठीक हैं।’ मैंने गर्दन हिलाई, ‘हां’, मेरे भगवान के विश्वास ने मेरी पिछले साल मदद की थी। और मैं इसे जारी रखना चाहता था।

‘जब आप भगवान में विश्वास करते हैं तो अत्यंत चीजें होती हैं और इसीलिये मैं यहां लेकर आया हूं’, मामा ने पीले पर्चे देते हुए कहा।

‘मैंने शीर्षक पढ़ा।’

चेतावनी यात्रा,

राम के सभी प्यारों को अयोध्या आने का निमन्त्रण।

मैंने आगे पढ़ना आरम्भ किया। हिन्दू पार्टी अयोध्या मंदिर में हजारों की गिनती

में लोगों को अयोध्या भेजना चाहती थी। यह धर्म निरपेक्ष सरकार को मन्दिर मामले की याद दिलवायेगी। पर्चे में मामा से मिलने का नम्बर, दूसरे कार्यकर्ताओं का नम्बर, जाने के लिये भिन्न-भिन्न तिथियां और कैसे जाया जायें आदि का

विस्तारपूर्वक वर्णन था।’ हमारी एक समय-सीमा ये पर्चे में बताया गया था लेकिन कोई तारीख नहीं बताई गई थी।’

‘अच्छा है न’, मामा ने मुझसे पूछा ‘जी पारिख जी ने भी कहा था, आगे बढ़ो, तुम लोगों के ध्यान में आओगे,’ मैंने उत्तर दिया।

‘तुम लड़कों को आना चाहिये। मामा ने कहा,’ सच में फरवरी की यात्रा केवल नौजवानों के लिये है, यहां तक कि मैं भी नहीं जा रहा। मेरा बेटा इस बार जा रहा है। तुम्हें अच्छा साथ मिलेगा।’

मैं चुप रहा।

‘वहां जाना आसान है। अहमदाबाद स्टेशन से साबरमती एक्सप्रेस सीधी गाड़ी है’, मामा ने व्यग्रता से मेरी ओर



देखते हुए कहा। मुझे दिलचस्पी दिखानी पड़ी हालांकि मैं जाना नहीं चाहता था।

‘कितना समय लगता है,’ मैंने पूछा।

‘एक तरफ के 32 घण्टे।’

‘तीन दिन केवल यात्रा में, मामा हम कैसे जा सकते हैं?’ मैंने लम्बा चेहरा बना कर कहा, ‘नये साल में कितना काम पड़ा है।’

‘यहां व्यापार के अतिरिक्त और भी जीवन है।’ मामा ने कहा। वे जाने के लिये उठ खड़े हुये।

मैंने गल्ला खोला और कुछ नोट निकाले, ‘ये लीजिये अगले तीन महीने का किराया।’

‘पैसों के लिये किसने कहा है,’ मामा ने कुर्ते की जेब में नोट रखते हुए कहा ‘इस बार अपने छोटे भाई के साथ आना, वो तुम्हें बहुत पसन्द करता है।’

‘मामा, बुरा मत मानिए, हम तब चलेंगे, जब व्यापार थोड़ा कम होगा शायद मार्च, पेपरो के दिनों में,’ मैंने कहा।

‘तो अब पीछे मत हटना, मार्च तय हुआ,’ मामा ने कहा।

हमने गर्दन हिलाई मैंने झाड़ू उठाई और समोसों के टुकड़ों को साफ कर दिया। ‘ठीक है, मैं चलता हूं, मुझे फरवरी की यात्रा के टिकट बुक करवाने हैं,’ मामा ने कहा और खड़े हो गए।

‘मामा। मैं आपके लिये टिकट बुक करवा सकता हूं,’ ओमी बोला।

‘क्या तुम सचमुच करवा दोगे, बहुत-बहुत धन्यवाद बेटे। मुझे गांधीनगर जाना था और कोई समय नहीं है।’ उसने अपनी दूसरी जेब से एक लिफाफा निकाला।

‘इसमें सभी के नाम और पैसे हैं, धीरज और आठ अन्यो की 20 फरवरी को जाने की एक हफ्ते बाद आने की स्लीपर क्लास की टिकटें करवानी है,’ मामा ने कहा। ओमी ने अपनी कमीज की जेब में वह लिफाफा रख लिया।

‘छः, सात, आठ नहीं सच में वह समय गिनती में नहीं आता क्योंकि हमने वास्तव में नहीं किया।’ विद्या खुद से बुदबुदायी जब वह मेरे पास लेटी थी।

ओमी अपने कजन को रेलवे स्टेशन पर छोड़ने गया था, ईश दुकान पर बैठा था, मैं क्रमचय और सम्मिलन को दोहराने के बहाने से उस की बहन के साथ नंगा लेटा था।

‘तुम किस चीज की गिनती कर रही थी,’ मैंने पूछा।

‘हमने कितनी बार सम्भोग किया है,’ उसने उत्तर दिया, ‘वाह हमारा आंकड़ा आठ हो भी गया।’

‘तुम हिसाब रखती हो।’ मैंने पूछा।

‘मैं बहुत सी चीजों का हिसाब रखती हूं? उसने कहा।

‘जैसे क्या?’

‘जैसे आज 21 फरवरी है, मेरे पीरियड को पांच दिन है, इसलिए यह सुरक्षित दिन है।’

‘यह वैसे भी सुरक्षित है मैंने कंडोम का प्रयोग किया है,’ मैंने कुशन को आराम से रखते हुए कहा।

‘वाह, तो अब तुम हिसाब से ज्यादा भौतिक विज्ञान पर विश्वास करते हो,’ उसने हंसते हुए कहा।

वह मुड़ कर कोहिनियों के बल लेट गई और अपने पैरो को पिण्डलियों पर रख दिया।

‘क्या तुम अभी भी कंडोम खरीदते हुए शर्माते हो।’

‘मैं इन्हें किसी अन्जान व्यक्ति से खरीदता हूं और अभी के लिये मेरे पास काफी है।’

‘अच्छा’ उसने मेरे ऊपर चढ़ते हुये कहा, ‘तो अगर एक, दो और प्रयोग में ले आये तो कोई समस्या नहीं है।’

इसके साथ हमारा आंकड़ा 9 पर पहुंच गया।

‘शुभ-रात्रि, आंटी ‘मैंने विद्या की मम्मी से कहा। मुझे इस हिस्से से नफरत थी जब आंटी मुझे खाने के लिये कहती या कहती कि मैं इतना काम क्यों करता हूं। मैं अपने विचारों में खोया, अपने घर पहुंचा। दो महीनों में नौ बार हमने एक सप्ताह में कम से कम एक बार संभोग किया है। नौ बार का मतलब है मैंने शंका के सभी लाभ खो दिये हैं। मैं नहीं कह सकता था कि मैंने एक क्षणिक भावना में बहकर उससे प्यार किया था। तुम कोई चीज नौ बार दुर्घटनावश नहीं करते। हालांकि कई बार दूसरे प्रकार की दुर्घटना हो सकती है और यह मैंने पांच दिन के बाद पाया।

‘कुछ है जो तुम्हें जानना चाहिये, उसने कहा हम अहमदाबाद कपड़ा उद्योग शोध संस्थान के बागीचे में थे। उसने मुझे एस.एम.एस. भेजा था कि हमें एक ‘अति आवश्यक सैर’, इसका जो भी मतलब हो, पर जाने की आवश्यकता है। हमने घर यह कहा था कि हमने एक अच्छी हिसाब की कुंजी खरीदने जाना है। इसके बाद हमसे कोई सवाल नहीं किया गया। वस्त्रपुर के कैम्पस लॉन शाम की सैर करने वाले लोगों से भरा पड़ा था। कुछ जोड़े हाथ में हाथ डाले घूम रहे थे। मैं भी चाहता था लेकिन किया नहीं। हमने अपनी नजर जमीन पर रखी और धीरे-धीरे सैर करने लगे। मोटी आंटियां जो साड़ी और भागने वाले जूते पहने थीं, और जिनमें वजन घटाने का पक्का इरादा था हमारे पास से गुजरी।

‘क्या बात है’, मैंने मूंगफली का एक पैकिट लेते हुए कहा।

‘कुछ चीज को आने में देर हो गई है’ उसने कहा।

मैंने सोचने की कोशिश की कि वह किस बारे में बात कर रही है लेकिन मैं अन्दाजा नहीं लगा सका।

‘क्या?’ मैंने पूछा।

‘मेरे पीरियड’ उसने कहा।

पुरुष पी शब्द सुनने के बाद कुछ कहने की स्थिति में नहीं होते। ज्यादातर मामलों में वो सुन्न रह जाते हैं।

‘सच्ची?’ ‘कैसे?’ मैंने शब्दों को ढूंढते हुए कहा।

‘तुम्हारा क्या मतलब है कैसे?’ इन्हें कल पच्चीस को आना था लेकिन नहीं आये।’

‘क्या तुम्हें पक्का विश्वास है?’ ‘माफ करना, अगर यह आते तो क्या मुझे पता न लगता’, उसने मेरी ओर देखते हुए कहा।

‘नहीं, मेरा मतलब है कि क्या तुम्हें पक्का विश्वास है कि पच्चीस फरवरी ही तारीख थी।’

‘मैं हिसाब में इतनी भी खराब नहीं हूं’ ‘ठीक है लेकिन....’ मैंने कहा मैंने समस्या खड़ी कर दी थी। मैं विचार-विमर्श में कुछ भी सही बात नहीं कह सकता था। मैंने उसे मूंगफली देनी चाही, उसने मना कर दिया, ‘लेकिन क्या?’ उसने पूछा।’ पर हमने सावधानी बरती थी ‘और यह लड़कियों में कैसे होता है क्या वे हमेशा समय पर आते हैं?’ मैंने पूछा।

संसार में कुछ भी एकदम समय पर नहीं होता।

‘आमतौर पर मेरे समय पर होते हैं लेकिन मैंने कभी ख्याल नहीं किया। लेकिन अब जब मैं तुम्हारे साथ हूं थोड़ी सी देरी भी मुझे डराती है और उत्सुकता और देर कर देती है।’

‘क्या तुम डॉक्टर को दिखाना चाहोगी?’ मैं समाधान बताने के लिये उतावला था। ‘और क्या कहेंगे? कृपया जांच कीजिए कि क्या मैं गर्भवती हूं।’

एक और पी शब्द पुरुषों को सुन्न करने के लिये नहीं उसने ऐसा नहीं कहा। तुम गर्भवती नहीं हो सकती’, मैंने कहा। मेरे माथे पर इतना पसीना आया जैसे मैंने मैदान के तीन चक्कर भाग कर लगाये हैं। मैंने अपने हाथों को मला और गहरी सांसें लीं। ‘क्यों नहीं हो सकती? उसने ऊंची आवाज में कहा। उसका चेहरा चिन्तित लग रहा था। ‘और क्या तुम अति आलोचनात्मक की अपेक्षा सहायक हो सकते हो?’ ‘आओ यहां बैठो’, मैंने एक बैच की ओर इशारा करते हुए कहा। मैंने मूंगफली को कूड़ेदान में फेंका। वो मेरे पास बैठ गई। मैंने सोचा कि क्या मुझे अपनी बांहें उस के कंधे पर रखनी चाहिए। मैं उसके इतना करीब था कि यह वैसे भी हो गया था। वो चुप रही। उसकी आंखों से दो आसू टपके। हे, भगवान् मुझे कोई रास्ता निकालना होगा। मेरे मन ने तीव्र गति से विकल्प सोचने

शुरू किये। (क) उसे हसाऊं.

बुरा विचार (ख) एक तरफ हट जा.... नहीं (ग) कुछ सशक्त समाधान जैसे ए शब्द..... बिकूल नहीं 'डी', उसे पकड़ूँ.. शायद ठीक है पकड़ूँ और उसे बताऊँ कि तुम उसके लिये वहां होगे। बेवकूफ आदमी इसे तुरन्त करो।

मैं बैच पर इसके और करीब हो गया और उसे आलिंगनबद्ध कर लिया। उसने अपना चेहरा मेरे कंधों पर रख दिया और रोने लगी। उसके हाथ मेरी कमीज़ पकड़े हुए थे।

‘चिन्ता मत करो, मैं तुम्हारे पास हूँ।’

‘क्यों, क्यों, यह ठीक नहीं है’ ‘क्यों, मुझे ही यह सब देखना पड़ेगा, उसने रोते हुए कहा और क्यों तुम इसी समय गर्भवती नहीं हो सकते।’

लेकिन मैं पुरुष हूँ, मैंने कहना चाहा लेकिन वह यह जानती थी।

‘सुनो विद्या, हमने रिद्धम ढंग का प्रयोग किया। हमने सावधानी बरती, मैं जानता हूँ यह 100 प्रतिशत नहीं है लेकिन संभावना काफी कम...।’

विद्या ने रोते हुए अपना सिर हिलाया हिसाब हमेशा से-सांत्वना देने के लिये भयानक है। कोई भी भावनात्मक क्षणों में सम्भावना में विश्वास नहीं करता।

एक परिवार साथ से गुजरा, एक आदमी ने एक मोटे बच्चे को अपने कंधों में उठा रखा था। मैंने इसे अपने जीवन में बोझ के रूप में देखा। विचारों की गाड़ी फिर से शुरू हो गई। मैं 22 वर्ष का हूँ। मेरे अपने व्यापार के लिए बड़े स्वप्न है। मुझे अपनी मां की सहायता करनी है। इसके बारे में भी सोचो कि मुझे अपने दोस्तों के लक्ष्यों के बारे में भी सोचना है और विद्या? वह केवल अठारह वर्ष की है उसने अभी और आगे पढ़ना है। लोक-सम्पर्क व्यक्ति या जो भी वह बनना चाहती है वह एक जेल से दूसरी जेल की तरफ नहीं जा सकती। ठीक है खराब हालत में मुझे ‘ए’ शब्द के बारे में कहना पड़ेगा

वह मेरे से दूर हुई, रोने ने उसकी आंखों गीली और चेहरे को गुलाबी कर दिया था वह और भी सुन्दर लग रही थी। क्या बात है कि पुरुष कभी भी सुन्दरता को ध्यान में लाये बिना नहीं रह सकते कभी भी? हम कुछ मिनटों के बाद वापस जाने के लिये उठे। ‘एक या दो दिन इन्तजार करते हैं तब हम देखेंगे कि हम क्या करें?’ मैंने ऑटो स्टैंड पर पहुंचते हुए कहा, ‘यह शायद गलत अलार्म है।’ ‘मैं शायद’ ज्यादा प्रतिक्रिया दे रही हूँ, मुझे शायद तुम्हें बताने से पहले एक-दो दिन इन्तजार करना चाहिये था,’ उसने ऑटो में मेरी अंगुलियों को मरोड़ा। उसका चेहरा शान्त से चिन्तित हो गया था। हम ऑटो में पांच मिनट चुप बैठे, तब मुझे कहना पड़ा, विद्या इस मामले में अगर यह गलत अलार्म नहीं है तब हमें क्या करना चाहिये? या हमें इस बारे में बाद में बात करनी चाहिये।’

‘तुम मुझे बताओ, तुम क्या करना चाहते हो?’

जब महिलायें आपको आपकी पसन्द के बारे में पूछती हैं तो उनके मन में पहले से ही एक पसन्द होती है। अगर तुम सब कुछ ठीकठाक रखना चाहते हो, तो तुम उसी को चुनो। मैंने उसकी आंखों में देखा यह जानने के लिये कि वो मेरे से कौन सा उत्तर चाहती है। मैं यह मालूम नहीं कर सकता था।

‘मुझे नहीं पता यह मेरे लिये एक बहुत बड़ा समाचार है। मैं नहीं कह सकता कि हम क्या करेंगे, गर्भवती और गर्भपात मुझे नहीं पता यह सब कैसे होता है।’

‘तुम चाहते हो मैं गर्भपात करवाऊँ?’

‘नहीं-नहीं’ मैंने कहा ‘नहीं मैं जानता हूँ दूसरा विकल्प क्या है शादी।’

‘माफ करना, मैं अठारह साल की हूँ, मैंने अभी स्कूल खत्म किया है।’ उसने कहा।

‘तब क्या?’

‘मैं नहीं जानती।’

‘मैं सोचना भी नहीं चाहती। कृपया, इस बारे में कोई बात न करो।’

हम शेष यात्रा में चुप रहें 'यह लो एक हिसाब की कुंजी घर में दिखाने के लिये,' मैंने उसे एक पुस्तक देते हुए कहा जब हम घर पहुंचे।

विद्या और मैंने उस रात 'क्या तुम सो गये' 'अभी नहीं' जैसे सन्देशों का आदान-प्रदान कर रात बिताई।

'क्या हुआ?' ईश ने पूछा जब मैं अगली सुबह अपना सिर गल्ले पर टिकाया। 'कुछ नहीं, रात अच्छी तरह सो नहीं सका।' 'क्यों?' पंडित जी की बेटी के बारे में सोच रहे हो, ईश ने हंसते हुए कहा।

मैंने उसकी बात को अनसुना किया। हर घण्टे मैं विद्या को 'कुछ-हुआ' का सन्देश भेजना चाहता था। लेकिन वह मुझे बता देगी अगर कुछ होगा। मैंने एक कैलण्डर निकाला और सभी पुरानी तारीखों को खोजा जब-जब हमने सम्बन्ध बनाये। कई महीनों पहले पहली बार को छोड़ कर मैंने हमेशा सावधानी बरती थी। क्या वे किसी और वजह से देर से थे? मैं नहीं जानता और न ही मैं किसी से पूछ सकता था। ईश और ओमी शायद 'पी' शब्द के बारे में जानते भी न हो। और विद्या के अतिरिक्त कोई ऐसी औरत न थी जिसे मैं जानता था। और मैं अपनी मम्मी से भी इस बारे में नहीं पूछ सकता था। मैंने अपना फोन दोबारा उठाया, 'कैसा चल रहा है?' मैंने एक साधारण सा सन्देश भेजा, 'अभी तक कुछ नहीं' उसने जवाब भेजा।

अगली रात मुझे थोड़ी नींद आई। अगली सुबह मैं जल्द अपने बिस्तर से निकला और दोबारा उसे एस.एम.एस. किया। मेरे पास उसकी तरफ से पहले ही एक एस.एम.एस. था 'थोड़ी सी दर्द है और कुछ नहीं।' मैंने फोन को एक तरफ फेंका। मुझे जल्दी दुकान पर पहुंचना था ताकि मैं सामान ले सकूं। फिर भी और देर से जाना नहीं चाहता था।

## अठारह

‘क्या गाड़ियां कभी समय पर आती है, ‘मामा की तेज आवाज ने हमें काम करते हुए रोका। ईश एक विकेटों का डिब्बा खींच कर ला रहा था।

‘मामा आप यहां इतनी जल्दी’, ओमी ने पूछा।

मामा ने विकेट के डिब्बे पर दो पिंक पेपर रखे। उन्होंने अपने माथे पर सुबह की आरती का टीका लगा रखा था।

‘मैं अपने बेटे और सेवकों के लिए गर्म-गर्म कचौरियां लेकर आया था, उनकी गाड़ी सुबह पांच बजे आनी थी पर यह पांच घण्टे देरी से चल रही है, अब क्या करे, मैंने सोचा, अब मैं यह तुम्हारे साथ खा सकता हूं,’ मामा ने कहा और कचौरियां बाहर निकाल लीं।

‘हमारे लिये बचा हुआ नाश्ता’ ओमी ने हंसते हुए कहा।

‘ये बिल्कुल ताजी हैं, मैं उनके लिये और ले आऊंगा जब वे आ जायेंगे। गर्म-गर्म ही खा लो, आओ ईश, आओ गौविन्द,’ मामा ने कहा ‘मैं-नहीं जानता था कि तुम इतनी जल्दी आ जाते हो, ‘दुकान की घड़ी ने आठ बजाये।

‘गोदाम में कुछ काम था,’ मैंने कचौड़ी का एक टुकड़ा काटते हुए कहा। कचौड़ियां बड़ी स्वादिष्ट थीं, हमने चाय, मंगवाई और दुकान के बाहर स्कूलों पर बैठ गए

मामा ने ओमी से उसके रिश्तेदारों के बारे में बात करना शुरू किया। ईश और मैंने सारे दिन किसे-किसे माल देना था, इस बारे में विचार किया। दुकान नौ बजे तक नहीं खुलनी थी, हम आराम से खा सकते थे। ‘चाय का तीसरा दौर ठीक, बिल्कुल ठीक,’ मामा को कहा और चाय वाले लड़के को फिर से बुलाया। मेरा दो कचौरियां खाकर पेट भर गया था।

मामा-साढ़े नौ बजे जाने के लिये खड़ा हुआ। मैंने डिब्बों को दोबारा बांध कर उसे दे दिया। ‘इसे रखो मैं और ले लूंगा।’

‘नहीं मामा, हमने काफी खा लिया....।’ मामा की फोन की घण्टी ने मुझे बीच में-रोका। मामा ने फोन उठाया, उसका चेहरा चिन्तित हो गया, उस का मुंह खुला और उसकी आंखे इधर-उधर घूमने लगीं।

‘मैं कोच का नम्बर नहीं! जानता। तुम मेरे से क्यों पूछ रहे हो।’

‘क्या बात है मामा?’ ओमी ने मामा से पूछा

मामा ने अपना हाथ फोन पर रखा और ओमी की ओर घूमा।

‘अयोध्या से एक निम्न पार्टी का कार्यकर्ता बोल रहा है। उसने कार सेवकों को पिछले दिन गाड़ी में बैठाया था, अब वह कोच का नम्बर मांग रहा है और वह यह नहीं, बता रहा कि वो क्यों मांग रहा है।’ मामा ने कहा।

‘रुको, ओमी ने दुकान के अन्दर जाते हुए कहा वह एक कापी लेकर बाहर आया। मैंने कोच का नम्बर व दूसरी जानकारीयां बुकिंग करवाते समय नोट कर ली थी।’ ओमी ने कहा।

मामा ने कापी ली और फोन पर बोलने लगा, ‘ठीक है सुनो, वह एस 6 में थे हां एस 6 हां सौ प्रतिशत एस 6, हैलो, सुनो तुम मुझसे बात करते समय भगवान को क्यों याद कर रहे हो हैलो.....।’

दूसरी तरफ से फोन काट दिया गया। मामा ने दोबारा नम्बर मिलाने की कोशिश की पर किसी ने नम्बर नहीं मिलाया।

‘क्या हो रहा है?’ मैंने पूछा। ‘मैं नहीं जानता, मुझे जाना चाहिए-मैं स्टेशन जाऊंगा’, मामा ने कहा।

‘मैं आपके साथ आता हूं।’ ओमी ने कहा।

‘नहीं, सब ठीक है, मैंने वैसे भी जाना था, मैं ढूंढ लूंगा ‘मामा ने कहा और चल दिया।

दो घण्टे बाद, सारे देश को पता चल चुका था।

‘चैनल को बदलना बन्द करो’ मैंने चिल्ला कर कहा, ‘वे सब एक ही चीज दिखा रहे हैं।’

हम एन.डी.टी.वी, पर रुके। समाचार पढ़ने वाले ने दसवीं बार उस समाचार को दोहराया।

‘पचास से ज्यादा लोग मारे गये हैं और दर्जन के करीब लोगों को चोटें आईं जब शरारती तत्वों ने बुधवार की सुबह गुजरात के गोधरा स्टेशन पर साबरमती के डिब्बे को आग लगा दी। ‘चैनल वालों ने गोधरा के एक रेलवे अधिकारी का नम्बर मिलाया ‘क्या आप बता सकते हैं कि वास्तव में क्या हुआ है?’ समाचार वाचक ने पूछा।

‘हम अभी विस्तृत जानकारी ले रहे हैं करीब सुबह साढ़े आठ बजे साबरमती एक्सप्रेस गोधरा स्टेशन पर रुकी।’ अधिकारी ने बताया और साथ ही उसकी आवाज चली गई।

‘हैलो, क्या आप मुझे सुन सकते हैं’, समाचार वाचक ने कई बार पूछा।

‘हां, अब मैं सुन सकता हूं’, अधिकारी ने अपनी कहानी आगे बढ़ाते हुए कहा। इस समय जो बात चैनल वालों को पता चली, उसके अनुसार एक समूह ने साबरमती एक्सप्रेस के डिब्बे पर पथराव किया। उसमें अयोध्या से आ रहे कार

से।वक थे। यात्रियों ने पत्थरों से बचने के लिये खिड़कियां बन्द कर लीं। समूह ने डिब्बे पर पेट्रोल फेंक कर आग लगा दी।

‘यह समूह किस प्रकार का था, क्या यह पूर्व नियोजित लग रहा था?’ समाचार वाचक ने पूछा।

रेलवे अधिकारी विवादास्पद बात से बचा।

‘पुलिस आ गई है, जांच पड़ताल जारी है, केवल वह ही विस्तृत जानकारी दे सकते हैं।’

ईश, ओमी और मैंने लगातार टी.वी. देखना जारी रखा। हमने उस दिन के सारे कार्य स्थगित कर दिये।

‘मामा फोन नहीं उठा रहे हैं, मैंने दस बार कोशिश की’ ओमी ने फोन एक तरफ गिराते हुए कहा।

विभिन्न टीवी चैनल गोधरा स्टेशन पहुंच गये थे। हमने जले हुए डिब्बे को देखा। बाकी की गाड़ी अहमदाबाद के लिए रवाना हो चुकी थी। एक चाय बेचने वाले ने रेलवे अधिकारी से अधिक बताया।

‘समूह में मुसलमान थे, उनकी हिन्दु कार सेवकों के साथ बहस हुई और उन्होंने औरतों, बच्चों व सबको जला दिया।’

‘58 लोग मारे गये हैं और 20 से अधिक घायल हुए हैं,’ समाचार वाचक ने कहा, और अभी-अभी हमें इस बात की पुष्टि हुई है कि जलने वाला डिब्बा एस 6 था।’

‘क्या उसने एस 6 कहा था, ओमी ने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा। मैं चुप रहा। मैं एक बुरी खबर को पक्का नहीं करना चाहता था।’

‘क्या उसने कहा था? मेरा भाई उस डिब्बे में है, ओमी ने बाहर भागते हुए कहा। हम दुकान से बाहर आये। हर दुकानदार के गम्भीर भाव थे।

‘उन्होंने छोटे बच्चों को जला दिया, किस तरह का समुदाय है यह।’ एक फूल बेचने वाले ने अपने एक पड़ोसी मिठाई वाले को कहा।

‘रेलवे स्टेशन पर सुबह-सुबह यह सब हुआ, उनके हौसले देखो,’ एक अन्य दुकानदार बोला।

‘उन्होंने दिन दहाड़े अमरीका पर हमला किया था, और अब हरामजादे गुजरात पहुंच गये हैं और दिल्ली वाले कुछ नहीं करेंगे,’ फूलवाले ने कहा। मन्दिर में शायद ही कभी गालियां सुनाई देती हैं, लेकिन आज का दिन भिन्न था। मेरे जीवन के सारे दिनों से आज का दिन भिन्न था।

ओमी अपने पिता, माता और मामा की पत्नी के साथ मन्दिर से बाहर आया। सारे दुकानदार, ईश और मैं उन के आस-पास इकट्ठे हो गए।

‘मेरे धीरज को लाओ, मैं कह रही हूँ मेरे धीरज को लाओ।’ मामा की पत्नी की चीखें मन्दिर की दीवारों से टकरा रही थीं

‘मैं स्टेशन जाकर देखता हूँ’, ओमी ने कहा। उसने मामा का नम्बर फिर से मिलाया, पर किसी ने नहीं उठाया।

‘ना जाओ, कहीं न जाओ, शहर सुरक्षित नहीं है’, फूल वाले ने कहा। ओमी की मां ने ओमी का हाथ कसकर पकड़ा।

‘जल्दी कर्फ्यू लग सकता है। दुकानें बन्द करनी चाहिए और घर जाना चाहिये’, एक फूलवाले ने कहा।

दुकानदार बिखर गये। धीरज की मां के आसू रुक नहीं रहे थे। ‘फिक्र मत करो न मामा दोबारा फोन करेंगे। खबर अधूरी है। हमें नहीं पता क्या हुआ, मैंने कहा।

‘घर आ जाओ, बेटा’ ओमी के पिता ने ओमी से कहा।

‘मैं उनकी दुकान बन्द करने में मदद करूंगा’, ओमी ने कहा।

हम दुकान पर वापस गये।

उस सुबह हमारे पास कोई ग्राहक नहीं था, और हमें किसी और के आने की आस भी न थी।

‘क्या आपके पास दस्ताने हैं’, ईश भैया?

‘मेरे दस्ताने घिस गये हैं’, अली की आवाज ने हमें चौंका दिया। हमने एक बजे तक दुकान बन्द कर दी थी।

‘तुम यहां क्या कर रहे?’ ईश ने कहा।

अली आश्चर्य चकित रह गया। उसने पीले रंग की टी-शर्ट और पुरानी जीन पहनी थी। खुशकिस्मती से उसने मुस्लिम टोपी नहीं पहनी हुई थी।

‘मैं अभ्यास के लिये जा रहा हूँ। आज हमारा अभ्यास शाम साढ़े चार बजे हैं।’ ‘तुमने समाचार नहीं देखे’, मैंने पूछा।

‘हमारे पास टी.वी. नहीं है।’

‘और तुम्हारे अब्बा।’

‘वह अम्मी को साथ लेकर, उनके माता-पिता से मिलने सूरत गये हैं वह शाम छः बजे आयेंगे।

‘और तुम नहीं गये?’ ईश ने पूछा ‘मैं कैसे जा सकता था, हमारा अभ्यास था। अभ्यास छोड़कर मैं सौ उठक-बैठक की सजा नहीं पाना चाहता था।’ अली ने हंसते हुए कहा। ‘आप दुकान क्यों बन्द कर रहे हो मेरे दस्ताने....।’

‘कुछ नहीं तुम हमारे साथ आओ, घर में अकेले मत रहना,’ ईश ने शटर गिराते हुए कहा।

‘हम’ ओमी ने ठोस आवाज में कहा, ‘तुम जाओ ओमी तुम्हारे माता-पिता और आंटी को तुम्हारी आवश्यकता होगी’, ईश ने कहा।

‘और तुम’, ओमी ने पूछा।

‘मैं अली को घर ले जा रहा हूँ, मैं उसे उसके घर पहुंचा दूंगा, जब उसके माता-पिता वापस आ जाएंगे।’

ओमी ने कुछ कहने के लिये मेरी मेरी तरफ देखा। मैंने अपने कंधे उचकाये। ‘तुम मेरे घर आना चाहते हो’ ईश ने मन्दिर से बाहर निकलते हुए मुझसे पूछा।

मैं विद्या से मिलना चाहता था लेकिन यह उचित समय नहीं था और विद्या भी अच्छे मूड में नहीं होगी। मैंने सोचा मुझे उसे एस.एम.एस. करना चाहिए या नहीं। ‘नहीं, मेरी मां को चिन्ता हो रही होगी’, मैंने कहा। वह शायद इस समय शाम के ढोकले के लिये रसोई में सामान तैयार कर रही होगी।

मैं दोपहर के खाने के समय घर पहुंचा। मैंने गोधरा के बारे में अपनी मां को बताया। मेरी मां ने मुझे कसम खाने को कहा कि मैं कभी भी किसी मुस्लिम लड़की के प्यार में नहीं पड़ेगा। दो अनिद्रा भरी रातें और टी.वी. पर

दिखाई देने वाली घटनाओं ने मुझे थका दिया था। मैंने दोपहर की झपकी लेने के लिये सोचा। ओमी के फोन ने मुझे जगाया।

‘क्या खबर है ओमी, मामा के साथ सम्पर्क हुआ’, मैंने अपनी आंखें मलते हुए पूछा। फोन की घड़ी ने शाम के साढ़े पांच बजाए।

‘गोविन्द, मैंने अपना भाई खो दिया, वह घटना स्थल पर मारा गया,’ ओमी ने बताया और उसका गला भर आया। उसने रोना शुरू कर दिया। मैं बिस्तर से उठकर खड़ा हो गया।

‘मामा ने फोन किया था, वह बहुत भड़के हुए थे,’ ओमी ने बताया।

‘क्या वह घर पर है?’, मैंने पूछा ‘नहीं वह पार्टी कार्यालय में गये हैं, सारे कार्यकर्ता उन के साथ हैं। उन्होंने मुझे कहा है कि उनकी पत्नी और किसी अन्य को कुछ नहीं कहना जैसे किसी ने अन्दाजा नहीं लगाया होगा।’

‘यह बहुत दुखदायी है, ओमी, बहुत ज्यादा दुखदायी’, मैंने कहा। मैं यह सोच कर ही कांप गया कि हम उस यात्रा पर जाने वाले थे।

‘मैं घर में चुपचाप नहीं रह सकता, इसलिये मुझे बाहर ही रहना होगा’ ओमी ने कहा।

‘तुम मेरे घर आ जाओ’, मैंने कहा।

‘ईश कहाँ है?’ ओमी ने पूछा।

‘मुझे नहीं मालूम, क्या तुम लाइन पर रह सकते हो’, मैंने कहा। मैंने ओमी का नम्बर रोक कर ईश का नम्बर मिलाया। उसने दस घंटियां बजने के बाद फोन उठाया।

‘ईश, तुम कहाँ हो? तुमने फोन उठाने में इतनी देरी क्यों की? मैं बैंक में हूँ। मैं अली के साथ अभ्यास पर आया था।

‘क्या यह अभ्यास का समय है?’

‘क्या करूँ मैं सारा दिन घर बैठे-बैठे तंग आ गया था और डैड मुझे अली के साथ होने को कारण बुरी तरह से देख रहे थे।’

‘इसलिए मैंने कहा’, छोड़ो इसे कुछ और करते हैं।

‘ईश बुरी खबर है धीरज.....।’ मैंने वाक्य को बीच में छोड़ते हुए कहा।

‘अरे नहीं क्या यह सच है?’ हां, ओमी ने मुझे बताया है। मामा ने उसे घर पर चुप रहने को कहा है। वह घर से बाहर रहना चाहता है।’

‘तुम सब यहां आ जाओ’, ईशा-ने कहा।

‘ठीक है’ मैंने कहा और ईश का नम्बर बन्द कर ओमी से बात करने लगा। ‘बैंक आ जाओ अन्धेरा होने से पहले चल पड़ो’ मैंने ओमी को कहा।

‘मां, मेरे लिये खाना मत बनाना, हम बैंक में कुछ बना लेंगे,’ मैंने कहा- और घर से निकल पड़ा।

‘शहर में दंगे शुरू हो गये हैं, मैंने सुना है जमालपुर में एक समूह के लोगों ने दो घरों को आग लगा दी थी’, ओमी ने कहा।

हम अपना रात का खाना खाने के लिये घर के पिछवाड़े आ गये थे। ओमी ने आलू और चावल बना लिये थे।

‘यह अफवाह है या सच है,’ मैंने पूछा ‘बिकुल सच, एक स्थानीय टी.वी., चैनल यह दिखा रहा था’, ओमी ने कहा, घर में अजीब सा सन्नाटा था, मामी अभी भी धीरज की रक्षा के लिये प्रार्थना कर रही है।

ओमी का रोना फूट पड़ा, मैंने उसे उसका हाथ पकड़ कर अपने साथ लिपटा लिया।

अली ने हमारी तरफ देखा, मैंने इसका उत्तर मुस्कुराहट से दिया, मैं उस कमरे में गया जहां हम पुस्तकें रखा करते थे, और वहां से तीन फैंटम कामिक्स अली को ला कर दीं। और अली ने खाने के साथ-साथ उसे पढ़ना आरम्भ



किया।

हम अली से कुछ दूर बैठ गये ताकि वह कुछ सुन न सके।

‘समूह ने जिस जमालपुर बस को जलाया है उसमें हिन्दु थे कि मुसलमान’ मैंने पूछा।

‘मैं सचमुच डर गया था’ ओमी ने उत्तर दिया।

हमने खाना खत्म किया और आठ बजे तक रसोईघर साफ कर दिया। हम जाने की सोच ही रहे थे तभी ईश का फोन बजा यह उसके पिता जी का फोन था। ईश ने फोन उठाने में हिचकिचाहट दिखाई पर एक मिनट के बाद उठा लिया।

‘मैंने खाना खा लिया है, मैं आधे घंटे तक वापिस आ जाऊंगा....’

ईश बोला ‘क्या?’

हम ईश की तरफ देखने लगे क्योंकि हम केवल ईश की ही बात सुन सकते थे। ‘ठीक है....ठीक है. ....सुनो। मैं बैंक में हूँ, और हम यहां सुरक्षित हैं। हां मैं वायदा करता हूँ कि हम बाहर गलियों में नहीं निकलेंगे.....हां, हमारे पास यहां बिस्तर है। डरो मत।’

मैंने ईश को उलझन भरी नजर से देखा।

‘हमारे क्षेत्र में एक इमारत को आग लग गई है’, ईश ने बताया।

‘कौन सी वाली’, मैंने पूछा।

‘मुसलमानों वाला कोने का घर’ ईश ने बताया।

‘इसे अपने आप आग लग गई’, मैंने पूछा।

‘यह शायद पिताजी सोच रहे हैं, लेकिन यह हिन्दु समूह द्वारा भी किया जा सकता है, पिता जी ने कहा है वहीं रहो जहां हो।’

मेरी और गोविन्द दोनों की मां चिन्तित होगी, ओमी ने कहा।

‘उन्हें फोन मिलाओ’, ईश ने कहा, मैं अब अली को उसके घर नहीं ले जा सकता, उस के माता-पिता के पास तो फोन भी नहीं है’, ईश ने बताया।

मैंने अपनी मां का नम्बर मिलाया और बताया कि मैं बैंक में सुरक्षित हूँ। हम पहले भी बैंक में रात गुजार चुके थे।

हमारी कई शराब पार्टियां शाखा प्रबन्धक की पहली मंजिल के कमरे में हो चुकी थी।

हम खाना खाने के बाद, प्रतीक्षा करने वाले क्षेत्र में बैठ गये और ताश खेलने लगे। अली जल्दी सो गया। ईश ने प्रबन्धक के कार्यालय से एक रजाई उठाई और उसे अलग सोफे पर लिटा दिया।

ओमी ने तीन पत्ते गिराते हुए कहा, तीन डक्के।

मैंने पत्तों को फेंका, तभी तीव्र जय घोषों ने मेरे विचारों को तोड़ा।

‘यह क्या है?’ मैं घड़ी देखते हुए बोला। उस समय दस बज रहे थे। ‘यह हिन्दु जयघोष है’, ओमी ने कहा ‘गुस्से वाले जयघोष हैं’, ईश ने कहा। ढोल की आवाज पर शिव और राम के जय-घोष लग रहे थे। हम दो मंजिलें ऊपर चढ़कर बैंक की छत पर चले गये। शहर सर्द रात के संतरी रंग का लग रहा था। मैंने सड़क के पार तीन जलते हुए आग के गोले देखे। सबसे नजदीक की आग केवल पचास गज दूर एक इमारत में थी। लोगों का समूह उस इमारत के बाहर खड़ा था। वे इमारत पर पत्थर मार रहे थे। मैं ठीक प्रकार से नहीं देख सकता था लेकिन वहां से लोगों के चिल्लाने की आवाजें आ रही थी। चिल्लाने के साथ-साथ विजय जयघोष भी लग रहे थे। हो सकता है आपने दंगों के बारे में सुना हो या टी.वी., में देखा हो लेकिन इन्हें अपने सामने देखना आपको झकझोर कर रख देता है। मेरे साथ का पड़ोस कोई आपदा फिल्म का सैट लग रहा था। एक जलता हुआ आदमी सड़क की दूसरी ओर भागा। हिन्दु समूह ने उसका पीछा किया। वह हमसे केवल 20 गज आगे, पत्थर से टकराकर गिर पड़ा। समूह ने उसे घेर

लिया। दो मिनट के बाद भीड़ चली गई लेकिन वह आदमी वहीं पड़ा रहा। मैंने अपने जीवन में पहली बार कोई मौत देखी थी। मेरे हाथ, चेहरा, गर्दन, टांगे सब कुछ ठण्डी पड़ने लगी। मेरा दिल उसी अनजाने भय से धड़कने लगा जिस तरह भूचाल वाले दिन धड़का था। प्रकृति ने वो आपदा रची थी, आदमी ने यह रच दी। मैं नहीं जानता कौन सी ज्यादा खतरनाक हैं।

‘अन्दर आओ’ ईश ने मेरी बाजू मजबूती से खींचते हुए कहा।

हम नीचे आ गये। मेरा शरीर कांप रहा था।

‘सब ठीक है, आओ सोने चलते हैं, पुलिस जल्द ही आ जायेगी। सुबह तक सब ठीक हो जायेगा’, ईश ने कहा और मेरे कंधे पर हाथ रखा।

‘क्या हम इकट्ठे सो सकते हैं?’ मैंने पूछा। हां मैं मानता हूं, मैं बुरी तरह डर गया था।

ईश ने हां में गर्दन हिलाई, उसने अली को सोफे पर से गोदी में उठाया। हम पहली मंजिल पर शाखा प्रबन्धक के कमरे में पहुंचे और अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया। मैंने सोने से पहले अपना फोन देखा, विद्या ने मुझे एक ‘मिस्ट कॉल’ दी हुई थी। मेरी उस समय ऐसी अवस्था नहीं थी कि मैं उसे कॉल करता या एस.एम.एस. करता वैसे भी ईश मेरे साथ था। मैंने फोन अपनी जेब में रख लिया।

मैंने तीन रजाइयां लीं और अली के साथ बीच में सो गया। ओमी और ईश हमारे आस-पास लेट गये। हमने रात साढ़े दस बजे बत्तियाँ बुझा दी।

लगभग साढ़े ग्यारह बजे मैं एक दम जागा। हमने जबरदस्त आवाजें सुनीं। कोई बैंक का मुख्य गेट हिला रहा था।

‘कौन हो सकता है, मैंने पूछा। ईश खड़ा हो गया और अपनी कमीज पहन ली। ‘आओ देखते हैं’, ईश बोला और ओमी की टांग हिलाकर बोला, आओ ओमी।’ हम नीचे आये, मैंने मुख्य बरामदे की बत्तियां जला दीं। ईश ने चाबी वाले छिद्र में से झांका। यह भीड़ है उसने चाबी वाली छिद्र से आख हटाये बिना कहा। मामा समूह का नेतृत्व कर रहा है। हमने एक दूसरे की तरफ देखा, ईश ने चिटखनी खोली और दरवाजा खोल दिया।

## उन्नीस

‘मेरे बेटों’ मामा ने चिल्ला कर कहा। हमने बैंक का मुख्य दरवाजा थोड़ा सा खोल दिया। मामा ने अपनी दोनों बांहें फैला दी। उसके हाथ में मशाल व दूसरे में त्रिशूल पकड़ा हुआ था। मैं सोच रहा था कि वह ओमी को देख कर रोयेगा लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। वो हमसे गले मिलने के लिये हमारे पास आया और हम तीनों को बांहों में भर लिया। ‘मेरे बेटों, उन हरामजादों ने मेरे बेटे को मार दिया है’, मामा बोला। और तब भी उसने हमें अपनी बांहों में से जाने न दिया।

मैंने उसकी निर्जीव आंखों में देखा वह ऐसा बाप नहीं लग रहा था जिसने अभी-अभी अपना बेटा खोया है। शराब और मैराजुआना की खुशबू उसके मुंह में से आ रही थी। मामा दुखी से ज्यादा पथराया हुआ लग रहा था।

‘मेरा भाई, मामा’ ओमी ने अपने आसुओं को रोकते हुए कहा।

‘रो मत आज कोई नहीं रोयेगा’ मामा हमें छोड़ते हुए चिल्लाया। वह पीछे मुड़कर भीड़ से बातें करने लगा, ‘हम हिन्दु केवल रो सकते हैं जब कि यह बदमाश सदियों से आकर हमें मार रहे हैं। एक हिन्दु देश में, एक हिन्दु राज्य में यह

बदमाश दिन दिहाड़े आ सकते हैं और हमारे बच्चों को जलाते हैं और हम रोने के अतिरिक्त कुछ नहीं करते। वे सोचते हैं इनका बलात्कार करो, इन्हें लूटो, इन्हें जलाओ, यह कुछ नहीं कहेंगे। वे सोचते हैं कि वे सारे संसार को आतंकित कर सकते हैं और किसी में इतना दम नहीं कि कोई कुछ कर सके।’

‘इन्हें मार डालो’, भीड़ चिल्लाई। भीड़ की हिलती हुलती क्रियायें उनका नशे में होने का संकेत थी। यह नशा खून का था या शराब का मैं नहीं कर सकता था। ‘लेकिन इन हरामजादों ने बड़ी गलती की है। आज उन्होंने गुजरात का

बलात्कार करने की कोशिश की है। इन बदमाशों ने सोचा कि यह शाकाहारी लोग क्या करेंगे? आओ, हम इन्हें दिखायें कि हम क्या कर सकते हैं!’

मामा ने अपनी कमर में से छोटी बोटल निकाली और घुंटा भरा। हमने बैंक की ओर पीछे को कदम किये, ‘क्या वे यह तो नहीं सोच रहे कि हम उन का साथ देंगे, मैं नहीं देने वाला,’ मैंने ईश के कान में फुसफुसाया।

‘और न ही मैं जाने वाला हूं और आओ ओमी को भी ले चलते हैं’ ईश बोला। हमने ओमी को हमारे पीछे छुपने को कहा। इस संवेदनशील घड़ी में ईश ने बैंक का मुख्य दरवाजा बन्द किया और ताला लगा दिया।

‘तुम क्या फुसफुसा रहे हो’ मामा ने पूछा। वह लगभग फर्श पर गिरने वाला था। उसकी मशाल फर्श पर गिर गई। भीड़ साफ-साफ दिखाई देने लगी। उसने मशाल को वापिस उठाया, ‘मेरा दूसरा बेटा कहां है? इस दरवाजे को खोलो,’ मामा ने कहा क्योंकि वह ओमी को नहीं देख सकता था।

‘तुम क्या चाहते हो, मामा। क्या हम कल बात कर सकते हैं’ मैंने पूछा। ‘नहीं, कल नहीं’ मुझे आज ही कुछ चाहिये।

‘मामा आप जानते हैं, ओमी को घर जाना है..।’ मैंने कहा। मामा ने मुझे एक तरफ धक्के से हटाया।

‘मुझे ओमी नहीं चाहिये, मुझे तुम में से कोई नहीं चाहिये, मेरे पास काफी आदमी है जो मेरे साथ उन हरामजादों को मारने में मेरी मदद कर सकते हैं।’

ईश मेरे पास आकर खड़ा हो गया और सख्ती से मेरा हाथ पकड़ कर खड़ा हो गया।

‘हमें छोड़ो मामा’, ईश बोला।

‘मुझे वो लड़का चाहिये’ मामा ने कहा।

‘क्या?’ ईश ने कहा

आंख के बदले आंख। मैं उस का यहीं गला काट दूंगा। उस के बाद मैं अपने बेटे के लिये रोऊंगा। उस बदमाश लड़के को पकड़ कर लाओ।' मामा ने ईश की छाती को ठोकते हुए कहा। ईश बड़ी मुश्किल से खड़ा रह सका। जलती हुई मशालों ने बैंक के मुख्य दरवाजे की सूखी घास को जला दिया। एक बड़े ताले ने दरवाजे को बन्द रखा और भीड़ को बाहर।

‘मामा, तुमने शराबी पी रखी है, यहां कोई नहीं है’ ओमी ने कहा।

‘तुम पहले अपना बेटा खोकर देखो, तब तुम्हें, पता चलेगा कि शराबी क्या होता है’, मामा ने कहा, ‘और मैं जानता हूँ कि वह यहीं है क्योंकि वह अपने घर पर नहीं है।’ ‘मामा, तुम्हारी लड़ाई उसके बाप के साथ है।’ मैंने कहा।

‘मैंने उसके बाप का, और उसकी वैश्य सौतेली मां का प्रबन्ध कर दिया है। मैंने उन दोनों को इससे मार दिया।’

मामा ने अपना त्रिशूल ऊपर उठा कर दिखाते हुए कहा। त्रिशूल के कोनों पर खून था। मैंने ईश और ओमी की तरफ देखा। हम ने एकदम निर्णय लिया। हम बैंक की ओर भागे। मैंने मुख्य द्वार को बन्द किया और कुण्डी चढ़ा दी।

मैंने लम्बी ठण्डी सांसें भरी।

‘शांत, शांत.... हमें कुछ सोचना है,’ ईश ने कहा।

‘मैं उनके साथ मिल जाता हूँ और उन्हें यहां से ले जाता हूँ’ ओमी बोला।

‘नहीं, यह बात नहीं चलेगी’ ईश ने कहा।

‘उन्होंने उसके माता-पिता को मार दिया’, मैंने कहा। मेरी सांसें तब भी तेजी से चल रही थीं। भीड़ ने दरवाजे पर फिर से चोट पहुंचाई। उन्हें हमारा वहां से गायब होना पसंद नहीं आया था। मैं हैरान था कि ताला कितनी देर टूटने से बच सकता था। मैं सोफे पर बैठ गया। मुझे इन भारी आवाजों के बीच भी कुछ सोचना था। ‘हमारे पास और क्या रास्ते हैं?’ मैंने पूछा।

‘हम उनके साथ बातचीत कर सकते हैं’, मैंने फिर से सलाह दी। किसी ने उत्तर नहीं दिया।

‘उनकी आंखों में पागलपन है, वे बात नहीं करेंगे’, ओमी ने कहा।

‘हम भागने की कोशिश कर सकते हैं या लड़ सकते हैं’, ईश बोला।

‘तुम उन 40 लोगों के साथ लड़ना चाहते हो जिन पर मारने का भूत सवार है।’ ‘तो फिर क्या करे?’ ईश ने पूछा। मैंने ईश की तरफ देखा और जीवन में पहली बार वह मुझे डरा हुआ लगा। मैं उसकी तरफ देखता रहा, इस आशा में कि वह सारे रास्तों के बारे में सोचेगा। यहां तक कि सबसे खतरनाक रास्ता भी।

‘अली को देने के बारे में सोचना भी ना’, ईश ने मेरी छाती पर अपनी अंगुली मारते हुए कहा।

‘तब हम उन्हें और क्या दे सकते हैं, मैंने पूछा।

‘पैसा!’ ईश ने कांपते शरीर के साथ कहा, ‘तुम कहा करते हो अगर पैसा बीच में डालो तो लोग हमेशा बात करते हैं।’

‘लेकिन, हमारे पास उतना पैसा नहीं है’, मैंने कहा।

‘लेकिन हम जमा कर लेंगे, और उन्हें दे देंगे’, ईश ने कहा।

‘लेकिन मामा, यह सब पैसों के लिये नहीं कर रहा’, ओमी ने कहा।

‘यह सच है’, ईश ने कहा, ‘लेकिन अगर हम बाकियों को खरीद लेते हैं तो अकेला मामा कुछ नहीं कर सकेगा। हमें भीड़ को बिखराने की आवश्यकता है।’ मैंने कमरे में चक्कर लगाने शुरू किये। हमारे पास पैसा नहीं था लेकिन दंगाई पड़ोस के गरीब लोग थे जिनके पास खोने को कुछ नहीं था। ‘लेकिन फिर भी उन से कौन और कैसे बात करेगा?’

‘तुम रुपये की भाषा सब से अच्छी बोल सकते हो’, ईश ने कहा।

‘यह बात उल्टी भी पड़ सकती है। लेकिन मैं मामा को उनसे अलग कैसे करूँ?’ मैंने कहा।

‘मैं यह करूँगा’, ओमी ने कहा।

हमने मुख्य द्वार को खोला। भीड़ ने मुख्य दरवाजे के ताले पर अपने त्रिशूल मारने बन्द कर दिये।

‘आओ बेटा। आओ, दरवाजे को खोलो, तुम तीनों लड़के यहां से जा सकते हो, बाकी हम देख लेंगे’ मामा बोला।

‘मामा, मैं तुमसे, केवल तुमसे बात करना चाहता हूँ, ‘ओमी ने सहानुभूति भरे स्तर में कहा।

‘ठीक है, बेटे अब दरवाजा खोलो’, मामा ने कहा। मैंने आगे बढ़कर दरवाजा खोल दिया। मैंने हाथ हिला कर भीड़ को शांत करने की कोशिश की। मुझे विश्वास से भरपूर लगना था।

‘पीछे हटो, मामा अपने दूसरे बेटे से बात करना चाहते हैं’, मैंने कहा।

ओमी ने मामा को बांहों में लिया और एक तरफ ले गया। मामा ने उसे ढांडस बंधाया। मैंने भीड़ में किसी प्रभावशाली व्यक्ति को खोजने की कोशिश की। एक पगड़ी पहने हुए व्यक्ति जिसे ने सोने की चेन पहन रखी थी और उस के पीछे छः आदमी खड़े थे। मैंने उसे बुलाया।

‘क्या मैं तुमसे बात कर सकता हूँ?’, मैंने कहा।

वो व्यक्ति मेरे करीब आया। उसने अपने हाथ में मशाल उठा रखी थी मेरे गालों ने उसकी गर्मी महसूस की।

‘जनाब, मैं आपको एक प्रस्ताव देना चाहता हूँ।’

‘क्या?’

‘इनमें से आपके कितने आदमी हैं?’

‘दस’ उसने हिचकिचाते हुए कहा।

‘अगर मैं आप को दस हजार रुपये देने का वायदा करूँ तो क्या तुम यहां से चले जाओगे?’ मैंने पूछा।

‘क्यों?’ उसने पूछा?

‘कृपया कुछ मत पूछिये। इस प्रस्ताव के बारे में सोचिये और इसे अपने पास ही रखिये क्योंकि मेरे पास सबको देने के लिये पैसा नहीं है।’

‘तुम लड़के को क्यों बचाना चाहते हो’ उसने पूछा

‘पन्द्रह हजार, बस इससे अधिक नहीं। मेरी दुकान मन्दिर में है। अगर मैं पैसा न दूँ तो तुम उसे तोड़-फोड़ सकते हो।’

सोने की चेन वाला आदमी अपने समूह के पास गया। उसने पीछे मुड़ कर उनसे बात की। वह मेरी तरफ मुड़ा और हां में गर्दन हिलाई। मेरी समस्या का 25 प्रतिशत हल हो गया था।

मामा, ओमी को छोड़ मेरे पास आया। ‘यहां क्या हो रहा है’, मामा ने कहा। उसने अपनी शराबी हालत में यह ख्याल नहीं किया कि 40 में से दस आदमी कम हो गये हैं।

‘मामा, फिर से सोच लो, आपका पार्टी में एक भविष्य है। पारिख जी, इस बात को नहीं मानेंगे’, मैंने कहा।

मामा ने हंसते हुए अपना फोन निकाला और एक नम्बर मिलाया।

‘पारिख जी नहीं मानेंगे’, मामा ने कहा और फोन के उठाने का इन्तजार करने लगा।

‘हां, पारिख जी, हां मैं ठीक हूँ, चिन्ता मत करो, मैं बेटे का दुख बाद में कर लूंगा। अभी यह युद्ध का समय है और कोई सोचता है कि आप मेरे से खुश नहीं है, ...उस से बात कीजिए।’

मामा ने फोन मुझे पकड़ा दिया। भीड़ पीछे इन्तजार करने लगी।

‘हैलो, कौन बोल रहा है’, पारिख जी की आवाज दूसरी तरफ से आई।

‘पारिख जी, गोविन्द बोल रहा हूं, ओमी का दोस्त। हम आपके साथ विशला आये थे.....’ मैंने कहा।

‘हां.....हां बेटे, यह हम हिन्दुओं के लिये संकट की घड़ी है तो क्या तुम हमें मदद कर रहे हो।’

‘लेकिन यह गलत है, श्रीमान्’ मैंने कहा। मुझे नहीं मालूम मैंने उन्हें श्रीमान् क्यों कहा। मैंने फिर कहा, यह गलत है।’

‘क्या रेलगाड़ी जलने की बात कर रहे हो ना?’

‘नहीं, पारिख जी, वह एक लड़के को मारना चाहते हैं।’

‘तो मैं क्या कर सकता हूं’ उसने कहा। ‘उन्हें रोकिये।’

‘हमारा कार्य लोगों की बात सुनना है, वही करना है जो वह हमें कहते हैं, न कि इसका उलटा।’

‘लोग यह नहीं चाहते’, मैंने कहा।

‘वे ऐसा ही चाहते हैं, मुझ पर विश्वास करो। आज, कुकर को प्रेशर छोड़ने के लिये एक सीटी की आवश्यकता है।

‘लेकिन बच्चे। औरतें?’ मैंने पूछा।

‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि चोट खाई हुई भावना को किस तरह मलहम लगती है। दुखी लोग अच्छा महसूस करना चाहते हैं। दुर्भाग्यवश आज मैं इससे अच्छा ढंग नहीं सोच सकता।’

‘लेकिन यह बहुत खतरनाक ढंग है’, मैंने कहा।

यह एक दो दिन में खत्म हो जायेगा, लेकिन अगर हम इसे दबाने की कोशिश करेंगे तो यह एक बड़े गृह युद्ध में बदल सकता है।

‘आपकी पार्टी को इसके लिये दोषी ठहराया जायेगा’, मैंने कहा।

‘कौन दोषी ठहरायेगा, कुछ नकली धर्म निरपेक्ष लोग। न कि गुजरात के लोग। हम लोगों को अच्छा महसूस करने की ताकत दे रहे हैं। वे हमें बार-बार चुन कर लायेंगे। तुम इन्तजार करो और देखो।’

‘श्रीमान, यह लड़का किसी दिन राष्ट्रीय टीम में जगह बना सकता है’

मामा ने मेरे हाथ से फोन छीन लिया। ‘पारिख जी, चिन्ता मत करो। मैं हर चीज का ख्याल रखता हूं। आप को कल मेरे पर गर्व होगा।’ मामा ने कहा और फोन काट दिया। मैंने भीड़ में एक अन्य छोटे नेता की तलाश की। मैं उस के पास गया और उसे एक ओर ले गया।

‘पन्द्रह हजार लो, और अपने लोगों को साथ लेकर चले जाओ, मैंने कहा। इस बार मेरा लालच नहीं चला।

‘मामा, यह मुझे खरीदना चाहता है,’ उस छोटे नेता ने तेज आवाज में चीख कर कहा।

‘नहीं, नहीं, तुमने मुझे गलत सुना है। क्या तुम पागल हो गये हो,’ मैंने कहा और बैंक की ओर चल दिया।

‘ओमी क्या हो रहा है? जल्दी से लड़के को यहां लाओ।’ मामा चिल्लाया। ओमी ने मामा को गर्दन हिलाई। वह मुख्य द्वार की ओर गया। भीड़ द्वार पर जमा थी और केवल बरामदा हमारे बीच था लेकिन द्वार पर अब कोई ताला नहीं था। ओमी ने मुख्य द्वार को खटखटाया ईश ने व्यक्ति की पहचान कर दरवाजा खोला। दोनों अन्दर चले गये।

मैं दंगाइयों के पास अकेला खड़ा था। वे मुझे रिश्तत देने का आरोपी मान रहे थे। मैं भी अन्दर भागना चाहता था लेकिन किसी को दंगाइयों को बाहर रखने के लिये बाहर खड़े होना था।

‘क्या वे उसे ला रहे हैं?’ मामा ने मुझसे पूछा।

‘मैं ऐसा ही सोचता हूं’ मैंने कहा।

जब मामा ने दोबारा पूछा तो मैंने अन्दर जाकर देख आने को कहा। मैं दरवाजे के पास गया और खटखटाया। ईश

ने सेकंड के हजारवें हिस्से से उसे खोला और मैं अन्दर चला गया। मैंने लम्बी सांस ली। ईश ने दरवाजे की कुण्डी चढ़ाई और प्रतीक्षा वाले कक्ष से सोफा लाकर दरवाजे का रास्ता रोक दिया।

‘वो इन्तजार कर रहे हैं। अगर हममें से कोई दो मिनट के अन्दर बाहर न गया तो वह हमला कर देंगे’, मैंने कहा।

‘अली उठ गया था’, ओमी ने कहा

‘वह क्या है? मैंने पूछा। मैंने उसे प्रबन्धक के कमरे में बन्द कर दिया। बाहर कितने लोग हैं?’

‘तीस’ मैंने कहा।

‘हमें लड़ना पड़ेगा’, ईश ने कहा।

## बीस

‘ईश मैं तुमसे बात करना चाहता हूँ’ मैंने कहा। ‘हमारे पास समय नहीं है’, ईश ने उत्तर दिया।

‘ओमी’, मामा की चीखने की आवाज मुख्य द्वार पर से आई।

‘आ रहा हूँ मामा’, ओमी ने चिल्ला कर कहा, ‘हमें पांच मिनट दीजियो’। ‘उसे जल्दी लेकर आओ’, मामा ने कहा।

मैंने ईश को सोफे पर बिठाया और कहा, ‘ईश, क्या मैं इस वर्तमान झगड़े में, सही तत्व की बात कर सकता हूँ?’

‘क्या! हमारे पास समय नहीं है’, ईश ने कहा। ‘मैं जानता हूँ, लेकिन मैं यह भी जानता हूँ कि अगर हम तीस लोगों से लड़ेंगे तो क्या होगा। हम सभी मारे जाएंगे। और इसके बाद वह अली को ले जाकर मार डालेंगे’, मैंने कहा।

‘तो तुम क्या कहने की कोशिश कर रहे हो’ ईश ने खड़े होते हुए कहा। ‘एक जीवन को बचाने के लिये तीन जिन्दगियाँ देना, क्या यह हिसाब ठीक है।’ ‘तुम और तुम्हारा बकवास हिसाब। यह तुम्हारा व्यापार नहीं है।’

‘तब यह सब क्या है, हम सब क्यों मरे? सिर्फ इसलिये कि तुम उस बच्चे से प्यार करते हो।’

‘नहीं, ऐसा नहीं है’ उसने कहा और अपनी पीठ मेरी ओर कर ली।

‘तब क्या है, क्योंकि वह एक राष्ट्रीय धरोहर है’ ईश ने कहा।

‘वाह, और हम राष्ट्रीय गन्दगी?’ ऐसा इसलिये कि एक दिन वह बच्चा कुछ छक्के मारेगा और हम भारतीय सारा दिन टी.वी. देखते हुए अपना समय बर्बाद करेंगे और मजे लेना। क्या बकवास है। मेरी माँ का क्या होगा? ओमी के माता-पिता का क्या होगा और... मैंने कहा और चुप हो गया। मैं विद्या का नाम लेने ही वाला था।

‘मैं उसे नहीं छोड़ूँगा, तुम भागना चाहते हो तो दरवाजा खोलो, और भाग जाओ। ओमी, तुम भी जाना चाहते हो तो जाओ’, ईश ने कहा ‘मैं कहीं नहीं जा रहा, लेकिन ईश बताओ हम उनसे लड़ेंगे कैसे?’ ओमी ने ईश से पूछा।

ईश ने हमें अपने पीछे आने को कहा। वो हमें रसोई घर में ले गया। उसने हमें एक मिट्टी के तेल का कनस्तर उठाने के लिये कहा। उसने उन तीन बाल्टियों को भी उठा लिया जो हम बीयर को ठण्डा करने के लिये प्रयोग में लाते थे। हम उससे दो कदम पीछे छत की ओर चल दिये।

‘ये बहुत भारी है’, मैंने कहा।

‘हर कनस्तर 20 लीटर का है, भारी तो होगा ही’, ईश ने छत पर पहुंचते हुए कहा।

पड़ोस के आसमान में आग दिखाई दे रही थी। मौसम में इतनी ठंडक नहीं थी जितनी एक फरवरी की रात में होनी चाहिए।

‘हम आ रहे हैं’, मामा ने कहा और उसके समूह ने बैंक के जंग लगे लोहे के दरवाजे को खोला। वे बरामदे में आ गये और मुख्य द्वार पर चोट करने लगे।

‘शोर मचाना बन्द करो मामा,’ ईश ने कहा। मामा ने ऊपर छत की तरफ देखा। ‘तुम क्या छिपे हुए हो, बदमाशों,’ मामा ने कहा। भीड़ ने हम पर आग के गोले फेंके क्योंकि हम दो मंजिलें ऊपर खड़े थे कुछ भी हमारे करीब नहीं आया। एक आग का गोला एक दंगाई पर गिर गया और वह दर्द से चीखने लगा। दंगाई, हो सकता है शेष से भरे हो पर इसके साथ वह मूर्ख भी हो सकते हैं। उन्होंने इसके बाद आग के गोले फेंकने बन्द कर दिये।

ईश ने मामा से बातचीत जारी रखी।

‘मामा, मैं बिना डर के पैदा हुआ था, देखो’ ईश ने छत के किनारे पर खड़े होते हुए कहा।

भीड़ का ध्यान बंट गया था अगर ऐसा न होता तो उन्होंने मुख्य द्वार पर हमला कर दिया होता। तीन कुण्डियों और एक सोफे के आगे होने के बावजूद भी वह इसे दस मिनट में तोड़ लेंगे। उसके बाद वे पहली मंजिल के आने वाले दरवाजे को तोड़ेंगे और फिर के मरियल से दरवाजे की बारी है। और अगले 15 मिनटों में हम आग में जल रहे



होंगे। अच्छा होगा अगर ईश की योजना चल जाए।

‘जय श्री राम कहो’ ईश चिल्लाया। यह बात काम कर गई क्योंकि भीड़ को इसमें साथ देना पड़ा। भीड़ में अधिकतर लोगों को यह नहीं मालूम था कि क्या हम उनको मदद कर रहे हैं या नहीं कम से कम अभी तक तो नहीं पता था।

इसी दौरान ओमी और मैंने मिट्टी के तेल को कनस्तरों से बाल्टियों में भर लिया। कनस्तरों की गर्दन छोटी है इसलिये मिट्टी का तेल वहां से तेजी से नहीं निकलेगा हमें बड़ी चोट की आवश्यकता थी।

ईश ने छत के कोने पर खड़े होकर भगवान शिव की तरह रूप बनाया। कुछ शराबी लोगों ने उसके आगे सिर भी झुका दिया। शायद आज रात भगवान शिव दंगाइयों को आशीर्वाद देने आये थे। एक, दो, तीन और यह गया, मैं, फुसफुसाया जैसे ही ओमी और मैंने बाल्टियों को उल्टा किया। हमने मिट्टी के तेल को आगे फेंका ताकि यह बैंक की इमारत से दूर गिरे।

दंगाइयों की हाथ की मशालों ने माचिस का काम किया। आग के गोले बैंक के बरामदे में गिरे। भीड़ में डर फैल गया। उन्हें यह बात समझने में कुछ क्षण लगे कि तुमने उन पर हमला कर दिया है। ईश छत के कोने से उतर आया। हमने अपने आप को दीवार की ओट में छिपा लिया। मैंने अपने सिर को ऊपर उठा कर देखा कि नीचे क्या हो रहा है। कुछ दंगाई बैंक के दरवाजे से बाहर भाग रहे थे क्योंकि उनके कपड़ों ने आग पकड़ ली थी। मेरा ख्याल है अपने आप को जलाने से अधिक लोगों को जलाने में अधिक मजा आता है।

‘कितने लोग भाग गये?’ ईश ने पूछा। ‘काफी लोग भाग गये हैं, नीचे अफरा-तफरी मची हुई है। बचे हुए लोगों ने मुख्य द्वार पर त्रिशूलों से हमला बोल दिया। मैंने लोगों को गिनने के लिये अपने शरीर को ऊपर उठाया। मेरा अन्दाजा था दस से ज्यादा लेकिन बीस से कम।’ हमें अब नीचे जाना होगा ‘ईश ने कहा।’ क्या तुम पागल हो गये हो ‘मैंने कहा।

‘नहीं, आओ हम लोगों को और कम करें’, ईश ने कहा।

‘ईश, हम लोगों को चोट पहुंचा रहे हैं, इनमें से कुछ मर भी सकते हैं। हमने बहुत सा मिट्टी का तेल फेंका है’, मैंने कहा।

‘मुझे कोई परवाह नहीं है’, ईश ने कहा, हमें कुछ और लोगों को चोट पहुंचानी पड़ेगी।

हम नीचे पहली मंजिल पर आ गये। ईश ने कार्यालय प्रबन्धक का कमरा अपनी जेब से चाबियां निकाल कर खोला। अली अन्दर उसका इन्तजार कर रहा था। वो भाग कर आया और उससे लिपट गया।

‘मुझे बहुत डर लग रहा है’, अली ने रोते हुए कहा।

‘चिन्ता मत करो, सब कुछ ठीक हो जायेगा’, ईश ने कहा।

‘मेरे अब्बा के पास घर जाना चाहता हूं।

मैंने अली के बालों में अपनी अंगुलियां फेरी, घर अब विकल्प नहीं था।

‘अली, सब्र कुछ ठीक होगा अगर तुम मेरी बात मानोगे। क्या तुम मेरी बात मानोगे?’ ईश ने कहा।

अली ने हां में गर्दन हिलाई।

‘कुछ भयानक लोग तुम्हें ले जाना चाहते हैं, मैं तुम्हें वोल्ट में बन्द करना चाहता हूं क्योंकि वहां से कोई तुम्हें ले जा नहीं सकेगा ‘ईश ने कहा। उसने 6x6 के एकदम घुटने वाले कमरे की तरफ इशारा किया।

‘वहां?, बहुत अंधेरा है’, अली ने कहा। यह लो मेरा फोन, इसकी लाइट जला कर रखना। मैं जल्द ही वापस आऊंगा। ईश ने अपना मोबाइल उसे देते हुए कहा।

ईश ने अली को वोल्ट में बैठा दिया। उसने उसे कुछ तकिये दिये। अली ने फोन की लाइट जला ली। ईश ने दरवाजा बन्द किया और ताला लगा दिया। उसने चाबी को अपनी जुराब में रख लिया। क्या तुम ठीक हो, ईश ने चिल्ला कर पूछा।

‘यहां बहुत अंधेरा है’, अली ने कहा।

‘धैर्य रखो, ठीक है’, ईश ने कहा।

‘देखो हमें रसोई में एक और डिश बनानी पड़ेगी। जल्दी से आओ,’ ईश ने कहा। हम अली को वोल्ट में छोड़कर रसोई घर की तरफ भागे। मुख्य द्वार पर निरन्तर धक्के पड़ रहे थे। मैंने अनुमान लगाया हमारे पास केवल पांच मिनट थे, उसके बाद दरवाजा टूट जाना था।

ईश ने सिलेण्डर उतारा, ‘इसे मुख्य द्वार की तरफ ले जाओ’, ईश ने कहा। ओमी और मैं गैस का सिलेण्डर ले गये। हमने इसे मुख्य द्वार पर पड़े सोफे के नीचे रख दिया।

‘ओमी, हमने पटाखे क्या रखे थे’, ओमी ने पूछा।

‘ऊपर की शैल्फ पर’, ईश दीवाली के बचे हुए पटाखों के साथ वापस आया। हम इसे आमतौर पर भारत के जीतने पर जलाया करते हैं। ईश ने बम का डिब्बा सिलेन के ऊपर खाली किया। उस ने दो बम लिये और उसे बड़े करने के लिये उसका धागा निकाल दिया। भीड़ दरवाजे पर धक्के लगा रही थी। मुख्य द्वार की एक कुंडी ढीली पड़ गई थी।

‘मैं दरवाजा खोलता हूं, तुम इसे जलाओ और इसके बाद हमें भागना है’, ईश ने ओमी को कहा।

ओमी ने हां में गर्दन हिलाई। ईश सोफे पर चढ़ गया और कुण्डी को पकड़ने की कोशिश करने लगा। यह भीड़ के धक्कों से हिल रही थी।

ओमी ने माचिस जलाई और फ्यूज के पास ले गया। जैसे ही फ्यूज को कोना सन्तरी रंग का हुआ ईश ने कुण्डी खोल दी। सोफा कुछ और देर दरवाजे को खोल कर रख सकता था। हमारे पास अपना जीवन बचाने का इतना ही समय था।

‘भागो’, ईश ने सोफे पर से छलांग लगाते हुए कहा।

हम सीढ़ियों की ओर भागे। मैं छत से केवल चार कदम दूर था जब दरवाजा खुल गया।

‘बदमाशों, हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे। अपने ही लोगों को मार रहे हो।’ उस छोटे नेता जिसे मैंने रिश्तत देने की कोशिश की थी, चिल्लाया। वह और तीन अन्य व्यक्तियों ने कमरे के अन्दर कदम रखा।

‘ए, रुको,’ उन्होंने चिल्ला कर कहा जैसे ही उन्होंने मुझे सीढ़ियां चढ़ते हुए देखा।

मैंने पीछे मुड़ कर देखा आठ व्यक्ति अन्दर दाखिल हो चुके थे।

मैं केवल छत से एक कदम दूर था जब मेरे कानों में जोरदार आवाज पड़ी। धमाकों ने निचली मंजिल की अलमारियों को तोड़ दिया था और मुख्य द्वार को उड़ा दिया था। मेरा ख्याल है कि उस छोटे नेता को सिलेण्डर से सबसे ज्यादा चोट लगी और अन्य आठ लोगों का भी हाल कुछ ज्यादा अच्छा नहीं था।

मैं नहीं जानता था कि हम क्या कर रहे थे। किसी को बदला लेने से रोकने के लिये हम खुद हमला कर रहे थे। मैंने कभी शरीर के भागों को हवा में उड़ते नहीं देखा था। मैं नहीं जानता था कोई दंगाई बचा कि नहीं। मैंने ऊपर से निचली मंजिल की ट्यूब को जलाया। धुंआ और पुरानी फाइलों के कागजों से कमरा भरा पड़ा था। ईश और ओमी मेरे पीछे आये।

‘सब मारे गये?’ ईश ने ओमी से पूछा। धुंआ लगभग 30 सेकंड में साफ हुआ। कुछ आदमी कमरे में पड़े थे। मैं नहीं बता सकता था कि वे जख्मी हैं या मरे हुए थे। पहले वाले मुख्य दरवाजे की जगह अब एक खाली जगह थी। मामा ने पांच अन्य व्यक्तियों के साथ कमरे में कदम रखा। शायद वह खुशकिस्मत था। उसे पहले ही अन्दाजा हो गया था इसलिए उसने दूसरों को पहले दरवाजा खोलने को भेजा। पांचों व्यक्ति कमरे में पड़े घायलों की तरफ भागे। मामा ने ऊपर देखा उसकी आंखें हमारी आंखों से मिलीं।

## इक्कीस

‘विश्वासघातियों, हराम-जादों’ मामा चिल्लाया। मैंने देखा मामा के दायें हाथ से खून निकल रहा था और मिट्टी के तेल ने उसके कुर्ते की बाजूके कुछ हिस्से को जला दिया था।

‘उन्हें पकड़ो’ मामा चिल्लाया। वह और पांच अन्य व्यक्ति सीढ़ियों में हमारे पीछे भागे। ईश, ओमी और मैं प्रबन्ध के कार्यालय की ओर भागे और दरवाजा बन्द कर लिया। ‘इन्हें पकड़ो’ ईश ने कहा। उसके हाथ कांप रहे थे जैसे ही उसने क्रिकेट के सामान को, जो कि हमने प्रबन्धक के कार्यालय में रखा था, इधर-उधर किया। ईश ने एक बैट उठा लिया। मामा और उसका समूह प्रबन्धक के कार्यालय के दरवाजे पर पहुंच गया था।

‘दरवाजा खोला, नहीं तो हम इसे तोड़ देंगे’ मामा ने कहा। हालांकि उन्होंने दरवाजा खटखटाने की कोशिश नहीं की। वो हमें लगातार धमकाते रहे लेकिन किया कुछ नहीं। शायद उन्हें डर था कि पता नहीं इस समय हम क्या उड़ा देंगे। मेरी हृदय गति उनकी चीखों जितनी ही तेजी से सुनाई दे रही थी।

‘मेरे पास फोन नहीं है, अपना फोन दो,’ ईश ने मुझसे कहा।

‘हम यहां से जाने वाले नहीं हैं’, मामा की आवाज दरवाजे के उस ओर से आती सुनाई दी। मैंने अपना फोन ईश को पकड़ाया और ईश ने पुलिस का नम्बर मिलाया। कोई नहीं उठा रहा ईश ने दोबारा मिलाते हुए कहा। किसी ने उत्तर नहीं दिया। ईश ने फोन बन्द कर दिया और बेचैनी से उसे हिलाने लगा।

बीप... बीप... मेरे फोन ने एसएमएस आने का सन्देश दिया।

‘एस.एम.एस. आ रहा है, ईश ने कहा और उसे पढ़ना शुरू किया।

हैलो, आज रात सुरक्षित रहना, एक बात और मुझे अभी-अभी पीरियड आ गये हैं।

निश्चित? जल्द मिलेंगे, मेरे होंठ अध्यापक। प्यार....मैं।

सन्देश किसी पूर्तिकर्ता विद्यानांध की तरफ से आया था। ईश ने मुझे उलझन भरी नजरों से देखा। मैंने अपने कंधे उचकाये और अपना फोन उठाने लगा। ईश ने फोन मुझसे दूर कर दिया। उसने मुझे अजीब हैरान नजरों से देखा। उसने सन्देश को दोबारा पढ़ा और नम्बर की जानकारी लेने लगा। उसने नम्बर देखा। उसने नम्बर मिलाया।

मुझे लगभग दिल का दौरा ही पड़ने वाला था।

‘वाह क्या बात है? मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं पीरियड को उत्सव के रूप में मना रही होऊंगी।’ विद्या का बोलना शुरू हो गया जैसे ही उसने मेरा नम्बर देखा। मैं उसकी हर्षित आवाज सुन सकता था चाहे फोन ईश ने ही पकड़ रखा था।

‘विद्या?’ ईश ने गुस्से में अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए कहा।

‘ईश भैया’, उसने कहा।

ईश ने मेरी तरफ देखा और नम्बर काट कर फोन अपनी जेब में रख लिया। एक क्षण के लिये हम भूल गये कि हत्यारे हमारे सिर पर खड़े थे। ईश मेरी तरफ आगे बढ़ा और मैं पीछे हटते-हटते दीवार के साथ लग गया।

‘ईश’ मैं सारी बात बता सकता हूं... ‘मैंने कहा, चाहे मैं कुछ भी नहीं बता सकता था।

ईश ने अपना बैट फर्श पर फेंक दिया। उसने अपना हाथ उठाया और मेरे चेहरे पर दो थप्पड़ रसीद कर दिये। इसके बाद उसने अपने हाथ की मुट्ठी बनाई और मेरे पेट में जोरदार मुक्का मारा।

मैं फर्श पर गिर पड़ा। मुझे बहुत ज्यादा दर्द हो रहा था। लेकिन मैंने महसूस किया कि मैं कुछ भी कहने का हक खो चुका था जिस में दर्द में चीखना भी शामिल था। मैंने अपने दांत भींचकर, अपनी आंखें बन्द कर लीं। मैं इसी काबिल था। मुझे अपनी दूसरी गलती की कीमत चुकानी पड़ी।

तुम क्या बेवकूफी कर रहे हो?’ ओमी ने कहा, चाहे उसने सारी स्थिति को अच्छी तरह समझ लिया था।

‘कुछ नहीं कर रहा, यह हरामजादा मतलबी है, यह एक सांप है आवश्यकता पड़ने पर यह हमें बेच भी सकता है, हरामजादा व्यापारी।’ ईश ने कहा और मेरी जांघों में एक ठोकर मारी।

‘क्या कर रहे हो ईश, तुम मरना चाहते हो’ ओमी बोला।

‘मामा, हिम्मत है तो अन्दर आओ, ईश ने दरवाजे की ओर बढ़ते हुए कहा। ओमी ने हाथ पकड़ कर मुझे उठाया। और ओमी के ऊपर लटक गया। मैं हैरान था कि कहीं मेरी अन्तड़ियां जल तो नहीं गईं।

‘मैंने, तुम्हें ऐसा न करने के लिये कहा था,’ ओमी ने कहा।

‘मैंने कुछ गलत नहीं किया,’ मैंने कहा। मैं नहीं जानता था कि मैंने ऐसा क्या कहा। मैंने अभी-अभी बालिंग हुई विद्यार्थी के साथ असुरक्षित सम्भोग किया है। यह अवश्य पहली दस नैतिक गलत चीजों में है जो कोई कर सकता था।

मामा का धीरज पांच मिनट में खत्म हो गया। उसने अपने चम्मचों को दरवाजा तोड़ने को कहा। उन्होंने अपने त्रिशूलों को दरवाजे पर गड़ा दिया पर दूरी बनाये रखी। ‘यह समय आपसी झगड़ों का नहीं बल्कि अपने आप को बचाने का है’, ओमी ने कहा।

ओमी ने ईश को बैट दोबारा पकड़ा दिया और मैंने विकेट को मजबूती से पकड़ लिया। हमने दरवाजे को जांचा तो पाया कि कुछ और धक्कों पर दरवाजा खुल जायेगा। मैं उन्हें वैसे ही अन्दर आने देता हूं, ‘चिटखनी खोलते हुए कहा ओमी ने कहा ‘तुम मुझे मारना चाहते हो? आओ इन्तजार किस बात का है मामा, मुझे मार डालो,’ ओमी ने कहा और दरवाजा खोल दिया।

‘एक तरफ हट जाओ ओमी, मुझे केवल इतना बताओ लड़का कहां है?’ मामा ने कहा।

‘तुम्हें यहां कोई लड़का नहीं मिलेगा’, ईश गुर्गिया।

मामा के पांचों आदमियों ने अपने त्रिशूल ऊपर उठाये, हमने अपने क्रिकेट हथियार उठा लिये। एक आदमी ने ईश पर हमला किया। ईश ने उसे अपने बैट से रोका। ईश ने उसकी बाजू, टांग, जांघ और पेट पर मारा। वह व्यक्ति फर्श पर गिर पड़ा।

मेरे हाथ कांप रहे थे जब मैंने एक मोटे आदमी का सामना किया। मेरी विकेट उस के त्रिशूल में फंस गई। हमारे दोनों के जुड़े हुए हथियार हवा में उछले जैसे ही हमने उन्हें अलग करने की कोशिश की। उसने मेरे दाएं घुटने पर ठोकर मारी और मेरा सन्तुलन बिगड़ गया। वो आगे आया और मुझे दीवार के साथ लगा दिया।

तीसरे आदमी ने त्रिशूल के दूसरे छोर से ईश की गर्दन पर हमला किया। ईश आगे गिर पड़ा। उस आदमी ने ईश को कब्जे में लिया और दीवार के साथ धक्का दिया। ओमी ने चौथे आदमी के पैरों को अपने बैट के साथ कुचल दिया। वह व्यक्ति दर्द से चिल्लाते हुए फर्श पर गिर पड़ा। ओमी ने उसके पेट में ठोकर मारी लेकिन पांचवें व्यक्ति ने ओमी की पीठ पर जबरदस्त प्रहार किया। उस आदमी ने ओमी को पीछे से पकड़ लिया।

‘भैंसे, तुम अब अपने आप को नहीं छुड़ा सकते; उस व्यक्ति ने कहा। ‘च... च बेवकूफ हरामजादों, आग से खेलने की कोशिश कर रहे थे’ मामा ने शाखा प्रबन्धक की मेज पर बैठते हुए कहा। उन्होंने हम तीनों को दीवार के साथ चिपका दिया था। तीन बाकी बचे हुए व्यक्तियों ने हमारे शरीर को त्रिशूलों से घेरा हुआ था।

मामा शाखा प्रबन्धक की मेज पर बैठा और हमारी तरफ देखा।

‘मुझे खून चाहिये, या तो मुझे वो लड़का दो अथवा मैं तुम्हारा खून कर दूंगा,’ मामा ने कहा। उसने अपनी कमर से बोतल निकाली और विहस्की का एक बड़ा घूंट पिया।

‘यहां कोई लड़का नहीं है,’ ईश ने कहा, ‘तुम देख सकते हो।’

‘मैंने देख लिया है, तुम विश्वास योग्य नहीं हो,’ मामा ने कहा। उसने खाली बोतल ईश की तरफ फेंकी जो उसकी छाती में लगी।

दो घायल व्यक्ति फर्श पर पड़े थे। मामा ने उन्हें ठोकर मारी।

‘जाओ उसे ढूंढो’, मामा ने कहा। दोनों व्यक्ति खड़े हुए और कमरे से निकल गए।

‘यहां कोई नहीं है’, उन्होंने बैंक के विभिन्न कमरों को जांच कर चिल्ला कर कहा। उन की आवाज में दर्द था। इससे पता चलता था कि उन्हें अच्छी मार पड़ी थी। मामा ईश के करीब गया और उसके बाल पकड़ कर खींचे’ हरामजादे, मुझे बताओ ‘मामा ने कहा।

‘वो यहां नहीं है’, ईश बोला।

मैं तुम्हें....’, मामा की बात को एक फोन की घंटी ने रुकावट डाली।

फोन न मेरा न ही ओमी का बजा था। यह आवाज मामा और उसके फोन से भी नहीं आई थी।

मामा ने आवाज का पीछा किया। आवाज प्रबन्धक की मेज के करीब से आ रही थी। मामा प्रबन्धक की मेज के पीछे दीवार के पास गया। यहां वोल्ट लगा हुआ था। आवाज वोल्ट के अन्दर से आ रही थी।

‘इसे खोलो’, मामा ने चक्कर जैसे ताले की ओर इशारा करते हुए कहा। हम चुप रहे। ईश के फोन की घण्टी बजी। मैंने अन्दाजा लगाया विद्या ने अपने भाई को सारी स्थिति स्पष्ट करने के लिये फोन किया था।

‘मैंने कहा इसे खोलो’, मामा ने कहा, ‘यह बैंक का वोल्ट इस की चाबियां हमारे पास नहीं है ‘मैंने कहा मैं हर तरीके से ईश की मदद करना चाहता था। मैं कुछ भी करना चाहता था जिससे मुझे अपराध बोध कम हो।

‘अरे वाह’, होशियार बच्चा बोल रहा है, कोई चाबियां नहीं है।’ मैंने अपना सिर ईश की तरफ घुमाया, ईश दूसरी तरफ देखने लगा।

मामा ने मेरी ठुड़ी से पकड़ कर मेरा चेहरा अपनी तरफ किया ‘तुम्हारा ख्याल है हम बेवकूफ हैं। तुम कह रहे हो चाबियां तुम्हारे पास नहीं हैं लेकिन यह फोन इसके अन्दर कैसे चला गया। इन सब की तलाशी लो।’

मामा के छुट भयों ने खूनी तलाश शुरू की। जो आदमी मेरी तलाशी ले रहा था उसने मेरी कमीज की जेब फाड़ दी। उसने मुझे थप्पड़ मारते हुए मुझे को कहा। उसके नाखून मुझे चुभ रहे थे जब वह मेरी ऊपर से नीचे तलाशी ले रहा था। मैंने दस बार उसे बताया कि चाबियां मेरे पास नहीं है पर उसने नहीं सुना। उसने दो बार मेरी पैंट की जेबों की तलाशी ली। जब भी मैं कुछ कहने की कोशिश करता वो अपनी मुट्ठी से मेरा मुंह बन्द कर देता।

यही सब कुछ ओमी और ईश को किया। जो व्यक्ति ईश की तलाशी ले रहा था उसने ईश की शर्ट फाड़ डाली। उसने त्रिशूल निकाला और उसकी पसलियों में गड़ा दिया।

‘इस हरामजादे के पास चाबियां नहीं है’ और मुझे छोड़ दिया। उसने मुझे फिर दीवार के साथ चिपका दिया। इसके पास भी नहीं है’ ओमी की तलाशी लेने वाले ने कहा।

‘इसे काबू में करने की आवश्यकता’ जो व्यक्ति ईश की तलाशी ले रहा था उसने ईश की पैंट को उतारने की कोशिश करते हुए कहा। ईश ने उस आदमी की जांघों पर जोर से से ठोकर मारी। मुझे ईश की छाती पर खून दिखाई दिया।

‘क्या मैं कुछ मदद करूं?’ मामा ने शाखा प्रबन्धक की मेज पर बैठे हुए कहा। ‘चिन्ता न करो, मैं इसे सम्भाल लूंगा।’ उस व्यक्ति ने कहा। चाहे ईश ने उसकी बाजू पर काट लिया था। मामा ईश के पास आया उसने त्रिशूल का दूसरा हिस्सा छाती पर बने घाव पर मारा।

ईश दर्द के मारे चिल्लाया और गिर गया जो व्यक्ति ईश की तलाशी ले रहा था उसने ईश को कई बार थप्पड़ मारा। ईश ने अपने दांत भींच लिये और लगातार ठोकरें मारता रहा। मामा ने ईश की जेबों पर हाथ डाले उसने कुछ महसूस हुआ। ईश ने अपनी पैंट के नीचे अभ्यास करने वाली निक्कर पहनी हुई थी। मामा ने अपना हाथ पैंट से निकाला और फिर से उस की निक्कर में दे दिया। उस ने एक चूड़ी जितनी आकार का चाबी का छल्ला निकाला। इसमें दो छः इंच लम्बी चाबियां लटक रही थी।

ईश फर्श पर लेटा था और अपने मुंह से भारी सांस ले रहा था। उसकी आंखें बात को मानने से इंकार कर रही थीं। लेकिन उसका शरीर साथ नहीं दे रहा था।

मामा ने अपने हाथ में चाबी का छल्ला घुमाया। ‘मैंने कभी कोई बैंक नहीं लूटा। लेकिन देखो आज क्या इनाम

मिल रहा है। बाप और बेटा, मैं इनकी जड़ को ही खत्म कर दूंगा।' मामा ने एक ही मिनट में वोल्ट की चाबी का पता लगा लिया।

'मामा नहीं, वह बच्चा है, मेरी खातिर उस बच्चे को मत मारो।' ओमी ने कहा। मामा ने ठण्डी सांस भरी और मुड़ कर हमारी ओर देखा।

'मेरा धीरज भी एक बच्चा था, 'मामा ने कहा और वोल्ट की तरफ चला गया।

ईश फर्श पर बैठ गया। उस व्यक्ति ने ईश की गर्दन पर त्रिशूल का दबाव बढ़ा दिया।

'उसे हाथ मत लगाओ, वह राष्ट्रीय धरोहर है', ईश गुराया। उस व्यक्ति ने दबाव और बढ़ा दिया।

'मैं तुम्हें उतनी कीमत दूंगा जितनी तुम चाहते हो' मैंने कहा।

'बहुत बड़े व्यापारी हो, जाओ अपनी मां को बेच दो 'मामा ने वाल का चक्कर घुमाते हुए मुझे कहा।

'यहां बैठा है हरामजादा 'मामा ने कहा मामा ने वोल्ट में बैठे अली की तरफ देखा। सफेद कुर्ते पजामे में उसका पतला शरीर बुरी तरह कांप रहा था। उसके आंसुओं भरे चेहरे ने मुझे बता दिया कि वह अन्दर रोता रहा है।

मामा ने अली को गर्दन से पकड़ा और ऊपर लटका दिया।

'ईश भैया', अली ने कहा जब उसकी टांगे हवा में लटक रही थीं।

'तुम अब जितने भोले दिखते हो दस साल बाद उतने ही राक्षस बन जाओगे', मामा ने अली को नीचे लाते हुए कहा। उसने अपना बंधन अली की गर्दन से छोड़ दिया। 'रुक जाओ मामा' ओमी ने कहा, जैसे ही मामा ने अपना त्रिशूल, ऊपर उठाया। 'तुम नहीं समझोगे 'मामा ने अपने हाथ पूजा करने के लिए जोड़ लिये।

'भागो अली भागो' ईश ने चिल्ला कर कहा। अली ने कमरे से बाहर भागने की कोशिश की। मामा ने अपनी आंखें खोलीं। वह अली के पीछे भागा और त्रिशूल को उसकी कलाई में घुसेड़ दिया। अली दर्द से चिल्लाया और गिर पड़ा।

मामा, अली के पास घुटने के बल बैठ गया, 'भागने की कोशिश न करना, कुतिया के बच्चे, मैं तुम्हें एक झटके में मार सकता हूं। अगर तुमने होशियारी करने की कोशिश की तो मैं तुम्हारी प्रत्येक अंगुली को बारी-बारी से काटूंगा, समझ गये।' मामा गुराया।

उसकी आंखें पूरी तरह लाल थीं और आंखों की सफेद भाग कुछ ही दिखाई दे रहा था।

मामा ने अपनी आंखें फिर बन्द कीं व श्लोक पढ़ने लगा। उसने अपने जुड़े हुये हाथों को सिर और दिल पर तीन बार लगाया उसने अपनी आंखें खोलीं और त्रिशूल उठा लिया। अली खड़ा हो गया और लंगडा कर जाने की कोशिश की। मामा ने त्रिशूल का वार करने के लिये ऊपर उठाया।

'नहीं मामा', ओमी ने चीखते हुए कहा। ओमी ने पास खड़े आदमी को धक्का दिया। वह मामा और अली के बीच में भागा। मामा ने चिल्ला कर एक श्लोक पढ़ा और वार कर दिया।

'रुको मामा,' ओमी ने कहा।

अगर मामा रुकना चाहता भी तो रुक नहीं सकता था। वार में गति आ चुकी थी। त्रिशूल ओमी के पेट में सीधा जा घुसा।

'अहा', ओमी ने कहा। जैसे कि उसने दर्द बाद में महसूस की पर क्या हुआ है यह पहले देख लिया। एक सेकण्ड के अन्दर फर्श खून का दरिया बन गया। मामा ने और उसके आदमियों ने एक दूसरे की तरफ देखा कि क्या हो गया।

'मामा, ऐसा कुछ न करो,' ओमी ने कहा, उसे यह मालूम नहीं था कि त्रिशूल पांच इंच उसके अन्दर घुस चुका है।

'ओमी मेरे बेटे', मामा ने कहा।

ओमी दर्द से चिल्लाया जैसे ही मामा ने त्रिशूल को बाहर निकाला।

मैंने कभी इतना खून नहीं देखा था। मैं उल्टी करना चाहता था। मेरा मन सुन्न हो गया था। उस व्यक्ति ने जिसने

ओमी को पकड़ रखा था। अब उसने अली को सख्ती से पकड़ लिया था।

मामा ने ओमी को अपनी गोद में लिटा लिया। 'देखो, जानवर देखो, तुमने क्या कर दिया है,' ईश चिल्लाया। ईश ने यह सारा दृश्य पीछे से देखा था। उसने त्रिशूल को ओमी के अन्दर जाते हुए नहीं देखा। केवल मैंने देखा था और वर्षों बाद भी वह आकृति मुझे डराती रही।

'कुत्तों, अखूलैस बुलाओ, 'ईश चिल्लाया उस व्यक्ति ने अभी भी ईश को मजबूती से पकड़ रखा था। अली ने अपना खाली हाथ ओमी की छाती पर रख दिया। वह अजीब ढंग से ऊपर नीचे हो रही थी।

ओमी ने अली का हाथ पकड़ा और मेरी ओर देखा। उसकी आंखें कमजोर लग रही थीं। आसू मेरे गालों पर बह निकले। मेरे पास लड़ने की कोई ताकत नहीं बची थी। मेरे पास कुछ भी करने की ताकत नहीं बची थी।

'हमें छोड़ दो हरामजादो' मैं एक बच्चे की तरह रोने लगा।

'तुम ठीक हो जाओगे मेरे बेटे', मेरा यह मतलब नहीं था। मामा ने ओमी के बाल सहलाते हुए कहा।

'यह अच्छा लड़का है मामा, इसने तुम्हारे बेटे को नहीं मारा। सारे मुसलमान खराब नहीं होते', ओमी ने अपनी कमजोर आवाज और सांस लेने की कोशिश करते हुए कहा।

'मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ दोस्त', ओमी ने मेरी ओर देखते हुए कहा। यह वाक्य बहुत मजेदार हो सकता था, अगर यह उसका अन्तिम वाक्य न होता। उसकी आंखें बन्द हो गईं।

'ओमी मेरे बेटे, मामा उसके शरीर में दोबारा जीवन लाने के लिये हिलाने लगा। 'क्या, क्या हुआ? 'ईश ने पूछा। ईश ने यह सारा ड्रामा पीछे से देखा था। मामा ने अपना सिर ओमी की छाती पर रख दिया। ईश ने अपने बन्दीकर्ता को ठोकरें मारनी शुरू की। उस व्यक्ति ने अपनी कोहनियों में ईश को दबा लिया। ईश ने उसका त्रिशूल पकड़ा और तब तक दबाता रहा जब तक कि वह छूट नहीं गया। उसने उस व्यक्ति की जांघों में एक जोरदार ठोकर मारी। वह व्यक्ति नीचे गिर गया और ईश ने उसे उसी जगह तीन बार ठोकर मारी। ईश उसका सिर, उसके पैर पर तब तक मारता रहा जब तक कि वह बेहोश नहीं हो गया। ईश, ओमी की तरफ भागा।

मामा ओमी के शरीर को फर्श पर छोड़ कर खड़ा हो गया। ईश ने ओमी के चेहरे को छुआ। उसने कभी भी एक मृतक शरीर को हाथ नहीं लगाया था, अपने मित्र की बात तो छोड़ दो। मैंने ईश को पहली बार रोते हुए देखा। उसने बहुत कोशिश की पर आसू रुकने का नाम नहीं ले रहे थे।

'देखो, हरामजादों, तुमने मुझसे क्या करवा दिया। मेरा दूसरा बेटा भी मरवा दिया। लेकिन मैं कमजोर नहीं हूँ। मैं अभी तक रोया नहीं हूँ, देखो।' ईश ने मामा को अनदेखा किया वह उसी तरह से सुन्न था जिस तरह कि कुछ क्षणों पहले मैं था। वह ओमी के शरीर को बार-बार हाथ लगा रहा था।

'हिन्दू कमजोर नहीं है, क्या मैं कमजोर हूँ?' मामा ने अपने आदमियों की ओर मुड़ते हुए कहा। आदमी घबराये हुए लग रहे थे क्योंकि बातें योजनानुसार नहीं हुई थी। जिस व्यक्ति ने अली की बांह पकड़ी हुई थी, उसने अगला कदम उठाने के लिए मामा की तरफ देखा।

'इसे इसकी मां के दलाल के पास खड़ा कर दो' वो व्यक्ति अली को मेरे पास ले आया और त्रिशूल से उसे रोके रखा।' ईश के बन्दीकर्ता को होश आने लगा था। वह उठा और ईश की तरफ भागा। उसने उस त्रिशूल का साफ हिस्सा ईश के सिर पर मारा। ईश दर्द में कराहा और गिर गया। उस व्यक्ति ने ईश को दोबारा दीवार के साथ धकेल दिया।

ईश का चेहरा अली और मेरे सामने था। 'अब और मौके नहीं', मामा ने अली के सामने आते हुए कहा। मामा ने बन्दीकर्ता को अली को छोड़ने के लिये कहा। मैंने ईश की तरफ देखा वह लगभग पन्द्रह फुट दूर था उस का बन्दीकर्ता बहुत चुस्त दिख रहा था। ईश ने मेरी तरफ देखा। उसकी आंखें मुझे कुछ बताना चाह रही थीं।

क्या? मैंने अपने से सवाल, किया। वो क्या कहने की कोशिश कर रहा है। मैंने टेढ़ी निगाह से ईश की तरफ देखा। उसने जल्दी-जल्दी अपनी आंखों की पुतलियां मध्य से बायीं ओर घुमाई। वह चाहता था कि मैं ओमी की तरफ भागकर मामा का रास्ता रोकूं।

मैंने अपने बन्दीकर्ता को जांचा। उसने मेरा रास्ता रोक रखा था, पर उसकी आंखें मामा और अली की ओर थीं।

एक जीवित कत्त पर से अपनी आंखें हटाना मुश्किल काम था। मैं निकल सकता था लेकिन मरने का क्या फायदा? 'सुअर के बच्चे तैयार हो जाओ', मामा ने पांच कदम पीछे हटकर त्रिशूल उठाते हुए कहा।

शायद मैं कोशिश कर सकता था, अली को अपनी तरफ खींच सकता था। उस ढंग से मामा का वार दीवार पर लग सकता था। ईश अपने बंदीकर्ता को धक्का देकर हमें बचा सकता था। क्या यह वहीं था जो ईश कहना चाहता था। मेरे पास आंखों को हिलडुल का सीमित आंकड़ा था। मेरे पास सीमित समय था। मैं विश्लेषण नहीं कर सकता था। मैंने पहले करना था फिर सोचना था बिकूल इसके विपरीत जब मैं विद्या के साथ सोता था तब मुझे पहले सोचना चाहिए था फिर करना चाहिए था।

मामा अली की तरफ भागा। मैं जानता था कि मुझे बन्दीकर्ता की पकड़ से छूटना है, अली को पकड़ना है और अपनी ओर खींचना है। मैं यह सब करने के लिए तैयार था, लेकिन फिर भी मैंने मामा की तरफ देखा। उसका भारी भरकम शरीर और तीखा हथियार देखकर एक डर की लहर मेरे अन्दर चली गई और मैंने कीमती समय सोचने में गुजार दिया जबकि मुझे कार्य करना चाहिये था। ईश और मैंने फिर एक बार अपनी आंखें मिलाई और उस ने मेरा डर, और स्वार्थ का मिला जुला रूप देखा। क्या होगा, अगर त्रिशूल मेरे पेट में घुस गया? क्या और अगर ने मुझे हिचकिचाने को मजबूर कर दिया था लेकिन मैं इन सबसे निकला और अपनी दायीं ओर छलांग लगा दी। मैंने अली को पकड़ा और अपनी ओर खींच लिया। मामा ने वार किया पर अली के शरीर को नहीं लगा। त्रिशूल का एक ब्लेड अली की कलाई में घुस गया। अली को बिल्कुल चोट नहीं आनी थी अगर मैं कुछ क्षण पहले छलांग लगा देता और यहां यह था, कुछ जो मैंने तब नहीं जाना था कि यह कुछ क्षणों की देरी मेरे जीवन की तीसरी बड़ी गलती बन जायेगी।

बेशक मैं यह नहीं जानता था कि मैंने तब एक गलती कर दी है। ईश ने वही किया जैसा मैंने सोचा था। उसने अपने आप छुड़ाने के लिये बन्दी कर्ता को अपने सिर से मारा। इससे ईश को चोट लग सकती थी पर मैं सोचता हूं तब ईश दर्द से परे था। ईश ने बन्दीकर्ता का त्रिशूल लिया और आदमी के दिल में घुसेड़ दिया। वो व्यक्ति एक बार चिल्लाया और शांत हो गया। ईश हमारी ओर भागा। वह ठीक है-वह ठीक है, मैंने ईश की ओर मुड़ते हुए कहा। मैंने अली को अपने पास सख्ती से पकड़ रखा था।

अब वहां दो बन्दीकर्ता और मामा रह गये थे। हम किसी को मारना नहीं चाहते थे।

'हम यहां से जाना चाहते हैं', ईश ने मामा की तरफ त्रिशूल तानते हुए कहा। मामा के पास भी त्रिशूल था। उनकी आंखें मिलीं। मामा के आदमी आने वाली द्वंद्व को देख रहे थे। मैं अली के साथ कमरे के दूसरी ओर भागा। वे आदमी हमारे पीछे भागने लगे।

'रुक जाओ हरामजादो' आदमियों ने कहा जैसे ही हम कमरे के आखिर में पहुंचे। एक आदमी आगे बढ़ा और दरवाजे की चिटखनी चढ़ा दी।

अली ने फर्श पर पड़ा बैठ उठा लिया। मैंने भी उठाया हालांकि मुझे विश्वास नहीं था कि मैं इस समय लड़ सकता हूं। अली दर्द के मारे कराहा जब उसने बैठ उठाया था।

'वाह, लड़ना चाहते हो' दो बन्दीकर्ताओं ने कहा। एक आदमी मामा की तरफ मुड़ा।

'मैं इस का ख्याल रखता हूं तुम लड़के को खत्म कर दो, मामा।'

'ठीक है' मामा ने कहा और वह दूर हट गया। जैसे ही वह हटा मामा ने त्रिशूल से ईश के पंजों पर वार किया। ईश को इस बात की आशा नहीं थी। उसने अपना सन्तुलन खो दिया और प्रबन्धन के मेज के पास गिर गया।

'तुम कमजोर आदमी हो, तुम यह बात जानते हो;' ईश ने कहा।

'मैं तुम्हें अभी खत्म कर सकता हूं, अपने सितारों को धन्यवाद दो कि हमने हिन्दु घर में जन्म लिया है।' मामा ने ईश के चेहरे पर भूलते हुए कहा।

मामा अली के पास आया। 'वाह, तुम खेलना चाहते हो! तुम मेरे साथ गेंद, बल्ला खेलना चाहते हो।' मामा ने हंसते हुए कहा। जैसे ही अली ने अपना बैठ ऊपर उठाया। 'पीछे हट जाओ', मामा ने अपने आदमियों से कहा, 'लड़का खेलना चाहता है। तुम वैश्या के बच्चे, मेरे साथ खेलना चाहते हो', मामा ने अली के आस-पास नाचते हुए



कहा। वह अली के बैठ से कुछ ही दूर था।

‘वाह तुम मुझसे गेंदबाजी करवाना चाहते हो। गेंदबल्ला खेलना चाहते हो’, मामा ने हंसते हुए कहा।

‘चलो, तुम्हारे मरने से पहले आखिरी गेंद’, मामा ने अपने हाथों में गेंद उछाली। ‘हां, मुझे गेंद फेंको’, अली ने कहा। ‘क्या सच में’, मामा ने हंसते हुए कहा। एक दूसरी गेंद अली के पैरों में पड़ी थी। अली ने वह गेंद ईश की तरफ अपने पैरों से खिसका दी। गेंद ईश के पास चली गई। ईश फर्श पर प्रबन्धक की मेज के पास बैठा था। उसके पैरों से खून निकल रहा था और वह खड़ा नहीं हो सकता था।

‘मेरे पास मत आना’, अली ने मामा से कहा।

‘अच्छा, मैं बैठ-बॉल से बहुत डरता हूं’ मामा ने डरने का नाटक करते हुए कहा। उसने एक हाथ में गेंद उछाली और दूसरे हाथ में त्रिशूल पकड़ लिया।

ईश ने धीरे से गेंद उठाई। अली की आंखें ईश से मिलीं। अली ने धीरे से गर्दन हिलाई।

ईश ने अपने हाथों में गेंद उठाई। बन्दीकर्ता ने इसे देखा पर कुछ नहीं किया। ईश ने पूरी ताकत से गेंद अली की तरफ फेंकी।

‘धड़ाक’, अली ने बल्ले से गेंद को मारा। उसके पास केवल एक शॉट था। और उसने इसे नहीं छोड़ा। गेंद मामा की कनपटी पर लगी। मामा ने अपनी हाथ में पकड़ी गेंद को छोड़ दिया और अपना सिर पकड़ लिया। बॉल ज़मीन पर गिर गई। अली ने ठोकर मार कर गेंद ईश की तरफ कर दी। ईश ने दोबारा फेंका। अली ने बल्ले से गेंद को जोड़ा और ‘धड़ाक’। गेंद मामा के माथे के बीच में लगी। अली के शॉट इतने शक्तिशाली थे कि वह गेंदों को मैदान से बाहर ले जाते। पांच फुट की दूरी से उन्होंने मामा पर ईंटों की तरह प्रहार किया। मामा नीचे गिर पड़ा। ईश ने उठने के लिये उसे लाठी की तरह प्रयोग किया। बन्दीकर्ता मामा की तरफ दौड़ा और ईश पीछे से आया और त्रिशूल को उसकी गर्दन में घुसेड़ दिया। दूसरे बन्दीकर्ता ने खून का फव्वारा छूटते हुए देखा। खूनी ने ईश की आंखों में देखा। उसने चिटखनी हटाई और दस सेकंड में नजरों से ओझल हो गया।

अली फर्श पर घुटनों के बल बैठ गया उसने अपनी दांयी कलाई बांये हाथ से पकड़ रखी थी।

‘या मेरे अल्ला ‘अली ने कहा। उसमें हैरानी से अधिक दर्द था कि उसने क्या कर दिया।

मामा फर्श पर लेटा हुआ था। उसकी कनपटी फट गई थी। आन्तरिक रक्त आने से, उसका माथा गहरा और सूज गया था। वह हिल नहीं रहा था, लेकिन कोई भी उसके करीब नहीं जाना चाहता था। उसकी आंखें पांच मिनट के बाद बन्द हो गई और मैंने उसकी नब्ज को देखा।

‘यह रुक गई है, मेरे ख्याल से यह मर गया है। मैं मृतक शरीरों का विशेषज्ञ बन गया था।’

ईश ने अली को अपनी बांहों में ले लिया।

‘बहुत दर्द हो रहा है, ईश भैया, मुझे घर ले चलो’, अली ने कहा। उसका शरीर अभी तक डर के मारे कांप रहा था।

‘अली उस कलाई को हिलाओ, तुम्हें उस कलाई की आवश्यकता है। इसे ठीक रखो। ‘ईश ने कहा।

वह जाने के लिये दरवाजे की तरफ बढ़ा। उसने त्रिशूल को लाठी की तरह लिया हुआ था।

‘हम ने उसे बचा लिया, ईश हमने उसे बचा लिया’, मैंने पीछे से ईश के कंधों को हिलाते हुए कहा।

ईश रुका। वह मेरी ओर मुड़ा उसने मुझे बुरी नजर से नहीं देखा लेकिन जिससे देखा वो उससे भी बुरी थी। उसने मुझे भावरहित आंखों से देखा ठीक है, मैंने उसे इसके लिये कई कारण दिये थे, लेकिन वो मुझसे इस तरह का व्यवहार क्यों कर रहा है। मैं कौन था? जैसे कि उसे मेरे से कुछ लेना देना नहीं था। ईश मुड़ा और चलने लगा।

‘ठहरो ईश, मेरा इन्तजार करो, मैं दरवाजा खोलने में तुम्हारी मदद करूंगा’, मैंने दरवाजे के करीब पहुंचते हुए कहा। ईश ने हाथ के इशारे से मुझे एक तरफ होने को कहा।

‘देखो ईश, देखो, ‘वह जिन्दा है, हमने यह कर दिखाया।’

ईश कुछ नहीं बोला। उसने मुझे इस प्रकार छोड़ दिया जैसे मैं मृतक शरीरों में से एक हूं। वह बहार निकल गया।

## उपसंहार-एक

दिल जांचने वाला यन्त्र तेजी से बोला, गोविन्द की नब्ज 130 प्रति मिनट चल रही थी। नर्स भागती हुई अन्दर आई। तुम क्या कर रहे थे उसने पूछा 'मैं ठीक हूँ थोड़ी सी बातचीत कर रहा था, वह थोड़ा-सा ऊपर उठ कर बैठ गया।

'उसे ज्यादा परेशान मत करो', नर्स ने मेरी और अंगुली करते हुए कहा। मैंने गर्दन हिलायी और वह बाहर चली गई? उस दिन के बाद से ठीक तीन साल, 2 महीने और 1 हफ्ते पहले ईश ने मुझसे कोई बात नहीं की। हर बार मैं उससे बात करने की कोशिश करता पर वह मुझे झिड़क देता, गोविन्द ने अपनी बात खत्म की?

मैंने उसे पानी का गिलास दिया, क्योंकि उसकी आवाज दब रही थी। इन तीन सालों में और क्या हुआ दुकान का, विद्या का, अली का मैंने पूछा। उसने अपनी निगाह नीची कर ली और अपनी छाती पर बंधी दिल जांचने वाली मशीन की तारों से खेलने लगा। उसने अपने आप को नियन्त्रण में रखने के लिए बहुत कोशिश की। मैंने आगे कुछ नहीं पूछा। अगर वह बताना चाहता है तो बतायेगा मैंने अपनी घड़ी देखी, सुबह के पांच बज रहे थे। मैं कमरे से बाहर आया सुबह की पहली धूप हस्पताल के बरामदे में भरी पड़ी थी। मैंने किसी से चाय के बारे में पूछा। उसने कैन्टीन की तरफ इशारा कर दिया। मैं दो कप लेकर वापस आया। गोविन्द ने मना कर दिया, क्योंकि पेट साफ होने के बाद उसे यह आज्ञा नहीं थी। उसने आंखें नहीं मिलाई।

'मुझे सिंगापुर हवाई सेवा के फोन नम्बर की आवश्यकता है ताकि मैं वापसी टिकट करा सकूँ', मैंने उसका मन बदलने के लिये कहा।

'ओमी के माता-पिता', गोविन्द ने अपनी कमजोर आवाज में बताया, 'मैं तुम्हें अभी नहीं बता सकता, वे बर्बाद हो गये थे। हफ्तों तक मन्दिर में पड़ोस से लोग आते रहे और केवल मामा और धीरज के लिये प्रार्थनाएं करते रहे।'

'संस्कार के समय सारे अहमदाबाद से पांच हजार लोग शामिल हुए? तब ओमी के पिता रोने लगे थे। ओमी की मां कई हफ्तों से न खाने के कारण बीमार पड़ गई थी। उसे कई हफ्तों तक हस्पताल में रहना पड़ा।'

मैं सोचने लगा क्या मुझे गोविन्द के पीले पड़े हुए हाथ पर अपना हाथ रखना चाहिए?

'मैं अगले दो महीने दुकान पर नहीं गया? मैंने ईश को मिलने की कोशिश की? अगर मैं उससे मिलने जाता तो वह अवश्य ही मेरा चेहरा देखकर दरवाजा बन्द कर देगा।' 'क्या तुमने विद्या से बात की?' गोविन्द ने न मैंने गर्दन हिलाई।

'विद्या से बात करने का सवाल ही पैदा नहीं होता था, उन्होंने उसे घर में बन्द कर दिया था। उसके पिता ने उसके मोबाइल फोन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। टी.वी. चैनल, गोधरा के समाचार दंगों से आगे बढ़ गये थे लेकिन मेरा जीवन खत्म हो गया था। मैं तब सब कुछ झेलता रहा। मैंने तब गोलियां नहीं खाईं। यह मत सोचो कि मैं मजबूत नहीं हूँ, केवल इसीलिए कि मैं यहां हूँ, वह आगे बोलने से पहले कुछ देर रुका, 'घटना के तीन महीने बाद, ओमी की मां घर आई। उसने मुझे दुकान फिर से खोलने को कहा। ओमी ने उसे बताया था कि यह संसार में सबसे पसंदीदा जगह है। मामा के जाने के बाद, दुकान अब ओमी की मां की थी और वह अपने बेटे की याद को जिन्दा रखने के लिये, यह दुकान हमें देना चाहती थी।'

'क्या तुम मान गये?'

'शुरू में मैं उनसे आंखें नहीं मिला सकता था, 'ओमी के मरने की मामा की मौत में मेरा हिस्सा और मामा की मौत का उत्सव मनाना मेरे में शर्मिंदगी पैदा करता था। लेकिन वो मेरे बुरे स्तप्रों के बारे में कुछ नहीं जानती थी और मुझे भी जीवन-यापन करना था। कारोबार मंदा था। हमने कई पूर्ति सम्बन्ध खो दिये थे इसलिये मैं दुकान पर वापिस आया, ईश ने ओमी की मां को बताया था कि वह वापिस आयेगा लेकिन उसे मुझसे कोई लेना-देना नहीं था। ओमी की मां हम दोनों को चाहती थी इसलिए इसका केवल एक ही समाधान था।'

'क्या?'

‘हमने दुकान को दो हिस्सों में बांट दिया। हमने दुकान के मध्य में एक लकड़ी की दीवार खड़ी कर दी। ईश ने दायां हिस्सा लिया और खेलों की दुकान जारी रखी। मैंने बायां भाग लिया और अपने हिस्से के विद्यार्थियों की स्टेशनरी और पाठ्य पुस्तक की दुकान में बदल लिया। उसके ग्राहक कभी-कभी मेरी दुकान में आते और कभी इसका उल्टा भी हो जाता। हम पढ़ाई और खेल एक ही जगह दे रहे थे लेकिन हम एक बार भी आपस में नहीं बोले। तब भी नहीं जब भारत 2003 के विश्व कप के फाइनल में पहुंचा था। ईश, मैचों को अकेले बैठ कर देखता है और छक्का लगने पर कभी भी उछलता नहीं है।

‘क्या तुम ने कभी विद्या को फिर से मिलने की कोशिश की? और अली का क्या हुआ?’ मैंने महसूस किया कि मैं उसे मदद देने की अपेक्षा अधिक सवाल पूछ रहा हूं लेकिन मुझे जानना था।

उन्होंने विद्या को पी. आर. कोर्स के लिये मुम्बई भेज दिया। वह उसके लिये एक सकारात्मक चीज थी। मैडीकल कॉलेज या कुछ और वह उसे मुझसे दूर भेजना चाहते थे। इसलिये विद्या को अपने पिंजरे से उड़ने का मौका मिल गया। उसे मुझसे न मिलने के निर्देश दिये गये। लेकिन उसे नियम तोड़ना अच्छा लगता था इसलिये उसने कई कर मुझसे सम्पर्क करने की कोशिश की। लेकिन इस बार मैंने कभी उत्तर नहीं किया। मैं उसे दे नहीं सकता था...। मैं उसके भाई को रोज देखता था। इतना करना चाहता था कि अधिक से अधिक पैसा बनाऊं और अली के लिये बचाऊं, उसे बड़ा करने के लिये।’

मैंने अपने कप से एक घूट भरते हुए पूछा। ‘होस्पिटल की चाय डीटोल की तरह क्यों लगती है?’

‘अली, ईश के घर में रहता है इसलिये उसका पालन हर हाल में अच्छा होगा। हमें बहुत सा पैसा अली की कलाई के ऑपरेशन के लिये चाहिए था।’

नर्स सुबह की जांच के लिये कमरे में आई। गोविंद ने उसे प्रार्थना की कि वह शौचालय जाना चाहता है। नर्स मान गई और उसने उसकी तारे वगैरा उतार दिया। मैंने दस मिनट व्यग्रता से गुजारे। मेरा मन उसकी स्थिरता के बारे में शंकाओं को ले कर था।

‘किस प्रकार का ऑपरेशन’, मैंने पूछा ‘अली की कलाई चोटिल हो गई है इसका मतलब है उसकी सही समय पर बैट को मोड़ने की योग्यता चली गई। मैंने उसका जीवन बचा लिया लेकिन मेरी एक सेकंड की देरी ने उसकी योग्यता छीन ली। मैंने तुम्हें बताया था कि देरी मेरे जीवन की तीसरी गलती थी।’

‘तुमने अपनी तरफ से अच्छा किया, यह केवल क्षण भर की देरी थी, मैंने उसे सांत्वना दी। यह एक जागरूक क्षण था लेकिन मैं स्वार्थी था बिकूल उसी तरह जब मैं गोल बनाना चाहता था या जब मैं विद्या के साथ था। वे ठीक कहते हैं, मैं एक व्यापारी नहीं हूं। मैं एक स्वार्थी हरामजादा हूं, ‘उसने कहा और आगे बोलने से पहले कुछ रुका। ‘उसे दोबारा ऑपरेशन की आवश्यकता है। त्रिशूल ने उसकी कलाई से कुछ कोशिकाओं को निकाल दिया था, इसलिये डाक्टरों ने उसकी जांघ से कुछ कोशिकाओं का भाग लेकर उसकी कलाई से जोड़ना है? उसके बाद वे देखेंगे कि क्या वे काम करता है। यह केवल चमड़ी का बदलाव नहीं है बल्कि कोशिकाओं का बदलाव है। यह ऑपरेशन केवल विदेश में होता है और इसमें बहुत से पैसे लगते हैं।’

‘कितने?’

‘पूरी कीमत की तो बात ही मत करो। ईश ने पैसे कम करने के लिए कई हस्पतालों को लिखा है जो कि इंग्लैंड व यू.एस.ए. में है। उसे सब से अच्छा सौदा इंग्लैंड के हस्पताल से मिला जो पांच लाख रुपये में ऑपरेशन के लिये तैयार हो गये थे। बेशक ईश ने कभी इस बारे में मुझे कुछ नहीं बताया लेकिन मैं लकड़ी की पतली दीवार से सुन सकता था।

‘तुम्हारे पास पैसे हैं?’

‘ईश ने पिछले तीन सालों में दो लाख रुपये जोड़े हैं। मैंने तीन लाख रुपये जोड़े हैं? पिछले हफ्ते मैं पैसे लेकर उसके पास गया था। मैंने कहा, अली के ऑपरेशन के लिए आओ हम अपने स्रोतों को इकट्ठा कर लें। मैंने कहा, हमें अभी कार्य करना चाहिए क्योंकि उस अस्पताल में तिथि लेने के लिये नौ महीनों की आवश्यकता है। और तब उसने..’

गोविन्द की आवाज भर्रा गई।

‘तुम ठीक हो?’ मैंने पूछा।

गोविन्द ने गर्दन हिलाई, ‘तुम जानते हो उसने क्या किया? उसने मेरे पैसों को हाथ लगाने से मना कर दिया और मेरा लिफाफा वापस करने से पहले क्रिकेट के दस्ताने पहन लिये। वास्तव में, उसने मुझे पैसों वाला डिब्बा देने की पेशकश की और कहा, कि वह मेरे लालच को पूरा करने के लिये पैसा दे सकता है। उसने कहा कि अली का ऑपरेशन वह एक बेईमान आदमी के पैसों से नहीं करायेगा।’ गोविन्द जी आवाज टूटने लगी थी। ‘मैं बेईमान नहीं हूँ। मैं स्वार्थी हूँ और मैंने कई गलतियाँ की हैं पर मैं बेईमान नहीं हूँ और मैं पैसे की परवाह करता पर अली की भी परवाह करता हूँ।

मैं उसके बिस्तरे पर बैठ गया और अपना हाथ उसकी बाजू पर रख दिया। उसने

इसे खींच लिया। ‘तीन साल तक एक एक रुपया बचा कर मैंने पैसे इकट्ठे किये और ईश मेरी इस मेहनत को बेईमानी कहता है। मैं इसे और नहीं ले सकता। डॉक्टर वर्मा ने मुझे कुछ गोलियाँ दी थी क्योंकि रात में मुझे सोने में कुछ मुश्किल आती थी। उस दिन मैंने महसूस किया कि क्यों न हमेशा के लिये सोया जाये। शायद मैंने जीवन की गणना गलत की थी और यह सवालों को छोड़ने का समय था।’ वह धीरे से हंसा। डॉक्टर गोविन्द के वार्ड में साथ आया था। गोलियों का रसान गोविन्द की प्रणाली से बाहर निकाल दिया गया था। ‘मैं चाहता हूँ कि मरीज कम से कम छः घण्टे सोये’ : डॉक्टर ने मुझे बताया और उसने कमरे के पर्दे कर दिये।

मैं कमरे से बाहर चला गया। गोविन्द की मां बाहर बरामदे में बेंच पर बैठी थी। वह चिन्तित दिखाई दे रही थी।

‘वह ठीक है उसे केवल थोड़े से आराम की आवश्यकता है’, मैं उसके साथ बेंच पर बैठ गया।

‘वो जानता था कि वह बहादुर था’ मैंने कहा, ‘क्या ईश जानता है?’

वह इधर उधर देखने लगी। ‘वह आपस में बात नहीं करते।’

‘क्या आप उसे बता सकती है कि क्या हुआ है उसे हस्पताल आने के लिये मजबूर मत करना।’

गोविन्द की मां ने हां में सिर हिलाया। हम एक साथ हस्पताल से बाहर निकल आये। वह ऑटो में बैठ चुकी थी जब मैं फिर से बोला ‘क्या आप जानती हैं कि मुम्बई में विद्या किस कॉलेज में जाती है?’

‘इतने सारे मिलने वाले, यह हस्पताल है या कोई क्लब ‘नर्स ने शाम को गोविन्द की चादर बदलते हुए बुड़बुड़ाया।

गोविन्द का हस्पताल का कमरा लोगों से भरा पड़ा था। नर्स के अतिरिक्त वहां ईश, विद्या, गोविन्द की मां और मैं मौजूद थे। हम वहां ‘सोने के सरदार का’ जागने का इन्तजार कर रहे थे। बहुत से लोगों की उसकी नींद की गोलियों के कारण नींद चली गई थी।

गोविन्द ने पलकें झपकाई और हर कोई उस के बिस्तर के पास पहुंच गया हस्पताल

‘ईश?’

‘विद्या’ गोविन्द ने आंखे झपकाई।

‘यहां ध्यान आकर्षित करने के और भी बहुत से ढंग हैं’, विद्या ने कहा

‘तुम कब आई?’ गोविन्द ने पूछा, वह बाकियों को भूल गया था।

‘मुझे अपनी मार्केटिंग की कक्षा बीच में ही छोड़नी पड़ी लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि मैं तुम्हें, मुझे उत्तर न देने या यह गोलियां खाने के लिये माफ कर दूँ। मैंने तब भी गोलियां नहीं खाई, जब मैं सब से ज्यादा डरी हुई थी, तुम जानते हो।’ ‘तुम्हारे माता-पिता ने मुझसे कहा था कि मैं तुम से बात न करूँ। ईश भी ऐसा ही चाहता था।’

‘तो’ विद्या ने अपना कालिज का बैग अपने कंधे पर से उतारा और मेरे पास बिस्तर पर रख दिया ‘तुम्हारा दिल क्या चाहता था?’

ईश गोविन्द की तरफ देखता हुआ चुपचाप खड़ा था। गोविन्द की मां घबराई हुई सी दिखाई दे रही थी, शायद विद्या जैसी पुत्रवधू को पाकर।

‘मैं माफी चाहता हूँ ईश। मैं किसी को दुख नहीं पहुंचाना चाहता था। मैं... उससे प्यार करता हूँ।’ गोविन्द ने कहा। ईश कमरे से बाहर जाने लगा। गोविन्द की मां ने पीछे से उसकी बाजू पकड़ ली। उसने ईश का हाथ गोविन्द के हाथ पर रख दिया। ‘तुम्हें अपने मां-बाप की बात सुनने की आवश्यकता नहीं, लेकिन मैं चाहती हूँ तुम फिर से दोस्त बन जाओ।’ गोविन्द की मां ने कहा।

ईश फिर भी चुप रहा। गोविन्द ने ईश को थपथपाया। गोविन्द की मां ने बोलना जारी रखा, ‘जीवन में बहुत सी कठिनाइयां आएंगी। तुम्हारे निकट रहते लोग, तुम्हें दुख पहुंचाएंगे, लेकिन तुम उनसे नाता मत तोड़ना, इससे तुम उन्हें और ज्यादा दुख पहुंचाओगे। तुम मलहम लगाने की कोशिश करो। यह एक पाठ है जो न केवल तुम को बल्कि सारे देश को सीखने की आवश्यकता है।’ ‘तुम्हें चूमने वाला चिंपाजी याद है’, गोविन्द ने पीछे से पुकारा।

ईश रुका और मुड़ कर गोविन्द को देखा,

‘अली के लिये पैसे ले लो। मेरे लिये अब यह केवल पैसे के लिए नहीं है, पैसा इसके लिये है, अली को बिल्कुल ठीक कर दो। यह मेरे लिये भी उतना ही महत्वपूर्ण है।’

ईश ने अपने आंसू रोकने की बहुत कोशिश की ‘क्या तुम मुझे माफ कर सकते हो?’, गोविन्द ने कहा।

गोविन्द व ईश दोनों की आंखें भर आई थी।

‘आंटी, क्या यह हैरानी की बात नहीं है कि इस वार्ड के सभी पुरुष रो रहे हैं जबकि औरतें सबके साथ इकट्ठी हैं विद्या ने कहा। गोविन्द की मां डरी हुई लगी। विश्वास से पूर्ण औरतें खराब पुत्र वधुएं होती हैं।

मैं अगली सुबह हवाई अड्डे जाने से पहले गोविन्द को मिला। गोविन्द को उसी शाम हस्पताल से छुट्टी मिलने वाली थी।

‘धन्यवाद’ उसने भावनात्मक स्तर में कहा।

‘किसलिए?’

‘आने के लिये, मैं नहीं जानता, मैं तुम्हारा ऋण कैसे चुकाऊंगा।’

‘वास्तव में इसका एक तरीका है।’ गोविन्द इन्ताज़र करने लगा।

‘तुम्हारी कहानी को बाकी लोगों को भी जानना चाहिए’

एक किताब की शक्ल में

‘हां’ बिकुल एक किताब की शक्ल में मेरी तीसरी पुस्तक। क्या तुम इसमें मेरी मदद करोगे?’

मैं नहीं जानता क्योंकि मैं केवल सुखद अंत की कहानियां ही पसन्द करता हूँ।’

उसने कहा।

‘तुम्हारी कहानी का सुखद अन्त है।’

‘मैं अभी अली के बारे में नहीं जानता हम आपरेशन करवाने जा रहे हैं लेकिन सफलता की आशा 100 प्रतिशत नहीं है। 50-50 जैसे की उन्होंने बताया है।’

‘तुम्हें विश्वास होना चाहिये,’ प्रोबेबिल्टी ‘को पुस्तकों के लिये छोड़ देना चाहिये’, मैंने कहा उसने गर्दन हिलाई।

‘तब अब मैं वापस जाता हूँ और हम एक दूसरे के सम्पर्क में ई-मेल के द्वारा रहेंगे’, मैंने कहा।

‘बिकुल ठीक, हम इस पर काम कर सकते हैं लेकिन अली के बारे में जानने से पहले तुम पुस्तक प्रकाशित मत करवाना ठीक है।

‘इसका मतलब, शायद तुम्हारी कोशिश बेकार न चली जाये’, उसने कहा।

‘मुझे मंजूर है’, मैंने कहा और हाथ मिलाए।

जब मैं जा रहा था तो मुझे हस्पताल के मुख्य द्वार पर विद्या मिली। वह हरे रंग का लहंगा पहने हुए थी। शायद

उसके सबसे खुशनुमा कपड़े, ताकि गोविन्द की मन-स्थिति ऊपर उठे। उसके हाथ में गुलदस्ता था।

‘बहुत अच्छे गुलाब हैं’, मैंने कहा। ‘लॉ बगीचे में बढ़िया गुलाब है। मैं अहमदाबाद को बहुत याद करती हूँ और मुझे अपने कोर्स के खत्म होने का इन्तजार है,’ उसने कहा।

‘मैं यह सोचता था तुम एक बम्बईया लड़की हो जो कि एक छोटे शहर में फंस गई है या कुछ भी।’

‘उसने, तुम्हें सब कुछ बता दिया-जैसे सब कुछ’, वह हैरान दिखी।

‘काफी कुछ।’

‘सब अच्छा है, मुम्बई ठीक है लेकिन मेरा अपना, मेरा अपना है। पाँव भाजी अहमदाबाद में ज्यादा स्वादिष्ट होती है।’

मैं उससे और बातें करना चाहता था पर मुझे जाना था। उन्होंने मुझे अपने संसार में आने की आशा दी है लेकिन मैं ज्यादा नहीं ठहर सकता।

## उपसंहार-दो

मैं सिंगापुर में अपने कंप्यूटर पर बैठा था। मेरी पत्नी आधी रात को मेरे पास आई, 'क्या तुम इस कहानी को थोड़ी देर के लिये छोड़ सकते हो। तुमने किया जो कुछ तुम कर सकते थे। वो तुम्हें बता देगा। अगर कुछ हुआ, उसने कहा। 'ठीक है, पर इस समय वे लंदन में है। ऑपरेशन लंदन में हुआ है। अली फीजीओ अभ्यास हर समय कर रहा है। वो अपनी बल्लेबाजी की परीक्षा किसी भी दिन देने को तैयार हो सकता है।

'तुम यही बात बार- बार पिछले एक महीने से कई बार दोहरा चुके हो। अब कृपा करके क्या तुम बत्तियां बन्द कर दोगे।'

मैं लेट गया और उनके बारे में सोचने लगा। इस समय लंदन में दिन था। क्या डॉक्टर उसे आज क्रिकेट के मैदान में टेस्ट देने की आज्ञा देगा? क्या होगा जब वह इतने लम्बे समय के बाद गेंद का सामना करेगा? क्या उस की नयी कलाई खेलने के लिये ज्यादा नाजुक तो नहीं होगी? मेरे नींद में जाने तक विचार मेरे मन में आते रहे।

अगली सुबह, मैं जल्दी जाग गया। गोविन्द ने एक एस. एम. एस. भेजा था।

डॉक्टरों ने अली को खेलने की आशा दी है फिंगर क्रोस,

कृपया प्रार्थना करो, हम कल

पिच पर जायेंगे।

मैं अगले दिन अपने दफ्तर गया। लंदन का समय सिंगापुर के समय से आठ घण्टे पीछे है और मैंने शाम को चार बजे कॉफी पीते हुए अपना फोन देखा। मुझे कोई सन्देश नहीं आया था। मैं आठ बजे दफ्तर से निकला मैं टैक्सी में था जब मेरे फोन पर बीप सुनाई दी,

ईश ने अली को गेंद फेंकी,

अली आगे बढ़ा और मुड़ा,

सीधा छः.....'